

लियोनिद इ० ब्रेजनेव जीवन के कुछ पृष्ठ

विशेष भारतीय संस्करण

К ИНДИЙСКОМУ ЧИТАТЕЛЮ

К индийскому народу я, как и все советские люди, испытываю глубокое уважение и симпатию. Мне довелось дважды побывать в вашей стране, увидеть и прекрасные памятники древней культуры, созданные руками талантливых мастеров, и современные города и новостройки - символ сегодняшней Индии. Мне представилась возможность познакомиться со многими индийцами и конечно убедиться в их чувствах искренней дружбы в отношении Советского Союза. С индийскими руководителями в Дели и в Москве мы неоднократно вели плодотворные переговоры.

Советско-индийская дружба, наше успешное сотрудничество в самых различных областях - от внешнеполитического выступления с близкой или одинаковой позицией до строительства промышленных предприятий и космических исследований - это важнейшее достижение наших народов, наших государств.

Дружба между народами наших стран уходит корнями в прошлое. Еще в XV веке русский землепроходец Афанасий Никитин побывал в Индии. Напомню, что позднее, когда Индия попала под английское господство, революционные демократы, представители прогрессивных кругов в России с энтузиазмом приветствовали великое восстание индийского народа против английских колонизаторов в 1857-1859 годах. С пристальным вниманием и искренним сочувствием следил за освободительной борьбой индийского народа против иностранных колонизаторов основатель Советского государства Владимир Ильич Ленин. На заре нашего века он предсказывал крах колониального господства в Индии и победу индийского народа в борьбе за свое национальное освобождение.

Со своей стороны, индийский народ, его выдающиеся политические лидеры - М.К.Ганди, Джавахарлал Неру, крупнейший писатель Рабиндранат Тагор и многие другие проявляли большой интерес к нашей стране, к строительству нового, социалистического общества в СССР.

Хотелось бы подчеркнуть: советско-индийская дружба - это не только результат давних традиций мирных, добрососедских отношений, взаимного уважения и сердечности между народами двух стран. Дело также в том, что она сфокусирована общими интересами в борьбе за разрядку, за разоружение, за мир и прогресс на земле.

Советско-индийский Договор о мире, дружбе и сотрудничестве, подписанный в 1971 г., юридически оформил и фактически закрепило то, чего мы добились за предыдущие годы. Наме можно с удовлетворением отметить, что добрые отношения между нашими странами выдержали испытание на прочность и зрелость. Они приносят пользу не только нашим странам, но и всей Юго-Восточной Азии, содействуя укреплению мира и безопасности в этом районе и в мире в целом.

Мы выступаем за то, чтобы дружба и сотрудничество СССР и Индии обогатились новым содержанием и убеждены в том, что от совместных усилий народов Индии и Советского Союза зависит многое для обеспечения международного мира для срыва замыслов тех, кто играет с огнем и хочет развязать мировую войну.

Выражая волю советского народа, мы заявили с трибуны XXV съезда Коммунистической партии Советского Союза, что тесное политическое и экономическое сотрудничество с Республикой Индией - это наш постоянный курс. И мы неизменно следуем и будем следовать такому курсу.

Позвольте пожелать мира, процветания и счастья всем читателям этой книги и в их лице народу великой страны - Индии.

6 апреля 1979 г.


Л.БРЕЖНЕВ

जवाहरलाल नेहरू, महान नेत्रक रवीन्द्रनाथ ठाकुर तथा कई अन्य अनेक व्यक्तियों ने हमारे देश में और सोवियत संघ में नये समाजवादी नमोज के निर्माण में गहरी रुचि ली।

मैं बल देकर कहना चाहूंगा कि सोवियत-भारत मित्रता हमारे देशों के जनगण की आपसी सम्मान एवं हादिकता की भावना तथा शांतिपूर्ण अच्छे पड़ोसी-वन्तु संबंधों की दीर्घकालिक परम्पराओं का ही परिणाम नहीं। यह तनाव-शैथिल्य के लिए, निरस्त्रीकरण के लिए और विश्व शांति तथा प्रगति के लिए संघर्ष के समान हित में भी सुदृढ़ होती है।

1971 में हस्ताक्षरित सोवियत-भारत शांति, मित्रता एवं सहयोग संधि उस सबकी औपचारिक अभिव्यक्ति है, जो हमने पिछले वर्षों में वास्तव में उपलब्ध किया था। हमें इस पर अब संतोष है कि हमारे देशों के बीच अच्छे संबंध समय की कसौटी पर खरे उतरे हैं और प्रभावक मित्र हुए हैं। वे न केवल हमारे ही दोनों देशों को, बल्कि सम्पूर्ण दक्षिण पूर्व एशिया को, उस क्षेत्र में तथा शेष विश्व में शांति एवं नुरक्षा को बढ़ाकर लाभान्वित कर रहे हैं।

हम चाहते हैं कि सोवियत संघ और भारत के बीच मित्रता नया एवं समृद्ध-तर भाव-अर्थ ग्रहण करे। हमें विश्वास है कि उन लोगों को योजनाओं की विफल करने में, जो आग से खेल रहे हैं और विश्व-युद्ध छेड़ने के इच्छुक हैं तथा विश्व-शांति की संरक्षा में भारत और सोवियत संघ के जनगण के संयुक्त प्रयत्नों पर बहुत कुछ निर्भर करता है।

सोवियत जनता की इच्छा को व्यक्त करते हुए हमने सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की 25वीं कांग्रेस में उद्घोषित किया था कि भारत गणराज्य के साथ घनिष्ठ राजनीतिक एवं आर्थिक सहयोग हमारी सतत् नीति है। हम इस नीति का पालन करते हैं और मर्मदा करते रहेंगे।

मैं इस पुस्तक के सभी पाठकों और उनके माध्यम से महान देश भारत के जनगण के प्रति शांति, समृद्धि एवं सुख की शुभकामनाएं प्रकट करना चाहूंगा।

—लिथोनिद इ० ब्रेजनेव

क्रम

I. मजदूरों के बीच	1
1. कामेन्गकोये में बचपन	2
2. स्कूली वर्ष	7
3. मजदूर ओर इंजोनियर	12
II. फ्रांसिज्म के विरुद्ध संघर्ष की ज्वाला में	20
1. युद्ध के पहले महीने	20
2. नोवोरोसीस्क क्षेत्र में	29
आपरेशन नोवोरोसीस्क	39
नगर पर प्रहार	43
3. उत्रेन को मुक्ति	46
पर्वतों में युद्ध	52
युद्ध में सफलता की कुंजी	54
ट्रासकारपेयिया में	57
4. पश्चिम को ओर	62

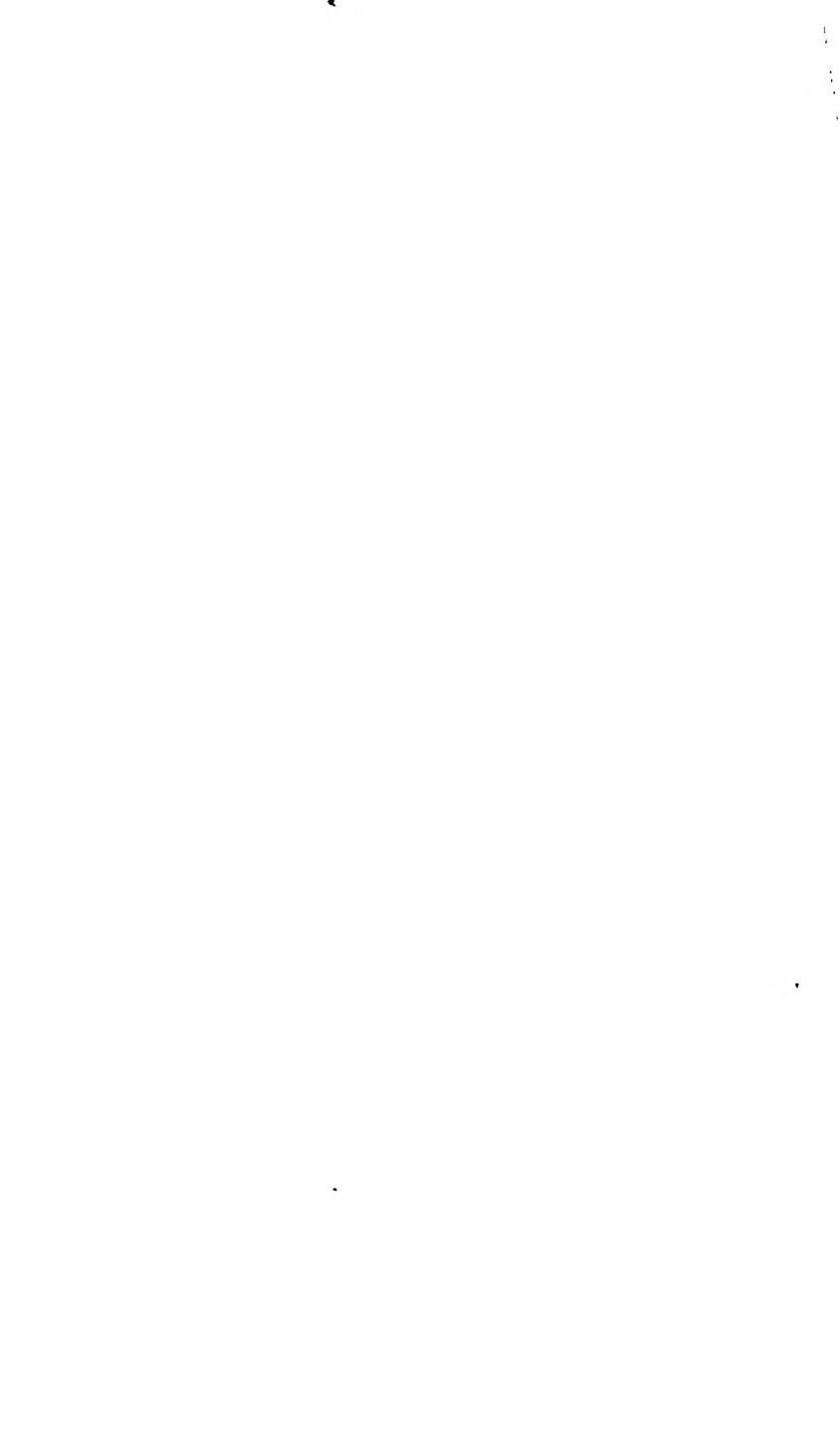
1. नीपन घाटी का पुनर्वास	69
आर्थिक समुत्थान की जटिल समस्याएँ	72
प्रज्ञान और विश्वास	74
जीवन की विजय	76
2. मोल्दाविया में	80
3. अकृष्ट धरती के क्षेत्रों में	89
विश्वास की भावना	91
4. देश के अग्रणी निकायों में कार्य	95
5. पार्टी के साथ तथा इसके जीर्ण नेता	100
सोवियत समाज के विकास में नया चरण	104
समाजवादी जनवाद मच्चा जनवाद है	109
सोवियत समाज के जीवन में ट्रेड यूनियनों	115
सोवियत युवाजन	116
विज्ञान की विकासशील भूमिका	119
अर्थतंत्र : परिणाम और संभावनाएँ	121
सब कुछ मनुष्य के कल्याण के लिए	128
वैदेशिक आर्थिक संबंधों का विकास	133

IV. विश्व शांति के लिए कार्य

135

1. ऐतिहासिक अनुभव के आधार पर	136
2. शांति की नीति का उन्नयन	140
3. शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व के सतत समर्थक	142
4. तनाव-शैथिल्य के लिए संघर्ष	146
दूसरे समाजवादी राज्यों के साथ	152
सोवियत संघ और तृतीय विश्व	160
यूरोप शांति क्षेत्र बने	166
सोवियत संघ—संयुक्त राज्य अमरीका :	
सहयोग एवं प्रतियोगिता	176
सोवियत संघ और चीन	192

V. सोवियत-भारत संबंध	200
1. स्वतंत्रता के सुदृढीकरण का स्वागत	204
2. भारत की दूसरी यात्रा	212
3. मित्रता और सहयोग के मार्ग पर नये चरण	218
VI. राज्याध्यक्ष के रूप में	225



मजदूरों के बीच

उक्रेन के कामेन्स्कोये नगर स्थित डेजिन्स्की इस्पात समग्र के सप्ताह समाचारपत्र में 2 फरवरी 1935 को इस आशय की एक रिपोर्ट प्रकाशित हुई कि आर्सेनियेव धातुकर्म संस्थान से 68 इंजीनियर स्नातक बनकर निकले हैं। इसके साथ ही शीर्षस्थ चार स्नातकों के चित्र भी छापे गये थे। इनमें से एक का नाम था लियोनिद ब्रेज्नेव।

इस रिपोर्ट के रचयिता ने ब्रेज्नेव के बारे में यह लिखा था . “मेरी समझ में नहीं आता कि यह व्यक्ति इतनी अधिक शक्ति और कार्यक्षमता कहाँ से प्राप्त करता है। मजदूर का बेटा होने के साथ-साथ उसने स्वयं ही कारखाने की भट्टी में कोयले झोकने वाले और एक फ़िटर के रूप में काम किया है ..कारखाने से उसे पार्टी के आर्थिक कार्य के लिए भेजा गया। उसकी दिनचर्या अत्यन्त व्यस्त और कठोर थी। इसी व्यक्ति ने हमारे संस्थान में अध्ययन किया। वह हमारा श्रेष्ठ पार्टी टोली सगठनकर्ता था...और वह अपनी कक्षा में सबसे आगे था तथा उसने अपने डिप्लोमा-प्रबन्ध के लिए सर्वाधिक अंक प्राप्त किये...अब उद्योग क्षेत्र में प्रवेश लेते समय इस युवा इंजीनियर के अन्दर काफ़ी-कुछ अर्जित करने की संभावनाएँ मौजूद हैं...मेरा एक विश्वास है कि यह व्यक्ति निश्चय ही सब कुछ अर्जित करेगा...मैं ऐसा इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि यह व्यक्ति साहसी है।”

अतीत के उन दिनों में उनके बारे में उक्त शब्द उस समय व्यक्त किये गये थे जब उनको यह आशा तक नहीं थी कि एक दिन वे सोवियत सभ के अमाधारण

राजनीतिक नेता व राजनेता बनेंगे। उनका जन्म कट्टर मेहनतकश परिवार में हुआ। मेहनतकश वर्ग के बानावरण में, जिसमें वे उत्पन्न हुए और जिसके साथ उन्होंने हमेशा अपना सम्बन्ध बनाये रखा, उनके विचारों, विश्व दृष्टिकोण व चरित्र को मशक्कत ढंग से प्रभावित किया।

1. कामेन्स्कोये में बचपन

लियोनिद ब्रेज़नेव ने जिम प्रकार से अपने बाल्यकाल का उल्लेख किया है उसमें हम उनके जीवन की उस अवधि का सजीव चित्र दिखायी देता है।

ज़ारशाही रूस का विशिष्टतापूर्ण गाँव कामेन्स्कोये अपने सड़क के किनारे बने छोटे-छोटे एकमंजिला मकानों व जीर्ण-शीर्ण इमारतों, ऊबड़-खाबड़ सड़कों के साथ भदय नीपर नदी के दक्षिण छोर पर स्थित गुबर्निया की राजधानी येकातेरिनोस्लाव के निकट स्थित था। अगर इन क्षेत्रों में औद्योगिक युग की "लौह एड़ी" (जैसा कि जैक लण्डन ने कहा होता), दक्षिण रूस नीपर धातुकर्म कम्पनी की इस्पात मिल का निर्माण न हुआ होता तो ये भी ज़ारशाही रूस के दूसरे छोटे-छोटे गाँवों से भिन्न न होता। कामेन्स्कोये में ही उद्योग के धातुकर्म उद्योग के केन्द्र का आविर्भाव हुआ।

याकोव ब्रेज़नेव और उनका परिवार—उनकी पत्नी और पुत्र इल्या—उन हजारों आदमियों में से थे जो काम की खोज में कुर्स्क गुबर्निया से कामेन्स्कोये आये थे। दूसरों की तरह उन्हें भी इस्पात संयंत्र में काम मिल गया। जैसे ही इल्या बड़े हुए, उनके पिता उन्हें भी मिल में ले गये। इल्या शीघ्र ही इस्पात कर्मियों के परिवार के सदस्य बन गये और उन्होंने अपने समवयस्कों के बीच अपना स्थान बना लिया। वही उनकी भेंट इमी संयंत्र में काम करने वाले एक मजदूर की पुत्री नताल्या से हुई और उन्होंने उसके साथ विवाह कर लिया। शीघ्र ही उनके घर पुत्री का तथा 1906 में पुत्र ब्रेज़नेव का जन्म हुआ। लियोनिद भी ऐसे परिवार के इस्पात कर्मियों की तीमरी पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करने हुए बाद में संयंत्र के इस्पात गलाई विभाग में काम करने गये, जिसका जीवन पूरी तरह संयंत्र के साथ जुड़ा था। इस्पात कर्मों ब्रेज़नेव-परिवार को संयंत्र का वंश कहा करते थे।

बाल्यकालीन अवधि में लियोनिद का पालन-पोषण भी मेहनतकश वर्ग के परिवारों के बच्चों जैसी परिस्थितियों में ही हुआ। वे अपने जीवन में गाँव पर छाये हुए संयंत्र के विशालकाय ढाँचे से काफ़ी पहले ही परिचित हो गये थे। वे अकसर ही स्नान में गाना बाँधकर उसे अपने पिता के पास पहुँचाने मिल के गेट तक दोड़ते हुए जाते थे।

किशोर लियोनिद गांव की धूलभरी सड़कों पर सेला करते थे और तेज गर्मियों के दिनों में वे दूसरे बच्चों के साथ चौड़ी, गहरी नीपर नदी में तैरने की होड़ करते थे। घर में अपने बड़ों की बातों को वे ध्यानपूर्वक सुना करते थे। ये बातें हमेशा संयंत्र, इसके स्वामियों व कठोर परिश्रम के बारे में, कम पारिश्रमिक, दिन-प्रतिदिन की निराशाओं व चिंताओं के बारे में होती थीं। बोल्शेविकों द्वारा उन दिनों प्रसारित पेम्फलेट में संयंत्र की कार्य-सम्बन्धी परिस्थितियों का उल्लेख किया गया था :

“कामेन्स्कोये संयंत्र जैसी असहनीय परिस्थितियाँ शायद ही कहीं और दिखायी दें। काम सारे साल बिना छुट्टियों के चलता रहता है। लोग लगातार 12 घंटे और कभी-कभी 18 घंटे तक काम करते हैं। हमारे श्रम से मालिकों को होने वाला मुनाफा इन खून चूसने वालों के लिए काफी नहीं है और वे हमारे ऊपर ज़ुमाना ठोकने का बहाना ढूँढ़ते रहते हैं। क्या 13 में 35 हबल मासिक पर भूख को दूर रखने की कल्पना की जा सकती है ?

“हमें सूटते हुए भी प्रबन्धमंडल दिन में करीब-करीब प्रत्येक मिनट भालियों द्वारा हमारा अपमान करता रहता है। हमें कभी-कभी तो फोरमनों व इजीनियरों के लात-धूसों का शिकार होना पड़ता है। हर कदम पर हमारी इमानियत को पैरो-सले रौंदा जाता है।

“हम दिन-रात काम करते हैं और अपने मालिकों की जेबें भरने तथा अपना पेट खाली रखने के लिए गदगो के बीच जीते हैं।”

रोपपूर्ण और अपमानित श्रमिकों ने इस पेम्फलेट को एक-दूसरे से माँग-माँग कर पढ़ा।

गाँव के अन्य किशोरों की तरह लियोनिद भी जल्दी ही यह समझ गये कि उनका सम्बन्ध सामाजिक सीढ़ी की सबसे निचली पेंडी वाले वर्ग से, उन बदनसीब व्यक्तियों से है जिनकी एकमात्र दौलत कठोर श्रम करने से संचित पड़ गये उनके अपने हाथ हैं। दूसरे किशोरों की तरह उन्हें मालूम था कि लोगों का एक-दूसरा वर्ग भी है जिसे श्रम का अर्थ भी मालूम नहीं है और जो उनके व उनके मित्रों के परिवारों के श्रम पर मजे की जिन्दगी बिताता है।

कामेन्स्कोये में दूसरे वर्ग के ये लोग जहाँ तक सम्भव था कारखाने के नजदीक बने छोटे-छोटे जीर्ण-शीर्ण मकानों से दूर रहते थे। वे अपर कालोनी के नाम से मशहूर इलाक़े में रहते थे जहाँ के मकान ईंटों से बनाये गये थे जिन पर ताज़ा रंग किया गया था और जहाँ सेब और आलूबुन्दारे के पेड़ थे। लियोनिद को जल्दी ही पता चल गया था कि मजदूरों को यहाँ आने की इजाज़त नहीं है। न ही उनकी

उन मजदूर-संघों के हानों में जाने की इजाजत थी जिनकी अलंकृत छतों से बहुत अच्छे किस्म के झाड़ फानूस लटकते होते थे। अक्सर ही अपर कालोनी की प्रार्थना में मर्गनी की धुने सुनायी देनी थी जो इस बात का प्रतीक होती थी कि मध्य के प्रबन्धमंडल और वरिष्ठ तकनीकी अधिकारियों के लिए बालरूम नृत्य चल रहा है। कभी-कभी इम्पान कमियों के बच्चे दीवारों पर चढ़कर मालिकों का टनिम आदि खेलते हुए देखा करने थे।

नव-निर्मित रेल मार्ग द्वारा येकानेरिनोस्लाव के अलौह धातु से सम्पन्न निट्कर्वनी क्रिवोई रंग क्षेत्र में जुड़ जाने पर गांवों का तेजी से विकास होने लगा। पोलिश व्यापारियों ने अपने वेल्जियमवासी और फ्रेंच भागीदारों के साथ मिलकर दक्षिण रूस त्पार धातुकर्म कम्पनी में पर्याप्त पूंजी लगायी। विकसित पूंजीवाद द्वारा उनकी जमीनें छीन लिये जाने के बाद काम की खोज में वहाँ किसानों का जमघट लग गया। रूस का गठन करने वाली अनेक जातीयताओं के लोग मिल में आये। विशेषकर उक्रेन, वेल्ोरूस तथा मध्य रूस से काफ़ी संख्या में लोग आये।

लियोनिद उन बच्चों के साथ खेलते थे जिनके माता-पिता इस विशाल देश की भिन्न भाषाएँ बोलते थे। लेकिन उन सबकी एक सामान्य भाषा थी—निर्धनता की भाषा।

इस गणतन्त्र के शुरू में रूस में गहरे सामाजिक राजनीतिक अन्तर्विरोधों की बहुलता थी। जनसाधारण अत्यन्त बुनियादी अधिकारों से वंचित था। लोग निर्धनता, भुखमरी और बीमारी के बीच जीवनयापन करते थे। स्थानीय तथा विदेशी जमींदार और पूंजीपति निरंकुश शासन पर निर्भर करते थे। वे पुलिस और मशम्र सिपाहियों के जरिये लोगों पर “नियंत्रण” रखते थे। राष्ट्रीय चेतना के संरक्षक, जैसा कि उन्हें उस समय कहा जाता था—गोर्की, तोल्स्तोय और चेखव जैसे लेखकों ने—जनता की दुखद स्थिति के बारे में जोरदार ढंग से लिखा। जनता के अन्दर भरे हुए प्रचल अमनोप ने एक तूफ़ान का, 1905 की क्रांति का, मार्ग प्रशस्त किया। लेकिन ने इसे अक्टूबर क्रांति के सवेश पूर्वाम्यास की संज्ञा दी जो 1917 में सम्पन्न हुई।

यह वह समय था जब मेहनतकश वर्ग का संख्या और संगठन की दृष्टि से विकास हुआ और इसने काफ़ी अधिक राजनीतिक अनुभव प्रदर्शित किया। इस गणतन्त्र के शुरू में लेनिन द्वारा गठित कम्युनिस्ट पार्टी मेहनतकश वर्ग के क्रांतिकारी विचारों व गतिविधियों का मुख्य स्रोत थी। 1917 की ही बात है, जब नयी शक्ति शक्ति ग्रहण कर रही थी, कि किशोर लियोनिद ब्रेजनेव ने परिपक्व होना

शुरू किया। उनका जीवन उनके समकालीनों के जीवन से परस्पर जुड़ गया।

बोलशेविकों ने ज़ारशाही निरंकुशता के विरुद्ध संघर्ष में कोई कसर बाकी न रखी। उन्होंने सच्चाई की खातिर, जिसे वे मेहनतकश वर्ग के सामने ला रहे थे, कठोर सजाओं और जेल यात्राओं को सह्य। उनका अनयक कार्य कामेन्स्कोये में भी महसूस किया गया। पाली खत्म होने पर लियोनिद मिल गेट पर हमेशा अपने पिता से मिला करते थे। घर लौटते हुए उनके पिता अक्सर ही उन्हें ऐसी बातें बतलाते थे जिन्हें उन्हें सारे जीवन-भर याद रखना था। उन्होंने उनको दिसम्बर 1903 को हड़ताल के बारे में बतलाया जब दो सिर वाले बाइ पक्षी का शाही चिह्न मिल गेट से फाड़कर कीचड़ में फेंक दिया गया था। उन्होंने उनको 1905 और 1906 की घटनाओं के बारे में बतलाया जब गोली बर्षा के बावजूद कामेन्स्कोये की सड़कों पर साल झड़े फहरा रहे थे। निरंकुशता को चुनौती देने वाले ये झड़े प्रत्येक सड़क पर फहराये गये क्योंकि ऐसी एक भी सड़क न थी जिसके निवासियों ने कई दिनों तक चलने वाली इस हड़ताल में भाग न लिया हो।

1915 में जब मिल में कई हड़तालें हुईं, लियोनिद लगभग 9 वर्ष के थे। दूसरे बच्चों की तरह उन्होंने भी उस समय जब मजदूरों ने मिल-मालिकों से रियायतें हासिल कर ली, मजदूरों के रूढ़ सत्त्व और उत्साह को महसूस किया।

अप्रैल 1916 में कामेन्स्कोये इस्पात कर्मियों की हड़ताल ऐसी ही एक शक्तिशाली कार्यवाही थी जो प्रथम विश्व युद्ध के दौरान येकतेरिनोस्लाव गुबनिया में मेहनतकश वर्ग की अत्यधिक महत्वपूर्ण कार्यवाही थी। इसकी शुरुआत। अप्रैल को उस समय हुई जब मिल मालिकों ने अधिक मजदूरों और 8 घंटे के कार्य-दिवस की मजदूरों की माँग को ठुकरा दिया। बॉयलर चलाने वालों ने, जिनकी संख्या 450 थी, सबसे पहले अपने औज़ार रख दिये। प्रबन्धमंडल ने यह घोषणा करते हुए कि इन सबको काम से निकाल दिया गया है, उनके विरुद्ध कदम उठाये। बॉयलरकर्मियों के साथ एकजुटता में धमनभट्टी में, नयी और पुरानी खुले मुँह वाली भट्टियों में तथा दूसरे विभागों में काम रक गया। हड़ताल सारी मिल में फैल गयी जिसमें 7000 में अधिक व्यक्ति शामिल हो गये। पाँच में से केवल दो धमनभट्टियाँ ही चालू थी जिन्हें उन मुदबन्दियों द्वारा चलाया जा रहा था जिनको हर समय गोली में उड़ा दिये जाने का खतरा था। समस्त इस्पातकर्मियों ने एक अतिरिक्त माँग—बॉयलरकर्मियों को पुनः वापस लो—के साथ अपनी माँगों पर जोर देना जारी रखा।

शीघ्र ही पुलिस और सैनिक शुभक कामेन्स्कोये पहुँच गयी। मिल के प्रबन्धक ने सभी हड़तालियों को काम से निकाल दिया। बीमियों मजदूर गिरफ्तार

कर लिये गये और 360 से अधिक इस्पातकर्मियों को जबरदस्ती ज़ारशाही सेना में भर्ती कर ग्राह्यों में भेज दिया गया। लेकिन हड़ताली अपनी बात पर डटे रहे। उन्होंने सभी काम शुरू किया जब प्रवन्धमंडल अनेक श्रेणियों में वेतन वृद्धि करने पर सहमत हो गया।

नियोनिद तथा दूसरे बच्चों ने अपने अग्रजों के जीवन के इस दुर्घटन नाटक के परिणाम की साँम रोककर प्रतीक्षा की। लियोनिद की आँखों के सामने तीक्ष्ण वर्ग संघर्ष प्रकट हो गया।

अनेक वर्षों बाद लियोनिद ब्रेजनेव ने कहा, "जीवन के प्रति मेरी अपनी धारणा ने कारख़ाने के जीवन द्वारा, मज़दूर के विचारों और आकांक्षाओं के द्वारा, जीवन के प्रति उसके दृष्टिकोण के द्वारा स्वरूप ग्रहण किया। उन वर्षों की शिक्षा भुलाई नहीं जा सकती।..."

आठ वर्ष की आयु में इस किशोर ने "युद्ध" शब्द सुना। उन्होंने इसकी भयावहता को उस समय समझा जब उन्होंने अपने मंगेतरों को मोर्चे पर जाने के लिए बिदा करने वाली महिलाओं की भयभीत नज़रें और युवतियों की आँखों के आँसू देखे, जब उन्होंने पड़ोसी घरों में अपने बेटों और पति की मृत्यु के सम्बन्ध में सूचनाएँ प्राप्त करने के बाद उन्हें रोते देखा।

लियोनिद के पिता ने उन्हें स्थानीय स्कूल में पढ़ने भेजा। यह किशोर काफ़ी परिश्रमी छात्र था। वरना वह 45 छात्रों की कक्षा में, जहाँ उसे तथा मेहनतकश वर्ग के छह दूसरे बच्चों को निःशुल्क पढ़ने की अनुमति प्राप्त हो गयी थी, अपना अध्ययन किस प्रकार जारी रख सकता था। जीर्ण-शीर्ण कपड़े पहने वह सातों लड़के एक साथ रहते थे और किसी को अपने साथ छेड़खानी नहीं करने देते थे। "हम सबने एक-दूसरे की सहायता की लेकिन काफ़ी कठिनाइयाँ बनी रहीं। क्योंकि स्थानीय अभिजात वर्ग के बच्चे तीसरे पहर एकत्रित होते थे और अपने अध्यापकों से अतिरिक्त शिक्षा प्राप्त करते थे", लियोनिद के एक सहपाठी सेगोर्ड अनिमोव ने उन दिनों का स्मरण करते हुए बताया।

इसके बाद 1917 का वर्ष, और इसके साथ फ़रवरी क्रांति आयी। 1905 के बाद रुस के बुनियादी स्थानांतरण में यह दूसरा महत्वपूर्ण चरण था। फ़रवरी क्रांति ने ज़ारशाही को उखाड़ फेंका और निरंकुशता को नष्ट कर दिया। तथापि, मेहनतकश-जन की ग़हन आकांक्षाओं व आशाओं की पूर्ति नहीं हुई। फ़रवरी क्रांति ने जनता को मक्की मक्का प्रदान नहीं की और इसने घोषण व दमन का उन्मूलन नहीं किया। ये बात केवल समाजवादी क्रांति द्वारा ही अर्जित की जा सकती थी जो उस वर्ष बाद में नेनिन की प्रभुयता में बोल्शेविकों के नेतृत्व में

सम्पन्न हुई। नीपर स्थित इस्पात संयंत्र के गिरं सूझानी घटनाएँ घट रही थी। बोलशेविक निरंकुशता के अवशेषों का सफाया करने के लिए निर्णायक संघर्ष के लिए मेहनतकश-जन का आह्वान कर रहे थे। कामेन्स्कोय के मजदूरों ने ज़ारशाही अधिकारियों को पदच्युत कर दिया, पुलिस से हथियार ले लिये थे तथा मजदूरों के डिपुटियों की कामेन्स्कोय सोवियत का चुनाव कर लिया था। इसके अलावा उन्होंने लडाकू दस्तों का गठन किया जिन्हें मई व जून 1917 में लाल रशको की इकाई के रूप में पुनर्गठित किया गया। इस इकाई का गठन स्वयमेवकों में हुआ था लेकिन इसमें अत्यन्त विश्वसनीय मजदूरों की पांतों के परोक्षित योद्धा, मेहनतकश वर्ग के श्रेष्ठतम प्रतिनिधि भी शामिल थे। वचपन की यादें आमतौर से गहरी होती हैं। ब्रेज्नेव, जो उस समय 11 वर्ष के थे, यह बात कभी नहीं भूलें कि अक्टूबर क्रांति नीपर के तट तक, उनके अपने नगर में, जहाँ सोवियत सत्ता के समर्थकों को, जर्मन आक्रमणकारी तथा स्थानीय प्रतिक्रांति दोनों से ही लड़ना पड़ा किम प्रकार पहुँची। गृह-युद्ध किस प्रकार शुरू हुआ। निर्धन मेहनतकश वर्ग के परिवार, ब्रेज्नेव-परिवार की सामाजिक व राजनीतिक सहानुभूतियाँ क्रांति के साथ थी जो "इण्टरनेशनल" के इन शब्दों "हम नगण्य रहे हैं, लेकिन बनेंगे समर्थ" में जीवन के नये सिद्धान्त को प्रतिध्वनित कर रही थी।

2. स्कूली वर्ष

सम्पूर्ण रूस में सोवियत सत्ता विजयी हुई। इस विजय के लिए तथा क्रांति की उपलब्धियों की प्रतिरक्षा में हजारों साहसी योद्धाओं ने अपना जीवन बलिदान किया। सोवियत जनतंत्र ने, घर में अपने शत्रुओं तथा माय ही विदेशी हस्तक्षेप-कारियों के बर्बर हमलों का करारा जवाब देते हुए नये समाज का निर्माण करना तथा आर्थिक व सामाजिक परिवर्तन लाना शुरू किया।

यह बात इस तथ्य में और भी जटिल हो गयी कि देश गृह-युद्ध तथा हस्तक्षेप के परिणामस्वरूप खडहरों में बदल गया था तथा इसे नये, अज्ञात मार्गों पर अग्रसर होना था। लेनिन के शब्दों में, "जब चुर्चुआड़ी मत्ता में आयी तो इसे परीक्षित वाहन, मुख्यवर्षित मार्ग तथा पहने में परने हुए उपकरण उतराव दें।" मवेहारा के पाम जिन्होंने मत्ता प्राप्त की, कोई वाहन, कोई मार्ग और कुछ भी तो न था।"

ब्रिटिश लेखक एच० जी० वेल्स ने उस समय रशिया इन दिनों में पुस्तक लिखी। पश्चिम जगत में अनेक लोगों ने कल्पना की थी कि वेल्स ने लिखा हुआ है और यह कि हमारे रचनात्मक प्रयास "बोलशेविक" के

अधिक न थे।

इन भविष्यदृष्टाओं ने जनता की असीम रचनात्मक शक्ति पर ध्यान नहीं दिया जो क्रांति द्वारा, अभूतपूर्व उत्साह से प्रेरित अक्तूबर क्रांति की पीढ़ी की मशकत मृजनात्मक सामर्थ्य द्वारा जागृत हो चुकी थी।

लेनिन ने दिसम्बर 1917 में लिखा, "विजय शोषित पक्ष की होगी क्योंकि जीवन और संख्या को दृष्टि से शक्ति, जन-साधारण की शक्ति, निःस्वार्थ, समर्पित, निष्ठावान, नये निर्माण के लिए अग्रसर तथा जागरूक प्रत्येक स्रोत की शक्ति, और तथाकथित 'सामान्य-जन', मजदूरों व किसानों में निहित ऊर्जा व प्रतिभा के व्यापक आरक्षित स्रोत इसके पक्ष में हैं।"

आर्थिक दृष्टि से देश अत्यन्त कठिन परिस्थिति से गुज़र रहा था। राष्ट्रीय अर्थतंत्र बेकार पड़ा हुआ था। मिसाल के तौर पर कच्चे लोहे का उत्पादन युद्ध पूर्व स्तर से 3 प्रतिशत नीचे गिर चुका था। सूती वस्त्रों का वार्षिक प्रति व्यक्ति उत्पादन एक मीटर से कम था। डबल रोटी तथा जीवन की साधारण जरूरतों की पूर्ति करने वाली सामग्री का अभाव था। इसके बाद लेनिन की नयी आर्थिक नीति की रणनीति, औद्योगीकरण की नीति का, गोएंटरो योजना (रूस के विजलीकरण की योजना), और इसके साथ ही देशांत क्षेत्रों में सरकारी समितियों की योजना का आविर्भाव हुआ जिनमें वैज्ञानिक विश्लेषण की शुद्धता को किसान मनोवृत्ति के गहन ज्ञान के साथ जोड़ा गया।

तीसरे दशक के शुरु में लेनिन का सिद्धान्त और व्यवहार के क्षेत्र में कार्य अत्यन्त महत्वपूर्ण था। उन्होंने सामाजिक निर्माण की वैज्ञानिक दृष्टि से अभिपुष्टि सुसंगत व्यवस्था का निरूपण किया और इसे क्रियान्वित किया।

कामेन्स्कोये में सोवियत अधिकारियों को अनगिनत समस्याओं का सामना करना पड़ा जिनमें से प्रत्येक एक-दूसरे से कहीं ज्यादा जटिल थी। मिल रुका पड़ा था—भट्टियाँ बन्द हो चुकी थीं और गाँव खाली पड़े थे। गाँव में, जो नगर के आकार में विकसित हो गया था, सर्वत्र टूटी-फूटी ईंटों और मकानों के ढेर दिखायी देते थे।

त्रियोनिद ब्रेज़नेव ने बाद में इस अवधि का उल्लेख करते हुए कहा: "मुझे अपने और अपनी आयु के लड़कों के स्कूली वर्षों का स्मरण है। सोवियत हम विजय-युद्ध द्वारा तथा इनके बाद हमारी क्रांति को असफल करने का प्रयास करने वाले उगोदारों, पूँजीपतियों तथा विदेशी हस्तक्षेपकारियों के विरुद्ध गृह युद्ध द्वारा ध्वस्त हो चुका था। अव्यवस्था और भुगमरी अभूतपूर्व स्तर पर थी। उन कठिनाइयों ने भरे दिनों में, जब हमने व्यवहार्यतः प्रत्येक बात में मितव्ययता की,

लेनिन, सभी कम्युनिस्ट तथा सोवियत सत्ता बन्धों को भोजन और वस्त्र प्रदान करने के लिए और उनको पढ़ना और लिखना सिखाने के लिए यथाशक्ति कार्य कर रहे थे।"

1921 में नवोदित सोवियत जनतंत्र एक भयावह विपदा—मूखा और अकाल—का शिकार हुआ। इस विनाश का केन्द्र वोल्गा क्षेत्र था लेकिन नीपर क्षेत्र सहित देश के दूसरे भाग भी प्रभावित हुए। कामेन्सकोये मुद्रोत्तर अव्यवस्था सहित अत्यधिक खराब समय में गुजर रहा था। मिल अभी बन्द पड़ी हुई थी। कुछ मजदूर अपने तटवर्ती देहात क्षेत्रों को चले गये थे। दूसरे मुद्रर अपने गाँव को चले गये। लियोनिद के जीवन में, जो 15 वर्ष के हो चुके थे और अपनी स्कूली शिक्षा पूरी कर चुके थे, नयी अवधि का सूत्रपात हुआ।

उन वर्षों में लड़के जल्दी ही परिपक्व हो जाते थे। लियोनिद ने जहाजी कुत्ती के रूप में काम करना शुरू किया क्योंकि वह लम्बे-चोड़े और हृष्ट-गुष्ट थे, लेकिन अपनी ज्ञानपिपासा के कारण उन्होंने कुर्क स्मित भूमि-सुधार व सर्वेक्षण तकनीकी विद्यालय में प्रवेश ले लिया।

अपने आपमें महत्वपूर्ण होने के कारण भूमि संगठन व सर्वेक्षण ने उन वर्षों में विशेष महत्व अर्जित कर लिया था। इसका अर्थ मात्र सर्वेक्षण और सीमांकन करना ही नहीं था बल्कि भूमि के, जो अब जनता की सम्पत्ति बन गयी थी, विवेकपूर्ण ढंग से प्रयोग की व्याख्या भी करना था। नवोदित सोवियत राज्य ने ग्रामीण अभिजात्य-वर्ग की सम्पत्ति का राष्ट्रीयकरण किया और यह लाखों, करोड़ों एकड़ भूमि किसानों में बाँट रही थी। भूमि को किसानों को सौंपने में तथा सड़को व निर्माण उद्योगों की योजना बनाने भूमि सर्वेक्षक तथा मयोजक की महत्वपूर्ण भूमिका थी।

भूमि-सर्वेक्षक के रूप में प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद ब्रेज्नेव ने संगठनकर्ता और नेता के रूप में अनुभव प्राप्त करना शुरू किया।

तकनीकी विद्यालय से स्नातक बनने के बाद उन्होंने बेलोहस, कुर्क गुबर्निया तथा उराल क्षेत्र में भूमि-सर्वेक्षक के रूप में काम किया। स्वेर्दलोव्स्क क्षेत्र में उन्हें मेहनतकश-जन के डिपुटियों की विमेंत जिला सोवियत के लिए चुना गया। उन्होंने भूमि विभाग की अध्यक्षता की और अन्ततः उन्हें जिला कार्यकारिणी समिति का उपाध्यक्ष नियुक्त किया गया।

ब्रेज्नेव काफी मिलनसार थे और वे हमेशा अपनी आयु के ऐसे व्यक्तियों के बीच रहे जो उत्साही और जिज्ञासापूर्ण थे तथा जिन्होंने नये विश्व के निर्माण को अपनी प्रिय वस्तु समझा।

लियोनिद तरुण कम्युनिस्ट लीग (कोम्सोमोल) के सदस्यों से परिचित हुए और उन्हें मिला बनाया। उन वर्षों में कोम्सोमोल सदस्यों की संख्या अपेक्षाकृत कम थी—सम्पूर्ण विस्तृत देश में 3,00,000 से थोड़ी अधिक थी। कारखानों व दफ्तरों तथा गांवों में कोम्सोमोल सदस्यों की संख्या आमतौर से कम होती थी लेकिन वे अपने उत्साह, क्रांतिकारी विचारों व साहस के लिए प्रसिद्ध थे।

1923 में, सत्रह वर्ष की आयु में, लियोनिद कोम्सोमोल में शामिल हुए। बाद में उन्होंने कहा, “कोम्सोमोल मेरे लिए एक श्रेष्ठ स्कूल था। मेरा विश्व दृष्टिकोण तथा अपनी सरकार व पार्टी की नीति के प्रति मेरा दृष्टिकोण वहीं उत्पन्न हुआ।”

वे और अधिक ज्ञान प्राप्त करना चाहते थे। और उनकी ये इच्छा देश में चलने वाले उन कार्यों से मेल खाती थी जिन पर देश अमल कर रहा था। वे धातु-कर्म उद्योग में काम करने की पारिवारिक परम्परा से भी बहुत अधिक प्रभावित हुए। देश में हो रहे व्यापक आर्थिक व सांस्कृतिक रूपान्तरण के लिए निरन्तर बढ़ती संख्या में नये विशेषज्ञों की, विशेष रूप से वैज्ञानिक प्रशिक्षण प्राप्त धातु कर्मियों की जरूरत थी।

1930 में लियोनिद ब्रेज्नेव कामेन्स्कोये लौट आये। उनके पिता पहले ही लौट कर कारखाने में अपने काम पर जाने लगे थे। उनके साथ ही उनकी पत्नी विक्टोरिया तथा उनकी बेटी भी आयी। वे दो कमरों वाले एक छोटे फ्लैट में चले गये। बाद में एक पुत्र का जन्म हुआ। उसी वर्ष लियोनिद ने सायंकालीन धातुकर्म संस्थान में प्रवेश लिया जो नया-नया खुला था।

देश और देश के साथ ही कामेन्स्कोये भी बदल रहा था।

देश में जो कुछ भी हो रहा था—औद्योगीकरण, कृषि का सामूहिकीकरण तथा सांस्कृतिक क्रांति—वह सब नीपर क्षेत्र और कामेन्स्कोये में हो रहे विकास कार्यों में प्रतिबिम्बित हो रहा था। अव्यवस्था तथा अकाल के दौरान बन्द हो गयी मिल ने 1925 में उत्पादन शुरू कर दिया।

मिल ने, जिसे पूरी तरह आधुनिक बना दिया गया था, तेजी से विकास किया। इसके साथ ही विजलीघरों तथा नये कारखानों—रेल के डिब्बे बनाने वाला कारखाना, कोकिंग रनायन संयंत्र तथा नाइट्रोजन उर्वरक संयंत्र—का आविर्भाव हुआ।

इस अवधि का स्मरण करते हुए लियोनिद ब्रेज्नेव ने कहा है : “उन वर्षों में हमें नव बातों में मितव्ययता से काम लेना पड़ता था। लेकिन पार्टी और सरकार ने शिक्षा, विज्ञान व संस्कृति के उन्नयन के लिए इतनी उदारता के साथ धन-

राशि की व्यवस्था की कि समृद्धतम पूँजीवादी देशों को भी ईर्ष्या हो सकती थी। अगर आज विश्व की विज्ञान व संस्कृति के क्षेत्र में सोवियत संघ की उपलब्धियों पर आश्चर्य है तो इन उपलब्धियों की आधारशिला उसी अवधि में रखी गयी थी जब सोवियतों के देश ने स्कूलों व पुस्तकालयों का, मजदूर मकानों का और तकनीकी विद्यालयों का तथा उच्चतर शिक्षा व शोध संस्थानों के ताने-बाने का निर्माण करना शुरू किया था।”

कामेन्स्कोये, सम्प्रति नेप्रोजेक्टिन्स्क शिक्षा में सोवियत नीति का विविधता-पूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करता है। 1920 में, जो एक कठिन वर्ष था, एक तकनीकी विद्यालय की स्थापना की गयी। दस वर्ष बाद इसे सायंकासीन धातुकर्म संस्थान के रूप में बदल दिया गया। इसकी कक्षाएँ शाम को लगा करती थी क्योंकि इसके सभी छात्र उद्योग में कार्य करते थे। वहाँ एक तकनीकी विद्यालय और मजदूर संकाय भी था। यहाँ से स्नातक बनने वालों में से अनेक ने बाद में संस्थान में प्रवेश लिया। आज यह संस्थान, जिसके छात्रों की संख्या 5000 है, सम्पूर्ण देश का प्रसिद्ध अकादमिक व वैज्ञानिक केन्द्र है। अग्रणी वैज्ञानिक, राजनेता तथा व्यवसाय क्षेत्र में कार्यरत कार्यकारी इसके स्नातकों में से हैं।

चौथे दशक के शुरू में कामेन्स्कोये स्थित धातुकर्म संस्थान में अनेक विशिष्टताओं में प्रशिक्षण सुविधा उपलब्ध थी। और उसके छात्रों में लगभग 600 युवक व युवतियाँ शामिल थे। 300 अन्य छात्र उच्चतर इंजीनियरिंग में विशिष्ट धातुकर्म क्षेत्रों—धमन-भट्टी कर्मों, इस्पात चलाने वाले तथा इस्पात बेल्तिट करने वाले—कारखाने के पाठ्यक्रमों में पढ़ रहे थे। छात्रों ने अपने अध्ययन के प्रति अत्यन्त गंभीर दृष्टिकोण अपनाया। उनमें अनेक मेधावी युवजन शामिल थे, जो ऐसा तथ्य था जिसे उनके स्नातक-प्रबन्धों का अध्ययन करने वाले प्रमुख अकादमिक धातुकर्मियों ने नोट किया। इनमें में थ्रेष्ठ को मिल में काम पर ले लिया जाता था।

छात्र के रूप में प्रथम वर्ष के दौरान द्रजनेच ने मिल में अपना काम जारी रखा। सर्वप्रथम वे बॉयलर की भट्टी में कोयला डोकने वाले कर्मों थे, इसके बाद उन्होंने भाप से चलने वाली मशीनों में तेल देने का काम किया, जिसके बाद उन्होंने तेजी के साथ फिटर का काम सीख लिया। उन्होंने कुशलतापूर्वक कार्य किया और अनुभवी मजदूरों से सीखने का यथाशक्ति प्रयास किया। जिस समय उन्हें उत्पादन में अन्य दूसरे अग्रणी व्यक्तियों के साथ धातुकर्म संस्थान (बाद में इसका नाम औद्योगिक संस्थान हो गया) प्रवेश दिया गया उनके मित्रों ने प्रसन्नता व्यक्त की। वयोवृद्ध मजदूरों की स्मरण है कि, ये अच्छे फिटर और हममें भी अधिन अच्छे

गैस-परिष्करण मशीन आपरेटर थे। दूसरे मजदूर उनका सम्मान करते थे। 'मिल्लाइल फ़िलिचकिन, जो गैस खाते में फोरमैन थे, बतलाते हैं : "लियोनिद ब्रेजनेव ने मेरी टीम में काम किया। ईमानदारी तथा अपना कर्तव्य पूरा करने के प्रति लगन, पहल, संगठन क्षमता तथा प्रगति की दिशा में जाने वाली किसी भी चीज़ में रूचि उनके गुणों में से थी। मजदूरों ने उन्हें श्रेष्ठ और विचारशील कामरेड पाया जो व्यावहारिक व साधियों जैसा सहयोग प्रदान करने के लिए मदा तत्पर रहते थे।

3. मजदूर और इंजीनियर

लियोनिद ब्रेजनेव 1931 में कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हुए। उन्हें दो वर्ष पहले उम्मीदवार सदस्य के रूप में लिया गया था। एक मजदूर और छात्र के रूप में उनकी तरफ़ाई द्वारा प्रेरित यह एक स्वाभाविक क़दम था। जीवन का तर्क लियोनिद को नये समाज के निर्माताओं के हरावल में ले आया।

कम्युनिस्टों के उदाहरणों से उन्हें मालूम था कि पार्टी की सदस्यता से किसी प्रकार की मुविधाएँ प्राप्त नहीं होती : इसके विपरीत यह महत्वपूर्ण कर्तव्य सौंपती है।

गैस खाते में ध्रम-उत्पादकता बढ़ाने के प्रश्न पर पार्टी की एक बैठक में विचार-विमर्श किया गया। यह एक तूफानी मामला था। कुछ लोगों ने यह तर्क मानने रखा कि उत्पादकता बढ़ाने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता—उपकरण पुराने और धिमे-पिटे हैं और अगले क़दम के बारे में निर्णय करने में पहले इनको बदलना होगा।

फ़िटर लियोनिद ब्रेजनेव ने बोलना शुरू किया। उन्होंने कहा, देश की ओर अधिक कच्चे लोहे, इस्पात तथा बेल्जिन स्टांक की जरूरत है। लेकिन यह नये उपकरणों के लिए धन की व्यवस्था नहीं कर सकता। अपने देश की सहायता करना मजदूरों का कर्तव्य है। उन्होंने शान्तिपूर्वक और जानकारी वकता के रूप में चर्चा की तथा विस्तारपूर्वक यह बतलाया कि किन-किन पुर्जों को मिल में बनाया जा सकता है और गैस गाने को घमन-भट्टी और खुले मुँह वाली भट्टियों के कार्य पर भार बनने में किम प्रकार रोक जा सकता है।

बैठक ने इस तरंग कम्युनिस्ट में साथ सहमति व्यक्त की। खाते में शीघ्र ही उत्पादकता का उच्चतर स्तर अर्जित कर लिया गया।

एक अप्रत्याशित विपत्ति आ गयी। नीपर के बाढ़ का जल अभिकल्पित ताप विद्युत्‌घर की आधारभित्ता के गहदों तक फैल गया। मशीनरी, भंडारों तथा

अन्य सामग्री के बाढ़ में बह जाने का खतरा उत्पन्न हो गया।

यह रविवार की शाम थी। और युवजन उद्यान में थे। ब्रेजनेव दौड़कर उनके पास गये। उन्होंने बैड (बादक बून्द) को रकने का संकेत दिया। उन युवजन से अपील की जो वहाँ नाच रहे थे तथा उन्हें उद्यान छोड़कर उस भवन-स्थल की ओर तुरन्त चलने के लिए राजी कर लिया जिसे नीपर के जल से खतरा उत्पन्न हो गया था।

यह संधर्ष कई दिनों तक चला। नगर के आपातकालीन बाढ़-नियंत्रण आयोग, ब्रेजनेव जिसके अध्यक्ष थे, द्वारा की गयी अपील के प्रत्युत्तर में सभी छात्र बढ़ते हुए जल स्तर के संधर्ष में शामिल हो गये। बोरो में मिट्टी भरने के बाद उन्होंने एक बांध खड़ा कर दिया और भवन-स्थल को बचा लिया गया।

छात्र के रूप में ब्रेजनेव के बाद के वर्ष भी समान रूप से घटनापूर्ण थे। वे हमेशा ही लोगों के बीच रहा करते थे। उनके साथी और नगर निवासी उनकी चतुराई, तुरन्त सोचने की शक्ति तथा संगठनकर्ता के रूप में उनकी योग्यताओं के लिए उनका सम्मान करते थे।

उन्हे ट्रेड यूनियन समिति का चेयरमैन तथा उसके बाद संस्थान में पार्टी संगठन का सचिव चुना गया। 1933 से 1935 तक वे छात्रकर्म मजदूर संकाय के निर्देशक थे। 1935 में उनके मार्गदर्शन में इसे एक तकनीकी महाविद्यालय के रूप में पुनर्गठित किया गया। मजदूर संकाय शिक्षा का ऐसा रूप है जिसके बारे में अनेक देशों को जानकारी नहीं है। सोवियत राज्य को प्रशिक्षित कामियों की बेहद जरूरत महसूस होने से इसकी उत्पत्ति हुई। इन संकायों में प्रवेश लेने वालों में अधिकांश पुरुष व महिलाएँ जीवन और कार्य के अनुभव सहित परिपक्व आयु वाले थे लेकिन उनमें तकनीकी महाविद्यालय या संस्थान में प्रवेश प्राप्त करने के लिए आवश्यक शिक्षा योग्यता का अभाव था।

ब्रेजनेव संस्थान के शोध-सभाग के कार्य में सक्रिय रूप से लगे थे, जिसका गठन मिल द्वारा अपनी अनेक उत्पादन समस्याओं में से कुछ को हल करने के लिए किया गया था। एक अच्छे संगठनकर्ता को लोगों को प्रेरित करने और उनका नेतृत्व करने की उसकी योग्यता द्वारा जांचा जाता है। ब्रेजनेव ने एक छात्र निर्माण टोली का गठन किया तथा युवजन ने संस्थान के भवन में दो-मंजिलों का समावेश करते हुए प्रशिक्षण के लिए इस्तेमाल की जाने वाली छतन मशीन, दूध बेलन मिल तथा धातु के ताप-उपचार के लिए विभाग उत्पन्न करके दूर-उत्साहपूर्वक काम किया।

प्रफुल्ल व्यक्तित्व वाले ब्रेजनेव ने गाने और नाचने में शामिल होने का हस्त

निकाला। वे सभी जगह संगठनकर्ता के रूप में तथा हमेशा लोगों के बीच रहा करते।

यह वह अवधि थी जब सम्पूर्ण देश एक विशालकाय निर्माण-स्थल बना हुआ था। सोवियत अर्थतंत्र के विकास के लिए बनी प्रथम पंचवर्षीय योजना को निर्धारित समय से पहले ही चार वर्ष तीन महीनों में पूरा कर लिया गया था।

विशाल-स्तरीय सोवियत उद्योग जारशाही रुस की अपेक्षा तीन गुना अधिक वार्षिक उत्पादन कर रहा था। पंचवर्षीय योजना की पूर्ति करना भी कोई आसान बात नहीं थी। लोगों में अभी भी जानकारी और अनुभव का अभाव था : अनेक चीजों का अभाव था। लेकिन लाखों-करोड़ों व्यक्तियों के क्रांतिकारी उत्साह से प्रेरित गहन श्रम-प्रयास ने चमत्कार कर दिया और देश का स्वरूप बदल डाला।

मानचित्रकार निर्माण-कर्मियों का मुकाबला करने में असमर्थ थे। नये कारखानों का निर्माण किया गया तथा उनके गिरे नये नगरों का आविर्भाव हुआ। पाँच वर्षों के दौरान देश में एक-दूसरे से हजारों मील की दूरी पर 1500 औद्योगिक उद्यम चालू किये गये। चन्द उदाहरण : चेल्वाबिन्स्क और त्वाकोव में ट्रैक्टर कारखाने; गोर्की में कार और मशीन औजार बनाने के कारखाने; वाकू और ग्रेजनी में तेल रिफ़ाइनरियाँ; नीपर पर निर्माणाधीन विशाल विजलीघर। नाग्नितोगोर्स्क और कुज़्नेत्स्क में इस्पात मिलों में पहली घमन-भट्टियाँ चालू की गयीं। पंचवर्षीय अवधि के दौरान औद्योगिक विकास की अभूतपूर्व दरें अंकित की गयीं। त्वाकोव ट्रैक्टर संयंत्र का निर्माण 15 महीने में, गोर्की कार संयंत्र का निर्माण 17 महीने में किया गया।

समाचारपत्र इज़वैस्तिया ने “नये उद्योग” शीर्षक के अन्तर्गत विमानों, मशीन औजारों, हार्वेस्टर कम्बाइनों, सिपेटिक रबर तथा घड़ी व दीवाल घड़ी बनानेवाले कारखानों सहित 15 कारखानों की सूची प्रकाशित की। प्रथम पंचवर्षीय अवधि के अन्त तक 1 करोड़ 30 लाख किसान कुटुम्बों को सामूहिक फ़ार्मों के रूप में संगठित कर दिया गया।

उस पंचवर्षीय अवधि में अकतूबर क्रांति से जन्मे नये प्राविधिक बुद्धिजीवी वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाले एक लाख इंजीनियर और तकनीशियन उद्योग में काम करने लगे।

युवा इंजीनियर लियोनिद ब्रेज्नेव इन उच्च दक्षता प्राप्त कर्मियों में से एक थे।

संस्थान से स्नातक बनने के बाद ब्रेज्नेव ने उस राते में जहाँ वे फ़िल्टर के रूप में काम कर चुके थे, पानी-प्रमुख के रूप में काम शुरू किया।

आज वे अपने समयस्कों के उन वर्षों के दौरान के जीवन की चर्चा करते हुए कहते हैं, "अध्ययन करने की उनकी उत्कट अभिलाषा तथा नये विश्व का सत्रिय निर्माता बनने की उनकी प्रबल इच्छा ने उन्हें वास्तविक विशेषज्ञ बनाया। जिनके ज्ञान और श्रम-प्रयासों ने हमारे देश को एक विकसित और शक्तिशाली समाजवादी औद्योगीकृत राज्य के रूप में बदलने में महान भूमिका निभायी।" जिस जीवन का उन्होंने यह वर्णन किया है, वही तो उनका भी जीवन है।

अपनी सामान्य ऊर्जा के साथ उन्होंने अपने-आपको रचनात्मक कार्य में लगाया। अभी वे 30 वर्ष के भी नहीं थे, कि उन्होंने मिद्धान्त के प्रति वचनबद्धता, अपनी धारणाओं के उन्नयन में दृढ़ संकल्प, कार्य-कुशलता और धैर्य को प्रदर्शित किया। सर्वोपरि, उन्होंने अपने सभी साथियों का सम्मान किया।

यह उनका महत्वपूर्ण गुण है। जब उनके सहकर्मी युवा इंजीनियर ब्रेजनेव के साथ अपने कार्य का स्मरण करते हैं तो वे बतलाते हैं कि लोगों के प्रति सम्मान उनके चरित्र का मुख्य गुण था। अपनी जन्मजात मानवीयता के कारण वे नयी समाजवादी व्यवस्था के व्यक्ति थे।

वे अक्सर ही मजदूरों को सम्बोधित करते थे। उनके लिए पार्टी और सरकार की नीति की व्याख्या करते थे और उन्हें बतलाते थे कि विदेशी में क्या हो रहा है।

उनके मंत्रीपूर्ण परामर्श ने लोगों को प्रोत्साहित किया। उन्होंने अनेक को अध्ययन करने तथा अपने आप विकास करने के लिए प्रभावित किया। उनके अनेक सहकर्मियों का कहना है कि वे बाद में उच्च दक्षता प्राप्त विशेषज्ञ बन पाने के लिए उनके ऋणी हैं।

नवम्बर 1935 में लिपोनिद ब्रेजनेव को सोवियत सेना में भर्ती कर लिया गया, जहाँ उन्होंने टैंक यूनिट में काम किया। उन्होंने ट्रास-वैकाल सैनिक जिले की ऑन ड्यूटी यात्रा की। यद्यपि उन्होंने केवल एक वर्ष तक काम किया लेकिन नाज़ी स्वस्तिक की आगे बढ़ती छाया में, यूरोप में युद्ध के वातावरण का विकाम होने लगा था। यह बात महसूस हुई कि विश्व के प्रथम समाजवादी राज्य को शीघ्र ही अस्तित्व के अपने अधिकार के लिए गम्भीर सचर्य करना पड़ेगा। एक बार सैनिक वर्दी धारण करने के बाद ब्रेजनेव ने उसी शक्ति में सैनिक कार्यों में दक्षता हासिल करनी शुरू कर दी जिसके साथ उन्होंने फ़िट्टर के अपने व्यवसाय तथा इनके बाद इंजीनियर के रूप में अपने पेशे को सीखा था। उनको यूनिट की कमान में अनुशासित और समर्पित सैनिक के रूप में उनके नाम का बार-बार किया।

1936 की सर्दियों के अन्त में धूपताम्र, स्वस्थ और सदैव की तरह उत्साही ब्रेज्नेव अपने जन्म-स्थान नेप्रोजेज़िन्स्क लौटे ।

वे मिल में नहीं लौटे क्योंकि उन्हें नेप्रोजेज़िन्स्क धातुकर्म तकनीकी महा-विद्यालय का निदेशक नियुक्त किया गया था । लेकिन मिल के साथ, जहाँ उनके पितामह, पिता, भाई, बहन स्वयं उन्होंने कुल मिलाकर कई दशकों की अवधि तक काम किया था, उनके सम्बन्ध और भी सुदृढ़ हो गये । घमनभट्टी, इस्पात गलाई और बेलन खातों के लिए तकनीकी विद्यालय द्वारा प्रशिक्षित दस कर्मियों की मिल में अत्यन्त आवश्यकता थी । मिल के प्रबन्धमण्डल, इंजीनियरों व फ़ोरमैनो के साथ निरन्तर सम्पर्क रखने के कारण उन्हें मालूम था कि अध्ययन प्रक्रिया में किस बात पर ध्यान देना चाहिए और वे इस बात को निर्धारितकर ने में समर्थ थे कि स्नातक कहाँ काम करेंगे । इसके कारण नये आदमियों का काम के साथ ताल-मेल बैठाने के लिए ज़रूरी समय में कमी हो गयी । ब्रेज्नेव ने अपनी गतिविधि "तकनीकी महाविद्यालय-मिल" की संरचना तक ही सीमित नहीं रखी । उन्होंने नगर के सुधार में कार्यरत कोम्सोमोल सदस्यों के साथ सम्बन्ध स्थापित किया तथा मिल के अनुभवी कर्मियों के साथ छात्रों की मुलाकातों की व्यवस्था की, जिन्होंने उनको ज़ारशाही शासन की परिस्थितियों के बारे में बतलाया । वे नगर के पार्टी कार्यकर्ताओं की बैठकों को अक्सर ही सम्बोधित करते थे ।

दृशिष्ट उत्साह के साथ वे 1937 में अपने नगर के मामलों में भाग लेने लगे और उन्हें मेहनतकश जनता के डिपुटियों की नेप्रोजेज़िन्स्क नगर सोवियत की कार्यकारिणी समिति का उपाध्यक्ष चुना गया ।

एक इंजीनियर उप-महापौर बन गया था । वे नगर-निवासियों की समस्याओं व आवश्यकताओं से, नगर के आधुनिकीकरण से जुड़ गये । ट्राम मार्ग का बाले नगर तक विस्तार करने में सहायता करना उनके प्रथम कार्यों में से था, जिससे मजदूरों को मिल पहुँचने में मदद मिली । नये स्कूलों, व शिशुशालाओं तथा बाल-केन्द्रों का निर्माण किया गया । उस स्थान पर जहाँ कभी टूटी-फूटी झोंपड़ियाँ थीं इंजीनियरों व तकनीशियनों के सदन का आविर्भाव हुआ । अनेक सड़कों और चौकों का निर्माण किया गया । नगर साफ़-सुपरा और अत्याधुनिक बन गया ।

रेल-कार संपर्क के मजदूरों के साथ एक बैठक में ब्रेज्नेव ने रुशी के साथ कहा, "हमारे नेप्रोजेज़िन्स्क को देखिये । इसमें आप एक दर्पण की भाँति हमारे विकास का गौरव देंगे । कामेन्स्कोये का भूतपूर्व गाँव अब भूतपूर्व गति से औद्योगिक नगर के रूप में प्रगति कर रहा है ।"

उप-महापौर के कार्यालय के दरवाजे उन व्यक्तियों के लिए सदा खुले रहते

ये जो उनके पास तरह-तरह के बड़े और छोटे अनुरोधों के साथ जाते थे; व्यक्तिगत स्वामित्व वाले मकानों के निर्माण के लिए सुरक्षित रंगे गंदे क्षेत्र तक चित्रली की लाइन बढ़वाने में सहायता प्राप्त करना, आवास सम्बन्धी समस्याओं को देखना, ये देखना कि छात्रावास की इमारत के निर्माण में कितना व्यय हो रहा है या उन व्यक्तियों से बातें करना जिन्होंने अपने बच्चों की शिक्षा की उपेक्षा की है। कभी भी किसी के अनुरोध की उपेक्षा नहीं की गयी।

मई 1938 में ब्रेजनेव, जो उस समय चत्तीस वर्ष के थे, क्षेत्रीय पार्टी समिति में उत्तरदायी पद पर नियुक्त किये गये। प्रत्यक्षदर्शी स्मरण करते हैं कि वे हमेशा लोगों के बीच, सदैव ही घटनाओं के केन्द्र में रहा करते थे। शीघ्र ही उन्हें क्षेत्रीय पार्टी समिति का सचिव चुना गया।

जनता और उसके जीवन के बारे में उनकी विगद जानकारी तथा उनकी उद्देश्यपूर्णता ने देश के विनाशतम क्षेत्रों में से एक की पार्टी समिति के सचिव के कर्तव्यों को निभाने में उनकी सहायता की।

क्षेत्रफल की दृष्टि से करीब 40,000 हजार वर्ग किलोमीटर के इस क्षेत्र की आबादी उस समय 22,73,000 थी। द्वितीय विश्वयुद्ध से पहले यह क्षेत्र राष्ट्र के अर्थतंत्र में महत्वपूर्ण अंशदान कर रहा था। यहाँ देश के कच्चे लोहे के उत्पादन के 19.7 प्रतिशत, इस्पात के 16.5 प्रतिशत, बेल्जियम स्टील के 18.2 प्रतिशत, पाइपों के 28.2 प्रतिशत, कोकिंग कोयले के 15 प्रतिशत, मैंगनीज धातु के 33 प्रतिशत तथा लौह-धातु के 61.4 प्रतिशत का उत्पादन होता था। इस क्षेत्र ने देश के गल्ले के पर्याप्त भाग का उत्पादन किया। शिक्षा—माध्यमिक विशेषीकृत तथा उच्च-तर—का तेजी से विकास हो रहा था। अनेक संस्कृति-प्रासाद, सैकड़ों क्लब और पुस्तकालय ज्ञान और संस्कृति के बारे में जानने के इच्छुक लोगों से हमेशा भरे रहते थे।

क्षेत्रीय समिति के प्रचार सचिव ने जीवन के किसी भी क्षेत्र की, भले ही यह उद्योग, कृषि, विज्ञान, संस्कृति या जन-स्वास्थ्य का क्षेत्र रहा हो, उपेक्षा नहीं की। उन्होंने जन-कल्याण से सम्बन्धित प्रत्येक बात में दिलचस्पी ली। कारखानों में उन्होंने मजदूरों की तीसरी पंचवर्षीय योजना के कार्यों के बारे में बतलाया। मजदूर उनकी बातें ध्यानपूर्वक सुनते थे और उनके शब्दों पर सोच-विचार करते थे। जब प्रत्येक व्यक्ति सक्षम के बारे में जान जाता था तो इसकी दिशा में मार्ग संक्षिप्ततर और सरलतर हो जाता था।

वे देहात क्षेत्र के कम्युनिस्टों से अक्सर ही मिलते रहते थे और उन्हें समस्याओं को ध्यानपूर्वक सुनते थे। वे हर बात की यहाँ तक कि इतनी छोटी-छोटी

बातों की पूछताछ करते थे कि संस्कृति-प्रासादों और क्लबों में कितने शौकिया क्लामण्डल काम कर रहे हैं। भले ही वह कितने भी व्यस्त रहे हों वे क्षेत्रीय समिति की महिलाकर्मों से उसके पौय के स्वास्थ्य के बारे में पूछना, क्षेत्रीय समिति के एक अधिकारी से सशस्त्र सेनाओं में काम कर रहे उसके बेटे से प्राप्त होने वाले समाचारों के बारे में पूछना या टाइपिस्ट टोली की लड़की को उसके विवाह पर बधाई देना नहीं भूले।

उनके अन्दर लोगों की बात सुनने की रुचि थी और इसी बात ने उनको अपनी खुशियाँ और चिंताएँ उनके सामने रखने को प्रोत्साहित किया। वे सब उनके अन्दर हार्दिकतापूर्वक विचारशील व्यक्ति को देखते थे।

उसकी स्मरण शक्ति काफ़ी अच्छी थी और वे सैकड़ों नामों, तथ्यों तथा आँकड़ों को याद रखते हुए लोगों में गहरी दिलचस्पी लेते थे। उन्होंने अपने सहयोगियों को उपयोगी सलाह दी और उनसे सीखा।

अपने आप उत्तरदायित्व की असाधारण भावना महसूस करते हुए उन्होंने अपने अधीनस्थ कर्मचारियों से अपने कार्य के प्रति वैसा ही दृष्टिकोण अपनाने को कहा। काम में किसी प्रकार की ढील उन्हें पसन्द न थी।

1940 की सर्दियों में लियोनिद ब्रेज्नेव क्षेत्रीय पार्टी समिति के कृषि सचिव थे। नेप्रोपेन्रोव्स्क क्षेत्र के अनेक सामूहिक किसानों को कार्य में सफलताओं के लिए आदर्शों व पदकों से विभूषित किया गया। इस क्षेत्र को इसकी उपलब्धियों के आधार पर सोवियत कृषि प्रदर्शनी में सहभागी के रूप में घोषित किया गया।

ब्रेज्नेव ने देहात क्षेत्र में काफ़ी भ्रमण किया। सामूहिक किसानों से मुलाकातों की तथा कृषिविज्ञानियों की सिफ़ारिशों को सुना। उन्होंने फसल की एक किस्म के दूसरी से श्रेष्ठ होने के लाभों को सुनिश्चित किया। सामूहिक किसानों से पूछा कि सामूहिक फ़ार्म के अध्यक्षों की कार्यपद्धतियों के बारे में उनके क्या विचार हैं, तथा सामान्य तौर पर उन्होंने छोटी-छोटी बातों की जानकारी प्राप्त की।

जनता के साथ निरन्तर सम्पर्क बनाये रखने तथा उनके बीच अपने कार्य के माध्यम से उनके ज्ञान का क्षेत्र विस्तृत हो गया। यद्यपि वे कृषि के प्रमुख थे, वे उद्योग सम्बन्धी मामलों से भी इतना अधिक अच्छी तरह परिचित थे कि क्षेत्रीय पार्टी समिति ब्यूरो में उनके सहयोगी अक्सर ही उनसे परामर्श लेते थे।

परन्तु उन जैसे व्यक्तियों के अनधिक प्रयासों का ही परिणाम था कि सोवियत-जन तीव्र आर्थिक व सामाजिक प्रगति एक पल में समर्थ हुए। सोवियत सत्ता की उपलब्धियों के प्रति सर्वत्र ध्यान आकृष्ट हुआ। विचारों के उम्र प्रबल गति और सोवियत-जन की समर्थता भावना को देखा जिसने मान से बनाते में ही मिट्टे

रूस को एक औद्योगिकीकृत देश के रूप में बदल दिया।

फ्रांसीसी लेखक रोम्यां रोलां ने लिखा है कि: "सोवियत संघ में व्याप्त विश्वास सामाजिक खुशहाली में कट्टर और अजेय विश्वास है। मार्क्सिज्म गोर्की ने, जिनका जन्म और सातन-यासन पुराने रूस के निराशावादी वातावरण में हुआ, लेनिन को यह कहते हुए प्रशंसा के साथ चर्चा की कि उनका विश्वास था कि सघन मानवक्रांति की भावी खुशहाली का यह सुन्दर स्वप्न सच होगा... विगत 18 वर्षों में क्रांति द्वारा पुनर्जन्मित लाखों-करोड़ों के बीच यह विश्वास इतना बढ़ है कि यह पहचानों को हिसा डालने में भी सक्षम है।... प्रगति के मार्ग पर अग्रसर दुनिया के साहसिक आशावाद से उत्पन्न उत्साह और शक्ति के इस ज्वार का सामना करना असम्भव है..."

सामाजिक प्रगति तथा कम्युनिस्ट पार्टियों के गिद जनता की एकता में इस विश्वास तथा क्रांति के प्रति समर्पण भावना ने समाजवाद के भौतिक और तकनीकी आधार का निर्माण करने में तथा इसके बाद फ्रांसिस्ट आक्रमकों के विरुद्ध युद्ध जीतने में सोवियत संघ को सक्षम बनाया।

यह बात जानते हुए कि नाज़ी जर्मनी सोवियत संघ के विरुद्ध युद्ध छेड़ने की तैयारी कर रहा था, देश ने अपनी प्रतिरक्षा क्षमता में वृद्धि करने के कदम उठाये। नैप्रोपेत्रोव्स्क क्षेत्र में कुछ संयंत्रों ने शस्त्रास्त्र उत्पादन का काम शुरू कर दिया। ऐसी स्थिति में संघीय पार्टी समिति के पूर्णाधिबेशन ने ब्रेज़नेव को प्रतिरक्षा उद्योग का सचिव चुना। अब उन पर फ्रांसिस्ट आक्रमकों को मुंह तोड़ उत्तर देने के लिए इस क्षेत्र में की जा रही तैयारियों का भार था पड़ा।

फ़ासिज्म के विरुद्ध संघर्ष की ज्वाला में

1. युद्ध के पहले महीने

लियोनिद ब्रेज्नेव को स्मरण है कि युद्ध किस तरह शुरू हुआ : शनिवार 21 जून 1941 की रात, युद्ध से पहले की अन्तिम शांतिपूर्ण रात, पहले शनिवारों की रातों में अलग न थी। उद्यानों व पार्कों में घास बँट बज रहे थे। उल्लसित भीड़ बबूल के पेड़ों की महक का आनन्द लेते हुए नेप्रोपेत्रोव्स्क की सड़कों पर घूम रही थी। लोग मप्ताहान्त में विश्राम कर रहे थे और योजना बना रहे थे कि इतवार किस तरह मनाया जाये। लेकिन क्षेत्रीय पार्टी समिति में उस शनिवार को देर गये रात तक बत्तियाँ जल रही थी। समिति के व्यूरो द्वारा अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय, लाल सेना में राजनीतिक कार्य के लिए कम्युनिस्टों को मनोनीत करने के विषय पर विचार-विमर्श किया जा रहा था। ये बैठक पूर्वगामी महीनों के दौरान समिति के कार्य का तार्किक परिणाम थी जब पार्टी की केन्द्रीय समिति और सोवियत सरकार के निर्णय के अनुरूप देश की प्रतिरक्षा क्षमता को प्रत्येक क्षेत्र में सुदृढ़ बनाने की कार्यवाही की जा रही थी। इसी कारण नेप्रोपेत्रोव्स्क क्षेत्र में प्रतिरक्षा उद्योग के लिए क्षेत्रीय पार्टी समिति के मन्त्रि का पद बनाया गया था। इस क्षेत्र की आर्थो-निक व आर्थिक क्षमता पर्याप्त थी। जैसा कि पहले बताया जा चुका है कार्य के इस महत्वपूर्ण क्षेत्र की प्रमुखता ब्रेज्नेव कर रहे थे।

युद्ध होने की स्थिति में संघर्षों का निर्वाह गति में कार्य करना सुनिश्चित बनाने के लिए तबोंपर उनमें ने प्रत्येक की सम्भावनाओं की अच्छी जानकारी

प्राप्त करना आवश्यक था। उस न्यूनतम अवधि को निर्धारित करना आवश्यक था जो इनको युद्ध-संबंधी उत्पादन करने में तथा सशस्त्र सेनाओं की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए दस मजदूरों के पुनः प्रशिक्षण की योजनाओं के लिए जरूरी थी। स्थानांतरण योजनाओं को निर्धारित करना तथा पहले से ही इस बात की तैयारी करना जरूरी था कि सशस्त्र सेनाओं में जाने वाले दस कर्मियों के स्थान पर तत्काल किन-किन लोगों को सगया जायेगा। प्रतिरक्षा प्रतिष्ठानों के निर्माण पर भी तुरन्त ध्यान देने की जरूरत थी।

रात की लगभग दो बजे, जब हर कोई क्षेत्रीय पार्टी समिति के परिसर से जा चुका था, ब्रेज्नेव ने एक कार में गांधी और वे निर्माणाधीन एक हवाई-पट्टी इस उद्देश्य से देखने के लिए चले गये कि इस महत्वपूर्ण परियोजना पर रविवार को भी बिना रुके काम चलते रहना चाहिए। सुबह 6 बजे वे लौटकर क्षेत्रीय पार्टी समिति में आ गये। उसी दिन सुबह 22 जून, 1941 को नाज़ी जर्मनी ने सोवियत संधि पर बवंडरतापूर्ण आक्रमण कर दिया। फ्रांसिस्ट बेस्त, रोगा, विल्निउस, प्रोद्नो, बोबरुइस्क, सेवास्तोपोल, किएव तथा दूसरे नगरों पर बमबर्षा कर रहे थे। पूरी तरह शस्त्रास्त्रों से लैस सेनाएं, जिन्हें कोई भी पश्चिम यूरोपीय राज्य रोक पाने में असमर्थ था, सोवियत संधि के विरुद्ध शोक दी गयी थी। उन्होंने मृत्यु और विनाश का बीजारोपण करते हुए सोवियत क्षेत्र पर आक्रमण किया। शांतिपूर्ण सोवियत घरती पर मकान आग की लपटों का शिकार हो गये, नगर जलकर राख हो गये, गांव व उद्यान नष्ट कर दिये गये, बमबर्षा में कारखाने ढह गये तथा शरणार्थियों—महिलाओं, बच्चों व वृद्धों—की सभी पक्तियां सुरक्षा की खोज में सड़कों पर निकल आयीं। गोता खाते हुए फ्रांसिस्ट विमानों ने उन पर हमला किया, उन्होंने नागरिकों पर गोलीयां बरसाते हुए हजारों लोगों की मौत के घाट उतार दिया।

विश्व-भर में यह समाचार तुरन्त ही फैल गया कि हिटलर ने सोवियत संधि पर आक्रमण कर दिया है। सभी समाचारपत्रों ने अपने प्रथम पृष्ठ पर शीर्षक दिये: "हिटलर का रूस पर आक्रमण"। पश्चिम में सोवियत संधि को अभी भी रूस कहा जाता है। लेकिन यह अब पुराना रूस नहीं रह गया था—यह सोवियत समाजवादी जनतंत्र संधि था, ऐसा देश जहाँ रूसियों के अलावा सो से अधिक भिन्न जातीयताएं घनिष्ठ परिवार के रूप में सगठित होकर निवास करती थीं, जहाँ विश्व के प्रथम नये समाजवादी समाज का निर्माण करने वाले सोवियत जन रहते थे। हिटलर ने न केवल रूस पर बल्कि समाजवाद की भूमि पर आक्रमण किया था।

फ़ासिज्म के विरुद्ध संघर्ष की ज्वाला में

1. युद्ध के पहले महीने

लियोनिद ब्रेज्नेव को स्मरण है कि युद्ध किस तरह शुरू हुआ : शनिवार 21 जून 1941 की रात, युद्ध से पहले की अन्तिम शांतिपूर्ण रात, पहले शनिवारों की रातों से अलग न थी। उद्यानों व पार्कों में ग्रास बँट बज रहे थे। उल्लसित भीड़ बबूल के पेड़ों की महक का आनन्द लेते हुए नेप्रोपेत्रोव्स्क की सड़कों पर घूम रही थी। लोग सप्ताहान्त में विश्राम कर रहे थे और योजना बना रहे थे कि इतवार किस तरह मनाया जाये। लेकिन क्षेत्रीय पार्टी समिति में उस शनिवार को देर गये रात तक बत्तियाँ जल रही थीं। समिति के ध्युरो द्वारा अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय, लाल सेना में राजनीतिक कार्य के लिए कम्युनिस्टों को मनोनीत करने के विषय पर चिन्तार-विमर्श किया जा रहा था। ये ब्रँठक पूर्वगामी महीनों के दौरान समिति के कार्य का तार्किक परिणाम थी जब पार्टी की केन्द्रीय समिति और सोवियत सरकार के निर्णय के अनुरूप देश की प्रतिरक्षा क्षमता को प्रत्येक क्षेत्र में सुदृढ़ बनाने की कार्यवाही की जा रही थी। इसी कारण नेप्रोपेत्रोव्स्क क्षेत्र में प्रतिरक्षा उद्योग के लिए क्षेत्रीय पार्टी समिति के सचिव का पद बनाया गया था। इस क्षेत्र की औद्योगिक व आर्थिक क्षमता पर्याप्त थी। जैसा कि पहले बताया जा चुका है कार्य के इस महत्वपूर्ण क्षेत्र की प्रमुखता ब्रेज्नेव कर रहे थे।

युद्ध होने की स्थिति में संयंत्रों का निर्वाध गति से कार्य करना गृनिष्ठित बनाने के लिए सर्वोपरि उनमें से प्रत्येक की सम्भावनाओं की अच्छी जानकारी

प्राप्त करना आवश्यक था। उस न्यूनतम अवधि को निर्धारित करना आवश्यक था जो इनको युद्ध-संबंधी उत्पादन करने में तथा सशस्त्र सेनाओं की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए दस मजदूरों के पुनःप्रशिक्षण की योजनाओं के लिए जरूरी थी। स्थानांतरण योजनाओं को निर्धारित करना तथा पहले से ही इस बात की तैयारी करना जरूरी था कि सशस्त्र सेनाओं में जाने वाले दस कर्मियों के स्थान पर तत्काल किन-किन लोगों को सगाया जायेगा। प्रतिरक्षा प्रतिष्ठानों के निर्माण पर भी तुरन्त ध्यान देने की जरूरत थी।

रात को लगभग दो बजे, जब हर कोई क्षेत्रीय पार्टी समिति के परिसर से जा चुका था, ब्रेज्नेव ने एक कार में गांधी और वे निर्माणाधीन एक हवाई-पट्टी इस उद्देश्य से देखने के लिए चले गये कि इस महत्वपूर्ण परियोजना पर रविवार को भी बिना रुके काम चलते रहना चाहिए। सुबह 6 बजे वे लौटकर क्षेत्रीय पार्टी समिति में आ गये। उसी दिन सुबह 22 जून, 1941 को नाज़ी जर्मनी ने सोवियत संघ पर बर्बरतापूर्ण आक्रमण कर दिया। फ़ासिस्ट ब्रेस्त, रीगा, विल्निउस, प्रोद्नो, बोबरुइस्क, सेवास्तोपोल, किएव तथा दूसरे नगरों पर बमबर्षा कर रहे थे। पूरी तरह शस्त्रास्त्रों से लैस सेनाएं, जिन्हें कोई भी परिवर्तन यूरोपीय राज्य रोक पाने में असमर्थ था, सोवियत संघ के विरुद्ध शौंक दी गयी थी। उन्होंने मृत्यु और विनाश का बीजारोपण करते हुए सोवियत क्षेत्र पर आक्रमण किया। शांतिपूर्ण सोवियत घरती पर मकान आग की लपटों का शिकार हो गये, नगर जलकर राख हो गये, गांव व उद्यान नष्ट कर दिये गये, बमबर्षा में कारखाने डह गये तथा शरणा-पियों—महिलाओं, बच्चों व वृद्धों—की सखी पक्तियां मुरदा की खोज में सड़कों पर निकल आयी। गोता खाते हुए फ़ासिस्ट विमानों ने उन पर हमला किया, उन्होंने नागरिकों पर गोलियां बरसाते हुए हजारों लोगों की मौत के घाट उतार दिया।

विश्व-भर में यह समाचार तुरन्त ही फैल गया कि हिटलर ने सोवियत संघ पर आक्रमण कर दिया है। सभी समाचारपत्रों ने अपने प्रथम पृष्ठ पर शीर्षक दिये : “हिटलर का रूस पर आक्रमण”। परिवर्तन में सोवियत संघ को अभी भी रूस कहा जाता है। लेकिन यह अब पुराना रूस नहीं रह गया था—यह सोवियत समाजवादी जनतंत्र संघ था, ऐसा देश जहाँ रूसियों के अलावा सो से अधिक भिन्न जातीयताएँ घनिष्ठ परिवार के रूप में सघटित होकर निवास करती थी, जहाँ विश्व के प्रथम नये समाजवादी समाज का निर्माण करने वाले सोवियत जन रहते थे। हिटलर ने न केवल रूस पर बल्कि समाजवाद की भूमि पर आक्रमण किया था।

बाद में पश्चिमी राजनेताओं और सेनाओं ने सोवियत जनता के साहस और वीरता की सराहना करने वाले तथा हिटलर की फासिज्म का नाश करने में उनके निर्णायक अंशदान को मान्यता देते हुए अनगिनत बार उल्लेख किये।

इन उल्लेखों और स्वीकारोक्तियों में एक महत्वपूर्ण तथ्य की अक्सर ही उपेक्षा की जाती है : सोवियत जनता ने न केवल अपनी पितृभूमि की रक्षा की बल्कि अपनी समाजवादी पितृभूमि के लिए, जीवन की समाजवादी पद्धति के लिए संघर्ष किया। यह रुसियों का जर्मनी के विरुद्ध युद्ध न होकर सोवियत जनता का नाज़ियों के विरुद्ध युद्ध था जो विश्व आधिपत्य के विचारों से ग्रस्त थे और यहां तक कि जिन्होंने सागर पार कर सोवियत संघ पर अप्रत्याशित आक्रमण में अपनी विजय के बाद सागर पार कर संयुक्त राज्य अमरीका पर आक्रमण करने की योजना बनायी थी।

सोवियत संघ की समस्त जातियों के परिवार पर विपदा आ पड़ी थी। ये अप्रत्याशित थी, इसके कारण अत्यधिक कष्ट उठाना पड़ा। लेकिन इससे आतंक नहीं फैला। इसके विपरीत लाखों-करोड़ों जन शत्रु से लड़ने के लिए उठ खड़े हुए। इन पुरुषों व महिलाओं के लिए यह फ़ासिस्ट आक्रमकों के विरुद्ध महान देश-भक्तिपूर्ण युद्ध का आरंभ था, समाजवाद के ध्येय व आदेशों तथा दूसरे जनगण व देशों की आजादी व स्वतंत्रता की रक्षा के लिए निस्वार्थ संघर्ष का आरंभ था।

बाद में संयुक्त राज्य अमरीका को फ़ासिज्म के विरुद्ध युद्ध में शामिल होना पड़ा तथा सोवियत व अमरीकी सैनिकों ने अपने समान शत्रु से युद्ध किया।

जैसे ही लाल सेना को फ़ासिस्ट आक्रमण का मुंहतोड़ उत्तर देने का आदेश दिया गया, वारेन्स सागर से काला सागर तक फैले विस्तृत मोर्चे पर भयंकर लड़ाई छिड़ गयी। सोवियत संघ के विरुद्ध फ़ासिस्ट जर्मनी द्वारा किये गये ऐसे अप्रत्याशित प्रहार का अन्य कोई देश सामना नहीं कर सकता था। लेकिन सोवियत संघ दृढ़तापूर्वक डटा रहा। सोवियत समाजवादी व्यवस्था की अजेयता में, आक्रमणकारी के प्रति प्रतिरोध संगठित करने और उसे पराजित करने की कम्युनिस्ट पार्टी की योग्यता में सोवियत जनता को विश्वास था। कम्युनिस्ट पार्टी ने महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के लिए सोवियत जनता को आग्रह और संगठित किया। हमने "मन कुछ मोर्चे के लिए! तब कुछ विजय के लिए!" के आग्रह के साथ मोहनताम कर्म, सामूहिक फ़ासों के किनारों तथा सोवियत युद्धातिथियों के आयोजन किए।

विजय के बाद कम्युनिस्ट पार्टी ने नए प्रश्न निर्यात। पश्चिमी राजनेतों ने कांतिनत समाजवादीवादों की तरफ फ़ासिज्म का नाश की जनता की जनता की जनता की

करने वाली महिलाओं तथा अपने स्वास्थ्य के कारण सैनिक सेवा से मुक्त पुरुषों ने उन मजदूरों के व्यवसायों ने तेजों से दक्षता प्राप्त कर ली। देहात क्षेत्र आदमियों में ग्वाली हो गया था। अपने देश के लिए लड़ने के लिए मोर्चों पर जाने वाले व्यक्तियों की पत्नियों, बहनों, छोटे भाइयों और बेटों द्वारा ट्रैक्टर तथा हार्वेस्टर कम्बाइन चलाये जा रहे थे।

इस बात का श्रेय सोवियत जनता की देशभक्ति तथा उस व्यापक संगठनात्मक व शिक्षा संबंधी कार्य को है, जिसके प्रति ब्रेजनेव और उनके साथी समर्पित थे, कि असम्भव दिवायी देनेवाला कार्य भी अर्जित कर लिया गया। हजारों मेहनतकश-जन को मोर्चों पर भेजने वाले क्षेत्र ने "सब कुछ मोर्चों के लिए ! सब कुछ विजय के लिए !" नारे के अन्तर्गत रहना और काम करना जारी रखा। क्षेत्र में तथा संपूर्ण देश में यह प्रत्येक व्यक्ति का आदर्श वाक्य बन गया।

युद्ध की अग्रिम पंक्तियाँ अभी भी नेप्रोपेत्रोव्स्क से दूर थीं। क्षेत्र के अनेक व्यक्तियों ने यह सोचा था कि हिटलर की सेनाएँ उन तक कभी नहीं पहुँच पायेंगी। लेकिन क्षेत्र का नेतृत्व करने वालों ने सच्चाई को जनता से नहीं छिपाया। उन्होंने उन संकटपूर्ण दिनों के दौरान देश पर मँडराने वाले विनाशकारी खतरे की व्याख्या की। जुलाई में शत्रु लेनिनग्राद की ओर बढ़ा तथा नगर पर गोले बरसाने शुरू किये—ये बमवर्षा 800 दिन-रात तक चलती रही। शत्रु-सैनिक दक्षिण में उक्रेन में आगे बढ़ रहे थे, तथा लड़ते हुए भास्को की ओर बढ़ रहे थे। मोर्चों की स्थिति के बारे में, जहाँ सोवियत राज्य के जीवन और मृत्यु का फ़ैसला किया जा रहा था इस स्पष्ट सच्चाई ने जनता को अपने गिदं होने वाली घटनाओं के प्रति और अधिक जागृत किया उनके अन्दर नयी चेतना फूँकी।

इसके बाद, जुलाई में एक दिन नाज़ी विमान ने पहली बार नेप्रोपेत्रोव्स्क पर हमला किया। बम रिहायशी क्षेत्रों पर गिरे।

"उक्रेन की कम्युनिस्ट पार्टी की क्षेत्रीय, नगर व जिला समितियों ने औद्योगिक उद्यमों, आयादी तथा मशीन व ट्रैक्टर स्टेशनों, राज्य व सामूहिक फ़ार्मों को समाप्ति और क्षेत्र के कार्यालयों के स्थानान्तरणों को सुनिश्चित बनाने के लिए सब कुछ किया," ब्रेजनेव ने बाद में बतलाया। "क्षेत्र के अधिकांश कारख़ानों व उद्यमों को औद्योगिक व दफ़्तरी कर्मचारियों, इंजीनियरों व तकनीशियनों और उनके परिवारों सहित वहाँ से हटा दिया गया। अनेक सामूहिक फ़ार्मों को उनकी सारी सम्पत्ति सहित देश के आन्तरिक क्षेत्रों में स्थानांतरित कर दिया। राज्य उद्यमों व दफ़्तरों से सम्बन्धित उपकरण व अन्य सामान से लदे कुल मिलाकर 99,000 रेल के डिब्बे स्थानांतरित किये गये। रेलकर्मियों ने सभी ध्वनित स्टॉक

मजदूरों व किसानों के देश की जनता साहस, देशभक्ति तथा आत्मबलिदान के ऐसे स्तरों तक उन्नत हो सकती है जिसका उसने महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के दौरान प्रदर्शन किया।

देश में सभी स्थानों की भाँति उन दिनों नेप्रोपेन्डोस्क क्षेत्र के कारखानों, कार्यालयों, शिक्षा संस्थानों तथा सामूहिक व राज्य फार्मों में सभाएँ आयोजित की गयी। इन सभाओं में जनता ने उनकी खुशहाली का अतिक्रमण करने वाले शत्रु के विरुद्ध कड़ा संघर्ष छेड़ने के अपने इस संकल्प की घोषणा की। भाषण देने वाले प्रत्येक व्यक्ति ने विजय में, न्यायपूर्ण ध्येय की विजय में अपने गहन विश्वास की घोषणा की। सोवियत जनता ने विजय के प्रति इस विश्वास को परीक्षा की अपनी सभी कठिन घड़ियों के दौरान बनाये रखा। मोर्चों पर संनिकां को, अधिकृत क्षेत्रों में छापामार कार्यकर्ताओं तथा भूमिगत मोर्चाओं को तथा मोर्चों के पीछे कार्यरत सोवियत जनता को इस विश्वास से प्रेरणा मिली।

क्षेत्रीय पार्टी समिति के दूसरे अधिकारियों की तरह ब्रेजनेव ने भी अपनी बर्दाँ पहन ली। युद्ध की पूर्व संध्या पर उन्हें रेजिमेंट के कमिस्तार के रूप में पदोन्नत कर दिया गया। युद्ध के प्रारम्भिक दिनों के दौरान इस युवा उत्साही अफसर को क्षेत्र के अनेक नगरों व कस्बों में, कारखानों व प्रतिरक्षा प्रतिष्ठानों में तथा नगर व जिला पार्टी समितियों में देखा जा सकता था। उन्होंने लोगों को प्रोत्साहन दिया और मूल्यवान् परामर्श दिये।

देश के अर्धतन्त्र को तथा वास्तव में देश के सम्पूर्ण जीवन को युद्ध स्तर पर चलाने के लिए कम्युनिस्ट पार्टी, सोवियत सरकार, प्रबन्ध निकायों तथा समस्त मेहनतकश जन के व्यापक सामूहिक प्रयासों की जरूरत थी। औद्योगिक प्रतिष्ठानों ने सफलतापूर्वक दो पालियों में काम करना शुरू कर दिया था और उन्हें सैनिक उत्पादन करने के लिए तैयार कर दिया गया। उद्योग के लिए बुनियादी और दूसरी सामग्रियों के नये स्रोत खोल दिये गये क्योंकि युद्ध ने पुराने आर्थिक सम्बन्धों को अस्त-व्यस्त कर डाला था। युद्ध के पहले दिनों के दौरान ही धर्म-शक्ति की समस्या जटिल हो गयी थी : मोर्चों पर चले गये लोगों के स्थान पर मशीन-औजार सभालने के लिए कमियों को खोजना था। मध्यम देश में कारखानों व दफ्तर कर्मचारियों की संख्या 1943 के शुरू में 3,15,00,000 ने घटकर वर्ष के अंत में 1,85,00,000 रह गयी थी। नेप्रोपेन्डोस्क क्षेत्र में सशस्त्र सेनाओं में 14 हजार कम्युनिस्टों को, 80,000 ने अधिक कोन्सोमोन सदस्यों का गया कई हजार गैर-पार्टी व्यक्तियों को शसस्त्र सेनाओं में भेजा गया। पोलियो में, अपनी पार्टी आनुवंशिक कारण सेना में शामिल न हो सकने वाले दृष्ट संलग्न दफ्तर में काम

करने वाली महिलाओं तथा अपने स्वास्थ्य के कारण सैनिक सेवा से मुक्त पुरुषों ने उन मजदूरों के व्यवसायों ने तेजी से दक्षता प्राप्त कर ली। देहात क्षेत्र आदमियों में ग्वानी हो गया था। अपने देश के लिए लड़ने के लिए मोर्चों पर जाने वाले व्यक्तियों की पत्नियों, बहनों, छोटे भाइयों और बेटों द्वारा ट्रैक्टर तथा हार्वेस्टर कम्बाइन चलाये जा रहे थे।

इस बात का श्रेय सोवियत जनता की देशभक्ति तथा उस व्यापक संगठनात्मक व शिक्षा संबंधी कार्य को है, जिसके प्रति ब्रेज्नेव और उनके साथी समर्पित थे, कि असम्भव दिखायी देनेवाला कार्य भी अर्जित कर लिया गया। हजारों मेहनतकश-जन को मोर्चों पर भेजने वाले क्षेत्र ने "सब कुछ मोर्चों के लिए ! सब कुछ विजय के लिए !" नारे के अन्तर्गत रहना और काम करना जारी रखा। क्षेत्र में तथा संपूर्ण देश में यह प्रत्येक व्यक्ति का आदर्श वाक्य बन गया।

युद्ध की अग्रिम पंक्तियाँ अभी भी नेप्रोपेत्रोव्स्क से दूर थीं। क्षेत्र के अनेक व्यक्तियों ने यह सोचा था कि हिटलर की सेनाएँ उन तक कभी नहीं पहुँच पायेंगी। लेकिन क्षेत्र का नेतृत्व करने वालों ने सच्चाई को जनता से नहीं छिपाया। उन्होंने उन संकटपूर्ण दिनों के दौरान देश पर मँडराने वाले विनाशकारी खतरे की व्याख्या की। जुलाई में शत्रु लेनिनग्राद की ओर बढ़ा तथा नगर पर गोले बरसाने शुरू किये—ये बमबर्षा 800 दिन-रात तक चलती रही। शत्रु-सैनिक दक्षिण में उक्रेन में आगे बढ़ रहे थे, तथा लड़ते हुए मास्को की ओर बढ़ रहे थे। मोर्चों की स्थिति के बारे में, जहाँ सोवियत राज्य के जीवन और मृत्यु का फ़सला किया जा रहा था इस स्पष्ट सच्चाई ने जनता को अपने गिद होने वाली घटनाओं के प्रति और अधिक जागृत किया उनके अन्दर नयी चेतना फूँकी।

इसके बाद, जुलाई में एक दिन नाज़ी विमान ने पहली बार नेप्रोपेत्रोव्स्क पर हमला किया। बम रिहायशी क्षेत्रों पर गिरे।

"उक्रेन की कम्युनिस्ट पार्टी की क्षेत्रीय, नगर व ज़िला समितियों ने औद्योगिक उद्यमों, आवादी तथा मशीन व ट्रैक्टर स्टेशनों, राज्य व सामूहिक फ़ार्मों को समाप्ति और क्षेत्र के कार्यालयों के स्थानान्तरणों को सुनिश्चित बनाने के लिए सब कुछ किया," ब्रेज्नेव ने बाद में बतलाया। "क्षेत्र के अधिकांश कारख़ानों व उद्यमों को औद्योगिक व दफ़्तरी कर्मचारियों, इंजीनियरों व तकनीशियनों और उनके परिवारों सहित यहाँ से हटा दिया गया। अनेक सामूहिक फ़ार्मों को उनकी सारी सम्पत्ति सहित देश के आन्तरिक क्षेत्रों में स्थानांतरित कर दिया। राज्य उद्यमों व दफ़्तरों से सम्बन्धित उपकरण व अन्य सामान से लदे कुल मिलाकर 99,000 रेल के डिब्बे स्थानांतरित किये गये। रेलकर्मियों ने सभी बेल्नित स्टॉक

मेस्सेरस्मिट् आकाश में नजर आये : इसका अर्थ यह था कि मोर्चा संभीप आता जा रहा था और इन गाँवों पर जल्दी ही कब्जा हो सकता था। चौतीस वर्षीय कमिस्सार की नजरो में कठोरता आ गयी। चन्द घंटे के अंदर ही उन्हें दक्षिणी मोर्चा सैनिक समिति को जो कुछ भी उन्होंने देखा था उसके बारे में, जनता के साथ अपनी बैठकों के बारे में तथा मोर्चे पर जानेवाले सैनिकों को दिये गये उनके प्रेरणादायक शब्दों के बारे में तथा छतरे में बाहर निकलने के लिए अज्ञात दिशा में अपने बच्चों को लेकर जाने वाली महिलाओं की आँखों में देखे गये दंड़ के बारे में रिपोर्ट देनी थी।...

19 अगस्त, 1941 को ब्रेज्नेव ने प्रोपेत्रोव्स्क लीटे। नगर के लिए तब अत्यन्त सकटपूर्ण अवधि थी। जर्मन सैनिक पहले ही सड़कों पर गोले बरसा रहे थे। क्रासिस्ट बमबर्षकों की लहरें हजारों टन बम बरसाते हुए नगर पर उड़ानें भर रही थी। ऐसा मालूम देता था कि इन सपटों और दम घोटने वाले धुँएँ से कोई भी प्राणी जीवित नहीं बच रहेगा। लेकिन नगर ने जीना और लड़ना जारी रखा। प्रोपेत्रोव्स्क की सड़कों के मजदूरों ने भारी गोलाबारी के दौरान बख्तरबंद रेलगाड़ी की अपनी जुड़ाई पूरी की। यह रेलगाड़ी खाते में ही सीधे युद्धपत्तियों की ओर खाना कार दी गयी।

रेलकर्मियों ने पूरब की ओर अंतिम गाड़ियों को भेजने का प्रयास करते हुए रास्ते में ही बेल्जित इस्पात की मरम्मत की। उन छात्रों ने जो इस समय घोषणा स्कूल में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे थे, प्रतिरक्षा व्यवस्था की जो नियमित सैनिकों की तरह ही कड़ी व मजबूत थी। नागरिक और सैनिक अस्पतालों के कर्मियों ने भारी काम किया क्योंकि अब वे मोर्चों से लाये गये व्यक्तियों के जख्मों का उपचार भी कर रहे थे। निर्बाध संचार-व्यवस्था को सुनिश्चित बनाने के लिए टेलिफोन व तार आपरेटर चौबीस घंटे अपने-अपने कार्य-स्थलों पर इटे रहे।

नेप्रोपेत्रोव्स्क के लिए भारी लड़ाई पाँच दिनों और रातों तक जारी रही। 230वीं, 255वीं और 275वीं पैदल डिवीजनों के सैनिकों ने, 28वीं घुड़सवार डिवीजन ने, 12वीं व 8वीं बख्तरबंद डिवीजनों ने तथा 11वीं पैदल ब्रिगेड ने नगर की प्रतिरक्षा का भार वहन करते हुए साहसपूर्वक युद्ध किया। लेकिन दोनों सेनाओं का बराबर का मुकाबला न था। 28 अगस्त को प्रातः 6 बजे सैनिकों को पीछे हटने तथा नीपर के पूर्वी तट पर एकत्रित होने का आदेश दिया गया। चंद घंटों में ही नाबो टुकड़ियाँ नेप्रोपेत्रोव्स्क में प्रविष्ट हो गयीं।

ब्रेज्नेव उन पाँच दिनों और रातों को कभी नहीं भूला पाये। वे नीपर स्थित

नगर की रक्षा के लिए लोगों की मृत्यु को चुनौती देने के संकल्प की स्मृति को मजबूत हुए हैं। उन्हें उन अनेक कमांडरों के चेहरों का स्मरण है जिनके साथ उन्होंने उन समय बातें की थीं। उनमें से कई घायल हो गये थे और उनमें जमीन से उठ खड़े होने तक की गति न थी, लेकिन उन्होंने अपने सैनिकों को आदेश देना, उनके स्वयं के साहसपूर्ण उदाहरणों से प्रेरित करना जारी रखा। वे इस बात के अपने दर्द को अभी तक नहीं भूल पाये हैं कि भारी क्षति के बावजूद भी उन्हें नगर छोड़ने को विवश होना पड़ा था।

संख्या की दृष्टि से श्रेष्ठ शत्रु सेनाओं के दबाव के अधीन मोर्चा पूरब की ओर आगे बढ़ गया।

जिस समय युद्ध सम्पूर्ण मोर्चे पर गुरु हो गया जर्मन कमान ने यह घोषणा कर डाली कि सोवियतों के विरुद्ध यह युद्ध मास्को पर अधिकार करने के साथ बहुत जल्दी ही समाप्त हो जावेगा। नितम्बर के अन्त में जर्मन सैनिकों ने मास्को पर सामान्य आक्रमण कर दिया। एक भारी युद्ध गुरु हो गया जिसमें दोनों पक्षों के लाखों-करोड़ों सैनिक शामिल थे। स्थिति अत्यंत खतरनाक थी। 19 अक्टूबर को राजधानी में घेराबंदी की स्थिति घोषित कर दी गयी। सोवियत जनता मास्को को न छोड़ने के लिए कृतसंकल्प थी और उसने मास्को नहीं छोड़ा।

6 नवम्बर को, जब शत्रु नगर के बाहरी क्षेत्र तक आ पहुँचा था, महान अक्टूबर समाजवादी क्रांति की 24वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में पार्टी व सार्वजनिक संगठनों के साथ मेहनतकश जनता के टिपुटियों की मास्को सोवियत की सभा आयोजित की गयी। 7 नवम्बर को लेनिन समाधि के सामने लाल चौक में परम्परागत सैनिक परेड हुये। सैनिक टुकड़ियाँ परेड में ही मोघे मोर्चे पर खाना हो गयी।

नवम्बर के मध्य में शत्रु ने मास्को पर दूसरा प्रहार किया। यह युद्ध पहले की अपेक्षा कहीं ज्यादा भयंकर था। यह एक ऐतिहासिक युद्ध था जिसमें सोवियत जनता और उसकी लाल सेना ने चमत्कार कर दिखाये। क्लामिस्ट सेनाओं को केवल रोकना ही नहीं गया बल्कि उन्हें पराजित कर राजधानी से बाहर खदेड़ दिया गया। मास्को में नाज़ी सेनाओं की पराजय देशभक्तिपूर्ण युद्ध के प्रथम वर्ष की निर्णायक सैनिक या राजनीतिक घटना तथा द्वितीय विश्व युद्ध में नाज़ियों की प्रथम प्रमुख पराजय थी। अन्ततः, अप्रत्याशित प्रहार का यह इरादा विफल हो गया तथा जर्मन सेना की अक्षमता का निष्पत्ति दृष्ट गया। यह प्रदर्शित हो गया कि नाज़ियों में इस बात पर विश्वास करने हुए, गलत अनुमान लगा लिया था कि सोवियत सामाजिक तथा राज्य व्यवस्थाएँ तथा मोर्चों के पीछे की शक्तियों में

अस्थिरता है।

किएव, दोनेत्स्क बेसिन तथा रोस्तोव-ऑन-दोन के लिए भीषण युद्ध 1941 के अन्तिम महीनों तक चला। सोवियत मेना यदाकदा शत्रु को रोकने में और उस पर प्रत्याक्रमण करने में सफल रही। मिसाल के तौर पर रोस्तोव में ऐसी ही स्थिति थी जहाँ सोवियत सैनिकों ने नगर को शत्रु के कब्जे से वापस ले लिया था।

ब्रेज्नेव ने अनेक वर्षों बाद 9 मई 1972 को, जिस दिन उन नगर में साहसी तोपचियों के लिए स्मारक का अनावरण किया गया, कहा, "1941 की सर्दियों में रोस्तोव के लिए युद्ध ऐतिहासिक था : हमारी लाल सेना ने वहाँ बचाव के साथ-साथ प्रत्याक्रमण भी किया। आप लोगों के द्वारा निर्मित यह स्मारक सोवियत जनता की आगामी पीढ़ियों को उनके पिता व पितामह की सर्वोच्च साहसिकता का स्मरण करायेगा, जिन्होंने मातृभूमि की रक्षा के लिए हमारे देश की भ्रातृत्वपूर्ण जातियों से आकर सेनिनवादी पार्टी के आह्वान का प्रत्युत्तर दिया। उनके साहसिक कार्यों, जो हमारे देश और सम्पूर्ण मानवजाति के लिए महत्वपूर्ण रहे, जनता की स्मृति से कभी नहीं मिटेंगे।"

मार्च 1942 में ब्रेज्नेव को बार्बेन्कोवो में युद्ध में उनकी सहभागिता के लिए साल पताका के आर्डर से अलंकृत किया गया। इस युद्ध में लड़ने वाले व्यक्ति स्मरण करते हैं कि वे एक पैदल रेजिमेंट की अग्रिम पंक्ति में थे। जब उनसे विस्तारपूर्वक चर्चा करने को कहा गया, तो उन्होंने स्वयं को निम्न शब्दों तक सीमित रखा "ये कठिन था।"

2. नोवोरोसीस्क क्षेत्र में

क्रासिस्ट सेनाओं ने, जिन्हें मास्को में भारी पराजय का सामना करना पड़ा और जो लेनिनग्राद की ओर बढ़ने में असमर्थ थी, दक्षिण की ओर बढ़ना जारी रखा। 1942 के ग्रीष्म में स्तालिनग्राद के लिए ऐतिहासिक युद्ध के साथ, जहाँ जर्मन सेनाएँ जून के अन्त में पहुँच गयी थी, काकेशिया के लिए भीषण युद्ध शुरू हो गया। स्तालिनग्राद में 50 से अधिक डिवीजनों को जमाकर (10 लाख से अधिक सैनिक) नाज़ियों ने 26 जुनी हुई डिवीजनों काकेशिया की ओर भेज दी। 8 को काला सागर तट की ओर भेजा गया। उन्होंने अपना आक्रमण तुआप्से और नोवोरोसीस्क सहित कई दिशाओं में शुरू कर दिया। इन क्षेत्रों की प्रतिरक्षा का गठन करने के लिए सोवियत कमान ने ट्रांसकाकेशियाई मोर्चे के अन्दर काला सागर टुकड़ियों के विशेष दल का गठन किया। इसने तुआप्से और नोवोरोसीस्क

में संघर्षरत सेनाओं व टुकड़ियों के साथ-साथ काला सागर बेड़ा शामिल था। ब्रेज्नेव को त्रिगेड कमिस्सार के रूप में पदोन्नत कर दिया गया तथा सेनाओं के काला सागर दल की सेनाओं के राजनीतिक प्रशासन का प्रथम उपाध्यक्ष नियुक्त किया गया।

सितम्बर 1942 में 47वीं वाहिनी नोवोरोसीस्क में पहुँच गयी थी। सेना में जाने में पहले मिखाइल कालाशिनिक ने, जिन्हें इसके राजनीतिज्ञ विभाग का प्रमुख नियुक्त किया गया था, ब्रेज्नेव से भेंट की, जो वहाँ की स्थिति से परिचित थे। कालाशिनिक ने इस भेंट के सम्बन्ध में निम्न विचार व्यक्त किये हैं :

“ब्रेज्नेव मुझे सादगीपूर्ण साज-सज्जा वाले कमरे में ले गये तथा नोवोरोसीस्क क्षेत्र में स्थिति का, 47वीं वाहिनी की टुकड़ियों की स्थिति का विस्तारपूर्वक वर्णन करते हुए व कुछेक कमांडरों और कमिस्सारों के बारे में बतलाते हुए तुरन्त ही काम की बातों में लग गये।

“मैं आपको ढाढ़स नहीं बँधा रहा हूँ, ब्रेज्नेव ने चिन्ता के स्वर में कहा। ‘वहाँ की स्थिति काफ़ी कठिन है।’

“ब्रेज्नेव से मुझे पता चला कि 8 सितम्बर से सेना मेजर जनरल आन्द्रेई ग्रेचको की कमान के अधीन है। सेना की सैनिक परिपद के सदस्य तथा सैन्य कार्य-वाही में वीरगति प्राप्त त्रिगेड कमिस्सार ओसिप अब्रामोव के स्थान पर रेजिमेंट के कमिस्सार एब्दोकिम माल्सेव को नियुक्त किया गया। चीफ़ ऑफ़ स्टाफ़ मेजर जनरल अलेक्जान्देर येर्मोलायेव भी सेना में नये-नये आये थे : उन्होंने केवल एक सप्ताह पहले ही कार्यभार संभाला था। टुकड़ियों की संख्या भी पूरी न थी तथा सैनिक भी धीरे-धीरे आते जा रहे थे। कुछ टुकड़ियों में शस्त्रों का अभाव था तथा गोला, बारूद और खाद्य पदार्थों की सप्लाई सम्बन्धी अन्य समस्याएँ भी सामने थीं। ऐसा कहीं अधिक दिखाई देने लगा था कि सैनिक थक चुके हैं।

“घारितोनिच, संक्षेप में स्थिति यही है, ब्रेज्नेव ने मुझे वंशनाम से सम्बोधित करते हुए कहा, ‘वहाँ अभी काफ़ी कुछ किया जाना है। सैनिकों को और अधिक दृढ़ता प्रदर्शित करने के लिए, शत्रु को खदेड़ने के लिए प्रेरित करना तथा शत्रु की शक्ति को पहाड़ों में ही समाप्त कर देना तथा उसे ट्रांसकाकेशिया पर अधिकार करने से रोकना ही मुख्य कार्य है।

“ब्रेज्नेव ने प्रोत्साहन-सूचक मुस्कराहट से मेरी ओर देखा और अपना हाथ मेरे कंधे पर रख दिया।

“‘मैं जानता हूँ कि तुम क्या सोच रहे हो। तुम सोचते हो कि यह कठिन होगा। मैं ठीक कह रहा हूँ न? वहाँ पर्याप्त कठिनाइयाँ होंगी इस बारे में कोई

सन्देह नहीं। लेकिन मुझे आशा है कि आखिर में सब कुछ ठीक रहेगा। 47वीं वाहिनी के सैनिक अच्छे योद्धा हैं, युद्ध के दौरान उनकी परीक्षा हो चुकी है। ये ऐसे लोग हैं जिन पर निर्भर किया जा सकता है: जरूरत पड़ने पर वे पहाड़ों को भी अपने रास्ते से हटा सकते हैं। इनके साहस, धैर्य और कट्टरता पर किसी को ईर्ष्या ही हो सकती है। नौसैनिक भी विशेष रूप में भलीभांति लड़ रहे हैं। वे वीर हैं, उनमें से प्रत्येक वीर है।

"उन्होंने मुझे ग्लेबोव्का, मोल्दावान्स्कोये तथा बोल्ची बोरोता दर्रे के क्षेत्र में हो रही लड़ाई के बारे में बतलाया। सीनियर लेफ्टिनेंट प्योत्र लावेन्त्येव के नेतृत्व में तोपखाने की सहायता से 83वीं नौसैनिक पैदल ब्रिगेड तथा 16वीं नौसैनिक बटालियन ने पश्चिम में कई गुना ग्रेण्ड शत्रु-सैनिकों को चौबीस घंटे तक रोके रखा।

"103वीं पैदल ब्रिगेड के सैनिक व अफसरों ने वेर्छे-वाकान्स्काया गाँव के लिए लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे शत्रु से घिर गये लेकिन विशाल शत्रु सेना का ध्यान भँटाते हुए तथा दूसरी टुकड़ियों को समय रहते नोवोरोसीस्क की आन्तरिक प्रतिरक्षा पक्तियों तक पहुँच पाने में सक्षम बनाते हुए वे तीन दिनों तक लड़ते रहे।

"इसके बाद ब्रिगेड ने शत्रु का घेरा तोड़ दिया, तथा माउण्ट दोल्माया के इलाके में नये मोर्चे स्थापित किये।

"ब्रेज्नेव ने कहा, 'हर व्यक्ति को यह महसूस करना चाहिए कि और अधिक पीछे हटना असम्भव है। उसे अपने दिलोदिमाग से यह महसूस करना चाहिए कि यह सोवियत राज्य के जीवन और मृत्यु का, हमारे देश की जनता के जीवन और मृत्यु का मामला है। यह वह समय है जब हम शत्रु के धक जाने तथा आक्रमण रोक देने के बारे में व्यर्थ की बातें करना बन्द कर दें। नाज़ी सेनाओं को अब समय रहते रोक देना चाहिए। सैनिकों को आगे बढ़ने के मूढ़ में लाना निर्णायक प्रत्याक्रमण के लिए उन्हें तैयार करना, नाज़ियों को अपने देश से खदेड़ देना समान रूप से महत्वपूर्ण है। अन्ततः, काकेशिया में भी इस बात का समय, मास्को की तरह ही आयेगा।' "

"ब्रेज्नेव कमरे में टहलते रहे।

"'मेरे विचार में यही सब बातें हैं। काफ़ी कुछ काम बाकी है। और अब आपके जाने का समय आ गया है। वहाँ पहुँचने पर स्थिति और अपने सैनिकों के बारे में जानकारी प्राप्त करने पर आप मुझसे सम्पर्क स्थापित करें।' "

नोवोरोसीस्क क्षेत्र में ही स्थिति नहीं बिगड़ रही थी। नाज़ियों ने इन्हें

नियॉनिद ३० ब्रेज़नेव : जीवन के कुछ पृष्ठ

मगर बन्दगाह—तुआप्से—में घुसने का प्रयास किया। उनकी तुआप्से पर कब्ज़ा करने की, नोवोरोमीस्क की सम्पूर्ण सोवियत सेनाओं का मार्ग अवरुद्ध करने, काला मागर वेड़े के आधारों का उन्मूलन करने तथा तुआप्से, सोची और नुबुमी होने हुए ट्रान्काकेगिया पहुँचने की योजना थी। जैसी कि हिटलर की योजना थी, उसने जर्मनी को तुर्की के साथ जुड़ जाने तथा मध्यपूर्व पर कब्ज़ा करने के रणनीतिक उद्देश्य को कार्यान्वित करने और इसके बाद भारत की ओर आगे बढ़ने में मदद मिलती।

ब्रिटिश प्रधानमंत्री विस्टन चर्चिल इस सम्भावना पर चिन्तित हो उठे। इसी कारण से उन्होंने जोसेफ़ स्तालिन से पूछा था कि क्या रूसी अपने मोर्चों को उत्तर काकेगिया में दृढ़तापूर्वक संभाले रहेंगे? स्तालिन ने उत्तर दिया था कि जर्मन सैनिक काकेगिया पार नहीं कर पायेंगे।

तुआप्से क्षेत्र में भारी लड़ाई चल रही थी। सोवियत सैनिकों का प्रतिरोध तोड़ने के लिए नाज़ियों ने इस क्षेत्र में पर्वतीय युद्ध के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित सैनिक को भेज दिया। यही वह समय था जब ब्रिगेड कमिस्तार ब्रेज़नेव ने अपनी नारी शक्ति लगा दी।

तुआप्से पर नाज़ी बबरता को रोकने के उद्देश्य से क्षेत्र की प्रतिरक्षा करने वाले सैनिकों के मनोबल को बढ़ाने में सम्बन्धित पार्टी-राजनीतिक कार्य को संपूर्ण व्यवस्था पर ध्यान देना ही नहीं बल्कि तुआप्से की ओर जाने वाले मार्ग पर दृढ़तापूर्वक मन्तव्य की जाने वाली कम्युनिस्टों से युक्त विशेष टुकड़ियों का संगठन करना भी आवश्यक था। ब्रेज़नेव के मार्गदर्शन में ऐसी अनेक लड़ाकू टुकड़ियों का गठन किया गया। इनमें से प्रत्येक में 500 कम्युनिस्ट और कोन्तोमोल सदस्य शामिल थे। और उन्होंने शत्रु के आक्रमण की मुख्य शक्ति के सहारे प्रमुख पहाड़ियों पर कब्ज़ा कर लिया था। इस कार्य को कार्यान्वित करने के अलावा ब्रेज़नेव ने अपने नानात्व उत्साह के साथ सैनिकों के बीच, अक्सर ही तुआप्से प्रतिरक्षा की अभियानियों में जाकर, दूसरे महत्वपूर्ण कार्य भी किये।

107वीं पैदल ब्रिगेड की मोर्टार बटालियन के कमिस्तार अलेक्सेई कोपेनि बतलाते हैं कि उस समय जब ब्रिगेड तुआप्से की ओर जाने वाले रेल मार्ग सड़क को काटकर शत्रु के मुख्य प्रहार का भोषण डेग से प्रतिरोध कर रहा था, तब नदी अपने किनारों पर लड़ने वालों के खून से लाल हो रही थी, कमिस्तार ब्रेज़नेव ने साहस और सैनिक कर्तव्य का व्यक्तिगत उदाहरण करते हुए इस ब्रिगेड की अभियानियों में दो दिन बताये।

तुआप्से में भोषण लड़ाई छिड़ गयी और सैनिक आनने-सामने लड़ने

लेकिन नगर में घुसने के शत्रु के तीन दुःसाहसपूर्ण प्रयास असफल रहे। नाज़ियों के शब्दों में सभी तीन "निर्णायक" आक्रमण विफल कर दिये गये।

इसी दौरान 6 महीने लड़ने के बाद लाल सेना ने फरवरी 1943 के शुरू में स्तालिनप्राद में नाज़ी गिरोहों को पराजित कर दिया। यह द्वितीय विश्व युद्ध की एक प्रमुख सैनिक व राजनीतिक घटना थी। इसने महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध तथा द्वितीय विश्व युद्ध के मार्ग में एक बुनियादी मोड़ का समारम्भ किया।

स्तालिनप्राद में नाज़ी सैनिकों की पराजय शत्रु पर बाद में किये जाने वाले प्रहारों का आरंभ-बिंदु थी और इसने करीब-करीब मोर्चे की सम्पूर्ण लम्बाई पर 1942-43 की सर्दियों में किये गये लाल सेना के शक्तिशाली प्रत्याक्रमण की नींव डाली। सोवियत इलाके में शत्रुओं को सामूहिक रूप से बाहर खदेड़ा जाना शुरू हुआ। यह वह समय था जब नोवोरोसीस्क के निर्णायक सघर्ष के लिए तैयारियाँ भी जारी थीं।

मेजर सीजर कुनिकोव के अधीन नौसैनिक टुकड़ी फरवरी 1943 में नोवोरोसीस्क के निकट मिस्खाको के क्षेत्र में उतरी। यह कार्यवाही सफल रही तथा शीघ्र ही नौसैनिक पैदल त्रिगेड तथा दूसरी पैदल यूनिटें भी यहाँ पहुँच गयी, इस प्रकार दो कोरों का गठन हुआ। करीब तीस बर्ग किलोमीटर क्षेत्र वाला यह भाग छोटा प्रवेश कहलाता था। अद्भुत साहस के साथ 225 दिनों तक शत्रु को दूर रोके रखा गया। महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के इतिहास में इस युद्ध का उल्लेख साहसिक अध्याय के रूप में हुआ।

नोवोरोसीस्क क्षेत्र में सैनिक टुकड़ियाँ उतारने को कार्यवाही तथा सम्पूर्ण युद्ध का मार्ग-दर्शन जनरल कोन्स्तान्तिन सेसेलिवे के नेतृत्व में 18वीं प्रहार सेना द्वारा किया गया। लियोनिद ब्रेजनेव को अप्रैल 1943 में सेना के राजनीतिक विभाग का प्रमुख नियुक्त किया गया। नोवोरोसीस्क में सैनिक टुकड़ियों के साथ अपनी मुलाकातों के बाद, जिस समय वे सेनाओं के काला सागर दल के राजनीति प्रशासन के उपाध्यक्ष हो थे, उन्होंने मोर्चे के उस भाग में युद्ध के विशेष महत्व को समझा। 18वीं वाहिनी के राजनीति विभाग का अध्यक्ष नियुक्त हो जाने के बाद उन्होंने स्वयं को पूरी तरह नोवोरोसीस्क के निर्णायक युद्धों के लिए सैनिकों के प्रशिक्षण को समर्पित कर दिया।

पश्चिम जगत में बहुत कम लोग ऐसे हैं जो सोवियत सेना के राजनीतिक प्रशिक्षक के कार्य से परिचित हैं। वह युद्ध अक्रसर का महायक होता है तथा इन्हीं द्वारा प्राप्त आदेशों की पूर्ति के लिए उत्तरदायी होता है। उसके अनुरूप होते हैं : वह सैनिकों की राजनीतिक शिक्षा तथा युद्ध प्रशिक्षण

होता है और उसे इस बात के प्रति आश्वस्त होना चाहिए कि उसे सैनिक घटनाओं की पूरी तरह से जानकारी है तथा उसको देश व विदेशों के राजनीतिक, आर्थिक तथा सैनिक मामलों में होने वाली घटनाओं को भली-भाँति समझना चाहिए। उसे सैनिकों के समक्ष अनुशासन, साहस, उच्च मनोबल तथा संगठन का उदाहरण प्रस्तुत करने वाले सैनिक का उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए। राजनीतिक प्रशिक्षक को सशस्त्र सेनाओं में कम्युनिस्टों के लिए उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए जो सदैव ही अग्रिम पंक्तियों में रहते हैं, जो असम्भव को सम्भव कर दिया करते हैं, अत्यधिक कठिन कार्य के लिए स्वेच्छा से आगे आते हैं, जो अपने साथियों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सबसे पहले आगे बढ़ते हैं, घायलों को हिम्मत बँधाते हैं तथा सबसे पहले अपने बारे में नहीं बल्कि अपने साथियों के बारे में सोचते हैं।

सम्पूर्ण तामान प्रायद्वीप की तरह छोटा प्रदेश पर भी स्थिति अत्यन्त गंभीर थी। ब्रेजनेव की पहलकदमी पर लिये गये एक पेम्फलेट में इस बात का उल्लेख किया गया था :

"स्तालिनग्राद तथा उत्तर काकेशिया में भारी पराजय तथा तामान प्रायद्वीप की ओर खदेड़ दिये जाने के बाद शत्रु अब एक हारे हुए जुआरी की तरह अपना सब-कुछ दांव पर लगा रहा है। वह लाल सेना को आगे बढ़ने से रोकने के लिए प्रयत्नशील है। भारी क्षति के बावजूद हत्यारों और लुट्टरों का नाजी गिरोह नोवोरोसीत्स्क से जुड़े रहने का प्रयास कर रहा है। मिस्काको पर सैनिकों के उतारे जाने की नाहनपूर्ण कार्रवाई ने कुचान क्षेत्र के इस मजबूत मोर्चे को, जो अभी भी शत्रु के हाथ में है, भारी खतरा उत्पन्न हो गया।

"छोटा प्रदेश ऐसा घातक चाकू है जो दुष्ट शत्रु की पीठ में घुसा हुआ है !"

सैनिक परिपद ने सैनिकों ने अपने-अपने मोर्चों पर दृढ़तापूर्वक जमे रहने, शत्रु और उसके उपकरणों को नष्ट करने तथा प्रत्याक्रमण करने का आह्वान किया।

इन दस्तावेजों का बहुत अधिक प्रभाव पड़ा। इनको सभी यूनिटों में हुई बैठकों के दौरान पढ़कर सुनाया गया।

यह छोटा प्रदेश के लिए कठिन समय था। तूफानों के कारण मुख्य भूमि के माथ संचार बनाये रखना कठिन हो गया था। यह संचार व्यवस्था छोटी मोटर-गोताओं तथा मछली पकड़ने वाले जहाजों द्वारा बनाये रखी जा रही थी।

इन कठिन समय के दौरान ब्रेजनेव अकसर ही छोटा प्रदेश की यात्रा करते थे। सर्वोच्च नेता प्रमुख स्तालिन के विशेष कार्य से नोवोरोसीत्स्क क्षेत्र आये मार्शल

म्योर्गी जुकोव इस बात पर खेद व्यक्त किया कि सैनिक क्षेत्र प्रशासन में वे ब्रेज्नेव से न मिल सके। अपनी पुस्तक रिमिनिसेन्सेज़ एण्ड रिफ्लेक्शंस में उन्होंने लिखा है : "वास्तव में यह कुल मिलाकर 30 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र वाला सेतु-गिखर था। उस समय हम सभी एक प्रश्न पर चिन्तित थे : क्या सोवियत सैनिक इस असमान संपर्प में, जो उनके भाग्य में बड़ा है, दिन-रात इस छोटे से सेतु-गिखर के प्रतिरक्षकों पर बम और गोले बरसाने वाले शत्रु के साथ चुनौतीपूर्ण घड़ियों का सामना कर सकेंगे ?

"यह प्रश्न था जिस पर हम 18वीं वाहिनी के राजनीतिक विभाग के प्रमुख एल० आई० ब्रेज्नेव के साथ विचार-विमर्श करना चाहते थे, जो वहाँ कई बार जा चुके थे और जिन्हें स्थिति के बारे में अच्छी तरह जानकारी थी लेकिन उस अवसर पर वे छोटा प्रदेश में थे जहाँ अत्यन्त भीषण युद्ध हो रहा था।"

ब्रेज्नेव के साधियों ने सोगो से मिलने-जुलने की, शीघ्रता से मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने की उनकी योग्यता का विशेष रूप से उल्लेख किया। 255वीं नो-सैनिक पैदल विंगेट के राजनीतिक प्रशिक्षक ईवान जुर्गिन उस विंगेट को घुनटों में ब्रेज्नेव की यात्राओं का स्मरण करते हैं : "मुझे सोगो के साथ घुल-मिल जाने की उनकी योग्यता पर अचरज हुआ। वे साइपो में घुस जाते थे, हर किसी से नज़दीक आने को कहते थे और एकदम इस तरह बातें करना शुरू कर देते थे मानो वे उनसे पिछले कई महीनों से परिचित थे।" वास्तव में वे अनेक सैनिकों, ग्रैंड-कमीशन अधिकारियों तथा अफसरों से परिचित थे, उन्हें मालूम था कि उनमें से प्रत्येक क्या-कुछ कर सकता है और उन्होंने उसी के अनुरूप उनकी युद्ध सम्बन्धी कार्रवाईयों का मार्गदर्शन किया। जब वे उस वर्ष अप्रैल में छोटा प्रदेश की यात्रा पर गये तो उन्हें पता चला कि एक क्षेत्र में जर्मन सैनिकों ने सोवियत पकियों में दरार डाल दी है। उन्होंने तुरन्त ही निकटवर्ती क्षेत्रों में स्थित इकाइयों को फ़ोन किया और आदेश न देने की अपनी सामान्य नीति के साथ केवल यह पूछा : "मामायेव क्या कर रहे हैं ? उन्हें वहाँ उनके सबमशीनगन चलाने वालों की जुरी तरह खरूरत है। मुझे विश्वास है कि वे शत्रु का सिर उड़ा देंगे।" अलेक्जान्दर मामायेव की हाल ही में ऑर्डर ऑफ़ लेनिन से अवकृत किया गया है। जिस समय में शब्द उन तक पहुँचाये गये थे और उनके सबमशीनगन चलाने वाले उस दरार को बन्द कर चुके थे।

यह अप्रैल 1943 में भीषण युद्ध के उन दिनों की बात है जब ब्रेज्नेव द्वारा कहा गया निम्न वाक्य : "आप सोवियत जन को मार सकते हैं लेकिन उसे हरा नहीं सकते !" एक आदमी से दूसरे आदमी तक पहुँचाता हुआ छोटा प्रदेश पर

फैल गया ।

यह उस समय की बात है जब वे कजाख़, अज़रबैजान, उज़्बेनियाई व रूसियों से गठित एक यूनिट का दौरा कर रहे थे तब उन्होंने कहा : “यह कहना ग़लत न होगा कि हमारे देश की सभी जातीयताओं के लोग छोटे प्रदेश पर लड़ रहे हैं । यह प्रदेश भी, इस सम्पूर्ण युद्ध की भाँति जिसे अब हम लड़ रहे हैं, जनगण के बीच मंत्री का स्मारक होगा । छोटे प्रदेश तक जाने की यात्राएँ अत्यन्त ख़तरनाक थीं और ब्रेजनेव अकसर ही ऐसी यात्राएँ करते थे । जर्मन सैनिकों ने बारूदी सुरंगें लगाकर सोवियत सैनिकों को ले जाने वाले छोटे जहाज़ों को तारपीडो से उड़ाना तथा उन पर गोलावारी करना जारी रखा । एक दिन जब ब्रेजनेव सैनिकों को उतारने वाले स्थानों का निरीक्षण कर रहे थे, जिन पर शत्रु द्वारा लगातार गोलावारी की जा रही थी, उन्होंने यह नोट किया कि नौसैनिक उन्हें उतारने में कितनी निर्भीकता के साथ उनकी मदद कर रहे हैं और उन्होंने सैनिकों से कहा, “नौसैनिक आपके सम्मान के पात्र हैं, क्योंकि इन वीरों के बिना आप इस सेतु-स्थल पर अधिकार नहीं कर सकते थे ।” और उन्होंने मुसकराते हुए कहा, “सचमुच ही वे हम पैदल सैनिकों को यदा-कदा नहलाते रहते हैं, लेकिन इसमें उनकी कोई ग़लती नहीं है ।”

ईवान सोलोव्योव ने, जो उस समय अफ़्रेंटिस नौसैनिक थे, “पैदल सैनिकों के स्थान” का वर्णन किया है : “ऐसी ही एक यात्रा के दौरान हम अंधेरे में ही गेलेंजिक से रवाना हुए, कवादिंका से गुज़रे, विमानों की नज़रों से बच रहने के लिए ऊँचे तट की शरण में आगे बढ़ते रहे और हम खुले सागर की दिशा में त्समेस्स की खाड़ी में होकर गुज़रे । दो या तीन मोटर नौकाएँ हमारे पीछे चल रही थीं ।

“मोसम ख़राब था, ठण्ड और बारिश पड़ रही थी, साफ़-साफ़ दिखायी भी नहीं देता था लेकिन जर्मन सैनिकों ने हमें परेशान नहीं किया—यही सबसे महत्वपूर्ण बात थी । खाड़ी का आधा रास्ता पूरा करने के बाद हमें अपने ठीक सामने मछली पकड़ने वाली नौका जैसी आकृति दिखायी दी । ईवान दोत्सेंको ने कहा, “यह आज शायद हमारे चलने से पहले ही चल पड़ी होगी ।”

जिस समय हमारे ठीक सामने पानी का फोवारा-सा उठ खड़ा हुआ, हम मछली पकड़ने वाली नौका में करीब छः सौ मीटर की दूरी पर थे । नौसैनिक चिल्ला उठे, “यह बारूदी मुरंग से टकरा गयी है !” दोत्सेंको ने अपने मोटर की हूर चीज का इस्तेमाल करते हुए पूरी गति से चलने का आदेश दिया ।

“जब हम मछली पकड़ने वाली नौका के पास पहुँचे यह पानी की सतह पर ही बह रही थी । कई लोग जल में तैर रहे थे । हमने तीन आदमियों को उठा

लिया। दूसरों को मछली पकड़ने वाली नौका ने उठा लिया। इसके बाद दूसरी मोटरनौकाएँ भी आ गयी। और हम मिलकर किनारे पर जा पहुँचे।

“एक डलवा चट्टान ने हमें जर्मन गोलाबारी से राहत दिलायी तथा आधे डूबे हुए जहाज ने गोदी का काम किया। जब सारे आदमी क्षतिग्रस्त मछली पकड़ने वाली नौका से निकाल लिये गये तो दोत्सेंको ने उनमें से एक अक्रसर को देखा और आश्चर्य के साथ कहा, ‘अरे, ये तो हमारे कमिस्तार हैं !’

“मैंने इस आदमी को पहचाने कभी नहीं देखा था और केवल उसी समय मुझे पता चला कि वह 18वीं बाहिनी के राजनीतिक विभाग के प्रमुख कर्नल सियोनिद ब्रेजनेव थे। उन्होंने बताया कि वे विस्फोट के धक्के से उछलकर ऊपर आ गिरे थे और यह एक चमत्कार ही था कि उनकी मृत्यु नहीं हुई। वे खुश नजर आ रहे थे लेकिन यह स्पष्ट था कि बर्फोंसे पानी में गोता खाने के बाद उन्हें काफी सटी लग रही थी। इसी बीच किनारे पर भारी गोली बर्षा शुरू हो गयी : तोपखाना व मशीनगनों गोली बर्षा कर रहे थे, सबमशीनगनों गरज रही थी तथा गोले पड़ रहे थे। एक नाविक ने मुझसे कहा, ‘नौजवान, आज हम भाप-स्नान कर रहे हैं। जर्मन सैनिक इस पानी को गर्म कर रहे हैं। वे चाहते हैं कि हम यहाँ से निकल जायें। देखो तो सही, राजनीतिक विभाग का प्रमुख भी हमारे साथ यही है !’

“हम कोई ब्रेजनेव के साथ किनारे पर गया। उसके बाद दोत्सेंको दौड़कर पीछे लौटे और उन्होंने मुझसे कहा, ‘मेरा आपात्कालीन राशन लेकर आओ। हम कमिस्तार को कुछ गर्माहट पहुँचायें। आदमियों को इस समय उनकी बहुत अधिक जरूरत है !’ मैं दौड़कर मोटर नौका तक गया, अलकोहल से भरा प्लास्क उठाया और इसे सेलर में ले गया। अक्रसर, सैनिक तथा भौसैनिक ब्रेजनेव के गिर्द इकट्ठा हो गये। उन्हें प्लास्क दिया गया तथा दोत्सेंको ने कहा, ‘नौसैनिकों के इस दूध का जायका लीजिये। मौसम खराब है और तैरने के लिए भी काफी ठंडा है।’ ब्रेजनेव हँसे, उन्होंने प्लास्क संभाला और दोत्सेंको को धन्यवाद दिया, लेकिन अलकोहल लेने लड़के को भेजने के लिए उन्होंने उनकी शोटा। उसी समय जर्मन मोर्टारो ने गोलाबारी शुरू कर दी तथा ब्रेजनेव और दूसरे अक्रसर एक घाटी में से होते हुए मोर्चों पर चले गये।

“एक नौसैनिक अक्रसर दौड़ता हुआ आया और उसने मोटर नौकाओं में बैठे व्यक्तियों से जोर से कहा, ‘लोगों की हालत खराब है। जर्मन सैनिक उन पर हमला कर रहे हैं और उनको बचाना चाहिए।’ हमने अपनी मशीनगनों और हथ-गोले उठा लिये और आगे की ओर दौड़ पड़े। तीन जर्मन हमलों को विफल कर दिया गया।

“रात भिरवाने पर जब हम घायलों को लेने के लिए मोटर नौकाओं पर लौटे तो मैंने ब्रेजनेव को पुनः सैनिकों के बीच देखा। किसी ने कहा, ‘कॉमरेड कमिस्तार, मई दिवस बर्लिन में मनाना श्रेष्ठ रहेगा।’ ब्रेजनेव ने मुसकराते हुए कहा, ‘हम बिल्कुल ऐसा ही करेंगे लेकिन हिटलर के लिए समारोह मनाने के लिए कुछ नहीं बचा रहेगा। उसने व्यक्तिगत रूप से आप सबको समुद्र में फेंक देने के आदेश जारी किये थे लेकिन इनका कोई नतीजा नहीं निकला। आप शेरों की तरह लड़। आपको और मुझे अभी बर्लिन पहुँचना है !’

“और लौटते हुए मैंने कुछ घायल आदमियों को यह कहते सुना, ‘कमिस्तार साहसी व्यक्ति हैं लेकिन उनकी साहसिकता बुद्धिमत्तापूर्ण है। वे लोगों को अनावश्यक जोखिम नहीं उठाने देंगे। उन्होंने हर किसी से पूछताछ की, सभी साक्ष्यों का निरीक्षण किया, सब-कुछ अपनी आँखों से देखा और हर बात का जायजा लिया। जब आप उन जैसे व्यक्ति के साथ होते हैं तो आप आश्चर्य महसूस करते हैं।’

“ऐसा महसूस हुआ कि ये बात निष्ठा और सम्मानपूर्वक कही गयी थी। ब्रेजनेव अनेक बार छोटे प्रदेश की यात्रा कर चुके थे। वहाँ हर कोई उनसे परिचित था और उनका सम्मान करता था तथा उन्हें सैनिक-सूत्रीय चिन्ता का कुछ-न-कुछ प्रतीक देता था।”

तीस वर्ष बाद, जब ये छोटा प्रदेश की यात्रा पर आये और इस प्रदेश के छोटे से टुकड़े के गिरे हरी-भरी पहाड़ियों पर नजर डालते हुए ब्रेजनेव ने कहा, “इन पहाड़ियों पर फ़ासिस्टों ने अधिकार कर रखा था।...हमने वहाँ सैनिक उतारने का जोखिम लिया। किसके द्वारा? हमारे पास कुछ मछली पकड़ने वाली नौकाएँ भी थी।

“लोकोपकार में कार्यरत सीडर एल० कुनिकोव को इस सैनिक टुकड़ी का कमाण्डर नियुक्त किया गया...बुद्ध से पहले यह एक समाचारपत्र के सम्पादक थे। सैनिक टुकड़ी को उतार दिया गया। 225 दिन-रात तक वहाँ चारों तरफ़ आग बरसती रही...अपनी शक्ति को संगठित करने के बाद हमने तीन दिशाओं से गोबोरोसीत्स्क पर प्रहार किया...और हम जीघ्र ही तामान पहुँच गये।

“जब मैं क्यूपा में था, फ़िदेल कास्त्रो ने मुझसे पूछा कि सबसे ज्यादा भीषण युद्ध किस स्थान पर हुआ। मैंने कहा कि इन चार वर्षों के दौरान मुझे छोटा प्रदेश पर हुई लड़ाई से भीषणतम लड़ाई का स्मरण नहीं है। हमारे पास केवल तीस वर्ग किलोमीटर क्षेत्र था और सैनिकों की भारी संख्या।

“निस्सन्देह हमारे सैनिक अत्यन्त साधन-सम्पन्न थे। इस धनत्व के कारण

अपने ही विमानों को अपने सैनिकों के ऊपर ही बमबर्षा करने से रोकने के लिए उन्होंने अपने अन्दरविषर उतार सिये और इन्हे सार्सियों के सहारे बिछा दिया... इस बात से काफ़ी मदद मिली।”

श्रेज़नेव ने उन व्यक्तियों के चेहरों को देखा जो उनके साथ छोटा प्रवेश पर रह चुके थे। “हम उस प्रदेश को हाथों से नहीं जाने दे सकते थे। इसके साथ ही हमारे हाथ से काला सागर तथा और काफ़ी कुछ निकल जाता। जिस प्रकार हमने काकेशिया को मुक्त किया हमने सम्पूर्ण उक्रेन की मुक्ति के लिए कार्य की गुरुआत की।”

“मैं इस तथ्य पर आपको बधाई देना चाहता हूँ कि नोवोरोसीस्क का नाम वीर नगरों की सूची में आ गया है,” श्रेज़नेव ने नोवोरोसीस्क की जनता को बताया। “मास्को, लेनिनग्राद, स्तालिनग्राद, नोवोरोसीस्क तथा दूसरे वीर नगर हमारी जनता का गौरव हैं। तम्बे समय में मुझे इस बात पर आश्चर्य होता है कि क्या मैं इस अनुभव से दुबारा गुजर सकूँगा। मैं जानता हूँ कि आप नोवोरोसीस्क के प्रतिरक्षकों द्वारा प्रदर्शित साहसिकता की स्मृतियों को सँजोये हुए हैं। उत्तरी काकेशियाई मोर्चा, काला सागर, छोटा प्रदेश—ये हमारी जनता द्वारा सँभे गये युद्ध के मुख्य क्षेत्रों में से थे। स्तालिनग्राद के साथ मिलकर हम करीब-करीब एक जैसी समस्या को ही हल कर रहे थे।”

श्रेज़नेव के सहायक वित्तर गोर्लिकोव ने उन्हें एक फ़ोटो दिया।

“यह मोर्चे के एकदम बायें किनारे पर मशीनगन मोर्चा था,” श्रेज़नेव ने कहा। “हमारे मशीनगन चलाने वालों ने एकदम बायें तट पर स्थित मोर्चे के मशीनगन चलाने वालों को प्रतियोगिता की चुनौती दी थी।”

आज नोवोरोसीस्क में धूप में नहायी अगूर बाटिकाओं में एक स्मारक खड़ा है। 2750 पीड स्फ़िटिरो, बारूदी मुरगो, गोलों और बमों को गलाकर इसे बनाया गया है। छोटे प्रदेश पर युद्ध-रत प्रत्येक सैनिक ने इतनी मात्रा में बाग बरसायी थी। सम्पूर्ण छोटे प्रदेश में केवल चार कुएँ में। मृत्यु की घाटी में केवल एक था। अनेक लोग इस कुएँ में गिरकर मर गये। वे दिन भी थे जब जानों मोचने जाने वाला प्रत्येक आदमी भारा गया।

आपरेशन नोवोरोसीस्क

नोवोरोसीस्क की मुक्ति के लिए 10 से 16 सितम्बर, 1947 के दौरान की गयी कार्रवाई महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध की असाधारण कार्रवाहियों में से एक थी। इसमें बल, वायु तथा नौ-सेनाओं ने भाग लिया। आक्रमण दो दिनों में किया

गया—नीमेट के कारखानों के क्षेत्र की ओर से तथा छोटे प्रदेश की ओर से—जबकि 6,000 से अधिक सैनिकों का शक्तिशाली दल सीधे नगर और इसके बन्दरगाह के केन्द्र में उतरा।

इस कार्रवाई के नियोजन तथा संचालन में ब्रेञ्जनेव द्वारा मुख्य भूमिका निभाई गयी। वे सेना के मेधावी नेताओं में से थे, जिन्होंने शत्रु की सुदृढ़ नीली पंक्ति¹ को तोड़ने तथा उत्तर काकेशिया में इसकी पराजय को पूरा करने के उद्देश्य से नोवोरोसीस्क पर सीधा प्रहार करने पर बल दिया।

इस कार्रवाई के चालू होने से काफ़ी पहले, नोवोरोसीस्क के उत्तर में स्थित पहाड़ी के लिए लड़ाई के बाद ब्रेञ्जनेव ने, उनके भूतपूर्व सहायक सेर्गेई पाखोमोव बतलाते हैं, राजनीतिक विभाग में अपने स्टॉफ़ से कहा, “हम यहाँ एक स्थान पर पड़े हुए हैं और भारी कठिनाई और क्षति के साथ एक के बाद एक पहाड़ी पर कब्ज़ा करते जा रहे हैं तथा व्यवहार्यतः हम कहीं भी नहीं पहुँच पा रहे हैं। क्या अपने सारे प्रयासों और प्रहार को नोवोरोसीस्क पर केन्द्रित करना अच्छा नहीं होगा? इससे हमें कुवान क्षेत्र में तथा तामान प्रायद्वीप पर शत्रु को तेज़ी से पूरी तरह पराजित करने में तथा औचित्यहीन और अनावश्यक क्षति से छुटकारा पाने में सहायता मिलेगी।”

घटनाएँ कुछ इस प्रकार से घटीं। नोवोरोसीस्क सम्पूर्ण नीली पंक्ति की दिशा में कुंजी था। उत्तरी काकेशियाई मोर्चे की दूसरी सेनाओं के सफलतापूर्वक आगे बढ़ने की शुरुआत उस समय हुई जब 18वीं वाहिनी द्वारा नगर पर अधिकार कर लिया गया।

नोवोरोसीस्क को 16 सितम्बर को मुक्त कराया गया तथा अगले दिन सोवियत सेनाएँ वोल्ची वोरोता दर्रे से निकल गयीं जो नोवोरोसीस्क घाटी से बाहर निकलने का एकमात्र रास्ता था। 21 सितम्बर को उन्होंने अनापा नगर तथा 3 अक्तूबर को तामान नगर को मुक्त कराया। 9 अक्तूबर तक लेफ़्टिनेंट जनरल प्रेंचो के नेतृत्व से 56वीं वाहिनी ने चुपक स्थित पर जर्मन सैनिकों को नष्ट कर दिया और सम्पूर्ण तामान प्रायद्वीप को शत्रुओं से मुक्त कर दिया।

नोवोरोसीस्क पर मुख्य प्रहार लक्षित करने का विचार, ब्रेञ्जनेव जिससे सहमत थे और जिम पर उन्होंने बल दिया, काफ़ी लम्बे समय से सैनिकों के दिलोदिमाग में परिपक्व होता जा रहा था तथा इस पर सेना की सैनिक परिपद

1. यह तामान प्रायद्वीप की ओर जाने वाले मार्गों पर शत्रु द्वारा बनाये गये व्यरोधकों की पंक्ति थी। इनका दाहिना किनारा बाज़ोव मागर तक तथा उसका बायाँ किनारा नोवोरोसीस्क और काना मागर तक फैला हुआ था।

में विचार-विमर्श किया गया। जनरल मुख्यालय से प्राप्त निर्देश के अनुरूप आक्रमण करने के आदेश का सैनिकों ने उत्साहपूर्वक स्वागत किया।

नगर के लिए एक वर्ष के युद्ध के दौरान सैनिकों, नौसैनिकों, गैर-कमीशन अधिकारियों और अफसरों ने नोवोरोसीस्क में शत्रु की पूरी तरह पराजय की प्रतीक्षा की। एक प्रेरणादायक और राजनीतिक कार्य था तथा इसने कारंबाई को सफल बनाने में भारी भूमिका निभायी।

ब्रेज्नेव ने इस सैनिक कारंबाई की योजना बनाने में प्रत्यक्ष रूप से भाग लिया तथा कामिकों को नियुक्त और प्रशिक्षित करने में काफ़ी सहायता की।

उन्होंने सेना के राजनीतिक विभाग के स्टाफ को सोच-समझकर काम दिये। मिसाल के तौर पर उन्होंने बड़ी उम्र के और अधिक अनुभवी पार्टी कार्यकर्ताओं जैसे मेजर अनुशावान आर्जुमान्यान (जो बाद में अकादमीशियन तथा सोवियत विज्ञान अकादमी के अध्यक्षमंडल के सदस्य बने), मेजर ईवान श्वेर्वाक (जो बाद में इतिहास विज्ञान के उम्मीदवार बने), तथा दूसरों को 318वीं डिवीजन में भेजा, जो सीमेंट के कारखानों के क्षेत्र से आगे बढ़ रही थी तथा गुरी मुकिन तथा द्मित्री मात्युशेन्को जैसे छोटी आयु के व्यक्तियों को नौसैनिक सबमशीन चलाने वालों की कम्पनी में, जिसने बन्दरगाह पर उतरकर रेलवे स्टेशन पर कब्जा करना था, या दूसरी कार्य-यूनिटों में भेजा।

ब्रेज्नेव ने प्रहार टोलियों के प्रशिक्षण का व्यक्तिगत रूप से मार्गदर्शन किया और अपने विभाग के कामिकों को इस आशय के निर्देश दिये कि सैनिकों और नौसैनिकों के बीच, जिनके साथ वे घल-भागें या समुद्र में नगर पर हमला करेंगे, राजनीतिक कार्य किस प्रकार करना चाहिए। ब्रेज्नेव ने अपना अधिक ध्यान इस बात को सुनिश्चित करने की ओर दिया कि सैनिकों के पास उपकरण मौजूद हों, उनके पास जरूरत को प्रत्येक चीज मौजूद हो।

उन्होंने उन यूनिटों का दौरा भी किया जिन्हें नोवोरोसीस्क के बन्दरगाह और नगर पर हमला करना था।

इससे भी अधिक उन्होंने 18वीं वाहिनी तथा काला सागर बेड़े की यूनिटों की संपुक्त कारंबाइयों के समायोजक के रूप में अपनी योग्यताएँ प्रदर्शित की।

यह उल्लेखनीय है कि 18वीं वाहिनी द्वारा अधिकृत क्षेत्र में नाबिषों ने भारी सख्या में सैनिक और गोला-बारूद इकट्ठा किया हुआ था। इस युद्ध को निश्चय ही भीषण और रक्तरंजित होना था।

30 अगस्त, 1943 को 18वीं वाहिनी के कमांडर जनरल लेसेसिएव ने एक सम्मेलन बुलाया जिसमें जनरल निकोलाई पास्तोव्स्की, चीफ ऑफ़ स्टाफ़ ने

शक्ति के पक्किबधन और कारंवाई के लिए योजना पर रिपोर्ट दी।

इस सम्मेलन में ब्रेज़नेव ने सैनिकों की राजनीतिक जागरूकता और मनोबल के बारे में चर्चा की। उन्होंने इस तथ्य पर बल दिया कि सभी सैनिक, नौसैनिक तथा अफसर इस प्रत्याक्रमण को शुरू करने के लिए उत्सुक थे। उनके अन्दर युद्ध शुरू करने की तथा नोबोरोमीत्स्क और तामान प्रायद्वीप में शत्रु को चकनाचूर करने की प्रबल इच्छा थी।

10 मिनटम्बर, 1943 को रात को 2 बजकर 30 मिनट पर सोवियत रात्रिकालीन बमवर्षकों ने किरिलोव्का के क्षेत्र में शत्रु के नियंत्रण केन्द्र पर प्रहार किया। बमवर्षा ने बन्दरगाह के उपकरणों को प्रकाशमान कर दिया, जिसने आने वाली सैनिक टुकड़ियों के लिए मार्गदर्शक का काम किया।

रात को 2 बजकर 45 मिनट पर 18वीं वाहिनी के तोपखाने के कमांडर ने अपने तोपचियों को गोलावारी करने का आदेश दिया। 15 मिनट के अन्दर 800 से अधिक तोपों ने 35000 से अधिक गोले और सुरंगें छोड़ीं।

इस दौरान सोवियत विमान निरंतर प्रहार करते रहे। नगर में भाग की लपटें उठने लगी तथा बन्दरगाह के ऊपर धुएँ का भारी आवरण छा गया, जिससे जहाज छिप गये और उसके साथ ही कुछ भी देख पाने में तथा उतरनेवाले जहाजों को निर्देश देने में काफ़ी कठिनाई उत्पन्न हो गयी।

ढाई बजे तक प्रहार टुकड़ियों ने पनडुब्बियों के जाल को नष्ट कर दिया। और सवमशीनगन चलाने वालों की टुकड़ियाँ पूर्वी और पश्चिमी गोदियों में उतर गईं। दूसरी सैनिक टुकड़ी—लेफ्टिनेंट कैप्टन वासिली वोतिलेव के नेतृत्व में, 393वीं अतिरिक्त नौसैनिक बटालियन—सबसे पहले उतरी। 20 मिनटों में शत्रु की भारी गोलावारी के दौरान 800 व्यक्ति अपने साथ 19 भारी मशीनगनों, 10 मोर्टार तथा 40 टैंकरोधी तोपें लेकर किनारे पर पहुँच गये।

तीसरी सैनिक टुकड़ी—लेफ्टिनेंट कर्नल सेर्गेई फ़ादान्चिक के नेतृत्व में 1339वीं पैदल रेजिमेंट—थोड़े समय के बाद वहाँ उतरी। 1000 से अधिक सैनिकों ने आयात-घाट पर तथा बिजलीघर के क्षेत्र में 30 मिनटों के अन्दर मजबूती में कब्ज़ा जमा लिया। इसके साथ ही पहला कृतिक बल—कर्नल अलेक्सेई पोतापोव के नेतृत्व में 255वीं नौसैनिक पैदल ब्रिगेड—केप ल्युबोव पर उतरा।

छोटा प्रदेश और मुख्य भूमि की ओर से बढ़ने वाले सैनिक टुकड़ियों के उतरने के साथ-साथ कारंवाई में शामिल होते गये।

नगर पर प्रहार

इस प्रकार नोबोरोसीस्क पर प्रसिद्ध हमले की शुरुआत हुई, जिस पर शत्रु ने दुश्तापूर्वक अधिकार जमाया हुआ था और उसका विश्वास था कि यह एक अंश दुर्ग है। आबादी को वलपूर्वक नगर में बाहर निकाल दिया गया। और यही एक भी प्राणी न था। सड़कों और मकान बास्की मुरगों में उड़ा दिये गये थे। नोबोरो-सीस्क की मुक्ति के बाद मुरगें हटाने वाले मोवियत दस्तों ने एक साल में अधिक बास्की मुरगों को निष्क्रिय बनाया और हटा दिया। किनारे के माथ-माथ तथा आगे बढ़ने के मुख्य मार्ग पर के सभी मकानों को कच्चीट में बनाये गये गिर-बास्की में बदल दिया गया।

तथापि एक सेतु-स्मृत पर कब्जा करने के बाद हृदिक बल सड़ाई में शामिल हो गया। इसने शत्रु को उसकी साइलों से और छिपने के स्थानों में तथा बन्दरगाह पर स्थित इमारतों से बाहर खदेड़ते हुए उस पर हमला किया। 16 नवम्बर तक लगातार सड़ाई चलती रही।

नोबोरोसीस्क के मुक्तिदाताओं को सम्बंधित करते हुए 18वीं काहिन की सैनिक परिपद ने लिखा, "साथियों, काला मागर बेड़े के नौसैनिकों के साथ मिलकर तेजी के साथ बढ़ते हुए तथा तीव्र प्रहार करते हुए आप मोर्चों ने शत्रु की प्रतिरक्षा पक्षियों को ध्वस्त कर दिया है... मेरा की सैनिक परिपद सैनिक दृष्टियों की इन पहली सफलताओं पर आपको हार्दिक बधाई देती है तथा आगे आगे तामान प्राप्त हो, जहाँ नाबो निरंकुशता के निष्कार हुए हमारे बच्चे, दमियी, माताएँ और पिता हमारी प्रतीक्षा कर रहे हैं, जो पूर्ण भुक्ति दिमाने तक आगे केवल आगे बढ़ने के लिए आपका आग्रह करती है।

"साल बेड़े के नौसैनिकों, मान मेरा के सैनिकों, अग्रगण्य व रात्रनीक प्रसिद्धों ! बिना आराम किए जा सकें, शत्रु का पीछा करें, उसे घेर लें और नष्ट कर दें। साथियों, शत्रु पर एक और प्रहार की जरूरत है और नोबोरोसीस्क क्रामिस्ट गलाबत में पूरी तरह मुक्त हो जायेगा।"

सेप रू गये क्रामिस्ट नगर और बन्दरगाह में 16 नवम्बर, 1943 को दिन निकलने तक बाहर खदेड़े दिये गये थे। केवल छोटी-मोटी खदेड़े हो एनी रू रकी थीं यही प्रतिरोध हो रहा था। इच्छुक विरोधन महान में दर्जित हो रहा। सेरिजेंट-कैप्टन अलेक्जान्देर राइकोव को सबनकोवसे बचने वालों की कम्पनी ने, क्रिमने नोबोरोसीस्क सला एमीकटर को तीन नीलागों पर कब्जा कर लिया था और पहले अधिकार में दिये गये मेनदे स्टेशन पर टिकवा दिया

नाज़ियों को नगर छोड़ने समय अन्याचार करने से रोकने का प्रयत्न किया। गूरी युकिन गडकुनोव की कम्पनी में 18वीं वाहिनी के राजनीतिक विभाग का प्रतिनिधि था। लड़ाई समाप्त हो जाने पर उन्होंने अपने मृतकों को रेलवे स्टेशन के पास ही दफना दिया।

लेकिन जैसे ही वे वीरगति प्राप्त सैनिकों के सम्मान में सलामीसूचक गोनियां दागने को तैयार हुए उन्होंने सड़क पर शीर्षस्थ अफ़सरों की एक टोली देखी। वे अप्रत्याशित था क्योंकि उस समय तक इन क्षेत्रों में दूसरी यूनिटों के केवल टोही आदमी ही वहाँ थे। उन अफ़सरों में एक—वे ब्रेज़नेव थे—ने युकिन को पहचान लिया, उन्हें गले लगाया और कहा, “उन्होंने सोच लिया था कि तुम मारे जा चुके हो। वापस जाओ, मैं तुम्हारे लिए शुभकामनाएँ करता हूँ।” राइकुनोव ने मोर्चा कमांडर कर्नल जनरल इवान पेत्रोव को सूचित किया कि उनकी कम्पनी ने अपना कार्य पूरा कर लिया है। पेत्रोव ने तुरन्त ही सभी व्यक्तियों को युद्ध के आइंरों से अलंकृत करने का आदेश दिया।

18वीं वाहिनी तामान को मुक्त कराने के बाद केचें खाड़ी की ओर बढ़ी तथा इसने एक और साहसिक कारनामा कर दिखाया : क्रीमिया में शक्तिशाली सैन्यबल का उतारा जाना। इस कार्रवाई में भी ब्रेज़नेव ने प्रमुख रूप से अंशदान किया। तूफ़ानी मौसम में छोटी नौकाओं में बैठकर चौड़ी केचें खाड़ी पार करना, केचें के दक्षिण में एल्टिगेन गांव के छोटे सेतु-स्थल पर कब्ज़ा करने तथा क्रीमिया के लिए युद्ध शुरू करने के सम्बन्ध में दृढ़ और निर्णायक क़दम उठाने के लिए सभी कमांडरों के साथ तालमेल स्थापित करना आवश्यक था।

नोबोरोसीस्क की भांति ब्रेज़नेव ने एल्टिगेन पर कब्ज़ा करने के लिए नियुक्त सैन्यबल के पास अपने प्रशिक्षकों को भेजा तथा उन्होंने अपने अत्यन्त कठिन युद्ध सम्बन्धी कार्यों को सम्मानपूर्वक पूरा किया। चालीस दिनों से अधिक तक पूरी तरह घिरे रहने के दौरान सैन्यबल में आग की लपटों में झुलसते हुए इस प्रदेश पर युद्ध के दौरान अभूतपूर्व साहस का प्रदर्शन किया और इसके बाद ये सैनिक शत्रु की पिछली पंक्तियों तक गहराते चले गये, उन्होंने माउन्ट मित्रिदात पर अधिकार कर लिया, शत्रु के तोपखाने के मोर्चों को नष्ट कर दिया : वे उतरकर केचें नगर और बन्दरगाह तक पहुँच गये और उन्होंने शत्रु का घेरा नष्ट-भ्रष्ट कर दिया।

सैन्यबल के सभी सदस्यों को उच्च सरकारी अलंकरणों से विभूषित किया गया तथा उनमें से 56 को नोबियत संघ के वीर की उपाधि प्रदान की गयी।

उत्तर काकेशिया में हुई लड़ाइयों में 18वीं वाहिनी की सहभागिता की

भव्य गाथा का समापन एल्लिंगेन कार्पेबाई के साथ हुआ। नवम्बर 1943 में सेना के प्रशासन तथा नौसैनिक पैदल ब्रिगेडों सहित इसकी कुछ यूनिटों की किएव क्षेत्र में स्थानांतरित कर दिया गया और इन्हें प्रथम उक्रेनियाई मोर्चे में मिला दिया गया। 18वीं वाहिनी ने इतिहास के नये चरण का सूत्रपात किया।

विजय के 30 वर्ष बाद 7 सितम्बर 1974 को लियोनिद ब्रेज्नेव ने सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमंडल की ओर से वीर नगर की पताका पर आर्डर ऑफ नेनिन तथा स्वर्ण सितारा पदक लगाये। यह भव्य और मर्मस्पर्शी क्षण था।

अपने साथियों—नोवोरोसीस्क में फासिस्ट शक्तियों की पराजय में भाग लेने वाले योद्धाओं—को सम्बोधित करते हुए ब्रेज्नेव को यह कहने का पूरा अधिकार था, "अगर किसी व्यक्ति को अपने समय की किसी प्रसिद्ध घटना, विश्व इतिहास में महत्वपूर्ण अवधि परिलक्षित करने वाली घटना में प्रत्यक्ष रूप से सहभागिता करने का अवसर प्राप्त होता है तो उसे इस बात का आजीवन स्मरण रहता है। हमारी पार्टी की पुरानी पीढ़ी के लिए महान अकतूबर समाजवादी क्रांति तथा गृह-युद्ध ऐसी ही घटनाएँ थी। आपके और मेरे लिए, मेरी पीढ़ी के लिए, यह महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध था। अतिमानवीय प्रयास तथा पूर्ण निष्ठा—इतिहास में इस महानतम युद्ध में भाग लेने वाले हम सभी के लिए ये बातें सर्वोच्च थी। ऐसा इसलिए था कि क्योंकि हमने अपनी सोवियत समाजवादी स्वदेश के लिए, जो हमें सबसे प्रिय है, लड़ाई लड़ी और उसकी प्रतिरक्षा की। हमें इस बात की प्रसन्नता है कि हमने शत्रु पर भारी विजय अर्जित की, और हमने इस विजय में अपना अशदान किया।"

आगे चलकर सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति का महासचिव बनने वाले एक सैनिक के ये शब्द सोवियत जनता के दिलोदिमाग को सम्बोधित करते थे। इन शब्दों में सोवियत जनता व युद्ध में उठायी गयी अपूर्णाय क्षति पर दुःख तथा उस भयानक युद्ध में असौम्य आत्मबलिदान और सामूहिक साहसिकता का प्रदर्शन करने वाले व्यक्तियों के प्रति गर्व की भावना का समावेश है। 33 वर्ष पहले नोवोरोसीस्क के साहसी प्रतिरक्षकों द्वारा ली गयी शपथ के शब्दों की उनके द्वारा पुनरावृत्ति कितनी स्वाभाविक थी "युद्ध के लिए जाते समय हम अपनी मातृभूमि को अपना वचन देते हैं कि हम तेजी से और दृढ़तापूर्वक काम करेंगे, यह कि शत्रु पर विजय के लिए अपने जीवन से मोह नहीं करेंगे। हम अपनी जनता को खुशहाली के लिए, मातृभूमि तुम्हारे लिए, जिसे हम सर्वाधिक प्यार करते हैं... अपना सकल, अपना जीवन और अपना एक-एक बूंद खून अर्पित

कर देंगे हमारा क़ानून है और रहेगा : केवल आगे और आगे ।” इन व्यक्तियों का स्मरण करने हुए ब्रेज्नेव ने कहा, “ये वीर अपने वचन के प्रति सच्चे थे । वे शत्रु को पराजित करने हुए और मृत्यु की अवहेलना करते हुए आगे-ही-आगे बढ़ते गये ।” और वे भी उनके साथ आगे-ही-आगे बढ़ते चले गये, वे लड़ाई के बीचोंबीच रहे और उन्होंने मृत्यु की उपेक्षा की ।

राष्ट्रीय नेता के इन गुणों ने— एक सैनिक जो बाद में शांति के लिए, युद्धों के उन्मूलन के लिए असाधारण योद्धा बना—युद्ध की कठिन घड़ियों के दौरान स्वरूप ग्रहण किया ।

3. उक्रेन की मुक्ति

1943 में, जब सोवियत सेना नाज़ी आक्रमणकारियों को सोवियत भूमि से बाहर निकाल रही थी, पार्टी ने अपने कार्यकर्ताओं को सक्रिय सैनिक सेवा से वापस बुलाना शुरू कर दिया । लियोनिद ब्रेज्नेव से भी कहा गया कि उन्हें भी क्षेत्रीय पार्टी समिति के सचिव की हैसियत से अपने पुराने काम पर लौटना होगा । लेकिन उन्होंने युद्ध समाप्त हो जाने तक अपनी यूनिट के साथ बने रहने की अनुमति प्राप्त करने के लिए प्रार्थना की ।

नवम्बर 1943 में सर्दों के एक दिन ब्रेज्नेव अपनी यूनिट के साथ किएव पहुँचे । वे उक्रेन की राजधानी से, जहाँ वे युद्ध से पहले कई बार आ चुके थे, परिचित थे । उन्होंने उक्रेन की कम्युनिस्ट पार्टी की 14वीं व 15वीं कांग्रेसों में तथा इसकी केन्द्रीय समिति के पूर्णाधिवेशनों में भाग लिया था और वे विभिन्न सम्मेलनों में भाषण कर चुके थे । इस बार वे नगर को भीषण लड़ाई तथा जर्मन आधिपत्य से नष्ट, लेकिन नाज़ी लुटेरों से मुक्त देख रहे थे ।

नवंबर 1943 के अंत में किएव के पश्चिम में सैनिक स्थिति गंभीर रूप से बिगड़ गयी थी । जर्मन सैनिकों ने ख़ितोमिर पर पुनः अधिकार कर लिया था तथा वे सोवियत युद्ध-व्यक्तियों में लगभग 50 किलोमीटर तक घुस आये थे । सोवियत उच्च कमान को वहाँ जर्मन सैनिकों के नये शक्तिशाली प्रहार करने के इरादे की जानकारी थी ।

सोवियत सैनिक, जिन्होंने इन घटनाओं की पूर्ववेला पर नीपर पर दबाव बनाये रखा था और किएव व ख़ितोमिर को मुक्त कराया था, युद्ध की भकान से प्रस्त हो गये थे । नाज़ी फ़ास, ग्रीस तथा दूतरे अधिकृत यूरोपीय देशों से नई डिप्लोमैट से आये थे तथा अब उन्होंने सोवियत सैनिकों को नीपर के दूतरी ओर बढ़ेड़ने और किएव तथा नदी के दायें किनारे पर स्थित सम्पूर्ण प्रदेश पर पुनः

कब्जा करने का प्रयत्न किया। जनरल निकोलाई वातुतिन के नेतृत्व में प्रथम उक्रेनियाई मोर्चे को इन योजनाओं को विफल बनाने का काम सौंपा गया।

सर्वोच्च कमांडर ने 18वीं वाहिनी को मुख्य क्षेत्र में—क्रिएव-डितोमिर राजमार्ग—ने जाने का आदेश दिया। इस सेना ने नोबोरोसीस्क तथा तामान प्रायद्वीप को मुक्त कराकर काकेशिया में अद्भुत कीर्तिमान अर्जित किया।

2 दिसम्बर को 18वीं सेना की पहली पैदल और नौसैनिक बटालियन इस क्षेत्र में आयी तथा क्रिएव के पश्चिम में बर्फ में नुके भेता तथा निज़न डिनोमिर राजमार्ग में गुजरते हुए तेजी में युद्ध पंक्ति की ओर बढ़ गयी।

18वीं वाहिनी का कार्य मोर्चे की दूसरी सेनाओं के सहयोग के साथ स्ताविरचे गांव के निकट शत्रु को रोकें रखना तथा उनके को राजधानी के लिए युद्ध का रास्ता पलटना था।

अपनी पुस्तक बक्षिण-पश्चिमी प्रहार में सोवियत सघर्ष के मार्गान किर्स्त्त मोस्कोलैंको ने उस कठिन अवधि में ब्रेज़नेव के साथ हुई अपनी भेंट के बारे में अपने सस्मरण अंकित किए हैं। नियोजित प्रत्याक्रमण के क्षेत्र के एक अंग को 18वीं वाहिनी को सौंपे जाने के दौरान ब्रेज़नेव के साथ उनकी पहली मुलाकात हुई। वे उत्तरी काकेशिया से वहाँ आये थे। "ब्रेज़नेव अपनी सेना के प्रतिनिधियों की टोली के साथ वहाँ पहुँचे और हम उन्हें 52वीं पैदल सेना के डिवीज़नों का निरोधन कराने से गये, जिसकी कमान उन्हें सभालनी थी। अपनी ओर से उन्होंने हमें 74वीं पैदल सेना की युद्ध योग्यता के बारे में सूचित किया, जिसे हमारी सेना में स्वाभाविक किया जाना था।

"सामान्य बातचीत के दौरान तथा इसके बाद कमांडिंग अफसरों को सीमित बैठक में ब्रेज़नेव ने इस तथ्य पर अपना सतोष व्यक्त किया कि 18वीं वाहिनी की यूनिटें इस प्रमुख रणनीतिक क्षेत्र में कार्यरत प्रथम उक्रेनियाई मोर्चे के साथ शामिल हुई हैं।

"हमें यह भी पता चला कि उन्होंने उत्तर काकेशिया में सेना की प्रतिरक्षा तथा प्रत्याक्रमण संबंधी सभी सैनिक कार्यवाहियों में भाग लिया था। मुझे उनकी सादगी, निर्णय और कार्यवाहियों के प्रति दृढ़ता पसन्द आयी। सक्षेप में हमने महसूस किया कि ब्रेज़नेव पार्टी-राजनीतिक, सैद्धांतिक और शिक्षा संबंधी कार्य के श्रेष्ठ संगठनकर्ता थे जिनका युद्ध कौशल के प्रति भी व्यापक दृष्टिकोण था। इससे भी अधिक वे एक अच्छे साथी थे और उनसे बातें करने में आनन्द आता था।"

मोर्चे के क्षेत्र में स्थिति 12 दिसम्बर को सुबह सवेरे विशेष रूप से गंभीर हो गयी। सेना के राजनीतिक विभाग-प्रमुख के भूतपूर्व ए०डी०सी० कॅप्टन ईवान

निर्यानिद ३० ब्रेजनेव : जीवन के कुछ पृष्ठ

वुक ने उस गत ब्रेजनेव द्वारा किये गये साहसिक कार्य का वर्णन इस प्रकार

मोर्चा पंक्ति में टेलीफोन पर एक समाचार प्राप्त हुआ जिसमें बताया गया कि नाजी स्त्राविश्च गाँव के निकट हमारी पंक्तियाँ तोड़ने का प्रयास कर रहे हैं। हम सबने हथियार सभाले और दौड़ पड़े। कर्नल ब्रेजनेव अपनी जीप पर

मवाग हो गये। मैं उनके पीछे-पीछे गया।

"हममें से प्रत्येक के पास एक पिस्तौल तथा ड्राइवर के पास एक सब मशीन-गन तथा उसके धैने में चार हथगोले थे। एक दूसरा सबमशीनगन चलाने वाला भी हमारे साथ शामिल हो गया। भारी जर्मन गोलावारी के कारण मोर्चा पंक्ति में लगभग एक मील पहले ही हमने जीप छोड़ दी तथा हमें अपने आगे की दिशा में मशीनगनों की गड़गड़ाहट सुनायी दी।

"ब्रेजनेव हमारे गिद सैनिकों को देखकर चिल्लाये, 'साथियो पीछे हटने का कोई प्रश्न नहीं है ! हमारे पीछे किएव है ! शत्रु को आगे नहीं बढ़ने देना चाहिए। हमारा कर्तव्य अन्तिम क्षण तक यहाँ डटे रहना है !'

"उन्हें और कुछ कहने का समय नहीं मिला : जर्मन मशीनगनों ने आग उगलनी शुरू कर दी तथा शत्रु की पैदल सेना ने हमला बोल दिया। हमारे पास केवल एक ही सक्रिय भारी मशीनगन थी लेकिन वह भी कुछेक क्षणों के बाद ठंडी पड़ गयी। ब्रेजनेव दौड़कर त्वाई की ओर गये।

"मैं उनके पीछे दौड़ा। हम कई निर्जीव शरीरों के ऊपर से कूदते गये। ब्रेजनेव ने मुड़कर पीछे देखा। 'इवान, जरा देखो तो, शायद कोई जिंदा हो। शायद किसी को सहायता की जरूरत हो ! मैं पीछे मुड़ा, मैंने जल्दी से दो या तीन शरीरों को छूकर देखा। वे सब मर चुके थे। मैंने उनकी टोपियों से उन चेहरे ढक दिये और ब्रेजनेव के पीछे चलने लगा, तभी मैंने देखा कि हमारी मात्र मशीनगन चालू हो चुकी थी और आग उगल रही थी।

"जब मैं वहाँ पहुँचा तो मैंने मशीनगन चलाने वाले को खून से लथपत और ब्रेजनेव को गोलियाँ चलाते देखा। मैंने उस मृत व्यक्ति को एक तरफ और गोलियों का बरसात ब्रेजनेव के नजदीक सरका दिया। केवल चन्द रक्त बच रहे थे, इस बीच गोलावारी की परवाह न करते हुए आगे बढ़े। उनकी ओर हमारी लाई के बीच 30, 40 मीटर से अधिक का फासल था। वे हथगोले फेंक रहे थे और उन्मादियों की आवाजों में चिल्ला रहे थे। नष्ट हो गया ! आत्मसमर्पण करो !' ब्रेजनेव ने प्रत्येक शब्द का उत्तर गोली बरपा की। जर्मन सेना के प्रकाशित करने वाले गोले एक-एक कर

में जाकर प्रकाशित होते रहे, ब्रेजनेव ने अपने शानों पर गोली पतली। बाहर से वे अपना सामान्य आत्मनिर्ग्रह बनाते हुए थे लेकिन उन्होंने अपनी फिर से बनी टोपी और दस्ताने उतार कर फेंक दिये तथा जब मैंने उन्हें गोतियों की बोझार से तथा गोतों के टुकड़े से उनको रक्षा करने के लिए तीन बार जमीन पर लिटाने के लिए नीचे खींचने का प्रयास किया तो उन्होंने हर बार एक ओर को धकेल दिया। गोतियों की आगिरी पेटी मशीनगन में लगाते हुए उन्होंने कहा, सारी खाई में दोड़ते चले जाओ, हर किसी को इकट्ठा करो, उन्हें आगिरी क्षण के लिए अपने हथगोले बचाने के लिए कहो तथा आमने-सामने की लड़ाई के लिए तैयार हो जाओ।"

"दाबी पैदल सैनिकों की गणे की हालत में पीछे-मुकार और गोतियों की बोझारों के बीच हमने जर्मन टैंकों की हल्की गड़गड़ाहट सुनी उन्होंने अपनी स्थितियों संभाल ली थी और वे तेजो से जितोमिर राजमार्ग पार करने के लिए तत्पर थे। अपनी खाई में मुझे एक दर्जन से अधिक जीवित व्यक्ति नहीं मिल पाए।

"लेकिन जैसा कि युद्ध में बार-बार हुआ, ऐन मौके पर हम गहायता मिल गयी: पिछली स्थितियों से हमारे भारी तोपखाने ने मनु पर प्रहार कर दिया, तथा काट्यूशा राकेटों से वायुमंडल बोझिल हो गया। तीर्थों ने जर्मन टैंकों का सफाया कर दिया और काट्यूशा राकेटों ने जर्मन पैदल सैनिकों को काट डाला। चंद मिनटों के अंदर ही एक साजेंट टैंकरोपी राक्षस हाथ में लिए दोड़ कर हमारी खाई में आया, उसके पीछे एक प्लाटून और उसके बाद एक पूरी कम्पनी वहाँ पहुँच गयी।

"मैं ब्रेजनेव के पास वापस लौटा दो। सैनिक मशीनगन पर अपने मोर्चे गभाय चुके थे जबकि वे दीवार के सहारे मुँके हुए जमीन पर बैठे थे। भेड़ की छान में बने उनके सफेद कोट का सामने का हिस्सा गुन में मरा हुआ था। मैं दोड़कर उनके पास गया, लेकिन वे मुझे देखकर मुन्कराये, वे बिन्तुल ठीक-ठाक थे और उन्होंने कहा, 'ईवान, बाओ निगरेट निने!' मैंने अपनी उँगलियाँ में मोड़ कर सिगरेट बनायी और इस उनके बोझों पर लगाया तथा अपना हाथ उनकी छाती पर रखा। लून मूख चुका पा: वे मारे गये मशीनगन खानक का गुन था। मैं ब्रेजनेव के पीछे बैठ गया और मैं भी निगरेट थी...कैय मारे दिन हथ अशिम पक्ति की खाइयों में घुनते रहे।"

25 दिसम्बर 1943 को मुबहु-मंडरे सोवियत सैनिकों ने जितोमिर और बेंड-चेव पर जवाबो हजना शुरू कर दिया। 18वीं बर्हिरी के सैनिक एक बार फिर मुक्त दिना में नई रहे थे।

इस लड़ाई के शुरू होने से चंद दिनों पहले ब्रेज्नेव ने अधीनस्थ राजनीतिक विभागों के सभी प्रमुखों को निर्देश जारी किये। यह बात पांतों में सैनिकों के प्रति उनकी सतत चिंता की विशिष्टता थी। उन्होंने लिखा : “योद्धाओं की शक्ति और स्वास्थ्य की रक्षा कीजिये। वास्तविक नियम यह है कि उन्हें भोजन और गर्म पानी सप्लाई किया जाना चाहिए। हमें कठोरतम नियंत्रण सुनिश्चित करना चाहिए जिससे कि ये लोग राज्य द्वारा उनके लिए सुलभ वस्तुएं प्राप्त कर सकें। इस संबंध में लापरवाही बरतने वालों या आलसीपन दिखलाने वालों को कठोर दंड दिया जाना चाहिए। चिकित्सा सेवाओं के काम के प्रति निरंतर ध्यान देना चाहिए। यूनिटों के राजनीतिक विभागों को युद्ध क्षेत्र से घायल व्यक्तियों को हटाने के लिए तथा आपात्कालीन चिकित्सा सहायता के लिए उत्तरदायी व्यक्ति नियुक्त करने चाहिए।”

कोरिस्तेशेव, त्रितोमिर तथा वेदिचेव के लिए लड़ाई विशेष रूप से भीषण थी। सोवियत सैनिक कठोर तुपार के बाद अचानक बिना सड़क वाले दलदली क्षेत्र में परिवर्तित मैदान को पार कर तेजी से आगे बढ़े।

अपने अफसरों तथा अपने सभी कमियों और अधीनस्थ कर्मचारियों के प्रति निरन्तर चिंता प्रदर्शित करने वाले ब्रेज्नेव अक्सर ही अपना ध्यान नहीं रख पाते थे।

वेदिचेव के लिए लड़ाई में वे उस समय एक बार फिर बाल-बाल बच गये जब हाथ में सबमशीनगन लिये उन्होंने उन घेरेकों पर हमले में भाग लिया जहाँ जर्मनों ने नाकाबंदी की हुई थी और इस प्रकार सोवियत सैनिकों ने एक टुकड़ी को युद्ध के मुख्य मोर्चे से अलग किया हुआ था।

अनेक वर्षों बाद अपनी यूनिटों के युद्ध-अनुभवियों के साथ मुलाकात के दौरान मेजर जनरल तिमोफ़ेई वोल्कोविच ने स्मरण किया कि 3 जनवरी 1944 को, वे उस समय कर्नल थे और यह उनके लिए स्मरणीय दिवस था। उन्होंने तूफ़ानी टोली के साथ जर्मनों द्वारा कब्जे में ली हुई घेरेकों पर हमला बोल दिया और उन्हें यह पता चला कि मुट्ठीभर सोवियत सैनिक पहले से ही जर्मन मशीनगन चालकों के निकट पहुँच चुके थे।

इन आदमियों का नेतृत्व हाथ में एक सबमशीनगन याने एक अफसर द्वारा किया जा रहा था। वोल्कोविच ने उस अफसर को तेजी से अपनी सबमशीनगन साधते हुए गोलियों की लम्बी वर्षा करते हुए देखा, जिसके दौरान छत पर दिखायी देने वाले दो नाज़ी सैनिक मारे गये। एक क्षण बाद एक जर्मन राइफलधारी ने सिङ्को से बाहर झाँककर देखा और उस सोवियत अफसर पर गोली चलायी

जिसे एक सैनिक ने बचा लिया। जैसे ही जर्मन सैनिक गोली चलाने वाला था उस सैनिक ने अकसर को जमीन की ओर लीज लिया जबकि दूसरे ने नाज़ी को मार गिराया। जैसे ही वह अकसर जमीन से उठकर खड़ा हुआ, वोल्कोविच ने कर्नल ब्रेजनेव को पहचान लिया। वोल्कोविच अपने आपको घामोश न रख सके और उन्होंने कहा, "कर्नल, आपको यहाँ होने का कोई अधिकार नहीं है। आप यहाँ क्या कर रहे हैं?"

"जो आप कर रहे हैं, कर्नल!"

"कृपया आप यहाँ से चले जाइये। यह जगह आपके लिए नहीं है।"

"जहाँ स्थिति युद्ध संबंधी कार्यों की यथाशीघ्र पूर्ति की माँग करती है, मेरा स्थान वही है, क्या आपको मालूम है कि नगर में लड़ने वाली हमारी अधिम यूनिटें घिरी पड़ी हैं? हमें उन तक पहुँचना है। उत्तेजित मत होइये, कर्नल! हमें मिलकर इन बैरकों से नाज़ियों का सफ़ाया करना है।"

बेदिचेव की मुक्ति के तुरंत बाद ही ब्रेजनेव ने अपने अनेक सैनिक कर्तव्यों के अलावा सामान्य जीवन पुनः स्थापित करने में अत्यन्त सक्रिय रूप से भाग लिया। उन्होंने खाद्य पदार्थों की सप्लाई तथा परिवहन सुविधाओं की दृष्टि से नगर की काफी सहायता की। उन्होंने नगर की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कच्चे में लिए गये बीस ट्रकों तथा आठ यामी कारों को इस काम पर लगाने का आदेश दिया। खाद्य सप्लाई को पिछली पस्तियों से आगे से जाने में इनसे काफ़ी सहायता मिली। इसके अलावा 18वीं वाहिनी के राजनीतिक विभाग ने बेदिचेव के लिए सैनिक भंडारों से गल्ला प्राप्त किया। ये काम भी ब्रेजनेव की पहल पर किया गया।

1944 की गर्मियों में नाज़ियों ने, जिन्हें उक्रेन में नीपर के पश्चिम में भारी पराजय का सामना करना पड़ा, अपने आपको कारपेविया में जमा किया, जिससे आगे का सारा मार्ग अवरुद्ध हो गया। ये 270 किलोमीटर चौड़ा और 100 किलोमीटर गहरा प्राकृतिक दुर्ग था, जिसे शत्रु ने सुदृढ़ मोर्चों, खाइयों, कटीले तारों की चारदीवारियों, बारूदी सुरगों और मिन इन्जिनियरी उपकरणों से मजबूत बना लिया था।

सैनिक कमान और वास्तव में सभी अकसरों को यह स्पष्ट हो चुका था कि इस ऊबड़-खाबड़ पर्वतीय क्षेत्र में भीषण सड़ाई होगी। सेना का क्षेत्र मुख्यालय स्यातिन, कोलोम्या और ग्वोस्देत्स क्षेत्र में था। सेना को 11वीं व 17वीं रशक पैदल सेना तथा छोड़े समय बाद 95वीं पैदल सेना से सुदृढ़ बनाया गया। ये युद्ध-परीक्षित यूनिटें थीं। इन्हें विशेष प्रशिक्षण, अनुभव या पर्वतीय युद्ध के लिए उपकरणों का अनुभव प्राप्त न था, कारपेविया जैसी पर्वत-श्रृंखला में लड़ने की

नो बात ही क्या थी। कार्पेथिया के लिए पहले ही चुके युद्ध में प्राप्त अनुभव का अध्ययन तथा इसे यथाशीघ्र सैनिकों को उपलब्ध करने की आवश्यकता थी।

इस सम्बन्ध में सोवियत संघ के मार्शल आन्द्रेई ग्रेचको अपनी पुस्तक कार्पेथिया पर्वत शृंखला के पार में कहा है कि 18वीं वाहिनी के राजनीतिक प्रशिक्षक, जिनके राजनीतिक विभाग का नेतृत्व कर्नल ब्रेज्नेव कर रहे थे, प्रत्याक्रमण के लिए सैनिकों को सक्रिय रूप से तैयार कर रहे थे।

“पूर्व कार्पेथिया कार्रवाई के लिए तैयारी करते हुए 18वीं वाहिनी के राजनीतिक विभाग ने पार्टी तथा कोम्सोमोल के प्रत्येक राजनीतिक प्रशिक्षक को पर्वतीय क्षेत्र में कार्रवाई के दौरान कार्य के लिए सक्रिय रखने पर ध्यान दिया,” मार्शल ग्रेचको ने लिखा : “यूनिटों में तथा सेना के राजनीतिक विभाग में दो या तीन दिनों के अन्दर 430 व्यक्तियों को प्रशिक्षित करने के लिए 10 सैनिक संगोष्ठियों का आयोजन किया गया। सामान्य राजनीतिक रिपोर्टों के अलावा, इन संगोष्ठियों में वनों से युक्त पर्वतीय क्षेत्र पर लड़ाई के भिन्न पहलुओं तथा नयी युद्ध स्थिति में राजनीतिक व सैनिक शिक्षा के कार्यों पर विचार-विमर्श किया गया।”

राजनीतिक प्रशिक्षकों के इस समस्त कार्य का आयोजन उस समय किया गया जब कार्पेथिया के पूर्व में भीषण लड़ाई चल रही थी। अफ़सरों व सैनिकों ने साहस, रढ़ संकल्प और नयी परिस्थितियों में पहलकदमी के साथ युद्ध करने की संवर्द्धित क्षमता प्रदर्शित करते हुए साहसिकता के अनेक उदाहरण प्रस्तुत किये।

पर्वतों में युद्ध

सोवियत सैनिक कार्पेथिया के जितना निकटतर पहुँचते गये उनकी दृष्टि से परिचित निचली भूमि वाला लैंडस्केप ओझल होता चला गया। 18वीं वाहिनी ने केवल चन्द यूनिटों को ही वनयुक्त पर्वतीय क्षेत्र में युद्ध के लिए प्रशिक्षित किया गया था। नयी परिस्थितियों में युद्ध करने के लिए सभी अफ़सरों व सैनिकों को प्रशिक्षित करना, पर्वतारोहण के लिए उपकरणों, हल्के हथियारों तथा मालवाही पशुओं को उपलब्ध करना आवश्यक था।

यूनिटों को पूरी शक्ति को संगठित करना, पार्टी संगठनों की युद्ध से प्रभावित भागों को मुरझाना, निरन्तर लड़ने के कारण बची हुई सेनाओं के मनोबल को उन्नत करना भी आवश्यक था।

इन कठिन स्थिति में सेना के राजनीतिक विभाग के प्रमुख के पास ऐसे लोग

मौजूद थे जिन पर वे निर्भर कर सकते थे। उन्होंने पर्याप्त राजनीतिक और युद्ध अनुभव से सम्पन्न सिद्धांतनिष्ठ, साहसिक और साधन संपन्न सैनिकों को ढोनों का गठन किया। शक्ति और पहलकदमी का वातावरण उत्पन्न हो गया। राजनीतिक विभाग ने कुशलतापूर्वक कार्य किया। ब्रेज़नेव के अधीनस्थ कर्मों उनका सम्मान करते थे और उन्हें पसन्द करते थे, उन्हें किसी काम को करने के लिए उनसे दुबारा नहीं कहना पड़ता था और उन्होंने युद्ध सम्बन्धी आदेशों की पूर्ति को निश्चित बनाने के लिए संभव और असंभव काम पूरे किये।

वे साइया और दूसरे स्थान, जहाँ राजनीतिक विभाग के प्रमुख काम करते थे, आगन्तुकों के लिए सदा खुले रहते थे।

ब्रेज़नेव प्रत्येक व्यक्ति से मैत्रीपूर्ण व्यवहार करते थे। हमेशा हो यह पूछा करने थे कि वे अपने कर्तव्यों का किस प्रकार पालन कर रहे हैं, वे उनके अनुरोधों और मुझावों की सुनते थे, उन्हें परामर्श और निर्देश देते थे।

ईवान श्चेर्बाकवे, जो सेना के राजनीतिक विभाग में प्राध्यापक थे, ब्रेज़नेव की असीम कार्यकुशलता, उच्च निश्चितता, दयालुता, निष्ठा, मादगीपूर्ण व्यवहार और सरलता के बारे में अपने सस्मरणों में लिखते हैं :

ब्रेज़नेव अपने अधीनस्थों पर हमेशा ही सैनिकों के साथ रहने का दबाव नहीं डालते थे। उन्होंने उनके लिए व्यक्तिगत उदाहरण प्रस्तुत किया।

18वीं वाहिनी, जहाँ कहीं भी मुख्य प्रहार किया जाना होता था, ब्रेज़नेव को देखने की आदी हो गयी थी। इस बात के लिए अपने लोगों के बीच उन्हें गहनतम सम्मान प्राप्त था। उन्हें यूनिटों में वास्तविक कार्यस्थिति की पूरी तरह जानकारी होती थी और वे किसी भी कमी को पूरा करने के लिए तेज़ी से प्रतिक्रिया व्यक्त करते थे।

17वीं रक्षक पैदल सेना के राजनीतिक विभाग के भूतपूर्व प्रमुख निकिता-चोमिन ने लिखा है : "किसी भी परिस्थिति में, भले ही यह कितनी कठिन रही हो, ब्रेज़नेव मर्दव ही अपने लोगों के बीच रहते थे, उनमें विषय के प्रति विश्वास उत्पन्न करते थे, उनकी इस बात ने उन्हें हमारी सेना के अक्सरों व सैनिकों का प्रिय बना दिया था।"

आन्तोन गास्तिलोविच, जो 17वीं रक्षक सेना की कमान संभाले हुए थे, बतलाते हैं : "ब्रेज़नेव कई अवसरों पर हमें देखने आये, उन्होंने अग्रिम मोर्चे की यूनिटों में कई दिन बिताये। उन्होंने पर्वतीय युद्धों के अपने समृद्ध अनुभव में उदारतापूर्वक सहभागिता की, जिसे उन्होंने लुआप्से में, गोइत्व दर्रे पर, नोवोरो-मीस्क में तथा तामन प्रायद्वीप पर हुए युद्धों में अर्जित किया था। ब्रेज़नेव हमारी

सेना की युद्ध क्षमता को सुदृढ़ बनाने के लिए सैनिक मुख्यालय से किये जाने वाले हमारे सभी अनुरोधों का समर्थन करने से कभी नहीं चूके और ऐसी सहायता उपलब्ध कराने की व्यवस्था करने के लिए वे सैनिक परिषद में शामिल हुए। इस बात से हमें अपने कार्य में काफ़ी सहायता मिली और इससे अपनी शक्ति में हमारे विश्वास का संवर्द्धन हुआ।”

वास्तव में लियोनिद ब्रेज़नेव ने उत्तरी काकेशिया के पर्वतों में सैनिक कार्रवाईयों के दौरान अर्जित अपने समस्त अनुभव में उदारतापूर्वक सहभागिता की, तथा वे सम्मेलन, जिनमें वे भाग लिया करते थे, अक्सर ही रणनीतिक अभ्यासों जैसी चीज़ के रूप में विकसित हो जाते थे। उन्होंने अक्सरों को पर्वत-शीर्षों पर तब तक हमला न करने का आदेश दिया जब तक कि यह पूरी तरह से ज़रूरी न हो जाये। शत्रु को छोड़ देना और उसे चारों ओर से घेर लेना, स्वतंत्र रूप से कार्रवाई करने के लिए छोटी आक्रामक टोलियों का गठन करना अधिक अच्छा था। उन्होंने ऐसे कार्यों को पूरा करने के लिए, जिनके लिए पूरी यूनिट को भाग लेना पड़ता, किसी एक सैनिक या सैनिक टुकड़ी द्वारा प्रदर्शित की गयी पहल-कदमियों के उदाहरण प्रस्तुत किये।

317वीं डिवीज़न के कमाण्डरों व राजनीतिक प्रशिक्षकों को सम्बोधित करते हुए ब्रेज़नेव ने कहा, “छोटी यूनिटों को अपने आप कार्रवाई करना सिखलाना; सड़कों, घाटियों, दरों का पर्यवेक्षण करना; महत्वपूर्ण ऊँचाइयों, सड़कों व निचले क्षेत्रों पर कब्ज़ा करना; रड़तापूर्वक शत्रु से आगे निकल जाना तथा उस पर अचानक धावा बोलना सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।”

जिस समय सैनिकों के जीवन को जोखिम में डालने के समय वे अत्यन्त सावधान हो उठते थे, और सैनिक-जन भी अनावश्यक जोखिम को टालने के लिए उनकी इस चिन्ता की सराहना करते थे और उनका सम्मान करते थे।

युद्ध में सफलता की कुंजी

राजनीतिक विभाग के प्रमुख के रूप में ब्रेज़नेव ने इस बात की व्याख्या की कि युद्ध में सफलता कमाण्डरों व राजनीतिक प्रशिक्षकों के संगठित तथा समन्वित सहयोग पर निर्भर करती है। कारपेयियन-उरगोरोद कार्रवाई की पूर्व संध्या पर उन्होंने कहा :

“कमाण्डर व राजनीतिक प्रशिक्षक को युद्ध में विशेष रूप से महत्वपूर्ण, सम्मानजनक तथा उत्तरदायित्वपूर्ण कर्तव्य निभाना पड़ता है। कमाण्डर वह व्यक्ति है जो युद्ध का संगठन करता है, और उसके आदेश सभी अधीनस्थों के लिए

कानून होते हैं। राजनीतिक प्रशिक्षक कमाण्डर का दाहिना हाथ होता है और उसे सदैव ही उस स्थान पर होना चाहिए जहाँ युद्ध की सफलता का निर्णय होने वाला हो। जहाँ युद्ध भीषणतम होता है। जहाँ सैनिकों को उनके युद्ध सम्बन्धी कार्य पूरे करने को प्रेरित करने लिए व्यक्तिगत उदाहरण प्रस्तुत करने की आवश्यकता होती है। कमाण्डर और राजनीतिक प्रशिक्षक परस्पर जुड़े होते हैं और उन्हें रेजिमेन्ट के हृदय और आत्मा के समान होना चाहिए।"

सेनाओं, डिवीजनों, रेजिमेन्टों, बटालियनों तथा कम्पनियों के माध्यम से ब्रिटेन के कमाण्डरों व राजनीतिक प्रशिक्षकों से व्यक्तिगत रूप से इस बात का ध्यान रखने की आवश्यकता पर बल देते थे कि युद्ध में प्रत्येक अफसर और सैनिक को अपने कार्य के बारे में स्पष्ट समझ होनी चाहिए। उन्हें इस बात की जानकारी होनी चाहिए कि उनके हथियारों का श्रेष्ठ उपयोग किस प्रकार से हो सकता है, और वे पहले तथा कुशलता प्रदर्शित करें और शारीरिक दृष्टि में स्वस्थ हों। उन्होंने उनसे अपने व्यक्तियों को रूसी सैनिक तथा साल मेना की श्रेष्ठतम युद्ध परम्पराओं के अनुरूप प्रशिक्षित करने पर बल दिया।

राजनीतिक अफसर के रूप में ब्रिटेन ने अपने व्यक्तियों का मनोबल ऊँचा करने और उनके उत्साह का संवर्द्धन करने के लिए हर समभव तरीके का प्रयोग किया। उन्हें अपने देश के इतिहास पर सोचिपत सैनिकों के गर्व की जानकारी दी, वे इसका लाभ निश्चाय देने के उद्देश्य से उठाया करते थे।

उनकी पहल पर इन व्यक्तियों को आल्प्स में भुवोरोंद के सैनिकों के तथा 1916 में कारपेथिया में रूसी सैनिकों के साहसपूर्ण कारनामों का स्मरण कराया जाता था तथा उन्हें कार्पेथिया व नोबोरोमीस्क में हान के युद्ध के अनुभवों में परिचित कराया जाता था।

एक दिन, 17वीं रक्षक पैदल सेना के दोरे के दौरान ब्रिटेन ने सेना की 8वीं डिवीजन की रेजिमेन्टों और बटालियनों का निरोधन किया। उन्होंने अनेक अफसरों व राजनीतिक नेताओं में बातचीत की और इसके बाद वे स्वयं युद्ध क्षेत्र देखने के लिए ऊँचाई पर स्थित चौकी पर चढ़ गये।

उन्होंने कहा: "यही उस स्थान पर यान्त्रोन्मोक्षी क्षेत्र है! इसके पीछे ट्राम कारपेथिया उत्क्रेन में हमारे भाई मौजूद हैं! यह स्थान योशो ही दूर पर है। और इसके पार तिस्मा की घाटी और इसके बाद हगरी और बेकोम्नोबाकिया है। वहाँ के लोग हमारे अधीरता के माध्यम प्रतीक्षा कर रहे हैं। वहाँ तक पहुँचने का मार्ग क्याश नम्बा नहीं है!"

एक बड़ी-सी आयुवान सैनिक की ओर इशारा करते हुए उन्होंने अन्तों बात

आगे जारी रखी : "यह आदमी कारपेयिया के पार जाने को इच्छुक है। इसकी आयु निश्चय ही 50 वर्ष से ऊपर होगी !"

उन व्यक्ति ने महसूस किया कि वे लोग उसके बारे में बातें कर रहे हैं और वह आगे आ गया। "मशीनगन चालक पाशिन," उसने कहा।

"फ्योदोर पाशिन प्रथम विश्व-युद्ध में इन क्षेत्रों में लड़ चुके हैं," बटालियन कमाण्डर ने सूचित किया।

"अच्छा तो यह बात है !" ब्रेज्नेव ने कहा।

"जी हाँ, कामरेड कर्नल। मैं इन हिस्सों में लड़ चुका हूँ। हमारी रेजिमेन्ट ने इसी शिखर पर कब्जा किया था और इसकी रक्षा की थी।"

पाशिन उन सबको पुरानी खाई तक ले गये।

"हमारा प्लाटून ठीक इस स्थान पर था," उन्होंने एक पहाड़ी की ओर इंगित किया और आगे कहा, "यह कम्पनी कमाण्डर का स्थान था। हमने यहाँ जर्मन सैनिकों के लिए मुसीबत खड़ी कर दी और मुझे विश्वास है कि हम इस बार भी उन्हें ध्वस्त कर देंगे।"

ब्रेज्नेव ने पुराने मशीनगन चालक से हार्दिकतापूर्ण हाथ मिलाया और उनको धन्यवाद दिया। उन्होंने इस बात का ध्यान रखा कि 18वीं सेना, विशेष रूप से प्रशिक्षण टुकड़ियाँ, योद्धाओं के अनुभवों पर ध्यान दें।

लड़ाई कितनी भी भीषण क्यों न हो, अनुभवहीन सैनिकों को नियमतः एकदम युद्ध में नहीं भेजा जाता था। उन्होंने युद्ध-पंक्ति के निकट, शत्रु के तोड़पाने के क्षेत्र से बाहर अपनी यूनिटों की युद्ध परम्पराओं को सीखते हुए तथा अनुभवी व्यक्तियों से परामर्श लेते हुए युद्ध प्रशिक्षण अर्जित किया।

इस सुव्यवस्थित शिक्षा कार्य ने नये भर्ती होने वालों की कहीं अधिक संक्षिप्त अवधि में युद्ध परिस्थितियों से परिचित हो जाने में सहायता की, जिसके कारण वे बाद की लड़ाइयों में अपनी योग्यता और दृढ़ता प्रदर्शित कर पाये।

राजनीतिक प्रशिक्षक के कर्तव्य का एक महत्वपूर्ण पहलू यह था कि शत्रु सैनिकों तक सच्चाई पहुँचानी चाहिए।

लाल सेना, विशेषकर चौथी उक्रेनियाई मोर्चे की सफलताओं के प्रभाव के अन्तर्गत जिसमें अगस्त 1944 के बाद से 18वीं वाहिनी भी शामिल हो गयी थी, हंगरी की प्रथम वाहिनी में युद्ध विरोधी भावनाएँ फैलने लगी थीं। 18वीं वाहिनी के राजनीतिक विभाग की विशेष यूनिट के प्रयासों ने इन भावनाओं को प्रोत्साहित किया। इन कार्य का भी ब्रेज्नेव ने व्यक्तिगत रूप से संगठन और मार्गदर्शन किया। "हमारे सैनिकों द्वारा शुरू किये गये प्रत्याक्रमण में अनेक हुंगेरियाई और

जर्मन सैनिकों को बन्दी बनाया गया," अधीनस्थ राजनीतिक विभागों के प्रमुखों के नाम दिगानिर्देशों में उन्होंने लिखा। "युद्ध-बन्धियों के साक्ष्य से प्रदर्शित होता है कि शत्रु का मनोबल निम्न है और इसमें हमें अपने प्रचार द्वारा उन्हें और अधिक जोरदार ढँग में प्रभावित करने का अवसर मिलता है।"

तथ्य यह है कि शत्रु सैनिकों के बीच मनोबल को ढाँवाडोल करने के प्रयासों का कारपेयिया के लिए युद्ध में पर्याप्त प्रभाव पड़ा। उम अवधि में लगभग 3 हज़ार प्रसारणों का आयोजन करना पड़ा, 25 लाख पत्रें छापे गये तथा लगभग 800 युद्ध-बन्धियों और भगोडों को शत्रु की पिछली पंक्तियों में प्रविष्ट कराया गया। इसके परिणामस्वरूप लगभग 10 हज़ार अक्रमर और सैनिक स्वेच्छापूर्वक सोवियत पक्ष में शामिल हो गये। हगरी की प्रथम बाहिनी के कमाण्डर कर्नेल ज़नरल निकलोस बेला तथा उनके कई अफसरों ने 18 अक्तूबर को 351वीं पैदल डिवीजन के क्षेत्र में स्वेच्छा में आत्मसमर्पण किया।

हगरी की प्रथम बाहिनी के विपटन ने प्रमुख महत्व ग्रहण किया। लेकिन जर्मन सैनिकों ने अपने बर्बर प्रत्याक्रमणों से इस प्रभाव को हल्का कर दिया। उन्होंने तेज़ी में अनेक जर्मन यूनिटों को इस क्षेत्र में भेज दिया, वे हगरीवासियों द्वारा अधिकृत युद्ध पक्षियों में जर्मन यूनिटें ले आये और उन्होंने जर्मन फासिरम द्वारा शुरू किये गये युद्ध में, जिसके प्रति हगरीवासियों को पूना थी, बाहर निकलने का प्रयत्न करने वाले को मौत के घाट उतार देने की धमकी दी।

निर्वाध गति में चलने वाले रोज़मर्रा के कार्यों और समस्याओं को अत्यधिक भिन्नता तथा कार्य के लिए आवश्यक स्वरूपों और कार्य पद्धति पर आधारित में जितका ब्रेज़नेव ने अनपेक्ष रूप में मार्गदर्शन किया।

8 अक्तूबर को 18वीं सेना ने लावोच्ने को मुक्त कराया जो सोवियत उक्रेन में नाज़ियों द्वारा अधिकृत अंतिम बस्ती थी। इसके साथ ही सोवियत उक्रेन जर्मन आक्रमकों में पूरी तरह मुक्त हो गया।

ट्रांसकारपेयिया में

18 अक्तूबर को जारी किये गये उस दिन के एक आदेश में सर्वोच्च सेना प्रमुख ने कारपेयियाई क्षेत्र को सफलतापूर्वक पार करने और इसके दरों पर अधिकार करने के लिए चौथे उक्रेनियाई मोर्चे के सैनिकों को बढ़ाई दी। मास्को में उनके सम्मान में 224 तोपों द्वारा 20 सलामी गोले छोड़े गये।

18वीं बाहिनी की युद्ध कार्रवाइयों के परिणामों का विश्लेषण करते हुए ब्रेज़नेव ने चौथे उक्रेनियाई मोर्चे की सैनिक परिपद को सूचित किया : "अपेक्षाकृत

संक्षिप्त अवधि (सितम्बर का उत्तरार्ध और अक्तूबर) में हमारे सैनिकों ने सभी बाधाओं का सफलतापूर्वक सामना किया, शत्रु को उसकी मुड़ रक्षा पंक्ति से खदेड़ दिया, उसे भारी नुकसान पहुँचाया और कारपेधिया के अजेय होने के बारे में सैनिक विशेषज्ञों के दावों के विपरीत वे दूसरे उक्रेनियाई मोर्चे के सैनिकों के निर्णायक समर्थन के साथ हंगरी के मैदानी क्षेत्र में घुस गये ।

“19 सितम्बर से 1 नवम्बर तक शत्रु के 22,075 अक्षर और सैनिक मारे गये या घायल हुए तथा 21,269 को युद्ध-बन्दी बनाया गया । हमने 206 तोपों, 300 मोर्टारों, 1,054 मशीनगनों, 12,535 राईफलों व सबमशीनगनों और दूसरे हथियारों को कब्जे में लिया...

“कारपेधियाई कारंवाई सैनिकों से लेकर जनरल तक 18वीं सेना के सभी व्यक्तियों के लिए कड़ी परीक्षा थी । इस परीक्षा में सफलता अर्जित की गयी ।”

ट्रांसकारपेधियाई की जनता ने अपने मुक्तिदाताओं का उन्मुक्त हृदय और निष्ठापूर्ण उल्लास के साथ भाईयों जैसा स्वागत किया । पके वालों वाले बुजुर्ग, बच्चे तथा पुरुष, महिलाएँ, युवक और युवतियाँ राष्ट्रीय पोशाकों में सोवियत सैनिकों का स्वागत करने के लिए बाहर निकल आये । उन्होंने परम्परागत “रोटी और नमक” तथा फूलों के गुलदस्तों से उनका स्वागत किया, उन्हें अपने घरों में आमंत्रित किया । फलों और मदिराओं से उनकी आवभगत की और उन्हें सभी तरह की सहायता प्रदान की । उन्होंने मार्गदर्शकों तथा बारूदी सुरंग खोजनेवालों के रूप में, स्काउटों और चिकित्सा कर्मियों के रूप में काम किया, तड़कों व पुलों का पुनर्निर्माण करने में, मार्ग अवरोधकों को साफ करने में सैनिकों की सहायता की तथा पर्वतों में छिपे हुए क्रासिस्त सैनिकों को पकड़वाने में मदद की । अपनी ओर से सोवियत सैनिकों ने स्थानीय जनता की—अपने भाईयों व बहनों की—भोजन, दवाइयों व अन्य सेवाओं से द्वारा मदद की, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक स्थिति समझने और इस प्रकार अपने भविष्य का फ़ैसला करने में उनकी सहायता की ।

28 अक्तूबर को ब्रेजनेव जनरलों व अक्षरों की टोली के साथ उजगोरोद पहुँचे जो अभी तक शत्रु की गोलाबारी के भीतर था । वहाँ उनकी मुलाकात नगर परिषद के प्रतिनिधिमंडल से हुई । नगर निवासियों की ओर से नगर पापंद प्योन सोवा ने उजगोरोद की मुक्ति के लिए सोवियत कमान को हार्दिक धन्यवाद दिया तथा ट्रांसकारपेधिया की जनता की सोवियत उक्रेन के साथ पुनः मिल जाने की दीर्घकाल से बत्ती आ रही इच्छा व्यक्त की ।

पापंद सोवा बतलाते हैं कि प्रत्युत्तर भाषण एक-छरहरे युवा कर्नल द्वारा

दिया गया जो स्वयं भी गर्वान्वित थे। वे पौरुषवान, अच्छे स्वभाव वाले थे, उनकी आँखों से मुसकराहट झलक रही थी।

ब्रेजनेव ने सोवियत सेना के शत्रु को पराजित करने और यूरोप के जनगण की अपनी स्वतंत्रता व आजादी पुनः प्राप्त करने में उनकी सहायता करने के उदात्त मिशन की चर्चा की।

उन्होंने बलपूर्वक कहा कि सोवियत सैनिक ट्रांसकार्पेथिया में मुक्ति-दाताओं के रूप में प्रविष्ट हुए। ट्रांसकार्पेथियाई जनता की सोवियत उक्रेन के साथ मिलने की उत्कट अभिलाषा, जिसे नगर पार्षद द्वारा व्यक्त किया गया था, के उत्तर में ब्रेजनेव ने कहा, "हमारा आपके मामलों में हस्तक्षेप करने का कोई इरादा नहीं है। यह आपका अपना मामला है और इस बात का फ़ैसला करना आपके ही हाथों में है। हम जनता की इच्छा के विरुद्ध कोई काम नहीं करेंगे।"

तथ्य यह था कि ट्रांसकार्पेथियाई उक्रेन की जनता शताब्दियों से विदेशी राज्यों के नियंत्रण में रहती चली आ रही थी। ट्रांसकार्पेथियाई उक्रेन के प्रगतिशील जन ने सोवियत सैनिकों के आगमन को अपनी निज की सरकार की स्थापना करने तथा अपनी मातृभूमि के साथ पुनः मिल जाने का अवसर समझा।

नगरों व गाँवों में सभाओं का आयोजन किया गया तथा जन समितियों का चुनाव किया गया। आर्षाडॉक्स तथा रोमन कॅथोलिक दोनों ही सम्प्रदायों के पादरियों सहित जनसंख्या के सभी वर्गों ने चुनावों में भाग लिया।

ये ट्रांसकार्पेथिया के इतिहास में अविस्मरणीय अवधि थी। ट्रांसकार्पेथिया के जनसाधारण ने, जिन्हें अपनी नियति को स्वरूप प्रदान करने का पहली बार अवसर मिला था, 26 नवम्बर 1944 को अपनी इच्छा व्यक्त की। उस दिन युकाचेवो ये ट्रांसकार्पेथिया की जन समितियों की पहली कांग्रेस का आयोजन हुआ और इसने ट्रांसकार्पेथियाई उक्रेन के सोवियत उक्रेन के साथ एकीकरण विषयक ऐतिहासिक घोषणापत्र को स्वीकृति प्रदान की। जून 1945 में सोवियत संघ व चेकोस्लोवाकिया की सरकारों ने एक संधि पर हस्ताक्षर किये जिसके अन्तर्गत ट्रांसकार्पेथियाई उक्रेन सोवियत उक्रेन के साथ मिला गया।

ट्रांसकार्पेथिया के भुक्त होते ही जनता ने सोवियत सैनिकों की सहायता को महसूस किया। 18वीं वाहिनों के राबर्टिक विन्स बॅन्ड इसके प्रमुख ने नवजीवन के निर्माण में उनकी काफ़ी सहायता की। बॅन्ड ने पूर्ववत् रात-दिन काम किया। 2 नवम्बर 1944 को उन्हें मेजर जनरल के पदोन्नत कर दिया गया।

मेजर जनरल ब्रेजनेव स्कूलों, दुकानों तथा विभिन्न स्थानों के सभों

तथा कारखानों व संस्थानों के पुनर्निर्माण के कार्य के साथ सीधे सम्बन्धित थे। उनकी पहल पर सेना भंडारों से 90 लाख पींड गल्ला जरूरतमंद आवादी को सौंप दिया गया। उन्होंने सभाओं में व रेडियो से सोवियत सेना के मुक्ति मिशन के बारे में, पिछली पक्तियों में सोवियत जनता के सामूहिक श्रम प्रयासों के बारे में तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति के बारे में चर्चा की। इसी बीच उन्होंने 18वीं वाहिनी में पार्टी व राजनीतिक कार्य का मार्गदर्शन करना जारी रखा जो अभी भी सक्रिय सैनिक कार्रवाइयों में लगी हुई थी।

द्रोणकारपेयिया की जनता ने ब्रेज्नेव को अपने प्रति उनकी सतत चिन्ता के लिए अत्यन्त स्नेह प्रदान किया। इनमें से अनेक उनके अच्छे कार्यों को याद रखते हैं और अपने बच्चों के बच्चों को उनके बारे में बतलाते हैं। उन्होंने अपनी स्पष्टवादिता; निष्ठा तथा दूसरों के प्रति सम्मान के लिए उनका हृदय जीत लिया था। नगर पार्यद प्योत्र सोवा कहते हैं, “ब्रेज्नेव ने प्रदर्शित किया कि वे निपुण राजनयिक और राजनेता थे। वे सोवियत कमान के अत्यन्त लोकप्रिय प्रतिनिधि थे और स्थानीय व्यक्ति उन्हें सदा याद रखते हैं।”

गुवा जनरल का प्रत्येक घर में, जहाँ कहीं भी वे गये, हार्दिकतापूर्ण स्वागत किया गया। उन्होंने अपने चन्द खाली घंटे उज्जगोरोद की जनसमिति के अध्यक्ष सेगोई स्तासेव जनसेना के प्रमुख कलाकार आन्द्रेई कोत्स्को तथा नगर के नेताओं प्योत्र सोवा और निकोलाई कातेरिन्युक के साथ बिताये।

आज कोत्स्को, जिन्हें सम्मानित कलाकर्मी की पदवी प्राप्त है, उज्जगोरोद के शांत, पेड़ों की कतार वाली सड़कों में से एक पर स्थित अपने घर में रहते हैं। छुट्टियों तथा उल्लासपूर्ण पर्वों के अवसर पर जब वे अपने मित्रों का अतिथि-सत्कार करते हैं—वे सहज ही 1944 के उत्तरार्ध के स्मरणीय दिनों की याद करने लगते हैं।

बार-बार वे उस स्थान की ओर इंगित करते हैं जहाँ धके-हारे जनरल ब्रेज्नेव दिन भर के काम के बाद बैठा करते थे। उन कलाकृतियों की ओर इंगित करते हैं, जो ब्रेज्नेव को पसंद थीं और उन प्रिय पुस्तकों की ओर इंगित करते हैं, जिन्हें जनरल पढ़ा करते थे। वे आलमारी तक आकर बड़ी सावधानी-पूर्वक अपने अतिथियों को ब्रेज्नेव द्वारा भेंट की गयी पुस्तकों को दिखाते हैं तथा अपने बीच हुई घनिष्ठ वार्ताओं का स्मरण करते हैं...वे सोवियत सेना की मुद्द-सफलताओं पर, यूरोप में युद्धोत्तर व्यवस्था पर विचार-विमर्श करते थे, मानचित्रों का अध्ययन करते थे तथा बर्लिन तक की गेय रह गयी दूरी को नापते थे। आगे का रास्ता, उसका प्रत्येक मील श्रम-साध्य था, लेकिन इसके अंत में

संजोया हुआ शान्ति का लक्ष्य निहित था।

ब्रेज्नेव वैयक्तिकता का सदैव सम्मान करते थे। उनके लिए व्यक्ति मात्र बूढ़े और कातिहीन जनसाधारण न थे जैसा कि कम्युनिस्ट नेताओं के बारे में पश्चिम जगत में कहा जाता है। इसके विपरीत ब्रेज्नेव ने सदैव ही प्रत्येक व्यक्ति की व्यक्तिगत विशिष्टताओं का उल्लेख किया और उनका सम्मान किया।

“युद्ध के बाद आपका क्या कुछ चित्रित करने का इरादा है?” ब्रेज्नेव ने अपने मेजबान में पूछा। कलाकार तुरन्त इसका उत्तर देने में अममर्ष में। वास्तव में वे अपनी कला के माध्यम से लोगों को क्या बतलायेंगे? युद्ध की भयावहता के बारे में? शांति की विजय के बारे में?

इसके बाद वे जनता के लिए कला के लक्ष्य के बारे में बातें करने लगने में। उन्होंने पश्चिमी यूरोपीय कला और साहित्य की तत्कालीन प्रवृत्तियों की विस्तार-पूर्वक चर्चा की और हर बार कोटस्को को साहित्य और कलाओं के इतिहास में जनरल की दिलचस्पी पर आश्चर्य होता था।

ऐसी अनेक बैठकें और बातचीत हुईं और द्वांसकारपेंधिया की जनता को इनका अभी तक स्मरण है।

एक रात ब्रेज्नेव कार द्वारा युद्धपक्षियों में नगर को लौट रहे थे। एक गाँव से गुजरते हुए उन्हें कार की हेडलाइट के प्रकाश में दो आकृतियाँ नजर आयीं। उन्होंने ब्राइवर में गाड़ी रोकने को कहा। एक पुरुष और महिला ने कार में यात्रा करने के लिए अनुमति चाही। उन्होंने दोनों को अन्दर बुला लिया। कार चल पड़ी। उन अजनबियों ने नोयेमी और निकोलाई कार्तिरिन्युक के रूप में अपना परिचय दिया।

यह उनके परिचय की शुरुआत थी। जनरल ने नोयेमी पर गहरा प्रभाव छोड़ा। वे पहले सोवियत नागरिक में जिनमें उसकी मुलाकात हुई थी; उसने पाया कि वे कम्युनिस्टों के प्रति उसकी कल्पना से बिल्कुल भिन्न थे।

नोयेमी का जन्म और उसकी शिक्षा बुदापेस्त में हुई और स्कूल में उसे लगातार बतलाया गया था कि कम्युनिस्ट कमोवेश बर्बर होते हैं; उनके लिए कोई भी चीज़ पवित्र नहीं होती; उनकी विचारधारा अमानवीय है; उनके कार्य इस सबसे भी कहीं ज्यादा ख़राब हैं। जिस समय 18वीं वाहिनी उज़्बेगोरोद में प्रविष्ट हुई नोयेमी ने अपने घर के मारे दरवाज़े बन्द कर दिये। उसका विश्वास था कि सोवियत सैनिक सोवियत सघ के विरुद्ध युद्ध में लड़ने के लिए हंगरी-वासियों से बदला लेंगे।

जैसा कि उस समय और बाद में लाखों-करोड़ों लोगों ने पाया ऐसा कुछ भी

नहीं हुआ। 20 वर्षों में नोबेमी कहें ज्यादा भ्रम में थी। आज वह क्षेत्रीय समाचार-पत्र कारपोरी इगाउ सो की संवाददाता है और अपने संदेशों और चिन्ताओं का मुद्राराने हुए न्मरण करती है। आज दिन तक वह ब्रेजनेव से हुई अपनी भेंट के प्रति कृतज्ञ है, जिन्होंने विश्व को नये रूप में देखने में उसकी सहायता की तथा उसके दुविधा में डालने वाले प्रश्नों के उत्तर दिये। उन्होंने इस बात की व्याख्या की कि सोवियत सेना किसी देश विशेष से नहीं बल्कि फ़ासिस्टों से लड़ रही थी। इसने भी अधिक इसने नागरिक आबादी को कभी भी आतंकित नहीं किया।

जनरल ने इस युवा दम्पति के प्रति पारस्परिक सहानुभूति और सम्मान प्रदर्शित किया। वे कई बार उनके घर भी गये। उनका उनकी दो वर्षीय बेटी से काफ़ी लगाव हो गया, वे अक्सर ही उसके साथ खेलते थे या उसे परीक्या सुनाते थे। यदाकदा अपने स्वयं के पुत्र और पुत्री के बारे में सोचते हुए वे गम्भीर हो जाया करते थे। न जाने वे लोग कैसे होंगे ?

उन्होंने उनको अपनी माँ, अपनी पत्नी, बहन और भाई के बारे में बतलाया और यह भी कि वे उन्हें देखने के कितने इच्छुक हैं।

लेकिन समय अभी भी तनावपूर्ण और जटिल था। पश्चिमी यूरोप में जनता अभी भी नाज़ी ज़ुए के नीचे कराह रही थी।

4. पश्चिम की ओर

जनवरी 1945 में 18वीं वाहिनी चेकोस्लोवाकिया में प्रविष्ट हो गयी।

लुद्विक स्लोवादा, जो कई वर्षों तक चेकोस्लोवाकिया के राष्ट्रपति थे, उस अवधि के बारे में अपने संस्मरण सुनाते हैं : "जनवरी 1945 में चेकोस्लोवाक सेना के कमांडर को हेसियत से मैं 18वीं सोवियत वाहिनी के कमांडर से मिलने गया। 18वीं वाहिनी का मुख्यालय कोशाइक के उत्तर में स्थित एक गाँव में था। मैं कार द्वारा वहाँ गया और 18वीं वाहिनी के कमांडर जनरल गास्तिनोविच से मिला। हमने इस बात पर सहमति व्यक्त की कि हम किस प्रकार सहयोग करेंगे और हमने आगामी प्रत्याक्रमण की नीतियों को निर्धारित किया।

"जनरल गास्तिनोविच और मैंने अच्छे कामकाजी सम्बन्ध स्थापित किये। युद्ध के अन्त तक चेकोस्लोवाक सेना 18वीं वाहिनी के अंग के रूप में लड़ी। 18वीं वाहिनी ने हमारी भूमि पर अपनी पहली प्रमुख सफलता उस समय अर्जित की जब इसने कोशाइक नगर को मुक्त कराया, जहाँ शीघ्र ही चेकोस्लोवाक जनतंत्र की सरकार की स्थापना हुई तथा नये स्वतंत्र जनतंत्र की राज्य व्यवस्था के आधार के रूप में सुप्रसिद्ध कोशाइक कार्यक्रम तथा सोवियत संघ के साथ अटूट मैत्री की

इसकी नीति की घोषणा की गयी।

चेकोस्लोवाकिया, पोलैंड और हंगरी की मुक्ति के लिए युद्ध में जनरल ब्रेज्नेव ने 18वीं वाहिनी के राजनीतिक प्रशिक्षकों का कार्य इस डेग से संगठित किया कि कमान सोवियत सैनिकों के उच्च मनोबल पर हमेशा ही निर्भर कर सकती थी, ऐसा कर्नल, जनरल आन्तोन ग्रास्तिस्कोविच का कथन है जो अब प्रोफेसर और सैन्य विज्ञान के डॉक्टर हैं।

"सोवियत अफसरों व सैनिकों के साहसिक कारनामों को उजागर करना विशेष रूप से मुसगठित था। इस प्रकार मिसाल के तौर पर जनवरी से अप्रैल 1945 तक हमारे सूर्य की जप। शीघ्र 76 पुस्तिकाएँ अकेले 138वीं डिवीजन के 650वीं पैदल रेजिमेंट में जारी की गयीं। सोवियत सैनिकों का मनोबल बढ़ता गया और प्रत्येक बीतते दिन के साथ हमारे सैनिकों ने मनु पर कठोरतर प्रहार किये।"

चेकोस्लोवाकिया की मुक्ति के लिए कुल मिलाकर एक लाख पालीस हज़ार सोवियत अफसरों और सैनिकों ने अपने जीवन का बलिदान किया। कई हज़ार व्यक्ति घायल या अपा हो गये।

अनेक वर्षों बाद सोवियत सच की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महासचिव सियोनिड ब्रेज्नेव ने कहा, "युद्ध अतीत की बात है। लेकिन हमारी भावनाएँ नहीं बदली हैं। गहन समुदाय की भावना ने, जो हमारे देश के जनमण को संगठित करती है, सोवियत जन और चेक व स्लोवाक जन के हृदयों में गहरी जड़ें जमा ली हैं।"

जहाँ कहीं भी ब्रेज्नेव गये उन्होंने स्थानीय जनता, चेक और स्लोवाक जन, के साथ हार्दिक सम्बन्ध स्थापित किये। एक पादरी, डॉक्टर मिखुलान स्तानिस्लाव को स्मरण है :

"फरवरी 1945 में हमारे गाँव के गिर्दे लड़ाई जारी थी। हर रोज़ गोलाबारी हो रही थी। और हम भूमिगत स्थानों में बैठे हुए थे। एक हसी जनरल—सम्बा तड़गा, काली भौंह वाला, तड़गाई से भरा और अत्यन्त मैत्रीपूर्ण—हमारे मकान में ठहरा।

"एक दिन उसने अपने ए०डी०सी० और तीन दूसरे अफसरों के साथ साने के लिए मुझे आमन्त्रित किया। मैंने उससे उसका नाम पूछा तो उसने अपना नाम ब्रेज्नेव बतलाया। मैंने अपना साहस जुटाकर उससे पूछा, "हमें किस प्रकार की सरकार मिलने जा रही है?" ब्रेज्नेव ने उत्तर दिया, "आप स्वयं अपनी सरकार स्थापित करेंगे। ये सरकार निश्चित रूप से लोकप्रिय होगी। चेकोस्लोवाकिया

स्वयं जनन होगा। दुर्भाग्यवश, हमारी बातचीत बीच में ही समाप्त हो गयी क्योंकि जर्मन सैनिकों ने गाँव पर गोलाबारी शुरू कर दी थी और हमारे घरों की गिडकियों के शीशे टूटने लगे थे। जनरल ब्रेजनेव ने पलक भी नहीं झपकायी। नेकिन मैं नहलाने में चला गया और लड़ाई समाप्त होने तक अपने परिवार के साथ वहीं रुका रहा। जब हम ऊपर आये तो जनरल ब्रेजनेव पहले ही वहाँ से जा चुके थे...

"पिछले चन्द वर्षों के दौरान मैंने अक्सर ही ब्रेजनेव को एक पत्र लिखकर हमारी बस्ती में उनके प्रवास का पुनर्स्मरण कराने, इस तथ्य के बावजूद कि वे कम्युनिस्ट हैं और मैं पादरी, उनके प्रति अपना स्नेह व्यक्त करने, तथा हमारी जनता की, उसके अत्यन्त कठिन वर्षों में, सहायता करने के लिए उन्हें धन्यवाद देने की बात महसूस की है।"

बड़े पैमाने पर जनता को यह बतला दिया गया था कि स्वामीय जनता नयी क्रासिस्ट विरोधी सत्ता की स्थापना करने में सोवियत सैनिकों के सहयोग पर सुरक्षापूर्वक निर्भर कर सकती है। सोवियत कमान के इस दृष्टिकोण पर राजनीतिक प्रशिक्षकों के कार्य तथा सोवियत अफसरों व सैनिकों ने व्यवहार पर अत्यन्त संतोष व्यक्त किया गया। क्रासिस्ट प्रचार से भयभीत जनता ने अब सोवियत सैनिकों पर विश्वास करना तथा स्नेह के साथ उन्हें अपना मुक्तिदाता समझना शुरू कर दिया था। जनता और सोवियत सैनिकों के बीच अच्छे सम्बन्ध स्थापित हुए। स्वामीय व्यक्तियों ने सैनिकों की अधिकाधिक सहायता की।

चेकोस्लोवाकिया की मुक्ति के साथ सम्बन्धित ब्रेजनेव के जीवन की घटनाओं ने उनकी स्मृति पर गहरा प्रभाव छोड़ा। यही कारण है कि उस समारोह में, जिसके दौरान नवम्बर 1976 में उन्हें चेकोस्लोवाक अलंकरणों से विभूषित किया गया, उन्होंने 1945 के गुड-मागों का, जिन्हें सोवियत अफसरों व सैनिकों ने चेकोस्लोवाक सेना के साथ मिलकर तय किया था, स्लोवाकिया में जन-विद्रोह का, प्राग में घेतना की ज्वाला का, नाज़ी आक्रमकों से चेकोस्लोवाकिया की मुक्ति के उत्साहपूर्ण दिनों का स्मरण किया।

पोलैंड की जनता ने लाल सेना का उत्साहपूर्वक स्वागत किया। 18वीं याहिनी को ऊँचे ताप्रास के क्षेत्र में दक्षिण-पूर्वी पोलैंड के भाग को मुक्त कराने का काम सौंपा गया था। भारी हिमपात के दौरान रात की तामोशी में 17वीं रक्षक पंदल सेना ने पोलैंड में पोरोनिनो के निकट जानी दुनाजेक क्षेत्र के उत्तर में जर्मन प्रतिरक्षा पंक्तियों पर धावा बोल दिया।

पोरोनिनो के अलावा 18वीं याहिनी ने नोवी तागं, गोनी दुनाजेक तथा

पोलैंड के उस भाग में अनेक दूसरे आबादी वाले केंद्रों को मुक्त कराया। पोलोनियों और नोवी तार्ग लेनिन के जीवन से सम्बन्धित स्थान हैं। वे कुछ समय तक पोलोनियों में रहे थे। वही लेनिन के मार्ग-दर्शन में बोल्शेविकों ने एक सभा का आयोजन किया था। आस्ट्रियाई अधिकारियों ने उन्हें नजरबंद बनाकर नोवी तार्ग जेल में रखा था।

जैसे-जैसे सैनिक उन नगरों के निकटतर आते गये ब्रेजनेव ने सभी कमाण्डरों व राजनीतिक प्रशिक्षकों में लेनिन के नाम से सम्बन्धित प्रत्येक चीज को सुरक्षित बनाये रखने पर ध्यान देने को कहा।

चेकोस्लोवाक सेना तथा 18वीं सोवियत वाहिनी ने स्वितावी नदी पर युद्ध की समाप्ति देखी। लेकिन ऐसा 9 मई, 1945 को न होकर चन्द दिनों बाद 12 मई को हुआ। विश्व में अनेक लोगों को द्वितीय विश्व युद्ध के इतिहास की गेप पटनाओं की जानकारी नहीं है।

तीसरे राइश के सभी दूसरे सैनिकों द्वारा आत्मसमर्पण कर दिये जाने के बाद चेकोस्लोवाकिया के मध्य भाग में सक्रिय जनरल फ्रीड मार्शल क्रिस्टोफ़ शोएनर के नेतृत्व में जर्मनी डिवीजन की एक टोली ने हथियार डालने से इन्कार कर दिया और पश्चिम की ओर बढ़ जाने के लिए लड़ने का प्रयास किया।

18वीं वाहिनी के भूतपूर्व कमांडर, कर्नल जनरल गास्तिलोविच को स्मरण है : "9 मई को प्रातः काल मुझे मोर्चे के मुख्यालय से हमारी सेना के सामने वाली साइलों में पड़ी सभी चारों जर्मन डिवीजनों के पास आत्मसमर्पण की शर्तें बतलाने के लिए अपने दूतों को भेजने का आदेश प्राप्त हुआ। लेकिन प्रातः 9 बजे चारों अक्षर वापिस आ गये। तीन डिवीजनों ने उन्हें अभद्रतापूर्वक भगा दिया और उनसे कहा कि हम आत्मसमर्पण नहीं करेंगे। चौथी डिवीजन के कमांडर ने मुझे विनम्रतापूर्ण सक्षिप्त पत्र भेजा जिसमें कहा कि उसे आत्मसमर्पण के लिए आदेश प्राप्त नहीं हुए हैं इसलिए वह लड़ाई जारी रखेगा।

"सोवियत सैनिकों के आगे बढ़ने के प्रयास का उत्तर भारी और सुब्यवस्थित गोलाबारी से मिला। बाद में यह पता चला कि जर्मन आर्मी ग्रुप सेंटर के कमांडर जनरल फ्रीड मार्शल शोएनर ने अपने सैनिकों को लड़ाई जारी रखने और पश्चिम की ओर पीछे हटने का आदेश 9 मई को दिया, जिस समय इस सेंटर में 57 से अधिक डिवीजनें मौजूद थीं।

शोएनर दल के पास दस लाख सैनिक, दस हजार तोपें, एक हजार विमान तथा दो हजार टैंक थे। मई के शुरू में, हिटलर की मौत के बाद भी, शोएनर दल ही बेहतरमाष्ट के युद्ध लड़ने योग्य भाग के रूप में बच रहा था, जिस पर हिटलर

त मर्मकों ने अपने आखिरी दांव के रूप में भरोसा रखा हुआ था।

सोवियत सैनिकों, विशेषकर १८वीं वाहिनी और चेकोस्लोवाक सेना-समूह की मकान कारवाइयों ने नाज़ियों की योजना को विफल कर दिया। लेकिन इसके लिए काफी अधिक प्रयास करने पड़े और भारी संख्या में जनहानि उठानी पड़ी। उन दिनों ब्रेज्नेव ने सैनिकों के बीच उच्च मनोबल बनाये रखने के लिए सम्पूर्ण राजनीतिक तंत्र को प्रोत्साहित करने में महान् स्फूर्ति प्रदर्शित की। ऐसा करना आमाम न था क्योंकि हर किसी को मालूम था कि यद्यपि युद्ध समाप्त हो गया है, फिर भी कहीं अधिक लोगों का बलिदान अभी और करना होगा।

१० मई की रात को मेजर जनरल ब्रेज्नेव ने कमान के लिए अपनी अन्तिम युद्ध-रिपोर्ट लिखी जिसमें उन्होंने कहा, “शत्रु ने, जिसने अपने हथियार डालने से इन्कार कर दिया अपने गोला-बारूद का अधिकांश भाग हमारी युद्ध पंक्तियों पर गोलाबारी करने में लगा दिया है और तेज़ी से पीछे हटना शुरू कर दिया है। ९ मई और १० मई के दौरान हमारे सैनिकों ने पीछे हटती हुई सेना का पीछा किया और भिन्न क्षेत्रों में उसके साथ मुकाबला किया। अब हमारे सैनिक जर्मन सैनिकों का पीछा कर रहे हैं।”

इस बात को कई वर्ष बीत चुके हैं लेकिन १८वीं वाहिनी के वरिष्ठ योद्धाओं को मई १९४५ के उन कठिनाईपूर्ण दिनों की भली-भांति याद हैं और वे प्रतिवर्ष ठीक १२ मई को एकत्रित होकर दत्त दिवस को मनाते हैं। मास्को में होने वाली ऐसी सभाओं में १८वीं वाहिनी के राजनीतिक विभाग के भूतपूर्व प्रमुख के रूप में ब्रेज्नेव भी अक्सर शामिल होते हैं।

१८वीं वाहिनी के राजनीतिक विभाग तथा बाद में चौथे उक्रेनियार्ड मोर्चे के राजनीतिक प्रशासन के प्रमुख के रूप में ब्रेज्नेव ने विदेशों में सोवियत सैनिकों के समक्ष उपस्थित समस्याओं का दक्षतापूर्वक समाधान किया।

जब मास्को के लाल चौक में विजय परेड की योजना बनायी गयी, ब्रेज्नेव को चौथे उक्रेनियार्ड मोर्चे की मिली-जुली रेजिमेंट का कमिस्सार् नियुक्त किया गया।

मास्को में विजय परेड एक अमाधारण राष्ट्रीय पर्व था। इसने महान देश-भक्तिपूर्ण युद्ध में सोवियत जनता की युगान्तरकारी विजय तथा हिटलर-विरोधी संयुक्त मोर्चे के दूसरे राष्ट्रों की विजय का अभिनन्दन किया।

एक मिली-जुली रेजिमेंट के कमिस्सार् के रूप में ब्रेज्नेव को नियुक्ति अपने देश के प्रति उनकी महान सेवाओं की मान्यता का प्रतीक थी।

१८वीं सेना के भूतपूर्व कमांडर नास्तिलोविच, जिन्होंने विजय परेड में भाग

निया, लिखते हैं : "मुझे इस बात की प्रसन्नता थी कि ब्रेज्नेव को चाये उक्रेनियाई मोर्चे का प्रतिनिधित्व करने के लिए मिली-जुली रेजिमेंट का कमिस्तार नियुक्त किया गया। और मुझे लाल चोक के पवित्र पत्थरों पर विजेताओं की पातों में अपने प्रिय माथी के साथ मार्च करने का सम्मान प्राप्त हुआ।

"सभी यूनिटों द्वारा एकत्रित की गयी अधिवृत्त जर्मन पताकाओं को परेड के दौरान लेनिन समाधि के पायदान पर फेंका जाना था।"

"विजय परेड का आयोजन 24 जून, 1945 को किया गया। यह भव्य दृश्य था। इसकी डायुमेन्ट्री फिल्म बनायी गयी और प्रत्येक व्यक्ति को इसे देखने का अवसर प्राप्त हुआ।"

महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध में अपने प्रशसनीय व्यवहार के लिए, युद्ध कार्यों को सम्पन्न करने में अपने साहस और वीरता के लिए ब्रेज्नेव को 'आइंर आफ़ लेनिन' साल पताका के दो आइंरो, प्रथम और द्वितीय श्रेणी के 'देशभक्तिपूर्ण युद्ध' के आइंर, 'लाल सितारे के आइंर', 'अलेक्जान्दर नेव्स्की आइंर' तथा दूसरे आइंरो और पदकों में विभूषित किया गया।

विजय दिवस की 20वीं जयन्ती पर महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध में देश तथा पाटों के प्रति उनकी महान सेवाओं के मान्यतास्वरूप उन्हें 'सोवियत सप के वीर' की पदवी से अलंकृत किया गया।

सोवियत लेखक कोन्स्तान्टिन सिमोनोव ने महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के बारे में अपनी एक पुस्तक का शीर्षक रखा है कोई भी जन्मजात सैनिक नहीं होता। अपने देश की प्रतिरक्षा में सशस्त्र संचालन वाले लाखों-करोड़ों सोवियत-जन की भांति ब्रेज्नेव भी जन्मजात सैनिक न थे। उन्होंने अपना असैनिक कार्य छोड़ दिया था और वे सशस्त्र सेनाओं में शामिल हो गये थे।

लेकिन उन्होंने अपनी जनता जैसा ही जीवन जिया। और जब जनता का युद्ध-सन्नाह होना पड़ा तो वे भी सैनिक बन गये।

अन्य सोवियत-जन की भांति उन्होंने रक्षात्मक युद्धों के दौरान मृत्यु का सामना किया, प्रत्याक्रमण में भाग लिया, वे ठण्ड और भूख से ग्रस्त रहे, अपने साथियों की मृत्यु पर दुखी हुए और सोवियत संघ की युद्ध में सफलताओं पर आनन्दित हुए। उन्हें मुख्यालय की अपेक्षा खाइयों में अधिक देखा जाता था। वे हमेशा ही सैनिकों के बीच में रहते थे और उनके छतरों व जोगिंगों में, उनके अल्प राशन और गोला-बारूद में सहभागिता करते थे।

युद्ध की इन सभी कठिनाइयों का सामना करना इतना आसान न था। "सोवियत जनरलों, अफसरों व सैनिकों ने युद्ध के मागे पर अनंत चुनौतीपूर्ण

घड़ियों का अनुभव किया। पीछे हटना और सतत भीषण युद्ध। मृत्यु के सामने बिनापे गये दिन, महीने और वर्ष। शीतकालीन तुपार में तथा झुलसती हुई गर्मी में, नदों के मोमम की तेज बारिश में और वसन्त में बिना सड़कों वाले क्षेत्र पर लम्बे और थका देने वाले मार्च।" 8 मई 1964 को ब्रेजनेव ने सोवियत जनता के महान् माहमिक कारनामों के बारे में उपर्युक्त विचार व्यक्त किये। उन्होंने यह भी कहा : "अब तीन दशकों के बाद जब हम सैनिकों, कमांडरों व अपनी सशस्त्र सेनाओं के राजनीतिक प्रशिक्षकों के भाग्य के बारे में सोचते हैं तो यह विश्वास करना कठिन हो जाता है कि क्या वास्तव में यह सब कुछ हुआ था और वास्तव में सब कुछ सहा गया था...। लेकिन हमने यह सब सहा था। हमने सभी चुनौतीपूर्ण घड़ियों का सामना किया था तथा नाज़ी आक्रामकों को पराजित कर विजय प्राप्त की।"

सुशमिजाज तथा संगठनकर्ता के रूप में श्रेष्ठ योग्यता वाले ब्रेजनेव ने अपने गिर्द प्रत्येक व्यक्ति में समाजवादी देश के प्रति जागरूक कर्तव्य को जाग्रत किया और आशा का क्षेत्र उत्पन्न किया। यह किसी रहस्यपूर्ण भावना या भय से नहीं बल्कि इस अनुभूति से उत्पन्न हुआ कि लड़ाई मानवजाति को तथा वास्तव में सम्पूर्ण सभ्यता को नाज़ी ख़तरे से बनाने के लिए लड़ी गयी थी।

मृत्यु, यातना तथा रक्तपात का सामना करते हुए खंडहर बन नगरों और जली हुई फसलों को देखते हुए अत्यन्त भयानक युद्ध की लपटों से गुज़रकर उन्होंने जीवन और जनता से कहीं अधिक प्यार करना शुरू कर दिया।

वास्तव में युद्ध ने उन्हें जनता के प्रति कहीं अधिक चिन्ता प्रदर्शित करना तथा युद्ध की विपदा के विरुद्ध उसकी रक्षा करना सिखाया।

यही कारण है कि ब्रेजनेव ने कहा, "हम यथाशक्ति यह प्रयास करना अपना पवित्र कर्तव्य मानते हैं जिससे कि न केवल हम बल्कि हमारे बच्चे, उनके बच्चे तथा बच्चों के बच्चे कभी भी युद्ध का अनुभव न करें, तथा समस्त जनगण शांति-पूर्वक रहें और परस्पर अच्छे सम्बन्ध बनाये रहें।"

शांति के ध्येय के प्रति ब्रेजनेव के निस्वार्थ समर्पण भावना को समझने की यही कुंजी है। युद्ध की ज्वाला से ग्रस्त हुए व्यक्तियों की अपेक्षा अन्य कोई भी व्यक्ति शांति की अधिक अच्छी तरह रक्षा नहीं कर सकता।

नये समाज के निर्माण का विशाल कार्य

1. नीपर घाटों का पुनर्बाँन

बुद्ध के बाद जब श्रवणेश्वर पर पाँचों की विष्णु शृंगारों में श्री गणेश
और शिव दोनों का नाम लेकर पाठो—बहु शक्ति दिव्य श्रवणेश्वर का नाम था।
५—बादर शृंगारों में।

निर्गोपित वेदवेद को स्मरण है, "सो कही राजागवाम्नाय नमः श्री धर्म
माहिनी, अमुनिनिबन्ध और मोक्षप्रद के बागमन्त्र, नीच दिवस के दिन १५-१६-१७-
पर, कन्धुनाई करण, इन्द्र करण तथा दूसरे मन्त्र की बागमन्त्र से वेद १६
महर्षि ने बरान्त कहे हैं। जैसा आश्रम के गुरुदेव इस श्रेष्ठ के उद्देश्य की
वस्तुका को लाने के लिये ॥१॥ अथ वस्तु का धर्म ॥१॥

[illegible]

मुद्र-विद्यायां ये वदन्ति ते शङ्कराचार्येण कृतं न भवति । अथ च मुद्रायाः प्रयोगः ।
 इति केचन वदन्ति किं च मुद्रायाः प्रयोगः । अथ च मुद्रायाः प्रयोगः ।
 इति केचन वदन्ति किं च मुद्रायाः प्रयोगः । अथ च मुद्रायाः प्रयोगः ।

अनुभव ने उनको अपनी जनता के विचारों और आकांक्षाओं में और अधिक गहनरी नक पढ़ने की योग्यता प्रदान की, जिसके साथ उन्होंने पीछे हटने की कटुता और विजय की प्रसन्नता में सहभागिता की थी।

जब उन्हें मान्यता हुआ कि ऐसे अनेक व्यक्ति, जिनके साथ वे इस क्षेत्र को फलते-फूलने औद्योगिक क्षेत्र में बदलने के लिए कार्य कर चुके थे, काम पर वापस नहीं आएंगे और काम नहीं करेंगे उन्हें अत्यन्त दुःख हुआ। ऐसे सैकड़ों व्यक्ति, जिन्हें वे व्यक्तिगत रूप से जानते थे, अपने जन्म-स्थान से काफ़ी दूर चिरनिद्रा में लीन थे। श्रेष्ठतम सपूतों और बेटियों ने अपने घरों, प्रियजनों और अपने देश की रक्षा करने के लिए अपना जीवन अर्पित कर दिया था। ये वीर थे और अपने सामने इस अस्त-व्यस्त स्थिति को देखकर ब्रेजनेव ने उनका स्मरण किया और जैसा कि उन्होंने अपने समकालीनों को बताया, उन्होंने युद्ध को हमेशा-हमेशा के लिए रोक देने के लिए अपना जीवन समर्पित करने की शपथ ली।

ब्रेजनेव ने कहा है, "इस युद्ध से हुई क्षति और विनाश तुलना से परे है।" "इसके कारण जनता को होने वाला दुःख अभी तक माताओं, विधवाओं और अनाथों के हृदयों में टीस उत्पन्न करता है।" युद्ध ने प्रत्येक परिवार पर प्रहार किया। प्रत्येक से उसका एक बेटा अथवा पिता या भाई छीन लिया। ब्रेजनेव ने मृतकों के अनेक सम्बन्धियों से बातचीत की और उन्हें ययासंभव सात्वना दी क्योंकि वे अपने प्रियजनों की मृत्यु के बाद बच रहे व्यक्तियों के असीम दुःखों को मलीभांति जानते थे। "किसी व्यक्ति के लिए अपने प्रियजनों, अपने साधियों व मित्रों की मृत्यु से बढ़कर और कोई आपात नहीं होता। अपने श्रम के फल को नष्ट होते देखने से बढ़कर और कोई निराशाजनक दृश्य नहीं होता, जिसमें व्यक्ति अपनी पूरी शक्ति, अपनी प्रतिभा तथा अपनी जन्मभूमि के प्रति समर्पण भावना का प्रयोग करता है।"

ये वे कतिपय मनोभाव थे जिन्हें उन्होंने नेप्रोपेन्रोस्क और ज़ापोरोज्ये के खंडहरों से गुजरते हुए व्यक्त किया। जैसा कि उन्होंने बाद में कहा, "जल कर रात हुए घरों से अधिक तौक्षण गंध और दूसरा नहीं है। मेरी जन्मभूमि, जिसका रूप आग और धातु से विकृत हो गया है और जो खंडहर बन चुकी है, अब क्रूर नाज़ी सैनिकों से मुक्त है।" उन्होंने उन आँकड़ों की कि जाँच की कितने सोवियत महिलाएं और पुरुष इस क्षेत्र में मारे गये और कितने व्यक्तियों को जर्मनी यातना और श्रम शिविरों में भेजा गया।

ब्रेजनेव पैदल ही ज़ापोरोज्ये के मलबे के पास से गुजरे जो कभी प्रमुख औद्योगिक केन्द्र था और अब मुड़े-तुड़े धातु और मलबे से बने टीलों का दृश्य

प्रस्तुत कर रहा था। जापोरोखे संघ, जो युद्ध-पूर्व के सोवियत भारी उद्योग का गौरव था, उनके सामने सडहर के रूप में पड़ा था। धमन और धुले मुँह वाली मट्ठियाँ और सभी मशीनरी पूरी तरह नष्ट हो गयी थी। केवल एकमात्र भवन-पम्पिंग स्टेशन सुरक्षित सड़ा हुआ था, जिस पर मोलों के निशान बने हुए थे। प्रथम पंचवर्षीय योजना के दौरान साहसिक प्रयासों से निर्मित भव्य पन-विजली-घर, जो नीपर पर कभी गर्वोन्नत सड़ा हुआ था, विनाशकाय सडहर में बदल गया था। जापोरोखे और नेप्रोपेनोव्स्क क्षेत्रों के अर्धतंत्र को अनुमानित 48.7 बिलियन रूबल को हानि हुई। युद्ध को सपटों में झुलसने वाले प्रत्येक प्रदेश की ऐसी ही स्थिति थी।

इतिहास में किसी अन्य देश को विजय के लिए इतना भारी भूत्स नहीं चुकाना पड़ा। युद्ध में सोवियत जनता के 2 करोड़ सपूतों ने अपने जीवन की आहुति दी। आक्रमणकारियों ने 1710 बड़े और छोटे नगर नष्ट कर दिये तथा 70 हज़ार से अधिक गाँवों को जला डाला। कई लाख व्यक्ति निराश्रित हो गये। अपने भागने के दौरान बदले की भावना से घस्त नाबियों ने लगभग 32 हज़ार कारखानों और मयत्रों को पूरी तरह या आंशिक रूप में नष्ट कर दिया तथा 40 हज़ार मील रेलमार्ग उखाड़ फेंका।

देहात क्षेत्र को भी समान रूप से क्षति पहुँची : 48 हज़ार सामूहिक फार्म तथा लगभग 5 हज़ार राज्य फार्म और मशीन बट्टकटर स्टेशन सडहर हो गये। कच्चे माल और खाद्य सामग्रियों की तरह भारी मात्रा में मशीनरी जहाँजों द्वारा तीसरे राइस को भेज दी गयी। सोवियत जनता को उसके राष्ट्रीय इतिहास में वंचित करने और उन्हें दाम बना देने के प्रयास में मासृतिक स्मारकों को अधा-धुध नष्ट किया गया।

ब्रेज्नेव ने कहा, "युद्ध वर्षों के दौरान सोवियत जनता द्वारा उठायी जाने वाली क्षति के वास्तविक पैमाने का मूल्का चित्र किन्हीं भी आँकड़ों से नहीं मिन सकता। भला इस महान कार्य को, विचारों और प्रतिभा की सम्पत्ति को, जिसके मृजन में हमारी जनता की अनेक पीढ़ियाँ लग गयीं, आँकड़ों में किन प्रकार व्यक्त किया जा सकता है?" मानव इतिहास में किसी अन्य देश ने इतनी भारी क्षति कभी नहीं उठायी।

30 अगस्त, 1946 को जापोरोखे के कम्युनिस्टों ने सोवियत मण की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति की सिफ़ारिश पर लियोनिद ब्रेज्नेव को जापोरोखे क्षेत्रीय पार्टी समिति का प्रथम सचिव चुना। एक वर्ष बाद नवम्बर 1947 से उन्हें नेप्रोपेनोव्स्क क्षेत्रीय पार्टी समिति का प्रथम सचिव चुना गया।

सोवियत संघ के ममक्ष वास्तव में कठिन समस्याएँ मौजूद थीं। अर्थात्त्र की पुनर्स्थापना करना तथा अविश्वसनीय रूप से संक्षिप्त अवधि के अन्दर नागरिक-कार्य चालू करना आवश्यक था।

किसी भी काम को और अधिक समय तक स्वगित नहीं किया जा सकता था : अब कुछ तुरन्त ही किया जाना था। पर्याप्त निर्माण सामग्री के बिना पुनर्वास का कार्य गुरु करना था। ट्रेक्टरों के उपलब्ध न होने के बावजूद भूमि की जुताई करनी थी। अर्द्ध-खंडहर स्कूलों में बच्चों को पढ़ाना था तथा लूटे-खसोटे जा चके अस्पतालों में बीमार लोगों का इलाज करना था।

आर्थिक समुत्थान की जटिल समस्याएँ

ब्रेज़नेव के सामने क्षेत्रीय स्तर पर जो समस्याएँ हुईं उनको तत्काल हल करने की आवश्यकता थी। उन्होंने सैनिक सेवा से निवृत्त होने के तीसरे दिन ही असैनिक पोशाक धारण कर ली और वे धातु व रोटी के लिए शांतिपूर्ण युद्ध में शामिल हो गये।

सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत ने अगले पाँच वर्षों के लिए देश के केन्द्रीय आर्थिक और राजनीतिक कार्यों की रूपरेखा निम्न प्रकार तैयार की : "देश के युद्ध ध्वस्त क्षेत्रों की पुनर्स्थापना करना, उद्योग व कृषि को इनके युद्धपूर्व स्तर पर लाना तथा इसके बाद इनका पर्याप्त संवर्द्धन करना।"

1946 में स्वीकृत चौथी पंचवर्षीय योजना में जापोरोस्ताल संयंत्र के पुनर्निर्माण की अभिकल्पना की गयी, जिस पर नाज़ी सैनिकों को नगर से बाहर खदेड़े जाने के तुरन्त बाद 1944 में ही काम शुरू किया जा चुका था। लेकिन संयंत्र का पुनर्निर्माण-कार्य धीमी गति से चल रहा था।

ब्रेज़नेव का राष्ट्रीय अर्थमंत्र के लिए जापोरोस्ताल के व्यापक महत्व को स्पष्ट जानकारी थी। यह संयंत्र कार, ट्रैक्टर तथा उपभोक्ता सामग्री उद्योगों के साथ-साथ आवास-निर्माण के लिए अत्यन्त आवश्यक इस्पात की पतली चादरों के लिए सोवियत संघ का एकमात्र उत्पादक था। क्षेत्रीय पार्टों समिति के सचिव के रूप में उन्होंने उन कठिनाइयों को स्पष्ट रूप से देखा जिनका सामना करना था। धातुकर्म इंजीनियर के रूप में उन्हें मालूम था कि यह आमान प्राविधिक कार्य नहीं होगा। लेकिन उन्हें अपने व्यक्तियों में पूर्ण विश्वास था। मृतकों के कारनामों ने जीवित जन को प्रेरित किया। ब्रेज़नेव मजदूरों के साथ मामलों पर विचार-विमर्श करने के लिए निर्माण-स्थल पर गये। उन्होंने उन लोगों से कृत्रिम बायदे नहीं किये। लेकिन उन्होंने इन लोगों को इस बात से आश्वस्त कर दिया कि उनकी

दायो पदों के लिए सैनिक-सेवा से निवृत्त ऐसे सैनिकों, प्रतिभाशाली युवकों व युवतियों की सिकांरिश करने से कभी नहीं उरते थे, जो उत्तरदायित्व पूर्ण कार्यों के बारे में पहले ही अपनी योग्यता प्रदर्शित कर चुके थे।

जापोरोस्ताल में एक बैठक में बोलते हुए उन्होंने सुझाव दिया कि श्रम-शक्ति के संकेन्द्रण द्वारा योजना की पूर्ति को सुनिश्चित करने तथा प्राथमिकता प्राप्त कार्यों को पूरा करने के लिए सप्लाई सुनिश्चित बनाने के लिए तूफानी दल का गठन किया जाना चाहिए।

उन्होंने इस बात का उदाहरण प्रस्तुत किया कि अपने कार्य और निर्माण-कार्य का कुशलतापूर्वक मार्गदर्शन किस प्रकार करना चाहिए। निर्माण की विपम अवधि में उन्होंने अपना कार्यालय और संचार-व्यवस्था निर्माण स्थल पर स्थानांतरित कर ली और वहाँ वे कभी-कभी रात में भी रुक जाया करते थे। इस व्यक्ति की अत्यन्त उल्लेखनीय विशिष्टता थी—सामान्य लक्ष्य की दिशा में प्रत्येक वस्तु को गतिशील बनाने का प्रयास करना। क्षेत्रीय और नगर पार्टी समिति के कार्यकर्ताओं ने, जिन्होंने निर्माण-स्थल पर बुनियादी संगठनों का नेतृत्व ग्रहण किया, उनके उदाहरण का अनुसरण किया।

ब्रेज्नेव का कार्य-दिवस निर्माण-स्थल पर शुरू होता था : इसके बाद यह क्षेत्रीय, नगर तथा जिला पार्टी समितियों में, दूसरे निर्माण-स्थलों पर और सामूहिक क्रामों पर जारी रहता था। वे रात में देर से जापोरोस्ताल संयंत्र लौटते थे। दिन के दौरान किये गये कार्य की समीक्षा करते थे तथा अगले दिन के लिए योजना बनाते थे। वहाँ वे जरूरी काम से आने वाले स्थानीय पार्टी सरकारी व आर्थिक कार्यकारियों से भी भेंट करते थे।

प्रशांत और विश्वास

जापोरोस्ताल संयंत्र स्थित ब्रेज्नेव का कार्यालय निर्माण परियोजना का मुख्यालय बन गया। उनके निर्माण-स्थल पर पहुँच जाने से कठिन समय के बावजूद तनाव से मुक्त अच्छे कामकाजी वातावरण का मृजन हुआ।

“क्षेत्रीय पार्टी समिति के प्रथम सचिव ने जापोरोस्ताल परियोजना और इसके कामियों के गिर्द अमाधारण, वास्तविक कम्युनिस्ट सद्भावना के वातावरण का मृजन किया। यह उल्लेखनीय था कि जब कभी कठिनाइयाँ काफ़ी बढ़ जाती थीं, जब कभी हमें निराशा का सामना करना पड़ता था, जब-जब हम विशेष रूप से तनावग्रस्त हो जाते थे, प्रथम सचिव की आवाज अत्यन्त शान्त और अत्यधिक विश्वासपूर्ण होती थी।” जापोरोस्ताल निर्माण संगठन के प्रबन्धक

बेन्यामिन दिमशित्स उन दिनों का स्मरण करते हुए बताते हैं।

ब्रेजनेव हमेशा ही अग्रिम पंक्ति में रहते थे। ज़ापोरोज़्स्ताल समय में सम्पूर्ण परियोजना के लिए सर्वप्रथम पृथक् कार्यक्रम उनकी पहल पर तैयार किया गया था। इसने लगभग 40 तकनीकी टोक्तियों तथा सैकड़ों सभागों और कार्य टोक्तियों, संक्षेप में, परियोजना के समस्त कार्मिकों के कार्य को समायोजित किया। उन्होंने महसूस किया कि ऐसा कार्यक्रम प्रत्येक सभाग में व्याप्त स्थिति का विवरण उपलब्ध करेगा और इसके द्वारा कार्य पर नियंत्रण रखना, पिछड़े हुए सभागों की धिचाई करना, तथा श्रेष्ठ ढंग में कार्य करने वालों को प्रोत्साहित करना संभव होगा। उन्होंने कहा, "यह कार्यक्रम धुरी है, सम्पूर्ण प्रयासों के वातावरण का मृजन करने का उपकरण है।"

ब्रेजनेव ने कार्यक्रम की पूर्ति पर व्यक्तिगत रूप से नियंत्रण रखा। जब कभी भी कहीं ज़रा-सी देर होती वे परियोजना और समय के निर्माण के उत्तरदायी व्यक्तियों की सहायता करने के लिए सीधेता में वहाँ पहुँच जाते थे। विभिन्न मंत्रालयों द्वारा संचालित 120 कारख़ाने, जो 10 भिन्न नगरों में स्थित थे, उपकरण व सामग्री सप्लाई करते थे। मशीन औज़ार मास्को से, धातु संरचनाएँ नेप्रोपेद्रोव्सक से, पटरियाँ कुर्नैट्सक से, औद्योगिक उपकरण क्रामातोव्सक से, इमारती लकड़ी वीलोस्म में, रेल मार्ग के कच्चे आर्कांगेल में, बिजली के मोटर यारोस्लाव्ल में, तारकोन ट्रांसकार्केशिया में, पम्प मेलितोपोल से; तार लेनिनग्राद में, ट्रक गोर्की में आते थे...कितने भी उद्यम द्वारा सप्लाई में विलम्ब करने से सारे कार्यक्रम में विलम्ब हो जाता था। ब्रेजनेव तुरन्त ही सम्बन्धित मंत्रालयों, क्षेत्रीय पार्टी समिति के सचिवों तथा संयंत्र प्रबन्धकों से सम्पर्क स्थापित करते उनसे अनुरोध करते, उन्हें स्थिति में अवगत कराते थे, उन पर जोर डालते थे...वे ऐसे व्यक्तियों के रूप में व्यापक रूप में प्रसिद्ध हुए थे जो काम करा मकने में समर्थ हैं। उनमें किसी वान के लिए न करना कठिन था।

पुनर्निर्माण की कठिनाईयाँ इस तथ्य में और अधिक बढ़ गयी कि श्रमशक्ति युद्धपूर्व अवधि की अपेक्षा कहीं कम दक्ष थी। अनेक दक्ष कर्मियों और इंजीनियर मारे जा चुके थे। गैर-दक्ष कर्मियों, महिलाओं, किशोरों को युद्ध-ध्वस्त उद्यमों को पड़हरो में पुनर्निमित करना था। कार्मिकों को प्रशिक्षित करने के लिए समय और अनिश्चित धनशक्ति की ज़रूरत थी। लेकिन धन की व्यवस्था हो गयी। भूतपूर्व मंत्रियों, युवाजन और महिलाओं को औद्योगिक योग्यताएँ अर्जित करने में समय बनाने के लिए क्षेत्र में अनगिनत स्कूल और पाठ्यक्रम प्रारम्भ हुए। काम के माध्यम भी प्रशिक्षण दिया गया। काम निर्धारित समय पर लेकिन अत्यन्त कठिन

प्रयानों के बाद पूरा कर लिया गया।

क्षेत्रीय पार्टी समिति की अपील के प्रत्युत्तर में गांव के कम्युनिस्ट, कोम्सोमोल सदस्य तथा सामूहिक किसान जापोरोस्ताल, नेप्रोस्त्रोइ, कम्युनार्ड तथा दूसरी परियोजनाओं पर काम करने गये। सभी के लिए वहाँ आवास और भोजन की व्यवस्था की जानी थी : समस्याएँ पर्याप्त से कुछ ज्यादा ही थीं।

जापोरोस्ताल चोटी की परियोजना थी। देश के दक्षिणी इस्पात उद्योग का यह विशालकाय संयंत्र दूसरे उद्यमों की तरह बिजली के बिना नहीं चल सकता था। इसलिए नीपर पर लेनिन पनबिजलीघर का पुनर्निर्माण करना उच्च प्राथमिकता प्राप्त कार्य था। लेकिन इसको चालू करने में देरी हुई। यहाँ भी मजदूरों, इंजीनियरों और तकनीशियनों, मकानों और उपकरणों का अभाव था। क्षेत्रीय पार्टी समिति के सचिव के लिए यही एकमात्र सिरदर्द न था। ब्रेज्नेव ने पुनर्निर्माण कार्य की क्वालिटी पर कड़ी नज़र रखी और बार-बार इस बात पर बल दिया कि सोवियत विशालकाय पनबिजलीघरों के बीच इस पहले बिजलीघर को देश में वास्तुशिल्प का अत्यन्त प्रभावी एवं भव्य स्वरूप धारण किए रहना है।

उन्होंने देश, जनतंत्र और क्षेत्र की स्थिति के बारे में जनता को सूचित करने के लिए समाचारपत्रों बोल्शेविक जापोरोस्त्या, नेप्रोस्काया प्राव्दा, ज़ार्या, और चेर्वोने जापोरोस्त्या में नियमित रूप से लिखने का समय निकाला। "जापोरोस्ताल का तेज़ी से पुनर्निर्माण करो," "जापोरोस्त्ये क्षेत्र का पुनर्गठन करने के लिए सृजनात्मक कार्य के तीन वर्ष," "सोवियत उक्रेन की 30वीं जयन्ती की पूर्ववेली पर नेप्रोस्त्रोव्स्क क्षेत्र," "हमें अपने पदकों से ही संतोष नहीं करना चाहिए", तथा अन्य शीर्षक अपने लेखों में क्षेत्रीय पार्टी समिति के प्रथम सचिव ने उपलब्धियों का विश्लेषण किया, कमियों को सामने रखा, इनसे उबरने के मार्ग इंगित किया तथा भविष्य के लिए कार्य का निरूपण किया।

जीवन की विजय

ब्रेज्नेव के नेतृत्व में जापोरोस्त्ये तथा नेप्रोस्त्रोव्स्क क्षेत्रीय पार्टी समितियों द्वारा किये जाने वाले काम के अच्छे परिणाम निकलने लगे। युद्ध-ध्वस्त कारखानों और संयंत्रों को एक-एक करके चालू किया जाने लगा। 1948-49 की अवधि में अनेक उद्यमों ने युद्ध-पूर्व वर्ष 1940 की अपेक्षा वास्तव में कहीं अधिक उत्पादन किया। संडहूरों में रहने वाले अनेक व्यक्ति नये मकानों में स्थानान्तरित हो गये। सामूहिक किसानों को हजारों ट्रैक्टर, सैकड़ों हार्वैस्टर कम्पाइन, बीज डालने वाली मशीनें और ट्रक प्राप्त हुए। श्रान्तपूर्ण सोवियत जनतंत्रों ने हजारों की संख्या में

मवेशी और घोड़े सप्ताई किये।

एक के बाद एक संघ अपना उत्पादन शुरू कर रहे थे। प्रत्येक का पुनः चालू होना रोमांचकारी घटना थी। धमन-भट्टी नम्बर 3 के सामने जुलाई 1947 में एक दिन दस हजार में भी अधिक व्यक्ति इकट्ठे हुए।

क्षेत्रीय समिति के मांचिव ने इसके पुनर्निर्माण के सभी चरणों को याद दिलायी।

उन्होंने व्यक्तिगत रूप से इस बात की जांच की कि तेल्लोस्त्रोद निर्माण संगठन के विशेषज्ञों ने राजगोरी के कार्य को किस तरह पूरा किया तथा उन्होंने ईंटों की खराब क्वालिटी के बारे में उनकी सिकायतों की चर्चा भी की।

उन्होंने अपने गिरे लोगों के खुशी से भरे हुए चेहरे देखे जो अपने प्रयामों का परिणाम देखने आये थे। वही धमन-भट्टी सांभ ले रही थी और गोर मचा रही थी ! इसका गोर एक-दूसरे को बधाई देने वाले, गले मिलने वाले, चुम्बनों की बोछारें करने वाले और खुशी से रोने वाले पुरुषों व महिलाओं की हथुंध्वनि के बीच डूब गया। उन्होंने भी उसकी प्रसन्नता में सहभागिता की। उन्होंने भी तो इस कार्य में अपनी पूरी शक्ति लगायी थी।

चंद माह पहले देश ने लेनिन पन-बिजलीघर के पहले जनरेटर यूनिट द्वारा व्यावसायिक बिजली का उत्पादन शुरू किये जाने पर इसके साहसी निर्माताओं का स्वागत किया। यह देश में प्रत्येक व्यक्ति के लिए अच्छा समाचार था। एक बार फिर "उर्केन का मूरज", जैसा कि नीपर स्थित इस विशालकाय बिजलीघर को कहा जाता था, निकल आया था। यह परियोजना अपने आर्थिक महत्व और श्रेष्ठ तकनीकी डिजाइन के कारण ही नहीं बल्कि बोधे दशक में उत्साहपूर्ण और आत्मबलिदानपूर्ण कार्य की स्मृतिपत्र जगा देने के लिए भी प्रत्येक को प्रिय थी। यह बिजली परियोजना केवल सोवियत जनता के लिए ही स्मरणीय नहीं थी। परि योजना पर अमरीकी विशेषज्ञों को भी रखा गया था। उन्होंने इसके महान् महत्व की प्रशंसा की। वास्तव में उनमें से 6 को सोवियत बाइरो से भतकृत किया गया था। ह्यू कूपर ने, जिन्होंने परामर्शदाताओं को टोली का नेतृत्व किया, बिजलीघर को चालू करने के अवसर पर 1932 में आयोजित एक मोटिंग में भाषण किया। उन्होंने कहा कि नीपर परियोजना सम्पूर्ण विश्व को इतनी दूर नजरों से देखती है मानो यह देश के उद्योगीकरण में अपनी भूमिका निभाने के लिए अपनी तस्फरा का प्रदर्शन कर रही है। उन्होंने कहा कि यह उन सब के लिए उत्तर है जिन्होंने विश्व में इस अभूतपूर्व विशालकाय परियोजना को हाथ में लेने की सोवियत सघ की बुद्धिमानी पर पहले अंगुली उठायी थी।

श्रम की विजय मनाने के लिए एक के बाद दूसरी निर्माण-परियोजना पर मघाओ का आयोजन किया जा रहा था। नेप्रोपेत्रोव्स्की और क्रिवोइ रोग, नेप्रोपेत्रोव्स्की और मेलितोपोल, निकोपोल और मार्गानेत्स ने सूचित किया कि हमारे यहाँ उत्पादन गुरु हो गया है। युद्ध-ध्वस्त उद्यमों के पुनर्निर्माण के समाचारों के साथ ही नये कारखानों व खनिज धातु की खानों, बिजलीघरों, रेल मार्गों और गज-मार्गों के निर्माण के समाचार भी प्राप्त हुए। जापोरोइस्ताल संयंत्र के सफल पुनर्निर्माण के लिए करीब 2000 निर्माणकर्मियों, जुड़ाईकर्मियों, इस्पात गलाने वालों तथा इनकी सहायता करने वालों को सरकार के आर्डरों व पदकों से अलंकृत किया गया। लियोनिद ब्रेज्नेव को 'आर्डर ऑफ लेनिन' से विभूषित किया गया।

नेप्रोपेत्रोव्स्की क्षेत्र में मात्र उद्योग ही अनुतोष की वस्तु नहीं है। यहाँ विस्तृत और उपजाऊ सामूहिक कृषि क्षेत्र भी हैं। लेकिन इन्हें वास्तव में उपजाऊ बनाने के लिए उद्योग के साथ अपनी जान सड़ानी पड़ी और दक्षतापूर्वक श्रमशक्ति का संगठन करना पड़ा।

नौपर के किनारे की उमीन देश के गल्ला भंडारों में से है। यह सम्पूर्ण सोवियत संघ की फसल में उल्लेखनीय अंशदान करती है। इस क्षेत्र में कृषि का यथासंभव शीघ्र पुनर्गठन करने के लिए सरकार ने उस समय के स्तर को देखते हुए अत्यधिक पर्याप्त मात्रा में बीज और मशीनरी की सप्लाई की।

कृषि संबंधी अपनी भूतपूर्व प्रतिष्ठा पुनः प्राप्त करने में इस क्षेत्र की सहायता करने के उपाय खोजने के लिए क्षत्रीय पार्टी समिति के सचिव ने जिले और सामूहिक कृषि क्षेत्रों के अपने विस्तृत दौरों को तेज कर दिया, कृषि विज्ञानियों, कृषि अध्यापकों तथा साधारण किसानों के साथ विचार-विमर्श किया। उन्होंने बहुतेरे प्रश्न पूछे, विस्तारपूर्वक जानकारी प्राप्त की और स्थिति का अध्ययन किया। उनके प्रश्न उनकी गहन चिंता को परिलक्षित करते थे और उनके परामर्श से उनका गहन ज्ञान प्रकट होता था।

उन्होंने कृषि मशीनरी की मरम्मत तथा सामूहिक कृषि क्षेत्रों को ईंधन, उर्वरक व बीजों की सप्लाई पर काफ़ी ध्यान दिया।

नेप्रोपेत्रोव्स्की क्षेत्र कठिन स्थिति से उबर गया।

1948 और 1949 में यह राज्य की गल्ले तथा दूसरे कृषि उत्पादों की डिग्रीवरी के लिए योजना की पूर्ति करने वाले प्रथम क्षेत्रों में से था। 1948 में सामूहिक कृषि क्षेत्रों पर फसल अनाज की औसतन 24 बुगल प्रति एकड़ से अधिक रही। पशुपालन के क्षेत्र में भी काफ़ी प्रगति हुई।

कृषि के समस्त मौजूद समस्याओं के स्तर, जटिलताओं व अभावों का अनुभव करने के लिए यह स्मरणीय है कि मुद्र से हुए विनाश तथा सूने के दुष्परिणामों के बाद देश 1947 तक सात राजन व्यवस्था समाप्त करने में असमर्थ था। राजन-व्यवस्था को समाप्त करने के साथ-साथ जनसंख्या को मात्र उरुरत की वस्तुएँ सप्लाई करना ही नहीं बल्कि भविष्य के सम्पन्न राज्य के लिए दृढ़ आधारभिता का रखा जाना भी आवश्यक था।

कामें उत्पादन का व्यापक स्वरूप नेप्रोपेन्रोम्क क्षेत्र की महत्वपूर्ण विशिष्टता था। नि मदेह गेहूँ ही मुख्य फ़सल था। पशुपालन, उद्यान, अमूर-वाटिकाएँ और मछली पकड़ना दूसरे महत्वपूर्ण साध-ससाधन थे।

इन सभी पर कड़ी नज़र रखने की ज़रूरत थी। यह बात याद रखनी चाहिए कि उन दिनों अधिकांश कृषि कार्यों का मजोनीकरण नहीं हुआ था। पावर ट्रांसमिशन (विजली पारेपण) लाइनों का सभी गाँवों तक बिस्तार नहीं हुआ था। सामूहिक कामें अल्पशो के साथ मई 1950 में हुई एक बैठक में देखने व ने देहात क्षेत्रों के समस्त उपस्थित अनेक समस्याओं की चर्चा की। उन्होंने ग़ल्ले की वर्तमान स्थिति को ध्यान में रखते हुए किसानों में भविष्य की सहूलहाती भरपूर फसलों की सभावनाओं पर विचार करने के लिए जोर दिया। उस बैठक में अनेक थोताओं ने यह निष्कर्ष निकाला कि प्रबन्धमदत को ज्ञान, दक्षता तथा और अधिक अजित करने के लिए सतत प्रयत्नों करते रहने की आवश्यकता है।

1950 में इन क्षेत्र ने सम्पूर्ण देश के साथ मिलकर चौथी पंचवर्षीय योजना निर्धारित समय से पहले पूरी की। मुद्रपूर्व अवधि का औद्योगिक स्तर पीछे रह गया था और ग़ल्ले की मुद्रपूर्व के श्रेष्ठ वर्षों में भी नहीं अधिक भरपूर फ़सलें प्राप्त हुई थी। शिक्षा संस्थाओं, अस्पतालों, स्वास्थ्य व विश्राम सदनों तथा जिन्स-शास्त्राओं और बच्चों की देखभाल करने वाले केंद्रों के ताने-बाने का पुनर्निर्माण और बिस्तार किया गया। यह पुनर्निर्माण का चमत्कार था। पश्चिम जगन में अनेक लोग स्तब्ध रह गये। उन्हें विश्वास नहीं हुआ कि बिना विस्तृत विदेशी महायत्ता के ऐसा किया जा सकता है। एक बार पुन उन्होंने समाजवाद के निर्माताओं की अनन्त सामर्थ्य, क्षमता व उत्साह का न्यूनानुमान लगाया था। नाबो जनरल योजाणिम स्तुत्स्नागेल, जो नीपर क्षेत्र को भारी धति पहुँचाने का अपराधी था और जिसने बतित को भेजी गयी मुद्रकालीन रिपोर्ट में लिखा था, "जो कुछ भी हमने नष्ट किया है हम को उसकी पुनर्स्थापना करने में 25 वर्ष लगेंगे"। उसकी अहंकारपूर्ण भविष्यवाणी भी सच नहीं निकली।

उन्नतवासियों ने राष्ट्रीय अर्थतंत्र की पुनर्स्थापना में देखने व के महान अन्नदान

तथा मंगठनकर्ता के रूप में उनकी असाधारण योग्यताओं की अत्यधिक प्रशंसा की। जनवरी 1949 में हुई उक्रेन की कम्युनिस्ट पार्टी की कांग्रेस ने ब्रेज्नेव को अपनी केन्द्रीय समिति में चुना। इस से उनके कर्तव्यों का क्षेत्र विस्तृत हो गया तथा पार्टी व जनता के प्रति उनका उत्तरदायित्व बढ़ गया।

जनवरी 1950 में नेप्रोपेत्रोव्स्क में पेत्रोव्स्की इस्पात संयंत्र के मजदूरों की आम सभा में ब्रेज्नेव को सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के चुनाव के लिए मनोनीत किया गया। इस क्षेत्र के दूसरे कारखानों के मजदूरों ने इस मनोनयन का समर्थन किया। ब्रेज्नेव सोवियत संसद के लिए चुने गये।

जुलाई 1950 में उन्होंने नेप्रोपेत्रोव्स्क क्षेत्र से विदा ली—उनके लिए नया कार्य, इस बार मोल्दाविया में, प्रतीक्षा कर रहा था। उनकी पहले की सभी गति-विधियों ने उन्हें जनतंत्र का नेतृत्व करने के लिए तैयार किया। स्वाभाविक ही वे उक्रेन से, जहाँ उनका जन्म हुआ, जहाँ वे बड़े हुए और उन्होंने शिक्षा पायी और जहाँ उन्होंने अपना स्कूली जीवन व्यतीत किया, जुड़ा हुआ महसूस करते थे। वाद में एक अवसर पर ब्रेज्नेव ने कहा, "मैंने उक्रेन में कई वर्षों तक काम किया। मैंने इसकी धरती पर युद्ध में भाग लिया, तथा अन्य दूसरे रूसी लोगों की भाँति मैं भी उक्रेनियाई जनता के श्रेष्ठ गुणों से परिचित हूँ और उनसे निष्ठापूर्वक प्रेम करता हूँ।" उक्रेन में उनके कार्य ने उनके क्षितिज तथा जीवन के प्रति दृष्टिकोण को विस्तृत बना दिया। यहाँ पर उनके अन्दर असाधारण राजनेता के गुणों का विकास हुआ।

2. मोल्दाविया में

ग्रीष्मकाल में मोल्दाविया गर्म रहता है तथा हवा में घास और फूलों की महक बसी होती है। उद्यानों, खेतों तथा चरागाहों का अनुपम दृश्य दिखायी पड़ता है। लोगों की आवाजें, पक्षियों का कलरव तथा मशीनों की घड़घड़ाहट जोरों से और स्पष्ट सुनायी देती है। जिस समय ब्रेज्नेव मोल्दाविया पहुँचे गर्मी अपने पूरे जोर पर थी। 15 जून 1950 को सोवियत समाचारपत्रों ने मोल्दावियाई कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के पूर्णाधिवेशन के बारे में एक समाचार प्रकाशित किया, जिसने लियोनिद ब्रेज्नेव को केन्द्रीय समिति के प्रथम सचिव के पद पर चुना था।

उन वर्षों के चित्रों में हम लियोनिद ब्रेज्नेव को तरुणार्थ से भरपूर उत्साही, मुसकराते चेहरे और घुंघराले बालों वाले हृष्ट-भुष्ट व्यक्ति को देखते हैं (उस समय वे 43 वर्ष के थे)। उनके साथियों और सहकर्मियों ने कहा है कि उनकी महान आशावादिता और जीवन के प्रति उनके आह्लादपूर्ण दृष्टिकोण ने सभी पर गहरा

प्रभाव डाला।

सियोनिद बेज़नेव को छठे दशक के मोल्दावियाई सोवियत समाजवादी जनतंत्र में अनेक सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक समस्याओं से जूझना पड़ा।

सोवियत संघ के पुर-दक्षिण-पश्चिम भाग में स्थित छोटे क्षेत्रफल और उच्च जनसंख्या घनत्व वाला यह इलाका, जिसने अकसूर त्राति के बाद सोवियत सत्ता की घोषणा की, 1918 से 1940 तक अपनी जनता की इच्छा के विरुद्ध विभाजित रहा था। नीस्टर नदी ने मोल्दाविया के एक भाग को दूसरे से अलग किया। नीस्टर के बायें किनारे पर स्थित क्षेत्र सोवियत संघ में था, जबकि दायें किनारे पर स्थित क्षेत्र फ्रांसिस्ट रुमानिया आधिपत्य वर्ग के कब्जे में था।

1940 में जनता की आकांक्षाओं व ऐतिहासिक न्याय की विजय हुई। मोल्दाविया के दोनों भाग मोल्दावियाई सोवियत समाजवादी जनतंत्र की संरचना के अन्तर्गत एक हो गये। इसके बाद 1941 का वर्ष आया जो अपने साथ फ्रांसिस्ट आधिपत्य की काली रातें लेकर आया, जो पिछले वर्षों की तुलना में उतनी सम्बन्धित थी लेकिन समान रूप से कटुतापूर्ण और अपमानजनक थी।

जिस समय जनरल निकोलाई येर्ज़ाकिन के नेतृत्व में जो, 1945 में बर्लिन के पहले कमांडेंट बने, पाँचवीं प्रहार सेना के सैनिक दस्तों ने अगस्त 1944 के अंतिम दिनों में मोल्दाविया की राजधानी किशिनेव को मुक्त कराया, तो उन्होंने ऐसी विनाश सीला देसी जिसने कठोर-से-कठोर सैनिकों की भी हिलाकर रख दिया। नगर का मध्यभाग सफ़ाईकारों का पुंज बन गया था। नगर की अपेक्षा यह निर्जोड़ चन्द्रपटल जैसा कही ज्यादा लगता था। सोवियत सेनाओं द्वारा सदेह जाने पर आक्रमणकारी जो कुछ भी ले जा सकते थे अपने साथ ले गये। पलायन करने से पहले उन्होंने किशिनेव को इतनी निर्ममता से मूटा कि उन्होंने सिविकियों के फ़ेम तक तोड़ डाले और दरवाजों के हैबल तक निकाल लिये। मोल्दाविया में एक भी कारख़ाना विनाश के पगुल से नहीं बच पाया।

जैसी कि कहावत है, मुसीबतें अकेले ही नहीं आती। आक्रमणकारियों द्वारा किये गये विनाश तथा विधवाओं व अनाथों के दुःख के अलावा कृषि सम्बन्धी असफलताओं ने भी प्रहार किया। मूछे ने लगातार दो वर्षों तक—1945 और 1946 में मोल्दाविया के फ़ार्म क्षेत्रों व परागाहों की बुरी तरह प्रभावित किया।

यह उत्तेजनायी बात है कि उस अवधि में मोल्दावियाई अर्थतंत्र का, सर्वप्रथम व सर्वोपरि उद्योग का केवल पुनर्निर्माण ही नहीं किया गया बल्कि वास्तव में इसका नये सिरे से निर्माण किया गया।

युद्ध से पहले मोल्दाविया की लगभग 70 प्रतिशत जनसंख्या पूर्णतया निरक्षर

थी। ऐसे पूरे-के-पूरे गांव थे जहाँ एक भी पढ़ा-लिखा आदमी न था। समाचार-पत्र सोवेट्स्काया मोल्दाविया ने 15 अक्तूबर, 1950 को लिखा कि युद्ध-समय के बाद से लगभग 5 लाख व्यक्तियों को पढ़ना और लिखना सिखाया जा चुका है। तथापि मोल्दाविया में अभी भी लगभग 40 हजार निरक्षर और एक लाख अर्द्ध-माक्षर मौजूद थे। उस अवधि से सम्बन्धित मोटे पाण्डित्यपूर्ण शोध प्रबंध और प्रत्यक्षदर्शी विवरणों से यह प्रमाणित होता है कि छठे दशक का प्रारम्भ मोल्दाविया के इतिहास में महत्वपूर्ण परिवर्तन-बिन्दु था।

जनतंत्र को ऐसे नेतृत्व की जरूरत थी, जो जनता में ऊर्जा और स्फूर्ति फूँक सके, उन्हें अपनी सत्ता में विश्वास दिला सके तथा नये समाजवादी आधार पर मोल्दाविया की तीव्र प्रगति के लिए बुनियादी कार्य कर सके।

किशिनेव में सादोवाया मार्ग पर गुजरने वाला कोई भी व्यक्ति आपको एक-मंजिला भवन दिखा सकता है जो एक लॉन द्वारा सड़क से अलग है। 1950 में लियोनिद ब्रेज़नेव और उनका परिवार इसी मकान में आया था और वे यहाँ दो वर्ष तक रहे थे।

मोल्दावियाई कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति का अपना मुख्यालय 115 किएव मार्ग पर स्थित सफ़ेद और लाल इंटों से बने दो-मंजिले भवन में था। जनवरी 1918 में, जब मोल्दाविया में पहले-पहल सोवियत सत्ता की स्थापना हुई, रूमानियाई मोर्चे की सोवियतों की कार्यकारिणी समिति, काला सागर घेड़े तथा ओदेस्सा क्षेत्र के अपने-अपने कार्यालय इसी भवन में स्थित थे।

प्रथम सचिव का कार्यालय इस भवन के बायें पाखंड में दूसरी मंजिल पर था। यह मोल्दाविया का मुख्यालय और मुख्य नियंत्रण-केन्द्र था। उद्योग, कृषि और संस्कृति के प्रबन्ध की व्यवस्था यहीं से जुड़ी थी।

प्रतिदिन सुबह ठीक 8 बजे प्रथम सचिव तेज़ी से चलकर प्रवेश द्वार पर पहुँचते थे। उन वर्षों में केन्द्रीय समिति स्टाफ़ के एक सदस्य लियोन्तो शीतोव को स्मरण है :

“अपने कार्यालय में जाते समय लियोनिद ब्रेज़नेव लगभग सभी कमरों में हॉट हुए और लोगों से मिलते हुए जाते थे। कहीं कोई चुटकुला सुना देते थे, और उनके स्वास्थ्य और मूड तथा नवीनतम समाचारों के बारे में पूछताछ करते थे।

“इस सबमें दस से पन्द्रह मिनट तक लग जाते थे—ब्रेज़नेव समय का मूल्य समझते थे और उन्होंने हमें भी इसकी कद्र करना सिखाया। तथापि उन चन्द मिनटों में वे सम्पूर्ण केन्द्रीय समिति के स्टाफ़ के लिए उत्साहपूर्ण वातावरण तैयार

कर देते थे। वे हमें न केवल ताज़ी शक्ति से अनुप्राणित करते थे बल्कि वे यह भी जानते थे कि अपने गिर्द व्यक्तियों से अपने लिए ऊर्जा किस प्रकार प्राप्त की जाती है।...वे गुण जन्मजात नेता की उत्तेजनीय विद्युत्ता होते हैं। ऐसा व्यक्ति, जो हमेशा ही जनता के बीच रहता है और उससे ऊपर नहीं बल्कि उसके साथ मिल कर रहता है, उसके लिए काम करता है और उसको प्रोत्साहन देता है।

"मास्को की अपनी यात्राओं सौटने पर ब्रेज़नेव केन्द्रीय समिति के सारे स्टाफ़ को इकट्ठा करते और उन्हें बतलाते थे कि वहाँ क्या-क्या बातें हुईं और सोवियत संघ के विभिन्न क्षेत्रों व जनतंत्रों में काम किस प्रकार प्रगति कर रहा है।

"वे सोवियत जातियों के परिवार में हमारे स्थान पर बत देते थे और हमारी सम्भावनाओं की ओर इंगित करते थे। छोटी और प्रमुख समस्याओं की एक समस्या के रूप में जोड़ने की, नगर और देश को जोड़ने की, व्यक्ति और देश की नियति को जोड़ने की उनकी योग्यता से हम प्रभावित हुए।"

एक पुरानी कहावत है कि आप किसी भी व्यक्ति को उसके काम की मौली से परख सकते हैं। ब्रेज़नेव की कार्यमौली उनके सार-स्वरूप को, व्यक्ति और नेता के रूप में उनकी प्रकृति को परिलक्षित करती है।

सम्प्रति विज्ञान की डॉक्टर और मोल्दाविया की प्रसिद्ध विदुषी लुकेरिया रेपिदा, जो छठे दशक में जनतंत्र में एक मंत्री भी थीं, ब्रेज़नेव के साथ काम के वर्षों का स्मरण इस प्रकार करती हैं:

"हमने पहले ही यह समझ लिया था कि वे जन्मजात नेता हैं, तथा उनका दृष्टिकोण व्यापक है। यहाँ तक कि अत्यन्त कठिन परिस्थितियों में भी वे स्थिति को नियंत्रण में रखने में तथा अपनी अनपेक्षित ऊर्जा द्वारा ही नहीं बल्कि समस्या को नये ढंग से प्रस्तुत करने के माध्यम से लोगों को साथ लेकर चलने में भी समर्थ थे। वह अत्यधिक व्यस्त व्यक्ति थे। उनका एक-एक मिनट का दैनिक कार्यक्रम पहले से ही निर्धारित होता था। विस्तृत व्यावहारिक अनुभव प्राप्त व्यक्ति होने के नाते वे समस्याएँ प्रस्तुत करते और ठोस सैद्धांतिक आधार पर उनका समाधान करते थे। उन्होंने दिन-रात काफ़ी काम किया और उन्होंने सदा ही सुव्यवस्थित ढंग से काम किया।"

मोल्दाविया में ब्रेज़नेव के साथ काम करने वाले प्रत्येक व्यक्ति ने जनता के प्रति उनकी सतत चिन्ता को नोट किया। मोल्दावियाई कम्युनिस्ट पार्टी के इतिहास संग्रहालय में प्रदर्शित छठे दशक के चित्रों में ब्रेज़नेव को अकेले नहीं हमेशा ही लोगों के बीच देखा जा सकता है।

1950 के प्रारम्भ में तारान्तिया जिले के सामूहिक किसानों के दल एक हो

में खींचे गये चित्र में वे एक हीरो के पीछे खड़े हैं और ध्यानपूर्वक कितानों की बातें सुन रहे हैं। 1951 में कामेन्का में कृषि प्रदर्शनी के दौरान लिये गये दूसरे चित्र में वे 'समाजवादी-धर्म बीरांगना' मारिया कादोन्स्काया के बराबर में खड़े हैं। पोशाक और आदत की दृष्टि से ब्रेजनेव औरों से अलग नज़र नहीं आते। लेकिन अगर आपने उन्हें कभी देखा है तो आपका ध्यान एकदम ही उनकी ओर आकर्षित हो जायेगा क्योंकि वे जन-समूह के बीच में और उनकी ओर देखते हुए उनकी बातें सुन रहे होते हैं।

हाल ही में कम्युनिस्टों के संस्मरण शीर्षक से प्रकाशित पुस्तक में किशिनेव नगर पार्टी समिति की भूतपूर्व सचिव फ्राइना मेदेओफित्स्काया ने लिखा है : "कम्युनिस्ट होने के नाते मैं आपको ब्रेजनेव के बारे में, जब वे हमारे जनतंत्र में काम करते थे, लोगों के विचारों के बारे में बतलाना चाहूँगी। सर्वप्रथम हम उन्हें अद्भुत वक्ता के रूप में याद करते हैं जो अपने श्रोताओं को प्रेरित कर सकता था। हमने उन्हें ध्यानपूर्वक सुना करते थे यद्यपि कभी-कभी वे लगातार तीन घंटे तक बोलते रहते थे।

"ब्रेजनेव की रिपोर्टें और भाषण राजनीतिक दृष्टि से पने, जीवन के उदाहरणों से युक्त तथा औपन्यासिक कृतियों के उद्धरणों से युक्त होते थे। अपना भाषण तैयार करते समय वे अपने लिए अत्यन्त उच्च स्तर निर्धारित किया करते और यह अपेक्षा रखते थे कि सभी पार्टी कार्यकर्ताओं को ऐसा ही करना चाहिए।"

उनकी श्रमसाध्यता जनता के प्रति उनकी चिंता के साथ मिश्रित थी। मेदेओफित्स्काया और आगे लिखती हैं : "वे अत्यन्त समझ-बूझ वाले और विचारशील व्यक्ति हैं। मुझे निम्न प्रसंग याद आता है : जब उन्हें पता चला कि स्त्याउआ रोगिये बुने हुए सामान के कारखाने की प्रबन्ध निर्देशक लोदिया तेप्ल्याकोवा बीमार पड़ गयी हैं, तो उन्होंने अस्पताल में उन्हें फ़ोन किया और दिलासा देने वाली बातें कहीं और इसके बाद डॉक्टरों से सम्पर्क स्थापित किया और उनके लिए पथ्यावस्ति प्रयास करने के लिए कहा। दुर्भाग्यवश नगर पार्टी समिति में हमें तेप्ल्याकोवा की बीमारी के बारे में वाद ही में पता चला। जब हम उनसे मिलने गये तो उन्होंने हमें ब्रेजनेव के फ़ोन के बारे में बतलाया। हम महसूस कर रहे थे कि इस बात ने उनका मनोबल काफ़ी ऊँचा और गंभीर रोग से संघर्ष करने की उनकी शक्ति को द्विगुणित कर दिया था..."

1950 में मोल्दाविया में पहुँचने के बाद ब्रेजनेव ने शोष्रता से स्थिति व व्यक्तिगत से परिचय प्राप्त किया, समय की आवश्यकताओं की समझा तथा मोल्दाविया व सर्वोपरि देश के नानाजिक व आर्थिक विकास द्वारा अपेक्षित कार्यों

के अनुरूप योग्यतापूर्वक कार्य किया।

मोल्दावियाई कम्युनिस्ट पार्टी के इतिहास-संग्रहालय के स्फुरेटर विमोर्जेई नोमान उन दिनों का स्मरण करते हुए बतलाते हैं :

“ब्रेज्नेव अपनी अनयक और गतिशील ऊर्जा व कार्य-कुशलता की दृष्टि से उल्लेखनीय थे। वे अधिकारी को अपने कार्यालय में बुलाते, उसके साथ सम्मी-चोड़ी बातचीत करते और म्यक्त विचारों की तुलना करते थे (लेकिन वे उसे अपने अधिकारों से भयभीत करने का प्रयत्न कभी नहीं करते थे)। इसके बाद वे और आगन्तुक कार में बैठकर दो या तीन दिनों के लिए, कभी-कभार एक सप्ताह के लिए, किसी निकट या दूरवर्ती परियोजना पर चले जाते थे।

“वे जनवादी थे और अपने सहकर्मियों व जनता, मजदूरों व किसानों की उन तक पहुँच बहुत आसान थी। कभी-कभी काफ़ी लम्बे और गहन सम्मेलन के बाद वे कहा करते थे, ‘अब चलिए, इस काम को बन्द कीजिए और जरा शहर का एक घन्कर लगा लिया जाये।’”

नोमान किशिनेव व दूसरे मोल्दावियाई नगरों के पुनर्निर्माण की मास्टर-योजना की भी चर्चा करते हैं, जिसका प्रारूप ब्रेज्नेव की सक्रिय सहभागिता के साथ तैयार किया गया था।

ब्रेज्नेव की पहल पर केन्द्रीय मनोरञ्जन उद्यान बनाया गया और कोम्सो-मोल्सकोये झील खोदी गयी। 1951 में पयरीले दलदली क्षेत्र में इस परियोजना पर कार्य शुरू हुआ। स्थानीय जनता, विशेषकर कोम्सोमोल सदस्यों, ने इस कार्य में सक्रिय रूप से भाग लिया।

अक्टूबर 1950 में ब्रेज्नेव के मोल्दावियाई कम्युनिस्ट पार्टी के अग्रणी पद पर चुने जाने के शीघ्र बाद पार्टी की केन्द्रीय समिति का छठा पूर्णाधिवेशन हुआ। अधिवेशन में ब्रेज्नेव ने जनतंत्र के सामूहिक क्रमों को राजनीतिक, संघटनात्मक और आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ बनाने के लिए और अधिक ऊँच उठाने के बारे में प्रस्ताव रखा।

मोल्दावियाई कम्युनिस्ट पार्टी के इतिहास-संग्रहालय में प्रदर्शित एक दलपत्र सारिणी में निम्न आँकड़े शामिल हैं :

	1949	1950	1951
सामूहिक क्रमों की संख्या	925	1,770	1,355
सामूहिक किसानों की संख्या	3,75,000	9,17,000	33,88,000

इस सारिणी से यह स्पष्ट हो जाता है कि 1950 से 1951 तक एक वर्ष की अवधि में सामूहिक क्रमों की संख्या परस्पर मिल जाने के कारण कम हो गयी

जबकि दूसरे सदस्यों की संख्या में दुगुने से अधिक की वृद्धि हुई। मोल्दावियाई देशान्धेय ने समाजवादी पुनर्गठन के मार्ग पर बड़ा क़दम उठाया।

जब ब्रेज़नेव ने जनतंत्र का भार ग्रहण किया, उन्होंने मोल्दाविया के मेहनत-कम जन के लिए फ़सल उगाने की अर्थव्यवस्था के निदेशन के स्तर को ऊँचा करने का लक्ष्य निर्धारित किया जिससे कि अधिक उपज को स्थायी तथा मौसम सम्बन्धी परिस्थितियों से निरपेक्ष बनाया जा सके।

सोवियत सरकार ने भूतपूर्व ज़मींदारों के परिसर, उद्यान, अंगूर-वाटिकाएँ और 20,000 से अधिक मवेशी मोल्दावियाई किसानों को सौंप दिये। 1,30,000 निर्धन कृषकों के छोटे-छोटे खेतों को करों से मुक्त कर दिया गया। जनतंत्र में उद्योगों का तेज़ गति से विकास हुआ, और बेरोजगारी का पूर्णतः उन्मूलन हो गया।

समाजवादी व्यवस्था के लालनिक प्रतीक के रूप में दूसरे समाजवादी जनतंत्रों के धातृत्वपूर्ण जनगण ने औद्योगिक दृष्टि से पिछड़े हुए मोल्दाविया को सहायता दी। सोवियत संघ में जीवन की पद्धति यही है; आवश्यकता पड़ने पर प्रत्येक जनतंत्र दूसरे जनतंत्र की सहायता करता है। मास्को व लेनिनग्राद, उफ़ेन और उराल क्षेत्र, काकेशिया और साइबेरिया सभी ने तो मदद की। मशीन औज़ार और मशीनरी, इंजन और ट्रक, ट्रैक्टर व हार्वेस्टर कम्बाइन, धातु व कोयला, तेल तथा उद्योग व परिवहन, कृषि व सांस्कृतिक जीवन के पुनरुद्धार व विकास के लिए आवश्यक अन्य सामग्री भारी मात्रा में मोल्दाविया पहुँची।

सोवियत सरकार तथा सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति से प्राप्त व्यापक सहायता ने मोल्दाविया को नष्ट हुए और लुटे-पिटे उद्यमों के पुनर्निर्माण करने में ही नहीं बल्कि अत्याधुनिक मशीनरी से सज्जित अनेक नये कारख़ानों व संयंत्रों का निर्माण करने में सक्षम बनाया। 40,000 एकड़ से अधिक क्षेत्र पर युद्ध के बाद नये उद्यान और अंगूरवाटिकाएँ लगायी गयीं।

मार्च 1951 में मोल्दाविया की कम्युनिस्ट पार्टी की तीसरी कांग्रेस में प्रस्तुत केन्द्रीय समिति के रिपोर्ट में ब्रेज़नेव ने इन बात का वर्णन किया कि जनतंत्र के नगर व गांव किस प्रकार पहचान ने परे परिवर्तित होने जा रहे हैं: "मिसाल के तौर पर चादीर-लुंगा ज़िले में 1940 ने पहले एक माध्यमिक तथा आठ प्राथमिक स्कूल थे, जिनमें बीस अध्यापक थे और 300 छात्र पढ़ते थे। 85 प्रतिशत जनसंख्या निरक्षर थी। अब चादीर-लुंगा ज़िले में 275 अध्यापकों सहित 17 स्कूल हैं। स्कूलों में 5,000 छात्र पढ़ते हैं। निरक्षरता का उन्मूलन कर दिया गया है। यहाँ पंद्रह गांव-स्वयं, एक ज़िला संस्कृति प्रासाद, एक किन्नोर

पायनिपर सदन, एक सिनेमा थियेटर तथा 54 पुस्तकालय हैं। जिनमें से तीन रेडियो पुनर्प्रसारण स्टूडियो भी कार्यरत हैं।"

मोल्दाविया ने, जो उस समय मुख्य रूप से शामीण क्षेत्र था, कृषि की दृष्टि से उल्लेखनीय प्रगति की। त्रेखनेव ने बताया कि जनतंत्र में 94 प्रतिशत किसान परिवारों में सामूहिक फार्मों का गठन कर लिया है। मोल्दाविया के नवोदित सामूहिक फार्मों ने मशीनरी की प्रांतिकारी भूमिका का ज्वलंत उदाहरण प्रस्तुत किया। जनतंत्र में हजारों ट्रैक्टरों, हार्वेस्टर कम्बाइनों तथा दूसरी फार्म मशीनों के बैटों से सज्जित मशीन व ट्रैक्टर स्टेशनों की स्थापना की गयी। मशीनीकरण से सामूहिक फार्मों की उत्पादकता में तथा कृषि के स्तर व पैदावार में वृद्धि हुई। युद्ध के बाद पहली पंचवर्षीय अवधि में जनतंत्र में गन्ने की प्रमत्त की पैदावार में 150 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

पशुपालन में प्रगति के लिए तीन वर्षीय राज्य योजना की पूर्ति से सामूहिक फार्मों के मवेशियों के झुंडों में 7 गुना, भेड़ों व बकरियों के रेवडों में 5 गुना तथा मुअरों की संख्या में 730 प्रतिशत की वृद्धि हुई। 1949 में किसानों को सामूहिक फार्मों पर उनके कार्य के लिए नकद व सामग्री के रूप में 11 करोड़ रूबल का भुगतान किया गया था, परन्तु 1951 में उनकी आमदनी बढ़कर 56 करोड़ 70 लाख रूबल हो गयी।

जनतंत्र में कृषि-उत्पत्तियों ने सामूहिक फार्म व्यवस्था के महत्व तथा विशालस्तरीय समाजवादी कृषि की उपयोगिता को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया। जिसके कारण मशीनरी का इस्तेमाल करना और गहन बिंबिघतापूर्ण कृषि कार्य संभव हुआ।

जनतंत्र में उद्योग का भी तेजी से विकास हुआ। 1951 में औद्योगिक उत्पादन में पिछले वर्ष की अपेक्षा 41 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इस वृद्धि में प्रमुख अंश लाख उद्योग से प्राप्त हुआ जिसके उत्पादन में लगभग 50 प्रतिशत की वृद्धि की।

दुबोसारी पन-बिजलीघर, रेज़म-उत्पादन समुच्चय, मरी चीनो रिज़ाइनरियों, डिम्बावद लाख-सामग्री के कारख़ानों व मरिया का उत्पादन करने वाले सबरों के निर्माण का कार्य प्रगति कर रहा था। मेकेनिकल इंजीनियरी, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरी तथा उपकरण निर्माण—जनतंत्र के लिए नये उद्योग—के लिए आधार का निर्माण किया जा रहा था।

शिक्षा के क्षेत्र में भी तीव्र प्रगति दृष्टिबोधर हो रही थी। अक्टूबर 1952 तक जनतंत्र में 46 उच्चतर व माध्यमिक विधेयोक्त विद्या संस्थान कार्य कर रहे

अबकि इन मददों की संख्या में दुगुने से अधिक की वृद्धि हुई। मोल्दावियाई वैज्ञान-क्षेत्र ने समाजवादी पुनर्गठन के मार्ग पर बड़ा कदम उठाया।

जय ब्रेजनेव ने जनतंत्र का भार ग्रहण किया, उन्होंने मोल्दाविया के मेहनत-कम जन के लिए फल उगाने की अर्थव्यवस्था के निर्देशन के स्तर को ऊँचा करने का लक्ष्य निर्धारित किया जिससे कि अधिक उपज को स्थायी तथा मौसम सम्बन्धी परिस्थितियों से निरपेक्ष बनाया जा सके।

सोवियत सरकार ने भूतपूर्व जमींदारों के परिसर, उद्यान, अंगूर-वाटिकाएँ और 20,000 से अधिक मवेशी मोल्दावियाई किसानों को सौंप दिये। 1,30,000 निर्धन कृषकों के छोटे-छोटे खेतों को करों से मुक्त कर दिया गया। जनतंत्र में उद्योगों का तेज गति से विकास हुआ, और बेरोजगारी का पूर्णतः उन्मूलन हो गया।

समाजवादी व्यवस्था के लाक्षणिक प्रतीक के रूप में दूसरे समाजवादी जनतंत्रों के भ्रातृत्वपूर्ण जनगण ने औद्योगिक दृष्टि से पिछड़े हुए मोल्दाविया को सहायता दी। सोवियत संघ में जीवन की पद्धति यही है; आवश्यकता पड़ने पर प्रत्येक जनतंत्र दूसरे जनतंत्र की सहायता करता है। मास्को व लेनिनग्राद, उक्रेन और उराल क्षेत्र, काकेशिया और साइबेरिया सभी ने तो मदद की। मशीन औजार और मशीनरी, इंजन और ट्रक, ट्रैक्टर व हार्वेस्टर कम्बाइन, धातु व कोयला, तेल तथा उद्योग व परिवहन, कृषि व सांस्कृतिक जीवन के पुनरुद्धार व विकास के लिए आवश्यक अन्य सामग्री भारी मात्रा में मोल्दाविया पहुँची।

सोवियत सरकार तथा सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति से प्राप्त व्यापक सहायता ने मोल्दाविया को नष्ट हुए और जुटे-पिटे उद्यमों के पुनर्निर्माण करने में ही नहीं बल्कि अत्याधुनिक मशीनरी से सज्जित अनेक नये कारखानों व संयंत्रों का निर्माण करने में सक्षम बनाया। 40,000 एकड़ से अधिक क्षेत्र पर गुड़ के बाद नये उद्यान और अंगूरवाटिकाएँ लगायी गयीं।

मार्च 1951 में मोल्दाविया की कम्युनिस्ट पार्टी की तीसरी कांग्रेस में प्रस्तुत केन्द्रीय समिति के रिपोर्ट में ब्रेजनेव ने इन तथान का वर्णन किया कि जनतंत्र के नगर व गाँव किस प्रकार पहचान में परे परिवर्तित होने जा रहे हैं : "मिसाल के तौर पर चादीर-ज़ुंगा जिले में 1940 में पहले एक माध्यमिक तथा आठ प्राथमिक स्कूल थे, जिनमें बीस अध्यापक थे और 300 छात्र पढ़ते थे। 85 प्रतिशत जनसंख्या निरक्षर थी। अब चादीर-ज़ुंगा जिले में 275 अध्यापकों सहित 17 स्कूल हैं। स्कूलों में 5,000 छात्र पढ़ते हैं। निरक्षरता का उन्मूलन कर दिया गया है। यहाँ पंद्रह गाँव-नगर, एक जिला संस्कृति प्रासाद, एक किशोर

पायनियर सदन, एक सिनेमा थियेटर तथा 54 पुस्तकालय हैं। जिले में तीन रेडियो पुनर्प्रसारण स्टूडियो भी कार्यरत हैं।”

मोल्दाविया ने, जो उस समय मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्र था, कृषि की दृष्टि से उल्लेखनीय प्रगति की। त्रेजनेव ने बताया कि जनतंत्र में 94 प्रतिशत किसान परिवारों में सामूहिक फार्मों का गठन कर लिया है। मोल्दाविया के नवोदित सामूहिक फार्मों ने मशीनरी की आतंकीय भूमिका का ज्वलंत उदाहरण प्रस्तुत किया। जनतंत्र में हजारों ट्रैक्टरों, हार्बेस्टर कम्बाइनों तथा दूसरी फार्म मशीनों के बैटों से सज्जित मशीन व ट्रैक्टर स्टेशनों की स्थापना की गयी। मशीनीकरण से सामूहिक फार्मों की उत्पादकता में तथा कृषि के स्तर व पैदावार में वृद्धि हुई। युद्ध के बाद पहली पंचवर्षीय अवधि में जनतंत्र में गन्ने की फसल की पैदावार में 150 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

पशुपालन में प्रगति के लिए तीन वर्षीय राज्य योजना को पूर्ति से सामूहिक फार्मों के मवेशियों के झुंडों में 7 गुना, भेड़ों व बकरियों के रेवडों में 5 गुना तथा सुअरों की संख्या में 730 प्रतिशत की वृद्धि हुई। 1949 में किसानों को सामूहिक फार्मों पर उनके कार्य के लिए नकद व सामग्री के रूप में 11 करोड़ रूबल का भुगतान किया गया था, परन्तु 1951 में उनकी आमदनी बढ़कर 56 करोड़ 70 लाख रूबल हो गयी।

जनतंत्र में कृषि-उत्पत्तियों ने सामूहिक फार्म व्यवस्था के महत्व तथा विशालस्तरीय समाजवादी कृषि की उपयोगिता को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया। जिसके कारण मशीनरी का इस्तेमाल करना और गहन विविधतापूर्ण कृषि कार्य संभव हुआ।

जनतंत्र में उद्योग का भी तेजी से विकास हुआ। 1951 में औद्योगिक उत्पादन में पिछले वर्ष की अपेक्षा 41 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इस वृद्धि में प्रमुख अंश लाख उद्योग से प्राप्त हुआ जिसके उत्पादन में लगभग 50 प्रतिशत की वृद्धि की।

दुबोसारी पन-बिजलीघर, रेज़न-उत्पादन समुच्चय, नयी पीनी रिफ़ाइनरियों, डिम्बाबद लाख-सामग्री के कारख़ानों व मरिआ का उत्पादन करने वाले सर्वत्रों के निर्माण का कार्य प्रगति कर रहा था। मेकेनिकल इंजीनियरी, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरी तथा उपकरण निर्माण—जनतंत्र के लिए नये उद्योग—के लिए आधार का निर्माण किया जा रहा था।

शिक्षा के क्षेत्र में भी तीव्र प्रगति दृष्टिगोचर हो रही थी। अक्टूबर 1952 तक जनतंत्र में 46 उच्चतर व माध्यमिक विशेषीकृत शिक्षा संस्थान कार्य कर रहे

थे। इनमें 17 500 छात्र पढ़ते थे। एक राज्यकीय विश्वविद्यालय तथा 26 शोध-मन्दिर माने गये तथा 56 समाचार-पत्रों व पत्रिकाओं का प्रकाशन किया गया।

मोल्दावियाई जनता शताब्दियों से संस्कृति के लाभों से वंचित थी। सोवियत व्यवस्था के अन्तर्गत उन्होंने ज्ञानोपार्जन, शिक्षा व विज्ञान के लिए तीव्र इच्छा प्रदर्शित की। वे दूसरे सोवियत जनतंत्रों के जनगण की सांस्कृतिक उपलब्धियों में भागीदारी करने में समर्थ बने।

1952 का वर्ष, मोल्दाविया में ब्रेजनेव के कार्य का अन्तिम वर्ष, पिछले दो वर्षों जैसा ही व्यस्ततापूर्ण वर्ष था। ब्रेजनेव की पहल पर जनतंत्र ने सोवियत संघ की मंत्रिपरिषद के समक्ष मोल्दाविया की कृषि व खाद्य-उद्योग के सतत विकास के लिए पूरी तरह से जांचे हुए प्रस्ताव रखे। सोवियत सरकार ने ऐसे निर्णय लिए जिन्होंने मोल्दावियाई जनतंत्र में कृषि व खाद्य-उद्योग के लिए और अधिक कदमों के उठाये जाने की रूपरेखा निर्धारित की। मार्च में ब्रेजनेव ने जनतंत्र के अग्रणी पार्टी कार्यकर्ताओं की बैठक में इस आशय की रिपोर्ट प्रस्तुत की कि इन निर्णयों को किस प्रकार कार्यान्वित किया जायेगा तथा मोल्दाविया में अर्थतंत्र को और अधिक ऊँचाई तक विकसित करने के लिए कौन-से कदम उठाने चाहिए। इस बात को ध्यान में रखते हुए कि खाद्य-उद्योग देश के सम्पूर्ण औद्योगिक उत्पादन के 70 प्रतिशत का उत्पादन कर रहा था और इसने महत्वपूर्ण प्रगति अर्जित की है, उन्होंने यह भी इंगित किया कि इसके वावजूद स्थानीय बुनियादी भौतिक संसाधनों का अभी तक अधिकतर पूरा-पूरा उपयोग नहीं किया जा रहा था।

यद्यपि ब्रेजनेव ने लम्बे समय तक मोल्दाविया में काम नहीं किया फिर भी वे काफी महत्वपूर्ण हो गये थे। उन्होंने मोल्दाविया के विकास की प्रगति का आधार ही तैयार नहीं किया बल्कि उन्होंने इसकी भावी प्रगति के लिए मुख्य दिशा-निर्देशों की रूपरेखा भी तैयार की।

आज मोल्दाविया ट्रैक्टरों, उलाई मशीनों, गहरे पानी के पम्पों तथा विद्युत उपकरणों का निर्यात 60 से अधिक देशों को करता है। सोवियत संघ के केवल 0.2 प्रतिशत के कुल क्षेत्र पर स्थित मोल्दाविया 10 प्रतिशत से अधिक फलों, 26 प्रतिशत अंगूरों तथा 42 प्रतिशत तम्बाकू सहित देश के सम्पूर्ण फ़ार्म-उत्पादनों के 2 प्रतिशत से अधिक का उत्पादन करता है। इस आर्थिक समृद्धि के स्रोतों और जलों का सम्बन्ध छठे दशक के गुरु से है जब ब्रेजनेव ने मोल्दाविया की जनता के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर काम किया।

वे मोल्दाविया को भूले नहीं हैं और समय-समय पर इसका दौरा करते रहते हैं। अक्टूबर 1974 में जनतंत्र की 50वीं जयन्ती के समारोह के दौरान मोल्दा-

बिया की पताका पर उन्होंने ही 'अक्टूबर क्रांति का ओर्बेर' लगाया।

जनतंत्र ने इस व्यक्ति का, जिसके नेतृत्व में 25 वर्ष पहले इसने आज की वर्तमान और भावी सफलताओं की आधारशिला रखी थी, उत्साहपूर्वक स्वागत किया।

मोल्दावियाई सोवियत समाजवादी जनतंत्र तथा किशिनेव में मोल्दाविया की कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की 50वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में अक्टूबर 1974 आयोजित में एक सभा में भाषण देते हुए ब्रेज्नेव ने उन दिनों का स्मरण करते हुए कहा :

"ऐसा प्रतीत होता है कि हम नवगठित सामूहिक व राज्य क्रान्तियों के संगठनात्मक, राजनीतिक व आर्थिक गहनीकरण पर विचार-विमर्श करने के लिए हाल ही में निकटवर्ती किएव मार्ग स्थित मोल्दाविया की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के सम्मेलन करा में मिले हैं। हमने उन कम्युनिस्टों की चुना जो समाजवादी नीतियों के अनुरूप गांव में जीवन का पुनर्निर्माण करने के लिए आगे आये। यह कठिन समय था। लेकिन इसकी प्रशंसा ही की जा सकती है क्योंकि यही वह समय था जब वर्तमान सफलताओं की आधारशिलाएँ रखी गयी।"

मामलों को समझने में ब्रेज्नेव की कामकाजी योग्यता तथा एक संगठनकर्ता के रूप में उनकी प्रतिभा को पार्टी के क्षेत्र में व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त थी। 23 सितम्बर, 1952 को मोल्दाविया के कम्युनिस्टों ने उन्हें अपने एक प्रतिनिधि के रूप में सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की 19वीं कांग्रेस में शामिल होने के लिए भेजा। अक्टूबर में आयोजित कांग्रेस में उन्हें सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति में चुना गया तथा केन्द्रीय समिति के पूर्णाधिवेशन ने उनको सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के अध्यक्ष मंडल का वैकल्पिक सदस्य और सचिव चुना।

3. अकृष्ट धरती के क्षेत्रों में

सोवियत सघ में 1955 में 3,11,00,000 टन गन्ने की बमूली को गयी जबकि उपभोग किये गये साठ पदार्थों तथा देश की दूसरी आवश्यकताओं की मात्रा 3,24,00,000 टन थी। गन्ने का अभाव राज्य भंडारों के कारण उत्पन्न हुआ। इसलिए सक्षिप्त अवधि में अधिक गन्ना उपलब्ध करने में देश की सहायता करने के लिए प्रभावित कदम उठाने की जरूरत थी।

1954 के वसन्त में सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति ने "देश में गन्ना उत्पादन में और अधिक वृद्धि तथा अकृष्ट व बंजर जमीनों के

विकास के बारे में" निर्णय स्वीकृत किया। उराल क्षेत्र से परे तथा दूर-पूर्व में, सोवियत संघ के एशियाई भाग, मुख्यतया कजाख सोवियत समाजवादी जनतंत्र में लाखों-करोड़ों एकड़ उपजाऊ जमीन को जुताई के अन्तर्गत लाया जाना था। इस जमीन का इस्तेमाल गेहूँ तथा दूसरी फसलों की बुवाई के लिए करना था।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति ने ब्रेज्नेव को इस विस्तृत परियोजना का, जिसकी रूपरेखा पार्टी ने निर्धारित की, राजनीतिक नेतृत्व तथा कजाखस्तान में अकृष्ट घरती के विकास कार्य को संगठित करने का काम सौंपा। कजाखस्तान के कम्युनिस्टों में उन्हें फरवरी 1954 में कजाखस्तान की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति का द्वितीय सचिव तथा अगस्त 1955 में प्रथम सचिव चुना।

जनतंत्र के सामने दो वर्षों के अन्दर एक करोड़ पचास लाख एकड़ जमीन की जुताई करने का भारी कार्य मौजूद था—अर्थात् सोवियत संघ में लगभग आधी अप्रयुक्त भूमि को उपजाऊ बनाना था। यह अपने आयाम की दृष्टि से ही नहीं बल्कि अपने रिकॉर्ड समय की दृष्टि से, जिसके अन्दर इसे पूरा किया जाना था, मुश्किल काम था। यह कार्य सोवियत संघ में भी, जिसने अपनी असाधारण उपलब्धियों से विश्व को अनेक बार चकित कर दिया, असामान्य था।

कृषि के इतिहास में यह एक अभूतपूर्व परियोजना थी। कम्युनिस्ट पार्टी और सरकार ने इसके लिए विशाल वित्तीय साधनों की व्यवस्था की। जनतंत्र को भारी मात्रा में मशीनें—ट्रैक्टर, हार्वेस्टर कम्बाइन, बीज डालने वाली मशीनें, ट्रक तथा कृषि औजार उपलब्ध किये गये। लेकिन मशीनरी ही अकेले काफी न थी। श्रम-शक्ति की भी जरूरत थी।

पार्टी तथा सरकार की अपील के प्रत्युत्तर में बीसियों हजार उत्साही इस कार्य में भाग लेने के लिए स्वेच्छा से आगे आए। हजारों फार्म मशीन चालक तथा दूसरे दक्ष मजदूर—कोम्सोमोल सदस्य तथा इसके दूरवर्ती भागों सहित सम्पूर्ण देश के युवाजन—अकृष्ट घरती के क्षेत्र में आये। लगभग दस लाख स्वयंसेवक परियोजना के प्रारम्भिक वर्षों में यहाँ पहुँचे।

दो वर्षों के अन्दर मशीन तथा ट्रैक्टर केन्द्रों और राज्य फार्मों को 1,22,000 से अधिक ट्रैक्टर, 26,000 हार्वेस्टर कम्बाइन, 22,000 से अधिक ट्रक तथा बड़ी मात्रा में दूसरी मशीनरी और उपकरण प्राप्त हुए।

इस परियोजना को पूरा करने के लिए अनुभवहीन नेतृत्व और संगठन-प्रतिभा की आवश्यकता थी। बीसियों ऐसे फार्मों नये राज्य फार्मों की स्थापना करना (1954 में 90 और 1955 में लगभग 250 की स्थापना की गयी), कृषि-योग्य

यना लिए गए क्षेत्रों में नये गांवों और बस्तियों का निर्माण करना आवश्यक था। कार्य का पैमाना प्रत्येक महीने बढ़ता चला गया।

1955 में कजाख जनतंत्र का बजट एक वर्ष पहले के बजट की अपेक्षा लगभग दोगुना अधिक था। मौजूद समस्याओं का सम्बन्ध कार्य के संयोजन तथा एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र तक भारी गह्वरा में मशीनों की पहुँच और स्थानान्तरण में ही नहीं बल्कि हजारों लोगों के लिए आवास और भोजन की व्यवस्था तथा उनकी परेनू और मात्कृतिक आवश्यकताओं की नुष्टि में भी था।

परियोजना के काम पर लगायी जाने वाली कार्य-टोलियों का गठन देश के भिन्न भागों, भिन्न जनतंत्रों से पहुँचने वाले नववागंतुकों में हुआ था। अधिकांशतः वे एक-दूसरे से अपरिचित थे। उन्हें अत्यन्त कठिन परिस्थितियों में रहना और काम करना पड़ा। इस बात को देखते हुए कजाखस्तान की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति ने नवगठित टोलियों को अधिकतम कार्यक्षमता के साथ काम करने में सहाय्य बनाने के लिए ताल्लसिक कदम उठाये।

श्रेजनेव इस अभियान में सबसे आगे थे। इस विनाश विकास परियोजना पर काम करने वाले लोग उनके साथ अपनी मुलाकातों का हादिकतापूर्वक स्मरण करते हैं। उनमें से एक एयोशेर मोर्मुल, जो इस समय पोलतावा क्षेत्रीय पार्टी समिति के प्रथम सचिव हैं, ने गल्ले के लिए किये गये सपर्य का वर्णन इस प्रकार किया है:

"1954-55 में हम अक्सर ही एक इजन वाने ए०एन०-2 विमान को उड़ते हुए देखा करते थे। हमें मालूम था कि वे कजाखस्तान की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के सचिव श्रेजनेव को लाता-ले जाता है। उन्होंने अनेक कामों का दौरा किया और वे अधिकांश प्रबन्धकों में भक्ति-भ्रांति परिचित थे। उनकी यात्राओं ने हमारी काफी सहायता की। विस्थापितों की स्थिति और कठिनाइयों को अपनी आँखों में देखने के बाद वे आवश्यक निर्णय लेने में तथा इसके द्वारा सभी नये कामों की, भले ही वे उनका दौरा कर पाने में असमर्थ रहे हो, मदद करने में असमर्थ थे क्योंकि अधिकांश मामलों में उन सबकी समस्याएँ एक जैसी ही होती थी।"

विश्वास की भावना

श्रेजनेव उन कठिन लेकिन उत्तेजक दिनों का अभी भी स्मरण करते हैं:

"प्रफुल्ल जनतमूह नवागन्तुकों का स्वागत कर रहा था, और जीवन की ऐसी गति में जन्मे नये शीत गाये जाते थे। माहमपूरे कार्य करने का रोमांच था"

कार्य की पहल करने में अन्तर्निहित दुस्ताहस की वास्तविक भावना मौजूद थी।

“यहाँ ऐसे विश्वास की अद्भुत भावना विद्यमान थी जो उस समय उत्पन्न होती है जब कठिनाइयों पर विजय पायी जाती है और उन्हें समाप्त कर दिया जाता है। ऐसी अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। चन्द महीनों के अन्दर हजारों विस्थापितों को बसाना, उन्हें आवास सुविधा उपलब्ध कराना, उनकी रोजमर्रा की जरूरतों की संतुष्टि करना, राज्य फ़ार्मों, गल्ला संग्राहकों, सड़कों व पुलों का निर्माण शुरू करना आवश्यक था।

“शुरू-शुरू में कई काम गड़बड़ हुए, रुकावटें आईं और गलतफहमियाँ उत्पन्न हुईं और गलतियाँ भी की गयीं। लोग निर्जन क्षेत्रों में पहुँच रहे थे। वे स्थानीय परिस्थितियों तथा विशिष्ट जलवायु से अपरिचित थे और उनमें से बहुतेरों को कृषि के बारे में आम जानकारी तक न थी। लेकिन वे महान राष्ट्रीय महत्व के विचार से, प्रकृति पर नियंत्रण करने और इसका पुनर्निर्माण करने की कामना से, प्रेरित थे।”

ब्रेजनेव परियोजना से उत्पन्न होने वाली अनेक समस्याओं का उत्तर ढूँढ़ने का प्रयास करते थे। उन्होंने पुराने लोगों के अनुभव से सीखा। उन्होंने माँग की कि जनतंत्र के मंत्री, पार्टी कार्यकारी तथा आर्थिक प्रबन्धक नये विस्थापितों की विशिष्ट समस्याओं व आवश्यकताओं के साथ अपने-आपको अधिकाधिक जोड़ें और राज्य व सामूहिक कार्यों में दैनिक दिलचस्पी लें।

ब्रेजनेव ने कजाख़स्तान के कम्युनिस्टों के सम्मेलन में बताया, “मैं इन क्षेत्रों के अपने नवीनतम दौर के एक प्रसंग आपके सामने दोहराना चाहता हूँ। हम मुलायेवो ज़िले में स्थित ज़दानोव राज्य फ़ार्म से विमान द्वारा लौट रहे थे। ज़िला पार्टी समिति के सचिव मेरे साथ विमान पर थे। मैंने उन्हें बतलाया कि इसी क्षेत्र में इसी स्थान पर तामान डिवीजन के नाम पर स्थापित एक राज्य फ़ार्म है। सचिव ने इस बात की पुष्टि की। हाल ही में संगठित यह राज्य फ़ार्म लगभग 40 मील दूर था। हमने फ़ार्म को खोज निकाला, विमान उतारने के लिए उचित स्थान ढूँढ़ा और हम वहाँ उतरे।

“वहाँ लोग गाड़ियों में रह रहे थे। निर्माण-कर्मियों ने पास ही में अपने डेरे लगाये हुए थे। फ़ार्म को हाल ही में मशीनें मिलनी शुरू हुई थीं। तथा इसे बसन्त में जोते गये 7500 से 10 हजार एकड़ क्षेत्र तथा पिछले वर्ष जोते गये अन्य 40 हजार एकड़ क्षेत्र—कुल मिलाकर 50 हजार एकड़ क्षेत्र पर—बुवाई का कार्य दिया गया। और यह कार्य उस समय दिया गया जब फ़ार्म अपने पैरों पर खड़ा होने का प्रयास ही कर रहा था और इसके पास श्रम-शक्ति और

मशीनरी दोनों का ही अभाव था। वास्तव में उस समय तक वे केवल 7,500 एकड़ क्षेत्र पर ही बुवाई कर पाये थे। आप उनके द्वारा किये गये कार्य की स्वासिटी को कल्पना कर सकते हैं—क़रीब-क़रीब सारा ही काम बेकार था।

"मैंने उनसे पूछा, क्या कोई उनसे मिलने आया था। उन्होंने उत्तर दिया कि तीन दिन पहले ज़िला पार्टी समिति के सचिव आये थे। यह सचिव अच्छे में, जनतंत्र की सर्वोच्च सोवियत के सदस्य भी थे। लेकिन स्पष्ट ही उनका यह विचार था कि राज्य फ़ार्म की सहायता करना केवल राज्य फ़ार्म मंत्रालय का ही कार्य था। और उन्होंने न तो किसी बात पर ध्यान दिया और न ही किसी प्रकार की सहायता दी।

"राज्य फ़ार्म के लोग काफ़ी रुठनाई महसूस कर रहे थे। वहाँ सड़कें न थीं। स्थानीय स्टोर को डबल रोटी व अन्य साध-सामग्री की सप्लाई भी अनियमित रूप से प्राप्त होती थी तथा दूसरे सामान का भी अभाव था। यद्यपि, ज़ंसा कि मुझे मालूम पड़ा थोक सप्लाई डिपो में सब कुछ मौजूद था। ज़िला पार्टी समिति के सचिव ने जब यह देखा तो उन्होंने तुरन्त ही अपनी ग़लती को महसूस किया। फ़ार्म पर रातों-रात एक बेकरी खोल दी गयी, दो ट्रकों से साध-सामग्री और उपभोक्ता सामग्री लायी गयी। संक्षेप में सब कुछ ठीक-ठाक हो गया।"

क़ज़ाख़स्तान में अपने कार्य के पहले चरण से ही बेज़नेव ने सम्पूर्ण जनतंत्र में गेहूँ, मूख़मूख़ी तथा दूसरी फ़सलों की पैदावार बढ़ाने के उपाय सोचे तथा पशुपालन कार्य को प्रोत्साहित किया। उन्होंने किसानों से दूसरे जनतंत्रों के अनुभव का अध्ययन करने के लिए अनुरोध किया। अपने भाषणों में उन्होंने सोवियत संघ के जनगण के बीच मित्रता के महत्व पर बल दिया, जो उन्हें अपने परस्पर सहयोग व भ्रातृत्वपूर्ण समर्थन से लाभ उठाने का सामर्थ्य प्रदान करती थी।

मिलन जातीयताओं के लोगों द्वारा किये गये ऐसे सामूहिक कार्य के परिणाम क़ज़ाख़स्तान में स्पष्ट नज़र आ रहे थे जहाँ रूसी संघ, उक्रेन, बेलोरूस तथा सोवियत संघ के दूसरे जनतंत्रों के कृषि विशेषज्ञ अकृष्ट धरती की विकास परियोजना पर उनके कार्य-प्रयासों में शामिल हुए थे।

ये परियोजना अन्तर्राष्ट्रीयतावादी शिक्षा का स्कूल, बौद्धिक व शारीरिक प्रशिक्षण का स्कूल, शब्द के सच्चे अर्थों में व्यावसायिक प्रशिक्षण का स्कूल था। अकृष्ट तथा बज़र भूमि परियोजना की 20वीं जयन्ती के अवसर पर अपने भाषण में बेज़नेव ने कहा, "इस परियोजना ने अनेक व्यक्तियों को जीवन के सही मार्ग पर लगा दिया है। बीसियों और सैकड़ों ट्रैक्टर ड्राइवर, हार्बेस्टर कम्बाइन चालक

कार्य की पहल करने में अन्तर्निहित दुस्साहस की वास्तविक भावना मौजूद थी।

"यहाँ ऐसे विश्वास की अद्भुत भावना विद्यमान थी जो उस समय उत्पन्न होती है जब कठिनाइयों पर विजय पायी जाती है और उन्हें समाप्त कर दिया जाता है। ऐसी अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। चन्द महीनों के अन्दर हजारों विस्थापितों को बसाना, उन्हें आवास सुविधा उपलब्ध कराना, उनकी रोजमर्रा की जरूरतों की संतुष्टि करना, राज्य फ़ार्मों, गल्ला संग्राहकों, सड़कों व पुलों का निर्माण शुरू करना आवश्यक था।

"शुरू-शुरू में कई काम गड़बड़ हुए, रुकावटें आईं और ग़लतफ़हमियाँ उत्पन्न हुईं और ग़लतियाँ भी की गयीं। लोग निर्जन क्षेत्रों में पहुँच रहे थे। वे स्थानीय परिस्थितियों तथा विशिष्ट जलवायु से अपरिचित थे और उनमें से बहुतेरों को कृषि के बारे में आम जानकारी तक न थी। लेकिन वे महान राष्ट्रीय महत्व के विचार से, प्रकृति पर नियंत्रण करने और इसका पुनर्निर्माण करने की कामना से, प्रेरित थे।"

ब्रेज्नेव परियोजना से उत्पन्न होने वाली अनेक समस्याओं का उत्तर ढूँढ़ने का प्रयास करते थे। उन्होंने पुराने लोगों के अनुभव से सीखा। उन्होंने माँग की कि जनतंत्र के मंत्री, पार्टी कार्यकारी तथा आर्थिक प्रबन्धक नये विस्थापितों की विशिष्ट समस्याओं व आवश्यकताओं के साथ अपने-आपको अधिकाधिक जोड़ें और राज्य व सामूहिक कार्यों में दैनिक दिलचस्पी लें।

ब्रेज्नेव ने कज़ाख़स्तान के कम्युनिस्टों के सम्मेलन में बताया, "मैं इन क्षेत्रों के अपने नवीनतम दौरे का एक प्रसंग आपके सामने दोहराना चाहता हूँ। हम बुलायेवो ज़िले में स्थित उदानोव राज्य फ़ार्म से विमान द्वारा लौट रहे थे। ज़िला पार्टी समिति के सचिव मेरे साथ विमान पर थे। मैंने उन्हें बतलाया कि इसी क्षेत्र में इसी स्थान पर तामान डिवीजन के नाम पर स्थापित एक राज्य फ़ार्म है। सचिव ने इस बात की पुष्टि की। हाल ही में संगठित यह राज्य फ़ार्म लगभग 40 मील दूर था। हमने फ़ार्म को खोज निकाला, विमान उतारने के लिए उचित स्थान ढूँढ़ा और हम वहाँ उतरे।

"वहाँ लोग गाड़ियों में रह रहे थे। निर्माण-कर्मियों ने पास ही में अपने डेरे लगाये हुए थे। फ़ार्म को हाल ही में मशीनें मिलनी शुरू हुई थीं। तथा इसे बसन्त में जोते गये 7500 से 10 हजार एकड़ क्षेत्र तथा पिछले वर्ष जोते गये अन्य 40 हजार एकड़ क्षेत्र—कुल मिलाकर 50 हजार एकड़ क्षेत्र पर—बुवाई का कार्य दिया गया। और यह कार्य उस समय दिया गया जब फ़ार्म अपने पैरों पर खड़ा होने का प्रयास ही कर रहा था और इसके पास थम-शक्ति और

मशीनरी दोनों का ही अभाव था। वास्तव में उस समय तक वे केवल 7,500 एकड़ क्षेत्र पर ही बुवाई कर पाये थे। आप उनके द्वारा किये गये कार्य की बवालिटो की कल्पना कर सकते हैं—करीब-करीब सारा ही काम बेकार था।

“मैंने उनमें पूछा, क्या कोई उनसे मिलने आया था। उन्होंने उत्तर दिया कि तीन दिन पहले जिला पार्टी समिति के सचिव आये थे। यह सचिव अन्ध था, जनतंत्र की सर्वोच्च सोवियत के सदस्य भी थे। लेकिन स्पष्ट ही उनका यह विचार था कि राज्य काम की सहायता करना केवल राज्य काम मन्त्रालय का ही कार्य था। और उन्होंने न तो किसी बात पर ध्यान दिया और न ही किसी प्रकार की सहायता दी।

“राज्य काम के लोग काफ़ी कठिनाई महसूस कर रहे थे। बड़ी गड़बड़ थी। स्थानीय स्टोर को डबल रोटी व अन्य साध-सामग्री की मर्यादा भी अनियमित रूप से प्राप्त होती थी तथा दूसरे सामान का भी अभाव था। यद्यपि, ऐसा कि मुझे मालूम पड़ा थोक सप्लाय डिपो में सब कुछ मौजूद था। जिला पार्टी समिति के सचिव ने जब यह देखा तो उन्होंने तुरन्त ही अपनी मर्यादा की व्यवस्था किया। काम पर रातों-रात एक बेकरी खोल दी गयी, दो दुकानें साध-सामग्री और उपभोक्ता सामग्री लायी गयी। संक्षेप में सब कुछ ठीक-ठाक हो गया।”

कजाखस्तान में अपने कार्य के पहले चरण में ही कैबिनेट ने सर्वोच्च जनतंत्र में गेहूँ, मूरजमुखी तथा दूसरी फसलों की पैदावार बढ़ाने के उपाय साध तथा पशुपालन कार्य को प्रोत्साहित किया। उन्होंने विद्वानों से इन उपायों का अनुभव का अध्ययन करने के लिए अनुरोध किया। अपने अन्तर्गत के जनतंत्र सोवियत संघ के जनगण के बीच मित्रता के बन्धन बंधे हुए, जो एक-दूसरे अपने परस्पर सहायता व भ्रातृत्वपूर्ण समर्थन में एक-दूसरे का सर्वोत्तम करती थी।

भिन्न जातीयताओं के लोगों द्वारा किये गये ऐसे सर्वोत्तम कार्य व नीतियाँ कजाखस्तान में स्पष्ट नजर आ रहे थे जहाँ जहाँ एक, दो, हजार एक सोवियत संघ के दूसरे जनतंत्रों के रूप में विदेशों बहुत-बहुत ऐसे कार्य देखे जायें। योजना पर उनके कार्य-प्रणालियों में आनिन हुए थे।

ये परिचोयना अन्तर्राष्ट्रीयतावादी विद्या का स्वरूप, जिसमें एक-दूसरे के प्रतिक्षणका स्तुति, शब्द के सुन्दर एवं में व्यावहारिक उपयोग का स्वरूप है। बहुत-बहुत तथा बरबस धूमि परिचोयना की 25वीं वर्षगांठ के अवसर पर एक-दूसरे में बोलने के कहे, “इस परिचोयना में अनेक व्यक्तियों का योगदान था” तथा दिया है। बोनिनी और संकरी इंटर कन्ट्रि। इसका स्वरूप

तथा मेमार राज्य क्रान्तों के प्रबन्धक, अग्रणी विशेषज्ञ, पार्टी व सरकार के कार्यकारी बन चुके हैं। जब हम यह कहते हैं कि अकृष्ट घरती विकास परियोजना ने लोगों को उच्चतर स्तर पर समुन्नत बनाया है तो हमारा अर्थ केवल उनकी पदोन्नतियों के रिकार्ड से ही नहीं है। मानवीय उपलब्धियों की दृष्टि से महत्वपूर्ण और उदात्त एक अन्य प्रकार की प्रगति भी हुई है। मेरा तात्पर्य उनकी बौद्धिक उन्नति, उनकी दक्षता में सुधार तथा उनके द्वारा नैतिक परिपक्वता अर्जित करने से है।"

कठिनाइयों के बावजूद निर्धारित लक्ष्यों से अधिक भूमि की जुताई की गयी। कजाख़स्तान में 1955 के अन्त तक 4 करोड़ 50 लाख एकड़ अकृष्ट घरती को कृषि-योग्य बनाया गया। इसके परिणामस्वरूप जनतंत्र में फसल क्षेत्र बढ़कर 6,75,00,000 एकड़—अर्थात् 1953 की अपेक्षा तीन गुना अधिक—हो गया। अकेले 1954 में जनतंत्र ने देश को पिछले वर्ष पहले की अपेक्षा 16 लाख टन अधिक ग़ल्ला सप्लाई किया।

जनवरी 1956 में कजाख़स्तान की कम्युनिस्ट पार्टी की आठवीं कांग्रेस में तथा बाद में सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की 20वीं कांग्रेस में ब्रेज्नेव ने उक्त रिपोर्ट दी। कजाख़स्तान की सफलता सम्पूर्ण देश को उपलब्धि थी—इसका अर्थ था कि पार्टी और सरकार द्वारा देश को पर्याप्त मात्रा में ग़ल्ला उपलब्ध कराने के निर्धारित कार्य को सफलतापूर्वक अर्जित किया जा रहा था।

इतिहास ने उस समय अभूतपूर्व मानव उपलब्धि अंकित की जब सोवियत जनता ने अकृष्ट घरती की जुताई के संपर्क में विजय प्राप्त की। पहले के इस बंजर क्षेत्र पर सैकड़ों राज्य क्रान्तों आधुनिक औद्योगिक उद्यमों व शोध केन्द्रों का आविर्भाव हुआ।

ब्रेज्नेव ने कजाख़स्तान के औद्योगिक विकास में पर्याप्त अंशदान किया। अगस्त 1955 में उन्होंने जनतंत्र की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के पूर्णाधिवेशन में एक विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिसमें उद्योग के प्रबन्ध में सुधार तथा प्रविधि के उन्नयन के साथ-साथ उत्पादन में वैज्ञानिक व प्राविधिक सफलघियों के व्यवहार, विशेषीकरण, और सहयोग की समस्याओं पर चर्चा की गयी।

इसके परिणामस्वरूप छठे दशक के उत्तरार्द्ध में कजाख़स्तान ने तबि, जस्ते और सीसे के राष्ट्रीय उत्पादन के आधे से अधिक का उत्पादन किया। बिजली उत्पादन में चारकालीन समय की तुलना में कई गुना वृद्धि हुई। कारागान्दा, याल्काश, तेमिर-ताऊ, उस्त-कामेनोगोर्स्क तथा दूसरे औद्योगिक केन्द्रों का तेजी से विकास हुआ।

देश के पूरब में नये विनाश गल्ता उत्पादक क्षेत्र का विकास ही नहीं किया गया बल्कि एक विस्तृत क्षेत्र के अर्धतंत्र और उसके सम्पूर्ण स्वरूप का ही रूपान्तरण किया गया।

ब्रेज्नेव ने पूर्ण भोचिरय के साथ 1976 में कहा, "आज कजाख़स्तान सोवियत संघ के मुख्य गल्ता उत्पादक तथा विनाशतम पशुपालन क्षेत्रों में है। आज कजाख़स्तान में अत्याधुनिक औद्योगिक समय है, जो देश की आर्थिक प्रगति में महान अगदान कर रहे हैं। कजाख़स्तान में हजारों वैज्ञानिक व मास्त्रुतिक-कर्मों हैं जिनकी कला ने समस्त सोवियत जन की सर्वथा उच्च मान्यता अर्जित की है।"

इस अकृष्ट घरेली वाले क्षेत्र के तीव्र विकास का महान श्रेय ब्रेज्नेव का है जो बीस वर्षों से कुछ ही अधिक समय पहले तक मानव-वर्ण अछूता अनन्त विस्तृत क्षेत्र था।

4. देश के अग्रणी निकायों में कार्य

फ़रवरी 1956 में बीसवीं पार्टी कांग्रेस ने ब्रेज्नेव को सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति में पुनः निर्वाचित किया। केन्द्रीय समिति के पूर्णाधिवेशन ने उन्हें अध्यक्षमंडल का वैकल्पिक सदस्य और केन्द्रीय समिति का सचिव चुना। इसके साथ ही 1958 के शुरू में वे इसी सोवियत सप्ताहिक समाजवादी जनतंत्र के लिए केन्द्रीय समिति के ब्यूरो के उपाध्यक्ष में। जून 1957 से वे केन्द्रीय समिति के अध्यक्षमंडल के सदस्य बने आ रहे हैं जो केन्द्रीय समिति के पूर्णाधिवेशनों के बीच की अवधि में सर्वोच्च पार्टी निकाय हैं (बाद में 1966 में केन्द्रीय समिति के अध्यक्षमंडल का नाम बदलकर केन्द्रीय समिति का पोलिट-ब्यूरो कर दिया गया जैसा कि लेनिन के जीवनकाल में इसे कहा जाता था)।

इन वर्षों पर रहने हुए ब्रेज्नेव ने कारखानों व सामूहिक क्रामों का दौरा करते हुए सम्पूर्ण देश की यात्रा की। वे बैसे ही ब्रेज्नेव बने रहे: सीधे-सादे, बिभारलील और अनयक। मिसाल के तौर पर दूरबर्ती साइबेरिया में ओम्स्क स्थित कारखाने में उन्होंने राते में जाकर राता प्रबन्धकों व मजदूरों से बातचीत की और उनके रहन-सहन की परिस्थितियों के बारे में पूछताछ की।

एक राज्य पशुसंवर्द्धन क्राम का निरीक्षण करते हुए उन्होंने इसकी मुश्किलों पर गौर किया तथा बछड़ों की देखभाल करने वाले बिगेपत्रो, दुग्धजाना-कर्मियों और महिलाओं से उनकी आवश्यकताओं व भावनाओं के बारे में पूछताछ करते हुए उनसे बातचीत की। ओम्स्क के निकट चापादेव सामूहिक क्राम पर

उन्होंने फार्म बोर्ड के अध्यक्ष और सदस्यों से मुलाकात की तथा फार्म के पुस्तकालय और क्लब देखे। उन्होंने पार्टी के निर्णयों से सम्बन्धित लोगों के विचारों पर ध्यान दिया और बदले में पार्टी की नीतियों की व्याख्या की और उनको तत्काल सहायता भी दी। वे मजदूरों, किसानों तथा मेहनतकश बुद्धिजीवियों के जीवन, विचारों तथा आकांक्षाओं से पूरी तरह परिचित थे।

केन्द्रीय समिति ने ब्रेजनेव को भारी उद्योग के विकास और महत्वपूर्ण निर्माण, मजसूमेनाओं को नवीनतम हथियारों से सज्जित करने तथा अन्तरिक्ष अनुसंधान के उन्नयन में सम्बन्धित समस्याओं का कार्य सौंपा। उन्होंने बाह्य अन्तरिक्ष में प्रथम ममानव उड़ान की तैयारियों का व्यक्तिगत रूप से मार्गदर्शन और नियंत्रण किया। 'वोस्तोक' अन्तरिक्षयान में विश्व के प्रथम अन्तरिक्ष यात्री यूरी गागारिन के सफल मिशन के बाद ब्रेजनेव को रॉकेट विज्ञान के विकास में उनके असाधारण अंशदान के लिए तथा एक सोवियत नागरिक द्वारा सम्पन्न अन्तरिक्ष उड़ान की सफलता को सुनिश्चित बनाने के लिए 'समाजवादी श्रमवीर' पदवी से विभूषित किया गया।

अन्तरिक्ष अनुसंधान का उल्लेख करते हुए, ब्रेजनेव इस बात पर बल देते हैं कि यह मानवजाति की भावी विशाल उपलब्धियों का मार्ग ही प्रशस्त नहीं करता, जिसके फलों का इस्तेमाल आगामी पीढ़ी द्वारा किया जायेगा, बल्कि इससे सम्पूर्ण विश्व के लिए, सोवियत जनता के लिए तथा कम्युनिज्म के निर्माण के लिए लाभ का मार्ग प्रशस्त होता है। वे अक्सर ही दोहराते हैं कि बाह्य अन्तरिक्ष के विकास को प्रगति, शांति तथा विश्व के समस्त जनगण की खुशहाली का हितसाधक बनना चाहिए और इसे विनाश व युद्ध का साधन नहीं बनना चाहिए।

पूर्ववत् उन्होंने अकृष्ट भूमि के विकास की परियोजना पर काफ़ी ध्यान दिया। "मुझे कामरेड ब्रेजनेव की अगस्त 1957 की तोल्युस्किन राज्य फार्म की यात्रा का पूरी तरह स्मरण है जब वे सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के सचिव थे," अकृष्ट भूमि विकास परियोजना के पुराने कर्मियों योदोर मोरगुन ने बताया। "लगभग पूरे सप्ताह से तेज बारिश पड़ रही थी और सड़कों पर पानी भर गया था। जिला अधिकारियों को यह आशा थी कि उनका विमान जिला केन्द्र में उतरेगा और उन्होंने राज्य फार्म से अपनी दो कारें वहाँ भेजने को कहा। मैं उनकी प्रतीक्षा करने के लिए फार्म कार्यालय में ही रुक गया।

"सुबह को लगभग 9 बजे मुझे विमान की गड़गड़ाहट सुनायी दी। मैं निकलकर बाहर आया और देखा कि विमान उतरने की तैयारी कर रहा था। उनमें

एक चक्कर लगाया और उस स्थान के निकट मकुगल उतर गया, जहाँ हम गावों के लिए एक शेड का निर्माण कर रहे थे। विमान ने मोड़ लिया और करीब-करीब ऑक्सिजन भवन के पास आकर रुक गया।

“दरवाजा खुला और लियोनिद ब्रेजनेव तथा कबागुस्तान के नेतागण विमान से बाहर निकले।

“राज्य कामें के करीब-करीब सभी कर्मों अतिमियों में मिलने के लिए दोड़ पड़े और वहाँ विमान के ठीक पास ही कामें के कामें और हमारे जीवन के बारे में सत्रीय वार्तालाप शुरू हो गया। ब्रेजनेव ने कहा कि मैं ग्रस्ते के पके घेत देखना चाहूँगा।

“मैंने कहा ‘हमें थोड़ी प्रतीक्षा करनी होगी। हमारी वारें जिना बन्द गयी हैं। वे जल्दी ही तोड़ आवेगी।’

“‘हम इस ट्रक को ले जा सकते हैं; कारें बाद में वहाँ पहुँच जायेंगी।’ उन्होंने ममीनों की मरम्मत करने वाले ट्रक की दिशा में अपना हाथ हिलाते हुए उत्तर दिया जा अभी-अभी वहाँ में आया था। इस याहन का कर्मोदल, जिसमें एक चालक और मिस्त्री शामिल थे, कामें ममीनरी को गेता पर ही ठीक किया करते थे। मैंने ब्रेजनेव, जिन्होंने ट्रक की ओर चलना शुरू कर दिया था, तथा दूसरे अतिमियों से कारों की प्रतीक्षा करने का अनुरोध किया क्योंकि यह ट्रक ओडार और अतिरिक्त पुर्जों से लदा हुआ था।

“सोभाग्यवश, उसी समय सड़क के मोड़ से अपने पहियों से कीचड़ उछालते हुए कई जीपें आती हुई दिखायी दीं। हम जीपों पर सवार हुए और गेता की ओर रवाना हो गये।

“सड़ी क्रसलें सीधी और साफ थी, लेकिन यह कद में थोड़ी छोटी थी और बालियाँ भी ज्यादा भारी नहीं थी। उस बर्ष क्रसल कम पैदा हुई थी। हमारा कामें भी मूँखे से प्रभावित हुआ था। हमने करीब-करीब सभी फील्ड टोतियों से मुलाकात की और अधिकांश क्रसल का निरीक्षण किया। उस स्थान का गल्ला शेष से अच्छा था, जहाँ दो नम्बर की टोली ने काम किया। खेतों पर नजर दोड़ते हुए ब्रेजनेव ने पूछा, ‘क्या आप यहाँ पाँत-कटाई का इस्तेमाल करेंगे या सीधी कटाई?’

“‘हमने अभी तक इस बात का फैसला नहीं किया’, मैंने उत्तर दिया। ‘फसल छोटी है और झाड़-मकार बिल्कुल नहीं है इसलिए यह अलग-अलग सही है। यदि आप पतली होंगी और वे जमीन पर गिर सकती हैं। लेकिन हम पाँत-कटाई के लिए भी तैयार हैं।’

‘‘जो आप ठीक समझें करिये। मुख्य बात है नुकसान होने से बचना’, ब्रेजनेव

ने उत्तर दिया।

“वे अपनी कार पर लौटे और हम आगे बढ़ गये। तथा ईवान, सुरकोव के नेतृत्व में तीमरी टोली के जुवार के खेतों पर रुके। उस वर्ष जुवार की फसल बड़ी अच्छी थी और इसकी कटाई की जा रही थी। जुवार की पूलियाँ छोटी-बड़ी कतारों में रखी हुई थी। ब्रेजनेव चलकर वहाँ तक पहुँचे और उन्होंने एक भारी बाल उठाकर उसे सावधानीपूर्वक देखा, उसे अपनी उँगलियों के बीच रगड़कर कहा, ‘यहाँ अकृष्ट धरती में इस फसल की ओर गंभीर ध्यान देने की जरूरत है। इसकी उपज-क्षमता गेहूँ से कम नहीं है। सूखे के इस वर्ष में ये जुवार दूसरे गल्ले की फसलों से कहीं अच्छी दिखायी पड़ती है। इन अकृष्ट खेतों से आपको कितनी पैदावार होने की आशा है?’

“‘15 से 20 सेंटर प्रति हेक्टेयर जबकि गेहूँ की फसल मुश्किल से 8 सेंटर प्रति हेक्टेयर ही मिलेगी।’

“‘आपने जुवार की बुवाई कर अच्छा काम किया और आपको भविष्य में इसे काफी मात्रा में बोना चाहिए’, केन्द्रीय समिति के सचिव ने कहा, ‘जुवार के बिना हम देश की साथ समस्या को हल नहीं कर सकते।’

“केन्द्रीय परिसर में वापस लौटने पर अतिथियों ने वहाँ बनाये जा रहे मकानों को देखा और नये घरों में स्थानान्तरित व्यक्तियों के साथ बातचीत की। मैंने अतिथियों को भोजन के लिए अपने घर आमंत्रित किया। जिस समय हम खेतों का निरीक्षण कर रहे थे मेरी पत्नी अलेक्सान्द्रा ने बोंश और कटलेट बना लिये। अतिथियों ने पेट भरकर भोजन किया। भोजन के बाद ब्रेजनेव ने आलमारी से कुछ किताबें निकालीं, उनके पृष्ठ पलटे, ध्यानपूर्वक मेरे साधारण से पुस्तकालय को देखा और अपने सहायक विक्टर गोलिकोव से कुछ कहा। उसके बाद वे मेरी पत्नी से विदा लेकर चले गये। चंद कबूतर मेरे दरवाजे के बाहर फर-फर उड़ रहे थे।

“‘ये कितने कबूतर हैं?’

“मैंने अपने नौ वर्षीय पुत्र व्लादीमिर की ओर इशारा किया।

“‘जब मैं किशोर था मैं भी कबूतर पालता था’, ब्रेजनेव ने मुस्कराते हुए कहा। ‘मेरे यहाँ भी कबूतरों का एक शौकीन है—मेरा बेटा। लेकिन वह आपके बेटे से उम्र में थोड़ा बड़ा है। जब कभी मुझे नया काम मिलता है और दूसरे स्थान पर जाना होता है तो हम कबूतरों को भी अपने साथ ले जाते हैं। हमारे मोल्दावियाई कबूतर अल्मा-अता जा चुके हैं और अब वे मास्को में हैं।’

“बिमान की ओर लौटते समय ब्रेजनेव ने अपने बेटे के कबूतरों से सम्बन्धित

कुछ रोचक प्रसंग सुनाये। विमान के पास दृढ़ कर अतिथियों ने बिदा करने जाये हम सभी व्यक्तिगत के प्रति जो उन्हें कार्य में सफलता और अच्छे स्वास्थ्य की कामना व्यक्त करने के लिए आए थे बिदाई के हार्दिक उद्गार प्रकट किए और विमान द्वारा कोकंबेताब के लिए रवाना हो गये।

“बद सप्ताह बाद मुझे सोवियत सभ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के द्विर्षच कार्यालय से दिसचस्य, नयी पुस्तकों का एक बड़ा-सा पासेल मिला। ये हमारे परिवार के लिए लियोनिद ब्रेज्नेव की ओर से उपहार था।”

सोवियत सभ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के सचिव के रूप में लियोनिद ब्रेज्नेव अपने कार्य के चार वर्षों में सपूर्ण देश में व्यापक रूप से प्रसिद्ध हो गये। उनका कक्ष ऐमा मुख्यालय था जहाँ भारी उद्योग और पूंजीगत निर्माण सहित सोवियत अर्थतंत्र के विकास से सम्बन्धित समस्याओं को हल किया जाता था। उनका नाम अर्थतंत्र में ठोस उपलब्धियों तथा अतिरिक्त अनुसंधान में अभूत-पूर्व उपलब्धियों के साथ अविच्छिन्न रूप से जुड़ा था। अनेक प्रमुख विदेशी हस्तियाँ और राजनेता, जिनके साथ उन्होंने व्यक्तिगत रूप से उनको सोवियत सभ की यात्राओं के दौरान या अपने विदेश यात्राओं के दौरान मुलाकातें की, उनसे भलीभाँति परिचित हुए।

1959 के घीष्म में लियोनिद ब्रेज्नेव तथा दूसरे सोवियत नेताओं ने मास्को में अमरीकी प्रदर्शनो देली जिसने अमरीका में जीवन के कतिपय पहलुओं और उपलब्धियों को प्रदर्शित किया।

मई 1960 में सोवियत सभ की सर्वोच्च सोवियत ने लियोनिद ब्रेज्नेव को अपने अध्यक्षमण्डल का अध्यक्ष चुना, जो देश का एक अत्यन्त विशिष्ट और उत्तरदायित्वपूर्ण पद है।

सर्वोच्च सोवियत राज्य सत्ता का सर्वोच्च निकाय है। इसका अध्यक्षमण्डल अपनी समस्त गतिविधियों के लिए सर्वोच्च सोवियत के समस्त उत्तरदायी है और यह महत्वपूर्ण राज्य गतिविधियाँ सम्पन्न करता है। अन्य बातों के अलावा यह अध्यादेश जारी करता है, सोवियत सभ के कानूनों की व्याख्या करता है, सोवियत सभ की मन्त्रिपरिषद् तथा सभ जनतंत्रों की मन्त्रिपरिषदों के निर्णयों व कानूनों को, कानून के अनुरूप न होने की वजह से, निरस्त करता है, क्षमा का अधिकार व्यवहार में लाता है, सोवियत सशस्त्र सेनाओं की उच्च कमान की नियुक्ति व उनको पदमुक्त करता है। सोवियत सभ की सर्वोच्च सोवियत के अधिष्ठाता के दौरान की अवधि में अध्यक्षमण्डल को युद्ध की घोषणा करने का, सन्तान-आगत सामरदी घोषित करने का अधिकार है। यह सोवियत सभ का अधिकार है।

धरित अन्तर्राष्ट्रीय समझौतों की पुष्टि करती है। सोवियत राजदूतों को नियुक्त करती है और वापस बुलाती है, परिचय-पत्र प्राप्त करती है तथा अन्य कार्य निष्पादित करती है।

लियोनिद ब्रेज्नेव सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमंडल के अध्यक्ष पद पर चार वर्ष तक आसीन रहे। इस अवधि में सर्वोच्च सोवियत ने उद्योग व निर्माण के प्रबन्ध में सुधार, राज्य-पंशनों में वृद्धि, औद्योगिक व ऑफिस-कर्मियों के वेतन पर लागू कतिपय करों का उन्मूलन तथा सभी औद्योगिक व ऑफिस कर्मियों के सात और छह घंटे के कार्य-दिवस में पूरी तरह स्थानांतरित करने के लक्ष्य से सरकार द्वारा प्रस्तुत कानूनों की जांच की और इनको स्वीकृति प्रदान की। इसने सार्वजनिक शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास व आवश्यक सेवाओं, व्यापार, सार्वजनिक भोजनालय तथा सेवा उद्योग की दूसरी शाखाओं के कर्मियों के वेतन में वृद्धि विषयक कानून सहित सोवियत मेहनतकश जन के हितों में दूसरे कानूनों को भी स्वीकृति प्रदान की।

सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमंडल के अध्यक्ष के उच्च पद पर आसीन रहते हुए लियोनिद ब्रेज्नेव ने समाजवादी जनवाद का संवर्द्धन करने के लिए, कानून का शासन सुनिश्चित बनाने के लिए तथा राज्यतंत्र को पूर्णत्व प्रदान करने के लिए व्यापक रूप से कार्य किया।

उन्होंने मेहनतकश जन के डिपुटियों की सोवियतों के कार्य में सुधार करने के प्रति काफ़ी ध्यान दिया और इस बात पर जोर दिया कि अपने निर्वाचकों के पास जाकर अपने कार्य के बारे में नियमित रूप से उन्हें अवगत कराना, इस प्रकार अपने कार्य को सार्वजनिक रूप प्रदान करना तथा सार्वजनिक मामलों के प्रत्यक्ष प्रशासन में मेहनतकश जनसाधारण को शामिल करना, छामियों की आलोचना करना तथा लालफीताशाही से मुकाबला करना उनके लिए महत्वपूर्ण था।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति ने अक्तूबर 1964 में आयोजित अपने पूर्णाधिवेशन में एन० एम० ख्रुश्चेव को उनके पद से मुक्त कर दिया और एन० आई० ब्रेज्नेव को केन्द्रीय समिति का प्रथम सचिव चुना।

5. पार्टी के साथ तथा इसके शीर्ष नेता

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के प्रथम सचिव के पद पर लियोनिद ब्रेज्नेव का चुनाव समाजवादी जनवाद के सारतत्त्व तथा सोवियत संघ के राजनीतिक व सामाजिक विकास के अनुरूप था, जो जनता के बीच से राजनीतिक, आर्थिक व राज्य प्रशासन में विस्तृत और विविधतापूर्ण अनुभव से

सम्पन्न अमाधारण संगठनकर्त्ताओं को पार्टी के अपनी पदों पर ताने के लिए परिस्थितियों का मूजन करता है।

1964 के वर्ष ने वेंडनेव के जीवन में आमूल रूप में नये चरण की गुरुभाव की। पिछले समय में उन्हें महत्वपूर्ण मामलों में निपटना पड़ा, कठिनाइयों में जूझना पड़ा तथा उत्तरदायित्व का भारी भार वहन करना पड़ा। लेकिन अब समस्याएँ, कठिनाइयाँ और उत्तरदायित्व कहीं अधिक बढ़ गये थे क्योंकि उन्हें राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय महत्व के निर्णय लेने पड़ने थे।

पार्टी को उन समस्याओं के क्षेत्र का स्पष्ट विवरण प्राप्त करने के दृष्टि से, जिनके साथ लियोनिद वेंडनेव अब सम्बन्धित हैं, जनता के जीवन में कम्युनिस्ट पार्टी के स्थान पर दृष्टिपात करना आवश्यक है। उनकी यह बात उचित ही है कि महामांसिक के रूप में उनकी गतिविधियों की प्रवृत्ति की व्याख्या सर्वोपरि उस भूमिका द्वारा होती है जिसे कम्युनिस्ट पार्टी देश में निभाती है।

पार्टी सोवियत मप में विकसित समाजवादी समाज के निरन्तर सुधार तथा कम्युनिज्म के निर्माण के लिए अपनी और मार्गदर्शक शक्ति है।

सोवियत मप की कम्युनिस्ट पार्टी शक्तिशाली और गतिशील संगठन है। यह वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा जनता की आवश्यकताओं के गोत्रपूर्ण परीक्षण के आधार पर अपनी नीति का निरूपण करती है। यह समाज के सभी वर्गों तथा समस्त जातीयताओं को संगठित करती है तथा जनता में कम्युनिस्ट आदर्शों के लिए दृढ़ सकल्प, तत्परता और सफल करने की योग्यता उत्पन्न करती है।

लियोनिद वेंडनेव ने कहा है, "जहाँ तक मैं जानता हूँ पश्चिम जगत् में अनेक व्यक्तियों को हमारी राजनीतिक व्यवस्था के बारे में स्पष्ट रूप से जानकारी नहीं है। प्रातिपूर्ण दृष्टिकोण व्यक्त किये जाते हैं। मिसाल के तौर पर यह दावा किया जाता है कि पार्टी राज्य व सामाजिक दोनों ही प्रकार के अन्य संगठनों का भी काम करती है। लेकिन यह गलत है।"

वेंडनेव स्पष्ट करते हैं कि सोवियत राज्य निकायों—सोवियत मप की सर्वोच्च सोवियत, सोवियत मप की मंत्रिपरिषद तथा सत्ता के स्थानीय निकाय—के अधिकार क्षेत्र की मविधान में स्पष्ट रूप से व्याख्या की गयी है। ये निकाय कानून बनाते हैं तथा उनका पालन किये जाने पर ध्यान देते हैं, आर्थिक निकायों के कार्य संचालन को सुनिश्चित बनाते हैं तथा विज्ञान, मस्कृति, सांस्कृतिक मिथा, स्वास्थ्य-रक्षा इत्यादि का उन्नयन करते हैं। सामाजिक संगठनों का गतिविधियों का अपना क्षेत्र है - दृढ़ युनियनों सर्वोपरि मेहनतकश जनता के हितों की रक्षा के प्रति तथा उनके कार्य और विधाय का आयोजन करने से सम्बन्धित है। कोम्सो-

मान का कर्तव्य युवा पीढ़ी को समाजवादी नीतियों के अनुरूप शिक्षित करना है। नियोनिद ब्रेजनेव वनपूर्वक कहते हैं कि लेकिन, पार्टी ही सोवियत जनता की सम्पूर्ण उपनिधियों की एकमात्र प्रेरक और राजनीतिक संगठनकर्ता है।

सम्पूर्ण समाज के विकास का मार्गदर्शन करते हुए पार्टी राज्य व सामाजिक संगठनों का ध्यान नहीं ले लेती। इसके विपरीत यह इनको अधिकतम कार्य-कुशलता के साथ कार्य करने तथा अपने कार्यों के प्रति पूर्ण उत्तरदायित्व ग्रहण करने के लिए प्रोत्साहित करती है। पार्टी आदेश नहीं देती बल्कि अपनी व्यापक प्रतिष्ठा और अनुभव तथा जनसाधारण के समर्थन पर निर्भर करते हुए प्रेरक साधनों का इस्तेमाल करती है। ब्रेजनेव ने इंगित किया है कि पार्टी राज्य संगठनों की गतिविधियों के चहुँमुखी विकास के उन्नयन के लिए प्रयास करती है तथा हर संभव ढंग से उनकी पहल को प्रोत्साहित करती है।

युद्धोत्तर वर्षों में सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्यता में क़रीब तिगुनी वृद्धि हुई है और आज इसके सदस्यों की संख्या एक करोड़ साठ लाख से अधिक है। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि आवेदनकर्ताओं को अंधाधुंध प्रवेश दे दिया जाता है। पार्टी का सदस्य बनना महान सम्मान है, ऐसा सम्मान जिस अर्जित करना पड़ता है। मेहनतकश वर्ग, सामूहिक किसानों तथा बुद्धिजीवियों के अत्यधिक विकसित वर्गों का गठन करने वाले व्यक्तियों को ही इसकी पातों में प्रवेश दिया जाता है।

जहाँ तक इसकी संरचना का सम्बन्ध है, सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी सर्वोपरि मजदूरों की पार्टी है, जिनका, जैसा कि 25वीं कांग्रेस में बताया गया, इसके सदस्यों में 41.6 प्रतिशत भाग है। जनता के दूसरे वर्गों के प्रतिनिधियों का प्रतिशत निम्न प्रकार है : सामूहिक किसान 13.9; तकनीकी बुद्धिजीवी—लगभग 20; वैज्ञानिक, साहित्यिक व कलाकर्म तथा सार्वजनिक शिक्षा, स्वास्थ्य रक्षा, प्रशासकीय कार्यन्त, तथा सेना में कार्यरत व्यक्ति 24 प्रतिशत से अधिक।

कम्युनिस्ट पार्टी मुख्यवस्थित और अच्छे ढंग से कार्य करने वाला संगठन है। 15 जनतंत्रों तथा 154 प्रदेशों व क्षेत्रों में 3,90,000 से अधिक पार्टी के प्राथमिक संगठन तथा नगरों व जिलों में 4,243 संगठन हैं।

पार्टी की केन्द्रीय समिति, सचिवालय, पोलिट ब्यूरो और महासचिव इसकी सम्पूर्ण गतिविधियों का मार्गदर्शन करते हैं। केन्द्रीय समिति के नियमित पूर्णाधिवेशन (1971 से 1976 के गुरु की अवधि में अर्थात् 24वीं और 25वीं पार्टी कांग्रेस के बीच ऐसे 11 अधिवेशन हुए) सोवित समाज और राज्य के चहुँमुखी विकास के अत्यन्त महत्वपूर्ण और तात्कालिक प्रश्नों के साथ-साथ घरेलू और

विदेश नीति विषयक प्रश्नों की पड़ताल करने है। केन्द्रीय समिति अपने पूर्वाधि-
वेगनों के बीच पार्टी के कार्य का मार्गदर्शन करने के लिए पोलिट ब्यूरो का तथा
सम-सामयिक मामलों का मार्गदर्शन करने के लिए सचिवालय का चुनाव करती
है।

केन्द्रीय समिति के महामन्त्रि पर भारी उत्तरदायित्व होता है, जो सामूहिक
रूप में लिए गये सभी निर्णयों को कार्यान्वित करने की दिशा में मार्गदर्शन और
पार्टी-नव की गतिविधियों को समायोजित करता है। वह केन्द्रीय समिति और
पोलिट ब्यूरो में प्रमुख भूमिका निभाता है।

लियोनिद ब्रेजनेव ने कहा है, "उन प्रश्नों का क्षेत्र, जिन पर पोलिट ब्यूरो तथा
महामन्त्रि के रूप में मैं स्वयं विचार करते हैं, उन मामलों में पर्याप्त रूप से व्या-
पकृत है जिन पर पश्चिमी जगत् नेताओं द्वारा विचार-विमर्श किया जाता है।"
हम व्यावहारिक रूप में मानव गतिविधि के सभी क्षेत्रों को, अर्थात् विस्तृत देश में
होने वाली प्रत्येक घटना को अपने दृष्टि क्षेत्र में रखते हैं। पार्टी व समाज की
सैद्धान्तिक गतिविधियाँ, आर्थिक व सामाजिक समस्याएँ और समाजवादी
जनवाद का विकास हममें शामिल है। प्रत्येक बात की सूची बनाता असम्भव है।
अन्तर्राष्ट्रीय मामलों के लिए भी भारी प्रयासों की जरूरत होती है।"

1977 के संविधान में सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की भूमिका के बारे
में लिखी गयी बातों में महामन्त्रि की गतिविधियों के क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाले
प्रश्नों के वास्तविक व्यापक क्षेत्र का पता लग सकता है।

सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के 4 अक्टूबर, 1977 को प्रारूप
संविधान पर विचार-विमर्श करने के लिए आयोजित अनाधारण अधिवेशन को
सम्बोधित करते हुए, लियोनिद ब्रेजनेव ने कहा था :

"बुजुबा विस्नेपकों में से अधिकांश ने सोवियत समाज के जीवन में सोवियत
संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की भूमिका की व्याख्या करने वाली व्यवस्थाओं की
आलोचना भी की है। उन्होंने तयकर्मित 'कम्युनिस्ट पार्टी के अधिनायकत्व
की घोषणा', 'राज्य पर पार्टी की सर्वोच्चता', 'पार्टी व सरकारी संस्था के छठर-
नाक, एकीकरण' 'पार्टी व राज्य के बीच मीमांसा के अभिसोपन' के बारे में बहुत
कुछ कहा-लिखा है।

"इन बातों के प्रति क्या रुख अपनाया जाये ? इस प्रहार के उद्देश्य पर्याप्त रूप
से स्पष्ट है। कम्युनिस्ट पार्टी सोवियत जनता का हराबल, उनका अत्यधिक
जागरूक व प्रगतिशील बने है जो सर्वोच्च जनता के साथ अभिविष्ट रूप से जुड़ा
है। पार्टी का जनता के हितों के अलावा अन्य कोई हित नहीं है। लोगों को 'पार्टी

के अधिनायकत्व' के बारे में बतलाते हुए पार्टी के विरुद्ध खड़ा करने का प्रयास, कहना होगा, हृदय को पूरे शरीर से अलग करने के प्रयास के बराबर है।"

ब्रेज्नेव ने कहा, "...जैसे-जैसे सोवियत जन कम्युनिज्म-निर्माण के अधिकाधिक जटिल और उत्तरदायी कार्यों को हल करते जायेंगे कम्युनिस्ट पार्टी को सर्वोच्च भूमिका निभानी होगी। इस से हमारी पार्टी के कार्यक्रम के पूर्ण तथा अनुकूल समाजवादी जनवाद के विकास का मार्ग उन्मुख होता है, सीमित नहीं।"

सोवियत समाज के विकास में नया चरण

जैसा कि हमें मालूम ही है, लियोनिद ब्रेज्नेव ने महासचिव के रूप में समाजवादी जनवाद के विकास के उन्नयन को हमेशा ही अपना प्रमुख कर्तव्य समझा है। उन्होंने सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की 25वीं कांग्रेस में अपनी रिपोर्ट में कहा :

"समाजवाद गतिशील रूप से विकसित होता समाज है...और जो कुछ भी अब तक अज्ञित हो चुका है उसका लेखा-जोखा करने का समय आ गया है।" "जो कुछ भी अब तक अज्ञित हो चुका है उसका लेखा-जोखा करने का समय आ गया है" शब्दों का अर्थ यह है कि विकसित समाजवादी जनवाद का और अधिक विस्तार करना तथा जनता के अधिकारों का विस्तार करना आवश्यक है। यही कारण था कि सोवियत संघ के नये संविधान का चर्चा करते हुए, जिसका प्रारूप तैयार किया जा रहा था, उन्होंने बताया कि "समाजवादी जनवाद का और अधिक गहनीकरण व विकास इसकी बुनियादी विशिष्टताओं में से एक है।"

लियोनिद ब्रेज्नेव संविधान आयोग के प्रमुख बने जितने प्रत्येक समस्या को ठोस रूप से देखते हुए विवेकपूर्ण एवं विचारपूर्ण ढंग से कार्य किया। अन्ततः, मई 1977 में नये संविधान का प्रारूप पूरा हो गया। यह लोगों के विशाल समूह द्वारा किये गये अनेक वर्षों के गहन कार्य का परिणाम था। सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत द्वारा गठित संविधान आयोग ने पार्टी व सरकारी कर्मों तथा मेहनतकरा वर्ग, सामूहिक किसानों, जनता के बुद्धिजीवियों तथा देश के अत्यन्त जनगण के प्रतिनिधि शामिल थे। प्रख्यात वैज्ञानिकों, विशेषज्ञों तथा राज्य-निकायों व सार्वजनिक तथा सामाजिक संगठनों में काम करने वाले पुरुषों व महिलाओं ने प्रारूप की तैयारी में भाग लिया। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के पूर्वाधिवेशन में तथा उसके बाद सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के अधिवेशन में इसकी जांच की गयी। इसके बाद इसे समाचार-पत्रों में प्रकाशित किया गया और प्रारूप पर देशव्यापी विचार-विमर्श शुरू हुआ।

सविधान के प्राप्ति पर लगभग चार महीने की अवधि तक विचार-विमर्श चला और यह मंच के मंचे भाव में राष्ट्रव्यापी था। कुल मिलाकर इसमें 14 करोड़ में अधिक पुरुषों व महिलाओं ने—अर्थात् देश की वयस्क जनसंख्या के 80 प्रतिशत ने अधिक ने—भाग लिया। हमारे देश में इतने बड़े स्तर पर जनता की सक्रिय सहभागिता का इसके पहले कोई उदाहरण नहीं मिलता।

उद्यमों व सामूहिक कार्यों में, मेहनतकश जनता के बीच, सैनिक इकाइयों और रिटायर्गों दोनों में आयोजित करीब 15,00,000 मभाओं में, प्राप्ति पर विचार-विमर्श किया गया। प्राप्ति पर ग्रामीण सोवियतों से लेकर सभ जनतंत्रों की सर्वोच्च सोवियतों तक सभी सोवियतों द्वारा—अर्थात् सम्पूर्ण जनता का प्रतिनिधित्व करने वाले 20 लाख में अधिक विपुलियों द्वारा विचार किया गया। इनमें से प्रत्येक मंच ने सविधान के प्राप्ति की स्वीकृति प्रदान की।

सोवियत जनता से असह्य पत्र प्राप्त हुए। इनके लिखने वाले, मभाओं में विचार-विमर्श में भाग लेने वालों की तरह जीवन के सभी क्षेत्रों व भिन्न आयु वर्गों के, हमारी ममरत जातियों व जातीयताओं का प्रतिनिधित्व करने वाले, नर-नारी थे। पार्टी के सदस्यों और गैर पार्टी के सदस्यों, सभी ने देश के स्वामियों की तरह, जो कि ये हैं, सविधान के प्राप्ति का पूरी तरह जांच की, इसके पाठ में सुधार के लिए प्रस्ताव रखे तथा देश व समाज के जीवन के भिन्न पहलुओं को प्रभावित करने वाले अन्य मुद्दों पर व्यवहारे किये।

लियोनिद ब्रेज्नेव ने कहा, "हम विन्यास और गर्व के साथ कह सकते हैं कि यह सम्पूर्ण सोवियत जनता ही है जो वास्तव में अपने राज्य के सुनिपादी कानून की मंची सृजनकर्ता बन गयी है।" उन्होंने आगे कहा, "राष्ट्रव्यापी विचार-विमर्श के कारण सविधान के प्राप्ति में उत्प्रेरणीय रूप में सुधार करना तथा इसमें अनेक उपयोगी समोधन, स्पष्टीकरण तथा परिवर्तन करवाना संभव हुआ है।"

समाजवादी जनवाद का मंचा स्तर इस तथ्य में प्रदर्शित होता है कि प्राप्ति में मन्दी के स्पष्टीकरण, सुधार और इनकी परिपूर्ति के उद्देश्य के लिए अलग-अलग अनुच्छेदों में समोधन के लिए कुल मिलाकर 4,00,000 प्रस्ताव प्रस्तुत किये गये।

अक्तूबर 1977 के शुरू में सोवियत मंच की सर्वोच्च सोवियत के असाधारण अधिवेशन में, जिसमें लियोनिद ब्रेज्नेव ने सम्बोधित किया, नया सविधान स्वीकृत किया गया। चन्द महीनों पहले प्रकाशित प्राप्ति की तुलना में इसके 110 अनुच्छेदों में समोधन किये गये और एक अनिश्चित अनुच्छेद जोड़ा गया, जिसका सविधान आयोग द्वारा प्रस्ताव रखा गया था। इसके साथ ही सोवियत सभ की

नवोच्च सोवियत के अधिवेशन में विचार-विमर्श के दौरान डिपुटियों द्वारा प्रस्ता-
विन मसौदा और परिवर्तनों को भी शामिल किया गया।

नये संविधान के महत्व की चर्चा करते हुए लियोनिद ब्रेज्नेव ने बल देकर
कहा, यह कहा जा सकता है कि इसने सोवियत राज्य के सम्पूर्ण 60 वर्षों के
विकास को मूर्तरूप प्रदान किया है।

नया संविधान स्वीकृत करना क्यों आवश्यक था? ब्रेज्नेव ने कहा, "पिछले
चार दशकों के दौरान हमारे देश में तथा हमारे सम्पूर्ण समाज में गहरे परिवर्तन
हुए हैं। जब 1936 का संविधान स्वीकृत किया गया तब हमने मुख्य रूप से
समाजवाद की आधारशिला का निर्माण पूरा ही किया था। अब यहाँ सोवियत
संघ में विकसित, परिपक्व समाजवादी समाज मौजूद है।"

ब्रेज्नेव ने कहा कि विकसित समाजवाद "नये समाज की परिपक्वता का वह
चरण है जिसमें समाजवादी सम्बन्धों की सम्पूर्ण व्यवस्था का पुनर्गठन समाजवाद
के लिए मूल्यवान सामूहिकतावादी सिद्धान्तों पर किया जा रहा है। इसलिए इसमें
समाजवाद के कानूनों के लागू करने के लिए, समाज के जीवन के सभी क्षेत्रों में
इसकी उपयोगिता को आगे लाने के लिए पूरी सम्भावनाएँ मौजूद हैं। समाजवादी
व्यवस्था की एकाग्रता और गत्यात्मकता, इसके राजनीतिक स्थायित्व, इसकी
अजेय आन्तरिक एकता का यही कारण है। समस्त वर्गों व सामाजिक समूहों,
सभी जातियों व जातीयताओं का परस्पर मिलकर निकटतर आने का, ऐतिहासिक
दृष्टि से नये सामाजिक व अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय, सोवियत-जन, के गठन का यही
कारण है। नई समाजवादी संस्कृति के अभ्युदय, नये जीवन की समाजवादी
पद्धति की स्थापना का यही कारण है। निस्सन्देह, केवल उसी समाजवादी समाज
को ही विकसित कहा जा सकता है, जो शक्तिशाली, विकसित उद्योग पर, विशाल-
स्तरीय, अत्यधिक मशीनीकृत कृषि पर आधारित है, और जिसमें व्यवहार रूप
से सामाजिक विकास का केन्द्रीय तथा प्रत्यक्ष लक्ष्य बनने में नागरिकों की विविध
आवश्यकताओं की अधिकाधिक पूर्ण सन्तुष्टि के अवसर होते हैं।"

समाजवादी सामाजिक सम्बन्धों की पूर्ण विजय के परिणामस्वरूप सर्वहारा
अधिनायकत्व के रूप में उठ खड़ा होने वाला सोवियत राज्य सम्पूर्ण जनता के
राज्य के रूप में विकसित हो गया है।

इन परिवर्तनों का वर्णन करते हुए तथा आज हमारे समाज की विशिष्टता
प्रदान करने वाले तत्वों का हवाला देते हुए लियोनिद ब्रेज्नेव ने कहा, "समाज-
वादी निर्माण के वर्षों के दौरान, संयुक्त श्रम में, समाजवाद के लिए संघर्ष में, और
इसकी प्रतिरक्षा के लिए लड़ी गयी लड़ाइयों में वर्गों तथा सामाजिक समूहों,

जातियों व जातीयताओं के बीच नये सामञ्जस्यपूर्ण सम्बन्धों ने, मित्रता और सहयोग के सम्बन्धों ने स्वरूप ग्रहण कर लिया है। सोवियत संघ की समस्त जातियाँ अपने धर्म तथा सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की नीति के प्रति अपनी स्वीकृति द्वारा अपनी अटूट एकता को प्रदर्शित करती हैं।" इसके बाद उन्होंने सोवियत समाज की अत्यन्त महत्वपूर्ण विनिष्टताओं में से एक को रेखांकित किया। "हमारे देश में एक नये ऐतिहासिक समुदाय, सोवियत जन, ने स्वरूप ग्रहण कर लिया है। यह मेहनतगर्न वर्ग, किसानों और बुद्धिजीवियों के अटूट गठ-बन्धन पर, जिसमें मेहनतगर्न वर्ग अपनी भूमिका निभा रहा है, तथा देश की समस्त जातियों व जातीयताओं की मित्रता पर आधारित है।"

"नये ऐतिहासिक समुदाय, सोवियत जन" में यह अर्थ नहीं कि सोवियत संघ में राष्ट्रीय विनिष्टताएँ नुप्त हो गयी हैं या इनकी उपेक्षा कर दी गयी है, जातियों को परस्पर मगठित कर दिया गया है। तियोनिद ब्रेज्नेव ने स्पष्ट करते हुए कहा, "सोवियत जन की सामाजिक व राजनीतिक एकता राष्ट्रीय विनिष्टताओं के विलोपन पर सागू नहीं होती। इस बात का श्रेय मेनिनवादी जातीयताओं की हमारी उस नीति को है जिसका हम मजबूत रूप में पालन करते हैं, जिसने समाज-वाद के निर्माण के साथ-साथ इतिहास में पहली बार जातीयताओं के प्रश्न को सफलतापूर्वक हल किया। सोवियत जनगण की मित्रता अटूट है और कम्युनिज्म के निर्माण की प्रक्रिया में वे निरन्तर परस्पर निकटतरफा रहे हैं और अपने सांस्कृतिक जीवन में परस्पर मगूट होने जा रहे हैं। लेकिन अगर हमने राष्ट्रीय एकीकरण की इस उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया को तोड़ करने के लिए कृत्रिम कदम उठाये होते तो हमारे लिए यह एक घतरनाक मार्ग पर चलने जैसी बात होती।" सोवियत संघ में रहने वाली 100 से अधिक जातियों व जातीयताओं ने अपनी विनिष्टताएँ, अपनी जातिगत विनिष्टताएँ, अपनी भाषा और अपनी श्रेष्ठ परम्पराओं को पूर्ववत् बनाये रखा है। उन्हें अपनी जातीय मस्कृति का और अधिक ऊँच स्तर पर विकसित करने के लिए प्रत्येक अवसर प्राप्त है। मित्रता के तौर पर, इस समय सोवियत संघ के जनगण की 70 से अधिक भाषाएँ लिपिबद्ध, साहित्यिक भाषाएँ हैं जब कि प्राति से पहले साहित्य का विकास केवल 13 भाषाओं में हुआ था और इसके बावजूद इनकी प्रगति की संभावनाएँ अत्यन्त मोहित थीं।

इसके साथ ही सोवियत जनता के एक-दूसरे विनिष्ट पहलू को भी ध्यान में रखना चाहिए। सोवियत-जन महज ऐसी जातियाँ नहीं हैं जो एक राज्य में साथ-साथ रह रही हैं। उनकी जातीयता भन्ने ही कुछ भी हो सोवियत जन की अनेक समान विनिष्टताएँ हैं, जो उन्हें एक राष्ट्र के रूप में मगठित करती हैं। समान

विचारधारा, समान ऐतिहासिक नियति व संयुक्त कार्य, एक जैसी सामाजिक व अधिक परिस्थितियाँ, बुनियादी हित और उद्देश्य तथा प्रत्येक जातीय संस्कृति में अन्तर्निहित सभी वास्तविक मूल्यों को आत्मसात् करने वाली सोवियत समाजवादी संस्कृति की विकासशील एकता इन विशिष्टताओं में से हैं।

लियोनिद ब्रेजनेव ने कहा, "हमारे देश की सभी जातियों व जातीयताओं और सर्वोपरि महान रूसी जनता ने समाजवाद को मार्ग अपनाने वाले समान जातियों के शक्तिशाली संघ के गठन, गहनीकरण व विकास में अपनी भूमिका निभायी है। "रूसी जनता की क्रांतिकारी ऊर्जा, निपट नित्वाय भावना, उद्यमशीलता तथा गहन अन्तर्राष्ट्रीयतावाद ने हमारी समाजवादी स्वदेश के सभी दूसरे जनगण का निष्ठापूर्ण सम्मान उचित ही अर्जित किया है।"

सोवियत जनता ने विकसित समाजवादी समाज का, सम्पूर्ण जनता के समाजवादी राज्य का निर्माण किया है जिसमें, जैसा कि ऊपर उल्लेख किया जा चुका है, मेहनतकश वर्ग द्वारा प्रमुख भूमिका निभायी जाती है।

स्वयं मजदूर रह चुके ब्रेजनेव ने अपने वर्ग के साथ अपने सम्बन्ध कभी नहीं तोड़े। उन्होंने मेहनतकश जनता के प्रति सदैव ही चिन्ता व्यक्त की है और वे आज भी उसी प्रकार चिन्ता व्यक्त करना जारी रखे हुए हैं। उनके कार्य का आदर और सम्मान किया जाता है।

ब्रेजनेव ने कहा, "आज हमारे देश की जनसंख्या का दो-तिहाई भाग मेहनतकश वर्ग है। इसमें लाखों शिक्षित, तकनीकी दृष्टि से कार्यकुशल और राजनीतिक दृष्टि से परिपक्व पुरुष व महिलाएँ शामिल हैं। उनका थ्रम इंजीनियरी व तकनीकी कार्मिकों के थ्रम के बराबर पहुँचता जा रहा है। सार्वजनिक गतिविधियों तथा राज्य कार्यों के संचालन में उनकी सहभागिता में पर्याप्त वृद्धि हुई है। अपनी प्रत्यक्ष सहभागिता से मेहनतकश वर्ग देश की भौतिक सम्पत्ति को ही द्विगुणित नहीं करता बल्कि अपनी बौद्धिक क्षमता का निर्माण भी करता है।" मेहनतकश वर्ग समाज में मुख्य उत्पादक शक्ति रहा है और बना हुआ है। ये अपनी सामान्य संस्कृति, शिक्षा के अपने स्तर के रूप में अपनी अपनी भूमिका को संवर्द्धित करता है तथा इसकी राजनीतिक गतिविधि बढ़ती रहती है। पिछली दो जनगणनाओं से मेहनतकश वर्ग की संस्कृति के विकास की विश्वासदायी ढंग से पुष्टि होती है। 1959 में 386 की तुलना में 1971 में प्रति एक हजार मजदूरों में 550 से अधिक उच्चतर व माध्यमिक शिक्षा प्राप्त थे।

समाजवादी जनवाद सच्चा जनवाद है

ब्रेजनेव की तरह इतने निर्वाचित पदों पर कार्य करने का अनुभव चन्द राज-नेताओं को ही है। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय तथ्य है। वे प्रतिनिधिमूलक जनवाद के करोड़-करोड़ सभी स्तरों पर—जिला व नगर सोवियत के डिपुटी से लेकर सोवियत सभ की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमंडल के अध्यक्ष अर्थात् देश के राष्ट्रपति के पद तक—कार्य कर चुके हैं।

शीर्षस्थ पार्टी व राजनेता की हैसियत से ब्रेजनेव समाजवादी जनवाद के विकास के प्रति काफ़ी ध्यान देते हैं। ब्रेजनेव ने कहा, “अब हम केवल सिद्धान्त से ही नहीं बल्कि वषों के व्यवहार से यह जानते हैं कि जिस प्रकार समाजवाद के बिना वास्तविक जनवाद असम्भव है उसी प्रकार जनवाद के सतत विनशु के बिना समाजवाद असम्भव है। हम अपने समाजवादी जनवाद के सुधार को, सर्वोपरि, समाज के सभी कार्यों के प्रबन्ध में, मेहनतकश जनता की सतत अधिकाधिक सहभागिता के रूप में, अपने राज्यत्व की जनवादी आधारभूतता के और अधिक विकास के रूप में, व्यक्ति के बहुमुखी विकास के लिए परिस्थितियों के मूजब के रूप में समझते हैं।”

जनसत्ता के निकाय, जनता के डिपुटियों की सोवियतें—नगर व गाँव सोवियतें, जिला व क्षेत्र सोवियतें, स्वायत्त क्षेत्रों की जनता के डिपुटियों की सोवियतें, स्वायत्त जनतंत्रों की सर्वोच्च सोवियतें, जनता के डिपुटियों की प्रादेशिक व क्षेत्रीय सोवियतें, सभ जनतंत्रों की सर्वोच्च सोवियतें और अन्ततः, सोवियत सभ की सर्वोच्च सोवियत—समाजवादी राज्य का आधार तथा इसकी जनवादी प्रकृति का पूर्णतम साकार रूप हैं। कुल मिलाकर सोवियतों के 20 लाख से अधिक डिपुटी हैं जो सभी स्तरों पर सम्पूर्ण जनता के राज्य के मामलों का संचालन करते हैं। इनके अतिरिक्त करोड़ 3 करोड़ सोवियत नागरिक सोवियतों के सक्रिय कार्यकर्ता हैं। वे स्वेच्छा से और वेतन लिये बिना राज्य प्रशासन के व्यापक और जटिल कार्य को सम्पन्न करने में लगे हैं।

डिपुटी के पद के बारे में सोवियत सभ में एक क़ानून स्वीकृत किया गया है। इसमें डिपुटियों के अधिकारों व कर्तव्यों को और इसके साथ ही डिपुटियों के सदर्भ में राज्य व सामाजिक निकायों के कर्तव्यों की स्पष्ट रूप से व्याख्या की गयी है। सोवियत राज्य डिपुटी के अधिकारों व कर्तव्यों के प्रभावी तथा निर्बाध कार्यान्वयन के लिए आवश्यक परिस्थितियों की गारंटी करता है। डिपुटी को उसके अधिकारों का हस्तक्षेप करने से रोकने वाले या राज्य सत्ता के

प्रतिनिधि के रूप में उनके सम्मान और प्रतिष्ठा का उत्थान करने वाले व्यक्ति कानून के नम्र उत्तरदायी हैं। सर्वोच्च सोवियतों के डिपुटियों को कानून बनाने की पहल करने का अधिकार है। सम्प्रति, सोवियतों के डिपुटियों की पहल पर अनेक महत्वपूर्ण मुद्दे उठाये और तय किये जाते हैं। ब्रेज्नेव ने सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की 25वां कांग्रेस में कहा था, “अपने निर्वाचकों के आदेशों के आधार पर डिपुटियों द्वारा किये जा रहे प्रस्ताव हमारी सम्पूर्ण जनता को उन्नतों व आवश्यकताओं को परिलक्षित करते हैं।”

नियोनिद ब्रेज्नेव ने 4 अक्टूबर, 1977 को सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के असाधारण अधिवेशन में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए कहा, “ये आदेश जनता की अत्यधिक विविधतापूर्ण आवश्यकताओं की अभिव्यक्ति हैं, ये मेहनतकश जनता तथा सर्वोपरि समाज के व्यक्तिगत समूहों के ठोस हितों को परिलक्षित करते हैं। यही कारण है कि इन आदेशों की पूर्ति सोवियतों तथा इनके डिपुटियों के कार्य का महत्वपूर्ण अंग है। यह कहना पर्याप्त है कि अकेले पिछले दो वर्षों में 7,00,000 से अधिक निर्वाचकों के आदेशों की पूर्ति की जा चुकी है। यह समाजवादी जनवाद की वास्तविक अभिव्यक्तियों में से एक है। यह आवश्यक है कि केवल डिपुटी ही नहीं बल्कि उद्योगों, सामूहिक फ़ार्मों, निर्माण परियोजनाओं तथा कार्यालय-प्रमुखों को भी इन आदेशों के कार्यान्वयन के प्रति ध्यान देना चाहिए।”

विचार-विमर्शों के दौरान रहे गये सुझावों के उत्तर में नये संविधान में ऐसा अनुच्छेद शामिल है, जिसमें कहा गया है, “निर्वाचक अपने डिपुटियों को आदेश देते हैं कि जनता के डिपुटियों को समुचित सोवियत निर्वाचकों के आदेशों की जांच करेगी और सामाजिक व आर्थिक विकास योजनाओं का निरूपण करते समय तथा बजट तैयार करते समय इनको ध्यान में रखेगी और इन आदेशों के कार्यान्वयन की व्यवस्था करेगी तथा नागरिकों को उसके बारे में सूचित करेगी।”

इस बात से सोवियत यथार्थ की जानकारी अच्छी तरह से मिलती है। अपने निर्वाचकों के शब्दों पर ध्यान देना डिपुटी का कर्तव्य है। पिछले पांच वर्षों में आर्थिक व सांस्कृतिक विकास, सार्वजनिक शिक्षा व स्वास्थ्य-रक्षा, व्यापार व भोजन-प्रबन्ध, नगरपालिका सेवाओं तथा सेवा उद्योगों के भिन्न पहलुओं से सम्बन्धित निर्वाचकों के 18,00,000 से अधिक आदेशों को डिपुटियों की प्रत्यक्ष सहभागिता के साथ कार्य रूप से परिवर्तित किया जा चुका है। सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत तथा संघ जनतंत्रों की सर्वोच्च सोवियतों ने मंत्रालयों व विभागों के कार्यों पर, आर्थिक व सांस्कृतिक विकास के मुख्य क्षेत्रों पर अपने मार्गदर्शन को

गहन बनाया। द्विपुटीजन कार्यकारी-निकायों के कार्य में गहरी दिलचस्पी ले रहे हैं तथा कानून बनाने में सक्रिय हैं। नये संविधान में सभी स्तरों पर सोवियतों के प्रति कार्यकारी-निकायों की कहीं अधिक उत्तरदायित्वता की व्यवस्था है।

स्वास्थ्य-रक्षा में सुधार करने, पारिवारिक सम्बन्धों को मजबूत बनाने, धर्म-सुरक्षा व पर्यावरण में और अधिक सुधार करने तथा प्राकृतिक ससाधनों के साधनाय दूसरे सामाजिक उपाय विवेकपूर्ण प्रयोग को सुनिश्चित बनाने के उद्देश्य से वही अधिक प्रभावी कानून पिटते वषों में स्वीकृत किये गये हैं। नया संविधान द्विपुटियों की कार्यवाहियों के संवर्धन के लिए महत्वपूर्ण प्रेरणा है।

स्थानीय सोवियतों के पुनः समाजवादी जनवाद की वास्तविक प्रकृति को स्पष्ट रूप में प्रकट करते हैं। 19 जून, 1977 को हुए चुनावों को ही सोवियतों में निर्वाचकों की राजनीतिक सत्तमता के उच्च स्तर की प्रमाणित करते हैं। सम्प्रति, सोवियत सभ में 16,62,00,000 मतदाता हैं। और इनमें से कुल मिलाकर 16,61,70,000 या 99.98 प्रतिशत ने मतदान में भाग लिया। यह तथ्य कि कम्युनिस्टों व गैर पार्टीजन को चुनने के लिए 99.8 प्रतिशत मतदाता मतदान में भाग लेते हैं सोवियत जनता की एकता का प्रतीक है।

निर्वाचित द्विपुटियों में 42.3 प्रतिशत मजदूर, 26.1 प्रतिशत सामूहिक कामों के किसान तथा 31.6 प्रतिशत जनता के बुद्धिजीवियों के प्रतिनिधि हैं। द्विपुटियों में 49 प्रतिशत महिलाएँ, 43.2 प्रतिशत कम्युनिस्ट तथा 56.8 प्रतिशत गैर पार्टी वाले व्यक्ति हैं।

सम्पूर्ण जनता के राज्य का सामान्य चित्र यही है।

नये संविधान की प्रकृति का उल्लेख करते हुए लियोनिड ब्रेज्नेव ने कहा कि इसमें शामिल प्रत्येक नयी चीज का मुख्य उद्देश्य समाजवादी जनवाद का विस्तार करना और इसे गहन बनाना है। इसका क्या अर्थ हुआ? सर्वप्रथम, सोवियतों के गठन तथा गतिविधि के जनवादी सिद्धान्तों का और अधिक विकास तथा समाज के जीवन के महत्वपूर्ण प्रश्नों के समाधान करने में उनकी संबंधित भूमिका।

अब जबकि सोवियत सभ ने विकसित समाजवादी समाज का निर्माण पूरा कर लिया है हम सोवियत नागरिकों के अधिकारों से सम्बन्धित संविधान की धाराओं में पर्याप्त सुधार करने की स्थिति में हैं। कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र की प्रसिद्ध पंक्तियाँ—प्रत्येक व्यक्ति का मुक्त विकास सभी के मुक्त विकास के लिए शर्त है—वास्तव में सोवियत राज्य का बुनियादी सिद्धान्त बन गयी है। इस बात को संविधान में शामिल किया गया है। इसमें जातीयता या नस्ल के भेदभाव बिना समस्त सोवियत नागरिकों की समानता के सिद्धान्त की घोषणा

करने वाली विशेष धारा शामिल की गयी है। संविधान अत्यन्त स्पष्टता के साथ महिलाओं व पुरुषों के लिए समान अधिकारों को सुनिश्चित बनाने जैसे महत्वपूर्ण मामलों में समाजवाद की उपलब्धियों को समेकित करता है।

लियोनिद ब्रेजनेव ने कहा कि 1936 के संविधान ने जीवन की आधारशिला को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करने वाले नाना प्रकार के सामाजिक-आर्थिक अधिकारों की गारंटी भी की थी। लेकिन अब उनके स्वरूप को और गहन तथा समृद्ध बनाया गया है और इसमें दी गयी भौतिक गारंटियों की कहीं अधिक स्पष्टता के साथ व्याख्या की गयी है। मिसाल के तौर पर उसमें यह कहा गया था कि जनता को काम पाने का अधिकार है, लेकिन अब इसकी सम्पूर्ति नागरिक व्यवसाय, योग्यता, प्रशिक्षण और शिक्षा के अनुरूप तथा इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है, समाज की आवश्यकताओं को दृष्टि में रखते हुए अपने व्यवसाय अथवा पेशे और कार्य के प्रकार का चुनाव करने के अधिकार से की गयी है।

एक दूसरे सिद्धान्त का लें। 1936 के संविधान में बीमारी या असमर्थता की स्थिति में सामाजिक भरण-पोषण के अधिकार की गारंटी की गयी थी। नया संविधान इस प्रश्न के संदर्भ में सोवियत नागरिकों के लिए स्वास्थ्य-रक्षा के अधिकार की अधिक व्यापकता के साथ गारंटी देता है। पिछले संविधान में शिक्षा पाने के अधिकार का उल्लेख सामान्य रूप से किया गया था, अब नये संविधान में सार्वजनिक, अनिवार्य माध्यमिक शिक्षा को तथा व्यावसायिक, विशेषीकृत माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा के विस्तृत विकास का उल्लेख है।

एक नये सिद्धान्त का प्रचलन किया गया है। यह ऐसा सिद्धान्त है जो विश्व के किसी अन्य संविधान में नहीं मिलता। यह है—आवास पाने का अधिकार। आवास-निर्माण के कार्यक्रम का कार्यान्वयन तथा सहकारी आवास या व्यक्तिगत मकानों के निर्माण में राज्य की सहायता के माध्यम से अधिकाधिक व्यापक रूप से इस अधिकार को सुनिश्चित किया गया है। ब्रेजनेव ने इस ओर ध्यान दिलाया कि हमारा नया संविधान इस महत्वपूर्ण मानव अधिकार की घोषणा करने वाला विश्व का प्रथम संविधान होगा।

यह संविधान प्रत्येक सोवियत नागरिक के राज्य तथा सार्वजनिक मामलों के प्रबन्ध व प्रशासन में भाग लेने के अधिकार सहित उनके राजनीतिक अधिकारों व स्वतंत्रता की अधिक पूर्णता के साथ और ठोस रूप में व्याख्या करता है तथा ऐसी सहभागिता के ठोस रूपों की सूची प्रस्तुत करता है।

पुराने संविधान में उल्लिखित भाषण, प्रेस, सभा व जुलूसों का आयोजन करने की स्वतंत्रता की नये संविधान में पूरी तरह पुष्टि की गयी है। राज्य-

निकायो तथा सामंजसिक संगठनों के सामने प्रस्ताव रखने, उनके कार्य की क्षमिय की आलोचना करने तथा न्यायालयों में अधिकारियों की कार्यवाहियों के विस्तार अभीष्ट करने और नागरिकों के अधिकार द्वारा तथा अपने सम्मान व प्रतिष्ठा, जीवन, स्वास्थ्य, व्यक्तिगत स्वतन्त्रता तथा सम्पत्ति के अतिक्रमण के विरुद्ध न्याया-लय द्वारा संरक्षा के नागरिकों के अधिकार द्वारा व्यक्तिगत अधिकारों के सम्बन्ध में पहले की संवैधानिक गारंटियों की पूर्ति काफ़ी हद तक की गयी है। संविधान में कहा गया है कि आलोचना के लिए उत्पीड़न वर्जित है। इस बात के दोषी पाये जाने वाले व्यक्तियों से जवाब तलब किया जायेगा।

स्वाभाविक ही, संविधान इस बात को मानकर चलता है कि नागरिकों द्वारा अपने अधिकारों व स्वतन्त्रता का उपयोग समाज या राज्य के हिੱतों के प्रतिकूल नहीं होना चाहिए और न ही इसमें दूसरे नागरिकों के अधिकारों का अतिक्रमण करना चाहिए। नागरिकों द्वारा अपने अधिकारों व स्वतन्त्रता का उपयोग उनके कर्तव्यों तथा उत्तरदायित्वों के साथ अविच्छिन्न रूप से जुड़ा है।

सियोनिद ब्रेज्नेव ने कहा है : "हमारे 'आलोचक' इस तथ्य से अनभिज्ञ होने का बहाना करते हैं कि संविधान में उल्लिखित वे धारामें जिनसे उनमें अपठित उत्पन्न होता है पूरी तरह से बुनियादी अन्तर्राष्ट्रीय दस्तावेजों के अनुरूप हैं। हम उन्हें इस तथ्य का स्मरण करा दें : समुक्त राष्ट्र के मानव अधिकारों की सामंजसिक घोषणा में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि 'प्रत्येक व्यक्ति का उस समुदाय के प्रति कर्तव्य होता है, जिसके अन्दर उसके अस्तित्व का भुक्त और पूर्ण विकास सम्भव है' और यह कि नागरिकों के अधिकार व स्वतन्त्रताओं का उपयोग करने के लिए 'दूसरों के अधिकारों तथा स्वतन्त्रताओं को मान्यता देना तथा उनका सम्मान करना और लोकतांत्रिक समाज में नैतिकता, सामंजसिक व्यवस्था और जन-कल्याण की न्यायपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति करना अपेक्षित है'।"

नये संविधान में मानव अधिकारों का विस्तार और गहनोकरण पाँचवीं अंगूठ के उन प्रचारकों की मनगढ़न्त बातों को निर्मूलतः साबित करता है, जो इस मामले की घलत व्याख्या करते हैं और इसे विपरीत ढंग से प्रस्तुत करते हैं। ब्रेज्नेव की राय में ऐसी 'कार्यवाहियाँ' तथा अभिमान समाजवादी समुदाय को कमजोर बनाने तथा समाजवादी व्यवस्था की अवमानना करने का प्रयास है। ब्रेज्नेव ने कहा : "हमारे समुदायों को हमारे देशों में समाजवाद का विरोध करने-वाली किसी भी प्रकार की शक्तियों को कुँड़ने से अधिक अच्छा लगने लगे पसन्द नहीं आयेगा। और क्योंकि ऐसी शक्तियों का अस्तित्व नहीं है, तब-समाजवादी समाज में उत्पीड़ित, शोषित वर्ग तथा उत्पीड़ित, शोषित शक्तिशाली

लियोनिद इ० ब्रेज़नेव : जीवन के कुछ पृष्ठ

हैं वे इसके स्थानापन्न की खोज करते हैं तथा भारी प्रचार के माध्यम समाजवादी देशों में 'आन्तरिक विरोध' जैसी स्थिति के आभास का न करते हैं। तथाकथित 'असंतुष्टों' के बारे में शोर-शराबा और समाजवादी देशों में मानव अधिकारों के आरोपित उल्लंघनों के बारे में चिल्ला-पों मचाने का ही कारण है।"

उन्होंने आगे कहा : "इस सम्बन्ध में क्या कहा जाये ? हमारे समाज में बहुमत से 'असहमति' व्यक्त करने तथा सामाजिक जीवन के कतिपय पहलुओं की आलोचना करना वर्जित नहीं है। हम उन साथियों को ईमानदार आलोचक समझते हैं जिनकी आधारपूर्ण आलोचना का उद्देश्य हमारी सहायता करना होता है और हम उनके कृतज्ञ होते हैं। अलबत्ता, हम निराधार आलोचना करने वालों को गलत समझते हैं।

"अगर हमारे समाज से अलग हो गये मुट्ठी-भर लोग समाजवादी व्यवस्था का विरोध करते हैं और सोवियत-विरोधी गतिविधियों में भाग लेते हैं, कानूनों का उल्लंघन करते हैं तथा देश के अन्दर समर्थन के अभाव की वजह से विदेशों से, विनाशक साम्राज्यवादी प्रचार तथा गुप्तचर केन्द्रों से सहायता लेने का प्रयास करते हैं तो यह अलग बात है... बिलकुल स्वाभाविक ही हम ऐसे व्यक्तियों के विरुद्ध ऐसे कदम उठाना जारी रखेंगे जो हमारे कानून के पूर्णतया अनुत्पन्न हैं।"

नये संविधान की एक सुस्पष्ट विशेषता यह है कि इसमें पहली बार सोवियत संघ की विदेश नीति-विषयक एक परिच्छेद सम्मिलित किया गया है।

इस परिच्छेद में कहा गया है कि सोवियत राज्य स्वतंत्र रूप से शांति की लेनिनवादी नीति का पालन करता है और राष्ट्रों की सुरक्षा के सुदृढ़ीकरण तथा व्यापक अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग का पक्षधर है। सोवियत संघ की विदेश नीति का लक्ष्य सोवियत संघ में कम्युनिज्म के निर्माण के लिए अनुकूल अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों को सुनिश्चित बनाना, सोवियत संघ के राज्य-हित की रक्षा करना, विश्व समाजवाद की स्थितियों को सुदृढ़ करना, राष्ट्रीय मुक्ति व सामाजिक मुक्ति के लिए जनगण के संघर्षों का समर्थन करना, आक्रमणकारी युद्धों को रोकना, सार्वत्रिक व पूर्ण निरस्त्रीकरण हासिल करना तथा भिन्न सामाजिक प्रणालियों वाले राज्यों के शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धांतों के सतत कार्यान्वयन करना है। सोवियत संघ में युद्ध प्रचार वर्जित है।

सोवियत संघ पहला राज्य है जिसने अपने संविधान में राज्यों के सम्बन्धों को नियंत्रित करने वाले दस सिद्धांत शामिल किये हैं, जो यू.एस.ए. व सहयोग विषयक सम्मेलन के अन्तिम दस्तावेज का मर्म हैं।

लियोनिद ब्रेज्नेव ने कहा : "हमारा नया संविधान अत्यन्त विश्वासदायक ढंग से यह प्रकट करता है कि विजयी समाजवाद के प्रथम राज्य ने अपनी पताका पर अपनी जनता तथा समस्त भूमण्डल के सभी जनगण के हितों के प्रति स्वरूप अपनी विदेश नीति के सर्वोच्च सिद्धांत के रूप में 'शांति' शब्द को हमेशा-हमेशा के लिए अंकित कर लिया है।"

सोवियत समाज के जीवन में ट्रेड यूनियन

नया संविधान ट्रेड यूनियनों, कोम्सोमोल तथा दूसरे सांस्कृतिक संगठनों द्वारा देश के जीवन में निभायी जाने वाली महत्वपूर्ण भूमिका को व्यापक रूप से परिलक्षित करता है। इसमें कार्य-सामूहिकों की भूमिका से सम्बन्धित एक धारा शामिल है। ब्रेज्नेव ने बताया कि यह पार्टी की उस बुनियादी नीति तथा उस महत्व के पूर्णतया अनुरूप है, जो यह उत्पादन-प्रबन्ध में जनवादी सिद्धांतों के विकास को देती है।

विदेशों में हर किसी को सोवियत जनता के जीवन में तथा कम्युनिस्ट-निर्माण में ट्रेड यूनियनों द्वारा निभायी जाने वाली भूमिका का स्पष्ट ज्ञान नहीं है। इनका स्थान पूँजीवादी देशों में ट्रेड यूनियनों के स्थान से अत्यधिक भिन्न है और जैसा कि ब्रेज्नेव ने कहा : "इन्हे हमारे समाज के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।"

ट्रेड यूनियन सोवियत जनता का विशालतम सामाजिक जन-संगठन है। इनकी सदस्य संख्या लगभग 12 करोड़ 10 लाख है; अर्थात् करोड़-करोड़ सम्पूर्ण मेहनतकश वर्ग, बुद्धिजीवी तथा कृषि-कार्य में सभी आबादी का विशाल भाग इसमें शामिल है।

केन्द्रीय समिति के महासचिव ने ट्रेड यूनियनों की भूमिका की निम्न शब्दों में व्याख्या की : "ट्रेड यूनियनों के समक्ष, सर्वोपरि, मेहनतकश जनता के अधिकारों और हितों की रक्षा करने का तथा प्रतिदिन के सामाजिक प्रश्नों को हल करने का कार्य है। लेकिन अगर उत्पादन का विकास न हो और अगर थम-अनुशासन तथा थम-उत्पादकता में वृद्धि न हो तो ये इस क्षेत्र में कुछ अधिक कर पाने में असमर्थ रहेगी। इसी कारण, क्योंकि हमारी ट्रेड यूनियन मेहनतकश जन के हितों के प्रति समर्पित है, उत्पादन में वृद्धि किये जाने के प्रति चिन्ता प्रदर्शित करना उनका कर्तव्य है।

सोवियत ट्रेड यूनियन समाजवादी समाज में कार्य करती है और इसी के इनके स्वरूप का निर्धारण होता है।

इनकी मुख्य और सुस्पष्ट विशेषताओं में से एक यह है कि ये सम्पूर्ण समाज के विकास तथा अर्थतंत्र के प्रबन्ध में प्रत्यक्ष और सक्रिय रूप से भाग लेती हैं।

समाजवादी जनवाद की सामान्य व्यवस्था में प्रमुख कड़ी होने के नाते ये राज्य के प्रशासन में मेहनतकश जनता को शामिल करती हैं। ये राज्य योजनाओं के निरूपण से लेकर प्रत्येक उद्यम के प्रबन्ध तक, राष्ट्रीय अर्थतंत्र के विकास की अनेक समस्याओं का समाधान करने में भाग लेती हैं।

ये औद्योगिक उद्यमों, निर्माण-स्थलों व कार्यालयों में उत्पादन तथा कार्मिकों की सामाजिक गतिविधियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और ये स्थायी रूप से कार्यरत उत्पादन-सम्मेलनों के माध्यम से इनके प्रशासन में भाग लेती हैं। ब्रेज्नेव ने कहा है : "उत्पादन समितियों व उद्यमों के प्रमुखों के साथ-साथ मंत्रालयों के अग्रणी अधिकारियों को संपन्न कार्यों के बारे में सीधे मजदूरों के समक्ष रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित करना आवश्यक है।"

पारिधनिक सम्बन्धी मुद्दों और प्रोत्साहनों के अलावा, सामाजिक बीमा भी ट्रेड यूनियनों के अधिकार क्षेत्र में आता है। विश्राम व मनोरंजन-सुविधाओं, सैनैटोरियमों व स्वास्थ्य-केन्द्रों में उपचार की व्यवस्था करने के लिए, पेंशन, शारीरिक प्रशिक्षण व खेलों के लिए ट्रेड यूनियनों के पास पर्याप्त धनराशि व संसाधन उपलब्ध हैं। इससे भी अधिक ये मेहनतकश जनता के रहन-सहन की परिस्थितियों के सभी पहलुओं तथा भोजन व्यवस्था में सुधार से सम्बन्धित हैं।

1977 में ट्रेड यूनियनों की 16वीं कांग्रेस को सम्बोधित करते हुए लियोनिद ब्रेज्नेव ने कहा : "ट्रेड यूनियनों के पास अपने अधिकारों का प्रयोग करने के लिए स्वल्पों व साधनों का भरपूर भंडार है—मजदूरों की सभाएँ, स्थायी रूप से कार्यरत उत्पादन-सम्मेलन तथा साप्ताहिक समझौते। इन्हें कानून की पहल करने का अधिकार है। संक्षेप में, ट्रेड यूनियनों को अनेक अधिकार व अवसर प्राप्त हैं।" उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि इनका अधिक पूर्णता के साथ और प्रभावी ढंग से इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

सोवियत युवाजन

जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है, नये संविधान में हमारे समाज में युवाजन के संगठन—कोम्सोमोल—के स्थान की चर्चा की गयी है। ऐसा करने का उचित कारण है। सोवियत संघ की आबादी में लगभग आधे 26 वर्ष से कम आयु के युवक व युवतियाँ हैं। यह वास्तव में 'युवाजन का देश' है।

केंद्रीय समिति तथा व्यक्तिगत रूप से ब्रेज्नेव युवाजन की समस्या पर ध्यान

देते हैं। उन्होंने बल देकर कहा : "इस बात को बिना अतिशयोक्ति के कहा जा सकता है कि सोवियत संघ में किसी क्षेत्र, जिला या किसी उद्यम के कामियों से सम्बन्धित किसी भी प्रमुख मामले को मुवाजिन की सहभागिता के बिना तय नहीं किया जाता।

नये जीवन के निर्माण के सभी प्रमुख क्षेत्रों में उभरती पीढ़ी को मुख्य स्थान प्राप्त है। सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के सम्पूर्ण विधियों के पंचमाग की आयु 30 वर्ष में कम है जबकि स्थानीय सोवियतों में मुवाजिन का अनुपात इसमें भी बड़ी अधिक—लगभग एक-तिहाई है।

साभ्रमद मृजनात्मक कार्य के लिए मुवाजिन की बढ़ती हुई पिपासा तथा इसे परम महत्वपूर्ण आवश्यकता के रूप में परिवर्तित कर देने की उनकी इच्छा सोवियत समाज के विकास में प्रगतिशील प्रवृत्ति है।

ब्रेज्नेव अपनी समस्त गतिविधियों में मुवा पीढ़ी की इन सभी विनिष्टताओं को ध्यान में रखते हैं। उन्होंने कहा : "मुवाजिन पर विश्वास करना, उनके अति-निहित उत्साह पर तथा सामान्य जन के कल्याण के लिए कार्य करने की उनकी उदात्त आकांक्षा पर निर्भर करना और इसके माप ही जीवन में सही दृष्टिकोण अपनाने की दिशा में उनकी सहायता करना तथा उन्हें पुरानी पीढ़ी के ज्ञान और अनुभव से सम्पन्न बनाना कम्युनिस्ट परम्परा रही है।"

तकम कम्युनिस्ट लीग या कोम्सोमोल के 3 करोड़ 70 लाख से अधिक सदस्य हैं। ब्रेज्नेव का कथन है कि कोम्सोमोल बिगुन मात्रा में कार्य करता है। इस संगठन में मुवाजिन अपनी राजनीतिक शिक्षा प्राप्त करते हैं। उन्हें निर्माण-परियोजनाओं पर, कारखानों में तथा राज्य व सामूहिक कामों पर, उच्चतर शिक्षा-मस्थानों में तथा स्कूली-छुट्टियों के दौरान अप्रेंटिस के भिन्न क्षेत्रों में काम करने वाली छात्र-निर्माण-टोलियों में दीक्षा दी जाती है।

सियोनिद ब्रेज्नेव ने सोवियत मंच की कम्युनिस्ट पार्टी की 25वीं कांग्रेस में कहा "हमें कोम्सोमोल की उन अनेक अच्छी पहलु-वर्धनियों का स्मरण करना चाहिए जिनको हमने व्यावहारिक रूप प्रदान किया है। बेकाल-भ्रामूर रेम-मानें तथा उच्च प्राथमिकता प्राप्त कोम्सोमोल निर्माण-परियोजनाओं को ही लीजिये, पचवर्षीय अवधि में इनकी संख्या 670 थी। इनमें 5 लाख से अधिक युवक-युवतियाँ कार्यरत थे। कोम्सोमोल ने हमी मंच के चौर-कामी मिट्टी क्षेत्र में 1200 भूमि मुधार व ग्रामीण-निर्माण परियोजनाओं का दायित्व सभाला है। और हमें यह मान्य ही है कि मुवाजिन जितनी उत्सुकतापूर्वक छात्रों की निर्माण-टोलियों में शामिल होने हैं। वे टोलियाँ अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य कर रही हैं। 9वीं

पंचवर्षीय योजना अवधि में इन्होंने अनुमानतः 5 अरब स्क्वेल मील का कार्य किया। धन-शिक्षा के स्कूल के रूप में इसके महत्व का अतिनूल्यांकन करना भी संभव नहीं है।"

ब्रेजनेव पुवायन को स्मरण कराते हैं कि उनके मनस उपस्थित समस्याएँ अतीत काल में देश के सम्मुख मौजूद समाजवादी आर्थिक प्रदर्श के प्राथमिक स्कुलों की अनेका समाजवादी अर्थतंत्र के उच्चतर स्कूल की हैं। तबीयतन ज्ञान अर्जित करना तथा वैज्ञानिक व तकनीकी प्रगति का उल्लेख करना आज की अत्यन्त महत्वपूर्ण बात है।

मोवियत संघ में उच्चतर शिक्षा सहित शिक्षा के विकास की अनाधारण महत्व दिया जाता है। उच्चतर स्कुलों में पुवायन का प्रयोग विकास शिक्षित, वैज्ञानिक दृष्टि से शीला-प्राप्त तथा बौद्धिक दृष्टि से परिपक्व युवक व युवतियों का पोषण करने के उद्देश्य से शिक्षा व प्रशिक्षण के अमिल नानिधन पर आधारित है।

मोवियत संघ की स्थापना के बाद में देश में उच्चतर व विशेषीकृत माध्यमिक शिक्षा संस्थाओं की विलुप्त रूप में स्थापना की गयी है, जिन्होंने अब तक लगभग 3 करोड़ 50 लाख दस विद्यार्थियों को प्रशिक्षित किया है। उच्चतर शिक्षा के संस्थाओं से प्रतिवर्ष 7 लाख से अधिक छात्र स्नातक बनकर निकलते हैं।

ब्रेजनेव ने छात्रों से अने-अने व्यवसायों में गौरवस्व स्थापन अर्जित करने के लिए प्रयत्नशील होने की अपील की। उन्होंने कहा : "अध्ययन में उन तत्वों को उदात्ततम नाने-दर्शक होता चाहिए जिनकी अनेका आज मोवियत विरोधन के सम्मुखित-निर्माण में सक्रिय सहभागों से की जाती है।"

मोवियत संघ की सम्मुखित पार्टी की केन्द्रीय समिति तथा मोवियत व तकनीकी प्रशिक्षण प्रणाली तथा उच्चतर व विशेषीकृत माध्यमिक शिक्षा की नियंत्रितपद में ब्रेजनेव की पहल पर नानान्य माध्यमिक स्कुलों, व्यावसायिक व तकनीकी प्रशिक्षण प्रणाली तथा उच्चतर व विशेषीकृत माध्यमिक शिक्षा और अधिक सुधार के बारे में निर्णय स्वीकृत किया।

उन्होंने कहा : "समाजवाद के उदय के समय लेनिन ने हमारी मनुष्यी कल्पना सांस्कृतिक नाना-रुचि वाले देश के रूप में की थी। हमने इस मनस समाधान काटती समझ पहले ही कर लिया। अब हम नये क्षितिजों तक चूके हैं और सांस्कृतिक माध्यमिक शिक्षा ने संक्रमण पूरा कर रहे हैं।" इन मोवियत संघ ने अने प्रगति की है। 1950 से 1975 की अवधि में शिक्षा प्रणाली की संख्या में 13 गुना वृद्ध हुई है।

सार्वजनिक माध्यमिक शिक्षा में संक्रमण प्रत्यक्ष रूप से स्कूल की भूमिका में संवर्धन के साथ जुड़ा है। बेइनेब माध्यमिक शिक्षा के तत्त्व को विज्ञान, प्रविधि व संस्कृति की वर्तमान आवश्यकताओं के अधिकारिक अनुस्यू बनाने की आवश्यकता के प्रति विशेष ध्यान देते हैं।

मुवाजन इन समस्याओं का उत्साहपूर्वक समाधान कर रहे हैं क्योंकि बविष्प उनके हाथों में है। भौतिकशास्त्र, रसायनशास्त्र तथा गणित में राष्ट्रीय प्रति-योगिताएँ, जिनमें सासों स्कूली बच्चे अत्यधिक रुचि के साथ भाग लेते हैं, परंपरा बन गयी हैं। सम्पूर्ण देश में बरिष्ठ कक्षाओं के छात्रों की सोसाइटियाँ तथा युवा तकनीशियनों व प्रकृति प्रेमियों के केन्द्र बिद्यमान हैं।

समस्त शिक्षा निःशुल्क है, इसलिए यह सभी व्यक्तियों की पहुँच के भीतर है। बेइनेब के अनुसार ऐसे सोवियत बुद्धिजीवियों का निर्माण हो रहा है, जो अपनी मृजनात्मक शक्ति जनता के ध्येय तथा कम्युनिस्ट निर्माण के ध्येय को समर्पित करने के लिए कृतसकल्प हैं।

विज्ञान की विकासशील भूमिका

स्वयं एक इंजीनियर और अनुभवी राजनेता व पार्टी मेंता होने के नाते बेइनेब ने विज्ञान व प्रौद्योगिकी के विकास के उन्नयन के प्रति मर्दब हो काड़ी ध्यान दिया है। उनका नाम इस क्षेत्र की अनेक उपलब्धियों के साथ जुड़ा है। उन्होंने अनु-संधान के विकास के लिए समस्त आवश्यक परिस्थितियों का मृजन करने का सदा ही प्रयत्न किया है। "तकनीकी, आर्थिक व सामाजिक प्रगति का जीवन-दायक स्रोत, जनता की आत्मिक संस्कृति में बुद्धि और उसका कल्याण—विज्ञान का आज हमारे लिए यही अर्थ है।" महासचिव सोवियत समाज के लिए विज्ञान के महत्त्व का मूल्यांकन इसी प्रकार करते हैं।

सोवियत जन को वास्तव में सोवियत विज्ञान अकादमी पर गर्व है। इस वैज्ञानिक केन्द्र के महत्त्व की पर्चा करते हुए बेइनेब ने 25वीं कांग्रेस को बताया : "विज्ञान के उन्नयन तथा इसके मुख्यालय विज्ञान अकादमी के प्रति, जिसकी 250वीं जयन्ती पिछली सदियों में स्थापक रूप से मनायी गयी, अनवरक ध्यान प्रदर्शित करते रहना पार्टी की नीति है। इसमें हमारे विज्ञान का पराग सकेन्द्रित है—मेधावी विद्वान, वैज्ञानिक स्कूलों व प्रवृत्तियों के संस्थापक तथा अत्यधिक प्रतिभा-शाली युवा वैज्ञानिक ज्ञान के विसर की दिशा में नये मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। पार्टी अकादमी के कार्य का उष्ण मूल्यांकन करती है और यह सैद्धांतिक अनुसंधान तथा देश में समस्त वैज्ञानिक कार्य के समायोजक के रूप में इसकी भूमिका का

पर बहुधा बल दिया। मिसाल के तौर पर चौथे दशक के अंत से वर्तमान अर्धशताब्दी की तुलना करते हुए उन्होंने कहा, आज यह विकास के कहीं अधिक ऊँचे स्तर पर है। ऐसा ही समाजवादी सामाजिक सम्बन्धों तथा जनता की संस्कृति और जागरूकता के बारे में है। अब सोवियत जनता के समर्पित श्रम की शक्ति द्वारा विकसित समाजवादी समाज का, जिसे लेनिन ने 1918 में देश के भविष्य की संज्ञा दी थी, निर्माण हो चुका है। इसने ही जनता को पार्टी के कार्यक्रम तथा इसकी हाल की कांग्रेसों में निर्धारित व्यावहारिक तथा महत्वपूर्ण कर्तव्य—कम्युनिज्म के भौतिक तथा तकनीकी आधार का निर्माण करने के कर्तव्य को हाथ में लेने में सक्षम बनाया।

ब्रेज़नेव के केन्द्रीय समिति के महासचिव पद पर चुने जाने के बाद से सोवियत संघ ने अपने विकास में महान् प्रगति की है। इसने कम्युनिज्म के भौतिक व तकनीकी आधार का सृजन करने तथा अपनी आर्थिक शक्ति को सुदृढ़ बनाने में प्रभावी प्रगति की है तथा इसने रहन-सहन के स्तर में यथेष्ट वृद्धि अर्जित की है।

जहाँ तक आर्थिक विकास के वर्तमान चरण का सम्बन्ध है इसने नये आयाम ग्रहण किये हैं। प्रगति सच्चे अर्थों में अभूतपूर्व रही है।

यह स्मरणीय है कि सोवियत संघ ने युद्ध के दौरान तथा हिटलरी सैनिकों द्वारा इसके भू-प्रदेश पर अस्थायी अधिकार के दौरान भारी क्षति उठाई। उन्होंने लाखों-करोड़ों नागरिकों को मार डाला, और लाखों सोवियत सैनिकों ने युद्ध-भूमि पर अपना बलिदान किया। नाज़ियों ने अस्थायी रूप से अधिकृत क्षेत्रों में विपुल मात्रा में भौतिक-साधनों को नष्ट किया और लूटपाट की। शत्रु ने पूर्णतया अथवा आंशिक रूप से लगभग 32,000 औद्योगिक उद्यम नष्ट कर दिये; 98,000 सामूहिक फ़ार्मों, 1,876 राज्य फ़ार्मों तथा 2,890 मशीन व ट्रैक्टर स्टेशनों को लूटा; तथा दसियों हजार स्कूलों, अस्पतालों, तकनीकी विद्यालयों, उच्चतर शिक्षा संस्थानों व पुस्तकालयों को नष्ट किया। शत्रु ने कुल मिलाकर (युद्धपूर्व की क़ीमतों के अनुसार) 679 अरब रूबल मूल्य की भौतिक परिसम्पत्ति को लूटा या नष्ट किया।

चंद वर्षों में देश के पुनर्वास के बारे में सोचना, नये सिरे से उद्योगों का निर्माण तथा कृषि का पुनर्स्थापन करना असंभव जान पड़ता था। लेकिन सोवियत जनता ऐसा करने में सफल हुई। श्रम-क्षेत्र में उसकी साहसिकता युद्ध में उसकी साहसिकता के समान थी।

सोवियत संघ में सम्पन्न किये गये सामाजिक रूपांतरणों ने जीवन के सभी क्षेत्रों में तीव्र प्रगति का मार्ग प्रशस्त किया।

सोवियत संघ की 60वां जयन्ती के वर्ष 1977 में देश की सामर्थ्य पहुँच की अपेक्षा वहाँ विनाश थी। 1977 में राष्ट्रीय आय 1913 में बारनाही रुम की अपेक्षा लगभग 70 गुना तथा 1917 की अपेक्षा 100 गुना में भी अधिक थी।

सोवियत संघ का आधुनिक उद्योग 1913 के रुमी कारखानों की तुलना में 145 गुना अधिक तथा 1917 की तुलना में 225 गुना अधिक उत्पादन करता है। आज सोवियत उद्योग 2 या 3 दिनों में इतना अधिक उत्पादन कर लेता है जितना क्रांतिपूर्व रुम में एक वर्ष में होता था। 1913 में रुम औद्योगिक उत्पादन की दृष्टि से अमरीका, ब्रिटेन, जर्मनी तथा फ्रांस के बाद विश्व में पाँचवें नम्बर पर था। और उस समय अमरीका रुम से आठ गुना अधिक उत्पादन करता था। आज सोवियत उद्योग विश्व में इतना गुरुत्वांक दूसरा स्थान बनाये हुए है। इसके उत्पादन की मात्रा सघ गणराज्य जर्मनी, ब्रिटेन तथा फ्रांस के सम्मिलित औद्योगिक उत्पादन से अधिक है।

सोवियत सत्ता की स्थापना के बाद गे कृषि क्षेत्र में भारी परिवर्तन किए गए हैं। विमानस्तरीय सामूहिक फ़ार्म-अर्पतत्र की स्थापना की गयी है। समाजवादी निर्माण की प्रारम्भिक अवधि में लेनिन ने किसानों को एक साथ ट्रैक्टर उपलब्ध करने का सपना देखा था। सम्प्रति सामूहिक व राज्य फ़ार्मों के पास 24 लाख ट्रैक्टर, 7 लाख गुस्ता हार्वेस्टर तथा लगभग 15 लाख ट्रक हैं। इसके परिणामस्वरूप अन्तूबर क्रांति की 60 वां जयन्ती के वर्ष में कृषि उत्पादन 1913 तथा 1917 के स्तरों की तुलना में क्रमशः 230 तथा 340 प्रतिशत बढ़ गया था।

लियोनिद ब्रेज्नेव ने इस ओर ध्यान दिलाया कि "हमने केवल दस वर्षों में ही अधिक सामर्थ्य को दुगुना कर दिया है जिसके निर्माण में 50 वर्षों में अधिक का समय लगा।"

इन शब्दों में सोवियत संघ की आर्थिक सफलताओं के प्रति गर्व की भावना उचित ही है क्योंकि विस्तृत, विविधतापूर्ण तथा अत्यन्त जटिल अर्पतत्र के साथ आज भविष्य की ओर देख पाने में समर्थ होना, जनता के प्रयासों को उचित समय पर महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर केन्द्रित करना तथा उसके कार्य को सगठित करना और प्रेरणा प्रदान करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। सोवियत संघ की सफलताएँ सोवियत जनता और कम्युनिस्ट पार्टी की, केन्द्रीय समिति तथा महासचिव ब्रेज्नेव की सफलताएँ हैं।

सम्पूर्ण सोवियत संघ विनाश निर्माण-स्थल बन गया है। पिछले दशक में त्रूमन तथा ओरेन्बुर्ग क्षेत्रों में, कोमी स्वायत्त जनतंत्र तथा उबेस्क व गुरुंमेन संघ जनतंत्रों में तेल व गैस के प्रमुख आधारों के विकास-कार्य को जारी रखा

नियोनिद ३० ब्रेजनेव : जीवन के कुछ पृष्ठ

कुन्क चुम्बकीय कोणान्तर के क्षेत्र में लौह व इस्पात उद्योग के लिए नये
तुलनित आधार का विकास किया जा रहा है।
बेनिसेई पर विश्व के विशालतम फ्रास्नोयाल्क अपनी निर्धारित क्षमता अर्जित
कर ली है। मास्को के निकट 24 लाख किलोवाट की क्षमता वाला कोनाकोवो
ताप विजलीघर भी अपनी पूरी क्षमता पर काम कर रहा है।
लादिजिन्स्काया तथा एस्तोनियाई ताप विजलीघरों का निर्माण तथा 40
लाख से अधिक किलोवाट की समग्र क्षमता वाली सारातोव पनविजली संयंत्रों का

पूरी हो चुकी है तथा साइबेरिया की विराट नदियों पर पनविजली संयंत्रों का
शक्तिशाली व्यवस्था का निर्माण-कार्य प्रगति पर है।
वोल्टकी कार संयंत्र के रिफाई टाइम में पूरा हो जाने के बाद एक और
भीमकाय संयंत्र, कामा के तट पर नावरेखनीये चेल्ली में भारी बोझ उठाने में समर्थ
ट्रक बनाने वाले कारखाने के निर्माण का कार्य शुरू किया गया।
वेकाल-आमूर रेल-मार्ग का निर्माणकार्य अब तीव्र गति से चल रहा है।
लियोनिद ब्रेजनेव ने कहा है, "इस परियोजना का व्यापक महत्व है। वेकाल-
आमूर रेल-मार्ग उस अतुल सम्पदा से समृद्ध क्षेत्रों से गुजरते हुए सदियों पुराने
ताइगा की निःस्त्वघता को भंग करेगा, जिसे देश की सेवा में लगाया जाना
चाहिए।..."

1976 के शुरू में आयोजित सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की 25
कांग्रेस पार्टी तथा समग्र सोवियत जनता के जीवन की प्रमुख घटना थी। 'सं
घत जन के श्रम के अभूतपूर्व परिणाम', 'तनाव-शैथिल्य के अन्तर्गत अ
प्रगति', 'अच्छे परिणामों व भावी योजनाओं पर ब्रेजनेव के विचार'
दिलों अनेक विदेशी समाचारपत्रों द्वारा ऐसे शीर्षक प्रकाशित किये गये थे
विदेशों से आये अतिथियों तथा अनेक विदेशी संवाददाताओं ने
दौरान व्याप्त भविष्य के प्रति आशावादिता और विश्वास की भाव
किया। इस कांग्रेस ने 9वीं पंचवर्षीय योजना के कार्यों को पूरा क
रूप से भाग लेने वालों को एक स्थान पर एकत्रित किया। यहाँ
उपलब्धियों का लेखा-जोखा करने के अलावा उन्होंने सोवियत संघ
विकास के मुख्य दिशानिर्देशों की पड़ताल की और उन्हें स्वीकृति
कांग्रेस ने ब्रेजनेव की विश्वास से भरी वाणी को सुना। अ
नीति का, सोवियत संघ में कम्युनिस्ट निर्माण के समकालीन

परंतु नीति का तथा इसकी विविधमुखी गतिविधियों के सभी क्षेत्रों का विस्तार किया।

ब्रेजनेव ने कांग्रेस को सूचित किया कि कम्युनिस्ट के भौतिक तथा तकनीकी आधारों के मजबूत में तथा जनता की गृहमाली में सुधार की दिशा में प्रमुख प्रगति की जा चुकी है। पंचवर्षीय योजना का मुख्य परिणाम यह रहा कि सोवियत जनता के धन तथा पार्टी की सामंजस्य एवं सगठनात्मक गतिविधि ने स्थायी आर्थिक अभिवृद्धि, सामाजिक-आर्थिक समस्याओं की पूर्ति तथा सोवियत जनता के रहन-सहन के स्तर में और अधिक वृद्धि को सुनिश्चित किया है।

ब्रेजनेव ने कहा कि औद्योगिक उत्पादन, पूंजीगत निवेश तथा रहन-सहन के स्तर में वृद्धि के लिए राज्य-विनियोजन में वृद्धि पिछली दशकों की पंचवर्षीय अवधि से कहीं अधिक रही है।

उन्होंने अत्यन्त सूक्ष्म दृष्टि से कम्युनिस्ट पार्टी की आर्थिक रणनीति का, 1976-80 के लिए आर्थिक विकास के मुख्य दिशानिर्देशों का तथा इसके माध्यम से 1990 तक की आर्थिक सम्भावनाओं का विस्तार किया। उन्होंने कांग्रेस को बताया कि अनुमानों के अनुसार 1976 से 1990 की अवधि में देश के भौतिक व वित्तीय समाधान पूर्वगामी 15 वर्षों की तुलना में लगभग दुगुने हो जायेंगे।

ब्रेजनेव ने 1976-80 की कार्यकुशलता व गुणवत्ता के पाँच वर्षों की सश्रुति दी। यह धर्म-उत्पादकता में तीव्र वृद्धि तथा सम्पूर्ण सामाजिक उत्पादन की कार्य-कुशलता में तीव्र वृद्धि की अवधि होगी। उन्होंने कहा, "हम गुणवत्ता की समस्या की व्याख्या अत्यन्त व्यापक रूप से करते हैं। इसमें आर्थिक कार्य के सभी पहलू शामिल हैं। उच्च गुणवत्ता का अर्थ है धर्म तथा भौतिक समाधानों की रक्षित, निर्धारित सामर्थ्य में वृद्धि और दीर्घकाल में समाज की आवश्यकताओं की ओर बेहतर ढंग में तथा पूर्णतर सन्तुष्टि।"

कम्युनिस्ट पार्टी की 25वीं कांग्रेस ने अनेक नये क्षेत्रों के आर्थिक विकास का प्रावधान किया। मिसाल के तौर पर, विकास कार्य को, विशेष रूप से पश्चिम साइबेरियाई समुच्चय के विकास-कार्य को जारी रखा है। दीर्घकाल में यह सोवियत संघ के तेल व प्राकृतिक गैस उत्पादन के लगभग आधे का तथा निरपेक्ष रबर और प्लास्टिक उत्पादों के बड़े भाग का उत्पादन करेगा।

पूर्व साइबेरिया की उत्पादक शक्तियों के विकास में बुनियादी तौर से नये धरण का उद्घाटन करने की योजना है। अकेले सायान समुच्चय में, जिसे विश्व के विघातलु सायानो-गुनेन्सकाया पनबिजलीघर में बिजली प्राप्त होगी, धातुर्धन और इकोनोमरी उद्योग में विनिष्पत्ति प्राप्त अनेक औद्योगिक केंद्र शामिल होंगे।

25वाँ कांग्रेस में जिन भव्य योजनाओं पर विचार-विमर्श किया गया उनमें से चन्द एक ये हैं। बेंबनेव ने कहा : "हमारे सामने महान और कठिन कार्य उपस्थित है। लेकिन हममें कोई सन्देह नहीं कि हमारी पाटों और हमारी जनता हमको सम्मानपूर्वक पूरा करेगी और विश्व में प्रथम कम्युनिस्ट समाज के निर्माण के इतिहास में नया प्रभावगानो पृष्ठ जोड़ेगी।" सोवियत समाज, सम्पूर्ण सोवियत जनता को गमस्त नसितपी कम्युनिज्म के भौतिक इतकनीको आधारों के मूखन में और प्रगति को ओर अभिमुख है।

25वाँ कांग्रेस द्वारा निर्धारित योजनाओं के प्रथम परिणामों का सदर्थ देते हुए बेंबनेव ने कहा, "पचवर्षीय योजना को गुरुभात भण्ठी हुई है।"

देश की पालू पचवर्षीय योजना—दसवीं पचवर्षीय योजना होने के कारण बेंबनेव ने इसे प्रयत्नी योजना कहा है—के प्रथम वर्ष में ही उद्योग ने योजना के निर्धारित लक्ष्यों में ऊपर भरबां-ऊपरबो खूबन मून्य का उत्पादन किया है। 22 करोड़ टन की रिकार्ड गुल्ता फूमल प्राप्ति की गयी।

नये औद्योगिक समुच्चयों, कारखानों, रेल-मार्गों तथा तेज-गोदमनाइनों का विनाश निर्माण-कार्य चालू रहा।

पृष्ठ 126 पर प्रकाशित मानचित्र पर इष्टि हमिए।

(नयी निर्माण परियोजनाओं का यह मानचित्र प्रारम्भ के 2 जनवरी, 1977 के अंक में प्रकाशित हुआ था।)

हममें केवल अत्यन्त महत्वपूर्ण परियोजनाओं को ही दर्शाया गया है। हम यहाँ यह भी पतला दें कि हममें केवल विनाशलय परियोजनाओं में से कुछ एक के लिए ही स्थान था। पचवर्षीय योजना अवधि के अन्त तक सोवियत मण के मानचित्र पर (विविध परियोजनाओं को बताने वाले) अनेक नये सर्वेक्ष प्रकट होंगे।

देश के विकास के लिए, नये कम्युनिस्ट समाज के निर्माण के लिए प्रभावी योजनाओं को साधारण जनता—मजदूरों, स्त्रियों, बुद्धिजीवियों—आग काया-न्यत्र किया जाता है तथा ये इस कार्य को स्वाभाविक मिशन तथा जीवन योजना का कार्य समझते हुए उद्देग्यपूर्ण ढंग में पूरा कर रहे हैं। बेंबनेव ने इन पर अपने गर्व को चर्चा की। उन्होंने कहा, "हमें परम्पर एक-दूसरे से मिलाने वाले लगातार बोलते जा रहे हैं दिन, दैनिक कार्यक्रम, रोडमार्ग का कार्य—और हम सभी इस कार्य में मगे हैं—हमें बसमर ही अपने गिदे हो रहे कार्य के महत्व और आशय की पूरी तरह मराहना करने में रोकता है। नये कारखानों को चालू करने का नयी रिहायशी बस्तियों को बनाने की जो बात हो गया, अब तो अन्तर्निष्ठ उद्देश्य भी प्रचलित और साधारण तो बात हो गयी है। सम्भरत, ऐसा ही होना भी

चाहिए। सापियो, निस्सन्देह बात भी ऐसी ही है। प्रतिदिन सुबह लाखों लोग अपने एक और तथा अत्यधिक साधारण कार्य-दिवस की शुरुआत करते हैं। वे अपने-अपने कार्यस्थलों पर काम करने की जगहों पर बैठते हैं, खानों में नीचे जाते हैं, छेतों पर काम करने जाते हैं, खुदवीनों, अभिकलनों तथा मानचित्रों पर झुके रहते हैं। वे निश्चय ही अपने कार्य की महानता के बारे में नहीं सोचते। लेकिन पार्टी द्वारा निर्धारित योजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए वे ही, अन्य कोई नहीं, सोवियत संघ की प्रगति के नये तथा नित्य ही उच्चतर शिखर पर ले जा रहे हैं। और अपने युग को महान उपलब्धियों के युग की संज्ञा देते हुए हम इन उपलब्धियों को सम्भव बनाने वालों का अभिनन्दन करते हैं। हम मेहनतकश जन का अभिनन्दन करते हैं।”

सब कुछ मनुष्य के कल्याण के लिए

जनता के भौतिक तथा सांस्कृतिक स्तर में हुए परिवर्तनों का उल्लेख किये बिना 60 वर्षों में सोवियत समाज द्वारा की गयी सामाजिक प्रगति का पूर्ण विवरण दे पाना असम्भव है।

ब्रेजनेव ने कहा : “मेहनतकश जन के लिए श्रम, अध्ययन, विश्राम, विकास तथा उसकी योग्यताओं के यथासम्भव श्रेष्ठ इस्तेमाल के लिए अत्यन्त अनुकूल परिस्थितियों का सृजन करना उस नीति का प्रमुख उद्देश्य और अर्थ है जिसे हमारी पार्टी निरन्तर अपना रही है।” सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी का सर्वोच्च लक्ष्य जनता की भौतिक और सांस्कृतिक आवश्यकताओं की अधिकतम सन्तुष्टि सुनिश्चित बनाना है। और सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यक्रम में लिखित यह वाक्य “सब कुछ मनुष्य के लिए, मनुष्य के लाभ के लिए” उचित ही हमारे देश में एक नारा बन गया है।

लाखों-करोड़ों सोवियत जन ने अपने साहसपूर्ण इतिहास में अनेक वर्षों तक समझ-बूझ के साथ कठिनाइयों तथा अभाव का सामना किया; वे मात्र जरूरत की वस्तुओं से ही सन्तुष्ट रहे और उन्होंने स्वयं को विशेष सुविधाएँ मांगने का अधिकारी नहीं समझा। अब स्थिति बुनियादी रूप से बदल चुकी है।

देश की सतत् आर्थिक-वृद्धि ने सोवियत जनता के कल्याण में संवर्द्धन के लिए, कार्य व रहन-सहन सम्बन्धी उनकी परिस्थितियों में सुधार करते हुए, स्वास्थ्य-रक्षा, शिक्षा व संस्कृति में, नये मानव को ढालने में, व्यक्तित्व के चहुँमुखी विकास तथा जीवन की समाजवादी पद्धति की परिशुद्धता में सहायक प्रत्येक चीज में सुधार के द्वारा नये अवसरों का सृजन किया है।

सोवियत यथार्थ की यह एक उल्लेखनीय विगिष्टता है कि सोवियत मप में बेरोजगारी नहीं है। अन्तिम बेरोजगार को चौथे दशक के शुरू में ही काम मिल गया था। तब में सोवियत जन रोजगार कार्यालयों को पूरी तरह से भूल चुके हैं। उनका भविष्य में विश्वास है तथा वे जानते हैं कि मविधान में अस्ति काम पाने का अधिकार वास्तविकता है।

सोवियत समाज में विनोय रूप से पिछले दशक में हुए विकाश के परिणाम, प्रदर्शित करते हैं कि जनता के कल्याण को और अधिक उच्चतर स्तर तक समुन्नत बनाने से लक्षित इस नीति को किंग प्रकार वास्तविक रूप प्रदान किया गया है। वास्तविक आमदनी—अर्थात् जनता के लिए भौतिक साधों व सेवाओं का कुल योग—में वृद्धि इस क्षेत्र में प्रगति का सामान्य सूचक है। 1961 में 1975 तक के 15 वर्षों में प्रति व्यक्ति वास्तविक आय लगभग दोगुनी हो गयी है। ग्रैंडनेव ने 25वीं कांग्रेस में इस बात का उल्लेख किया और गर्वपूर्वक कहा कि यह आंकड़े जनता के जीवन के स्तर व मैनी में बुनियादी परिवर्तन को परिनिहित करते हैं और यह उनकी गुणहासी में फ़ाति के समान है।

पेंशन में तेजी से वृद्धि प्रत्येक परिवार की वास्तविक आय में वृद्धि में अम-दान करने वाला अत्यन्त महत्वपूर्ण कारक है, जो समाजवाद के अन्तर्गत लाभ का मुख्य स्रोत है। इस अवधि में औद्योगिक तथा आक्रिस कर्मचारियों के औसत पेंशन में लगभग शत-प्रतिशत तथा सामूहिक किसानों के पारिश्रमिक में 200 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि हुई। मिसाल के तौर पर, यह उल्लेखनीय है कि विनोय उद्योगों के परिणामस्वरूप 1971 से 1975 को अवधि में 7 करोड़ 50 लाख औद्योगिक व आक्रिस कर्मियों की आमदनी में वृद्धि हुई।

बुनियादी उपभोक्ता सामग्री की कीमतें स्थायी बनी हुई हैं। पिछली पच-वर्षीय अवधि में भी ऐसा ही था और पचास पचवर्षीय अवधि में भी ऐसा ही रहेगा। राजकीय दुकानों में दबल रोटी, मांस, दूध, आलू तथा अन्य दूसरे माद्य-उत्पादों की कीमतें वही हैं जो 10 वर्ष पहले थीं।

बिजली तथा गैस की दरों में तथा सब्जें, द्राग चार व दुर्नीय वग के किरायों में लगभग 30 वर्षों से कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। पेंशन-वृद्धि के अलावा सामाजिक भरण-पोषण कोष से बीमारी और निजु-जन्य की रियाज में भत्तों के भुगतान में तेजी से वृद्धि हुई है और विभिन्न प्रकार की पेंशनों में भी कांजी वृद्धि हुई है। वृद्धावस्था पेंशन व्यवस्था सोवियत मप में मार्खेत्रिक बन गयी है। 1961 में केवल 54 लाख व्यक्तियों की वृद्धावस्था पेंशन दी जाती थी, 1977 में यह संख्या बढ़कर 3 करोड़ हो गयी। और इसमें व्यवहायंतः पेंशन आनु प्राण

करने वाले सभी अनुभवों मेहनतकश शामिल हैं। (प्रसंगवश, सोवियत संघ में पेंशन-आयु महिलाओं के लिए 55 वर्ष तथा पुरुषों के लिए 60 वर्ष है जो बहुत-से दूसरे देशों की अपेक्षा कहीं कम है)। 1961 से 1977 तक समस्त श्रेणियों के पेंशन भोगियों की कुल संख्या में दोगुने से अधिक की, दो करोड़ बीस लाख से बढ़कर चार करोड़ साठ लाख की, वृद्धि हुई।

सोवियत जनता की नक़द आमदनी में वृद्धि के महत्व को देखने के लिए इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि 7वें व 8वें दशक में राज्य की खुदरा क्रोमतों के सूचकांक में एक या दो प्रतिशत से अधिक की वृद्धि नहीं हुई। यह सर्वविदित है कि सोवियत संघ में सभी को निःशुल्क चिकित्सा-सुविधा प्राप्त है। कम्युनिस्ट पार्टी (जैसा कि 25वीं कांग्रेस के दौरान बल देकर कहा गया) इस बात को ध्यान में रखती है कि "सोवियत जनता के स्वास्थ्य के प्रति चिन्ता से अधिक महत्वपूर्ण अन्य कोई सामाजिक कार्य नहीं है।" स्वास्थ्य-रक्षा के गतिशील विकास के अत्यधिक उल्लेखनीय सूचकांकों में से एक है इसके भौतिक व संगठनात्मक आधार तथा सर्वोपरि डॉक्टरों तथा उनकी देखभाल के अधीन जनसंख्या की संख्या में वृद्धि। अन्तिम युद्धपूर्व दशक में चिकित्सकों की संख्या में औसतन प्रति-वर्ष 10 हजार की, 1951 से 1960 की अवधि में 17 हजार की तथा पिछले दशक में औसतन 28 हजार वार्षिक की वृद्धि हुई। चिकित्सकों की संख्या में क्रमिक वृद्धि के कारण सार्वजनिक स्वास्थ्य-सेवा में यथेष्ट सुधार कर पाना सम्भव हुआ है। छठे दशक के शुरू में औसतन 650 से 700 व्यक्तियों पर एक डॉक्टर था। दस वर्षों बाद यह संख्या घटकर 500 हो गयी और अब लगभग 300 व्यक्तियों पर एक चिकित्सक है।

अत्याधुनिक चिकित्सा-उपकरणों के विकास तथा व्यापक इस्तेमाल, दीर्घ-कालिक उपचार पाठ्यक्रमों, तथा नये और अधिक जटिल रोगों के प्रकट होने के कारण उपचार पर आने वाले व्यय में तेज़ी से होती हुई वृद्धि को देखते हुए निःशुल्क स्वास्थ्य-सेवा समाज के जीवन में विशेष रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

सोवियत संघ में सोवियत सत्ता की स्थापना के बाद से मौजूद निःशुल्क शिक्षा-प्रणाली के महत्व का अधिमूल्यांकन करना कठिन है। विकसित समाजवाद की परिस्थितियों के अन्तर्गत इसने अभूतपूर्व स्तर अर्जित कर लिया है। चौथे दशक में सार्वत्रिक निःशुल्क प्राथमरी शिक्षा का, छठे दशक में पूर्ण माध्यमिक शिक्षा का प्रचलन किया गया और सम्प्रति सोवियत संघ सार्वत्रिक माध्यमिक शिक्षा में संक्रमण-कार्य पूरा कर चुका है। व्यवहार्यतः, 6 वर्ष से 17

वर्ष की आयु के सभी बच्चे सामान्य स्कूलों, माध्यमिक व्यावसायिक व तकनीकी स्कूलों, तकनीकी विद्यालयों इत्यादि में किसी-न-किसी रूप में माध्यमिक शिक्षा पाते हैं।

सोवियत जन को सामाजिक व सांस्कृतिक सेवाएँ नि मुक्त या पटी दरों पर प्राप्त हैं। इनके अलावा उन्हें अनेक अत्यन्त महत्वपूर्ण भौतिक लाभ प्राप्त होते हैं। जनता की चुनहानी को बढ़ाने वाली ऐसी सुविधाएँ, विंगेय रूप में अत्यधिक जटिल सामाजिक समस्याओं में से एक आवास की समस्या का समाधान करने में, व्यापक भूमिका निभाती है।

हमारे देश में पूंजीवाद से विरासत में मिली आवास समस्या चौथे दशक में शुरू हुए तीव्र नगरीकरण के कारण और अधिक जटिल हो गयी है और मुद्र-कालीन विनाश के परिणामस्वरूप हमने पाँचवें दशक में गम्भीर रूप धारण कर लिया।

छठे दशक से सातवें दशक तक सोवियत समाज ने आवास-समस्या को हल करने के लिए प्रचुर प्रयास किये। 1956 में 1976 की अवधि में, राज्य और इसके साथ-ही-साथ जनता ने राज्य-अनुदानों व ऋणों की सहायता में 4 करोड़ 70 लाख से अधिक परों (अपाटमेंटों व कटिजों) का निर्माण किया। इस निर्माण-कार्य के आयाम से परिचित होने के लिए यह ध्यान में रखना चाहिए कि सोवियत संघ में लगभग 6 करोड़ परिवार रहते हैं।

यह बात भी ध्यान में रखनी चाहिए कि सोवियत संघ में आवास-निर्माण को मुख्य रूप से राज्य द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त होती है और यहाँ पर किराये भी बहुत कम है। में वास्तव में अन्य किसी भी दूसरे देश की अपेक्षा बहुत कम है और पारिवारिक बजट का औसतन एक प्रतिगत या बिजली, जल इत्यादि के मुक्त सहित लगभग 4 प्रतिगत हीत है।

चेखनेव ने इस तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए कहा "सोवियत संघ में किराये 1928 से अपरिवर्तित रहे हुए हैं, यद्यपि इस अवधि में औद्योगिक तथा आक्रिप्त कर्मचारियों के वेतन में कई गुना वृद्धि हुई है और आवास की गुणवत्ता में भारी सुधार हुआ है। किराया तथा सेवा-मुक्तों में वास्तविक लागत का एक-तिहाई भी पूरा नहीं पड़ता। इसलिये राज्य आवास व सुविधा सेवाओं के निद लगभग 5 अरब रूबल वार्षिक का बिलियोजन करता है। और यह व्यवस्था बर्तते रहेगी।"

आवास-निर्माण के इस विनाश आन्दोलन तथा मकानों के सामाजिक व व्यापक वितरण से इस बात पर विचार करना उचित है कि निम्न

आवास-समस्या को पूरी तरह हल कर लिया जायेगा।

राज्य आवास-कोष का, जिसमें अधिकांश नव-निर्मित मकान शामिल हैं, बिनरग व्यावहारिक रूप से निःशुल्क किया जाता है तथा इसके रख-रखाव के लिए पटो दरों पर किरायों से धन की व्यवस्था की जाती है जिससे वास्तविक लागत के एक-तिहाई से अधिक की पूर्ति होती है, जबकि शेष धन की व्यवस्था राज्य द्वारा की जाती है। इस व्यवस्था से जनसंख्या के सभी वर्गों को सुविधा-जनक मकान उपलब्ध करना संभव होता है। यह उल्लेखनीय है कि पिछले दो दशकों में लगभग 23 करोड़ जन—अर्थात् जनसंख्या का अधिकांश भाग—या तो नये मकानों में स्थानांतरित हुए हैं यह उन्होंने पुराने मकानों में ही अतिरिक्त स्थान प्राप्त कर लिया है।

प्रति एक हजार आवासी पर निर्मित मकानों की संख्या की दृष्टि से सोवियत संघ का विश्व में प्रथम स्थान है।

पिछली पंचवर्षीय योजना अवधि में 5 करोड़ 60 लाख सोवियत जन ने अपनी आवासीय परिस्थितियों में सुधार किया।

ब्रेज्नेव ने कहा : “आगामी पंचवर्षीय अवधि के लिए 55 करोड़ वर्ग मीटर आवास क्षेत्र के निर्माण का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इसका अर्थ है कि लगभग 1 करोड़ या 1 करोड़ 10 लाख व्यक्ति प्रतिवर्ष नये मकानों में रहने लगेंगे। यह प्रगति कुछ कम नहीं है। इसके साथ ही आवास-व्यवस्था में सुधार होना जारी रहेगा, अर्थात् मकानों की क्वालिटी, उनके ले आउट और क्रिनिशिंग बेहतर होंगी।

सोवियत समाज का सम्पूर्ण इतिहास जनता के रहन-सहन के स्तर में निरंतर वृद्धि को प्रमाणित करता है। ब्रेज्नेव का कथन है, फिर भी देश के इतिहास में 9वीं पंचवर्षीय योजना अवधि में कार्यान्वित सामाजिक कार्यक्रम के समतुल्य अन्य कोई कार्यक्रम नहीं है।

उन्होंने कहा, “हमने अभी तक कम्युनिज्म अर्जित नहीं किया है। लेकिन सम्पूर्ण विश्व यह देख रहा है कि हमारी पाटों की गतिविधियाँ तथा इसकी आकांक्षाओं का लक्ष्य मनुष्य के लाभ के लिए, मनुष्य के लिए आवश्यक सब कुछ करना ही है। यह पाटों का ऐसा सर्वोच्च और मानवीय लक्ष्य है, जो जनता के साथ इसका सम्बन्ध जोड़ता है। इसके तथा समस्त सोवियत जनता के बीच रूढ़ एवं अटूट सम्बन्धों का नृजन करता है।”

इस स्थान पर पश्चिमी जर्मन पत्रिका फ्रांक्फुर्टर हेफ्टे (अंक 10, 1976) में त्रिज्यापॉइंट विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर हान्स आपेल द्वारा लिखे गये “सोवियत

रहन-सहन का स्तर : गुप्त मतदान के परिणाम" गोपंक लेख में व्यक्त विचारों का उल्लेख करना दिलचस्प होगा। लेखक ने लिखा है कि उन्होंने गोविन्द सभ के भिन्न भागों में 203 "अचानक भिन्न गये गोविन्द व्यक्तियों में" बातचीत करने पर मत-प्रतिमत रूप में यह पाया कि वे पिछले दशक में अपने जीवन में हुए परिवर्तनों से पूरी तरह सन्तुष्ट हैं। उन्होंने बल देकर कहा है कि इन समय पश्चिमी जगत् में प्रचारित गोविन्द जनता के जीवन के बारे में तुलनात्मक आँकड़े पुराने पड़ चुके हैं तथा उन्होंने इस बात के कई उदाहरण दिये हैं कि पश्चिमी जगत् में जनमत को किम प्रकार गुमराह निचा जा रहा है।

वैदेशिक आर्थिक सम्बन्धों का विकास

प्रमुख आर्थिक उद्देश्यों में से एक—वैदेशिक आर्थिक सम्बन्धों का उन्नयन—अधिकाधिक महत्व ग्रहण कर रहा है। यह हमारे अर्थतन्त्र की तीव्र वृद्धि का, विश्व में हो रहे दूरगामी परिवर्तनों का, शांति व तनाव-नीपित्व की नीति की सफलता का प्रत्यक्ष परिणाम है। बेजानेब इन सम्बन्धों को महान महत्व देते हैं। उन्होंने कहा, "हम विदेशी आर्थिक सम्बन्धों को राजनीतिक व आर्थिक कार्यों पर कार्यान्वयन में प्रभावी सहायता के रूप में समझते हैं। समाजवादी देशों के समुदाय की शक्ति और एकता आर्थिक एकीकरण के माध्यम से सुदृढ़तर होती जा रही है। विकासशील देशों के साथ सहयोग प्रगतिशील सिद्धांतों पर उनके अर्थतन्त्र व सामाजिक जीवन के पुनर्निर्माण में सहायक हो रहा है। अन्त में, पूँजीवादी देशों के साथ आर्थिक, वैज्ञानिक व तकनीकी सम्बन्ध शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की नीति के भौतिक आधार का सुदृढ़ीकरण और विस्तार कर रहे हैं।

"हमारे देशों की तरह हम वैदेशिक आर्थिक सम्बन्धों के लाभों का प्रयोग आर्थिक लक्ष्यों की सफलतापूर्वक पूर्ति करने के लिए व समय की बचत करने के लिए, उत्पादन-कार्य-कुशलता को बढ़ाने के लिए तथा वैज्ञानिक व तकनीकी प्रगति को तेज करने के लिए अतिरिक्त सम्भावनाओं को बढ़ाने के लिए करने का प्रयत्न करते हैं।"

इस समय 115 देश गोविन्द सभ के साथ व्यापार करते हैं। इसके विदेश-व्यापार टर्नओवर में तेजी में वृद्धि हो रही है 1960 में यह 10.1 अरब डालर और 1975 में 51 अरब डालर थी। दसवीं पंचवर्षीय अवधि—1976 से 1980 तक—में वैदेशिक आर्थिक सम्बन्धों का और अधिक विस्तार होगा। बेजानेब ने कहा कि "ऐसी योजना है कि समाजवादी देशों के साथ व्यापार में 41 प्रतिशत की तथा औद्योगिक पूँजीवादी देशों के साथ 31 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि होगी।"

अनेके औद्योगिक पूंजीवादी देश सोवियत संघ से हजारों मशीन औजार व ट्रैक्टर, लाखों कारें, लाखों टन कोयला, लाखों कैमरे और रेडियो सेट खरीदते हैं। अमरीका और फ्रेडरल जर्मनी के साथ सौदा सम्पन्न करने में असमर्थ रहने के बाद फ्रांस के लिए सोवियत संघ से सुपर हेवी इयूटी स्टाम्पिंग प्रेस खरीदना; कनाडा-वासियों के लिए सोवियत संघ-निर्मित टर्बाइन्, मशीन औजार व ट्रैक्टर खरीदना; अमरीकियों के लिए कम्प्यूटरों के पुर्जे खरीदना आदि लाभप्रद साबित हुआ।

ब्रेजनेव ने वैदेशिक आर्थिक सम्बन्धों के नये स्वरूपों के उन्नयन के महत्व पर बल दिया और कहा कि इनसे "हमारी सम्भावनाएँ विस्तृत होती हैं और नियन्त्रित: इनसे महत्तम प्रभाव पड़ता है। मेरे मस्तिष्क में अन्य बातों के अलावा क्षतिपूर्ति के आधार पर किये गये समझौते भी हैं, जिनके अन्तर्गत विदेशी फ़र्मों के साथ सहयोग से नये उद्यमों का निर्माण हुआ और जो पूरी तरह हमारे राज्य के स्वामित्व में हैं। हमें ऋण प्रदान किये जाते हैं, उपकरण व लाइसेंस प्रदान किये जाते हैं और हम इसके लिए इन तथा दूसरे उद्यमों के उत्पादनों के माध्यम से भुगतान करते हैं। फ़िलहाल इस प्रकार के समझौते प्रमुख सामग्री तथा अर्द्ध-तैयार उत्पादों का उत्पादन करने वाले उद्यमों से सम्बन्धित हैं। लेकिन सम्भवतः, अब समय आ गया है जब हमें इनके कार्य-क्षेत्र का विस्तार करना चाहिए जिससे कि इनमें निर्माण-उद्योग को भी शामिल किया जा सके तथा उत्पादन में सहयोग की नयी दिशाओं को खोजा जा सके।"

विश्व शांति के लिए कार्य

मानवशांति के इतिहास में किसी भी प्रतिनिधिमूलक मंच पर शांति के लिए इतने अधिक कार्यकर्ता एक साथ कभी एकत्रित नहीं हुए जिन्होंने कि अक्टूबर 1973 में मास्को में आयोजित सम्मेलन में हुए थे। इसमें आठ प्रतिनिधियों ने मानवशांति के बहुमत का—124 देशों तथा समस्त महाद्वीपों के मेहनतकश जन, धार्मिक समूहों, विज्ञान जगत, राजनीतिक जगत, महिलाओं व तर्कों का प्रतिनिधित्व किया। यह सम्मेलन अपने आयाम की दृष्टि से अप्रत्यूष था।

तीन हजार प्रतिनिधियों ने उस ध्वज के आगमन पर खड़े होकर करतल-ध्वनि से स्वागत किया, जो विनाम कमलिन काप्रेस प्रसाद के मंच में उठकर बकतामच पर आया।

उनके कोट के सपेस (सौट) पर लेनिन शांति पुरस्कार विजेता का मुनहरा बैज धमधमा रहा था, जिससे उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को सामान्य बनाने में तथा नीति-प्रवाह को तनाव निषिद्ध और विश्व-शांति की ओर परिवर्तित करने में उनकी महती भूमिका के लिए चंद महीनों पहले विभूषित किया गया था।

1973 के अक्टूबर माह के उस दिन शांति-शक्तियों के विश्व सम्पाप में हुई करतल ध्वनि शांति के प्रबल इच्छुक तथा मुठ में घुसा करने वाले सद्भावनापूर्ण समस्त जन के प्रति उनकी मेधाओं की प्राधारोक्ति थी।

थोताओं में 49 समाजवादी व सामाजिक लोकतांत्रिक पार्टियों के और 58 राष्ट्रीय लोकतांत्रिक तथा आधिकारी लोकतांत्रिक पार्टियों तथा आन्दोलनों के

अनेक औद्योगिक वृत्तियाँ देश सोवियत संघ में हजारों मशीन औजार व ट्रेक्टर, लाखों कारें, लाखों टन कोयला, लाखों कैमरे और रेडियो सेट पुरी देने हैं। अमरीका और फ्रेडरन जर्मनी के साथ मोश सम्मान करने में असमर्थ रहने के बाद काम के लिए सोवियत संघ में सुपर हेवी इयूटी स्टाम्पिंग प्रेस पुरी देना; कनाडा-वागियों के लिए सोवियत संघ-निर्मित टर्बाइनों, मशीन औजार व ट्रेक्टर पुरी देना; अमरीकियों के लिए कम्प्यूटरों के पुरे पुरी देना आदि साभकद साधन मुआ।

प्रेसनेव ने पेरनिक आर्थिक सम्बन्धों के नये स्वरूपों के उन्मयन के सह्य पर बल दिया और कहा कि इनमें "हमारी सम्भावनाएँ विस्तृत होंगी हैं और नियमतः इनमें सह्य प्रभाव पड़ता है। मेरे मस्तिष्क में अन्य बातों के अनायास प्रतिपत्ति के आधार पर किये गये समझने भी हैं, जिनके अन्तर्गत विदेशी कर्मों के साथ सहयोग से नये उद्यमों का निर्माण हुआ और जो पूरी तरह हमारे राज्य के स्वामित्व में हैं। हमें कृप प्रदान किये जाते हैं, उपकरण व साइमेंस प्रदान किये जाते हैं और हम इनके लिए इन तथा दूसरे उद्यमों के उत्पादनों के माध्यम से भुगतान करते हैं। क्लिष्टज्ञ इन प्रकार के समझने प्रमुदा मानवी तथा अहं-संसार उत्पादों का उत्पादन करने वाले उद्यमों से सम्बन्धित हैं। लेकिन सम्भवतः, अब समय आ गया है अब हमें इनके कार्य-क्षेत्र का विस्तार करना चाहिए, जिनमें कि इनमें निर्माण-उद्योग को भी शामिल किया जा सके तथा उत्पादन में सहयोग की नयी दिशाओं को खोजा जा सके।"

विश्व शांति के लिए कार्य

मानवशांति के इतिहास में किसी भी प्रतिनिधिमूलक मंच पर शांति के लिए इतने अधिक कार्यकर्ता एक साथ कभी एकत्रित नहीं हुए जिन्होंने कि अक्टूबर 1973 में मास्को में आयोजित सम्मेलन में हुए थे। इसमें आठ प्रतिनिधियों ने मानवशांति के बहुमत का—124 देशों तथा समस्त महाद्वीपों के मेहनतकश जन, धार्मिक समूहों, विज्ञान जगत, राजनीतिक जगत, महिलाओं व तहनों का प्रतिनिधित्व किया। यह सम्मेलन अपने आयाम की दृष्टि से अभूतपूर्व था।

तीन हज़ार प्रतिनिधियों ने उस स्थिति के आगमन पर लड़े होकर करतल-ध्वनि से स्वागत किया, जो विनास फ़ेमलिन काप्रेस प्रासाद के मंच में उठकर बकतामंच पर आया।

उनके कोट के सपेस (सौट) पर सेनिन शांति पुरस्कार बिजेता का गुनहारा बैज चमकमा रहा था, जिससे उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को सामान्य बनाने में तथा नीति-प्रवाह को तनाव गैरस्थ और विश्व-शांति की ओर परिवर्तित करने में उनकी महती भूमिका के लिए खंड महीनों पहले विमूचित किया गया था।

1973 के अक्टूबर माह के उस दिन शांति-वास्तियों के विश्व समागम में हुई करतल ध्वनि शांति के प्रबल दृष्टिक तथा युद्ध से धृणा करने वाले सद्भावनापूर्ण तमस्त जन के प्रति उनकी संवाकों की आभारोक्ति थी।

श्रोताओं में 49 समाजवादी व सामाजिक सोकतात्रिक पार्टियों के और 58 राष्ट्रीय सोकतात्रिक तथा क्रान्तिकारी सोकतात्रिक पार्टियों तथा आन्दोलनों के

प्रतिनिधि, 74 क्रिश्चियन-डेमोक्रेटिक, उदारवादी, कृषि तथा दूसरी पार्टियों के सदस्य और अनेक गांति-प्रेमी एवं धनवित्तस्थियों के संगठनों के सदस्य तथा व्यापारिक एवं व्यावसायिक समूहों के प्रतिनिधि शामिल थे। लगभग एक-चौथाई प्रतिनिधि कम्युनिस्ट थे।

श्रोताओं में 233 संसद सदस्य, 308 विभिन्न ट्रेड यूनियनों के प्रतिनिधि, 84 महिलाओं व 104 गुप्ता संगठनों के प्रतिनिधि शामिल थे, जो जानों-करोड़ों व्यक्तियों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे।

ब्रेजनेव के भाषण के बीच-बीच में अनेक बार करतल-ध्वनि हुई। कुछ समय बाद प्रख्यात कैथोलिक प्रोफेसर, बिष्पना विश्वविद्यालय के धर्मशास्त्र विभाग के प्रोफेसर लुडोल्फ वाइजर ने कहा, "मेरी रष्ट्र में सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महासचिव नियोनिद ब्रेजनेव द्वारा इस कांग्रेस में दिया गया महत्वपूर्ण भाषण उन मुद्दों की स्पष्ट रूप से व्याख्या करता है जिन पर भिन्न-भिन्न रष्ट्रफौज रखने वाले समूहों के बीच संवाद संभव है।"

ब्रेजनेव ने कहा कि कई सदियों से जनता युद्ध की निन्दा अतथक रूप से करती चली आ रही है। देशों ने स्वायत्त गांति की कामना की है लेकिन इन सबके बावजूद मानव इतिहास के प्रत्येक पृष्ठ पर बड़े और छोटे सशस्त्र संघर्षों की भयावह कोपरष्टि परिलक्षित होती है।

अब गांति-शक्तियों के प्रयासों की कृपा के फलस्वरूप अन्तर्राष्ट्रीय यातावरण स्वस्थतर हुआ है तथा गांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग की नीति के ठोस परिणाम निकल रहे हैं।

ब्रेजनेव ने बल देकर कहा कि यह तो मात्र शुरुआत है। श्रोताओं ने तनाव-शैथिल्य का न्यायी, टिकाऊ और इसने भी अधिक, अपरिवर्त्य प्रक्रिया बनाने की उनकी अपील का उत्साहपूर्वक स्वागत किया।

तनाव-शैथिल्य के मौजूदा स्तर को अंजित करने के लिए भी काफी प्रयास की आवश्यकता पड़ी और इसके लिए बहुत बड़ा श्रेय ब्रेजनेव को जाता है। ये राष्ट्रों के बीच गांति के मुरझीकरण तथा न्यायपूर्ण व जनवादी गांति को सुनिश्चित बनाने की नीति—सोवियत राज्य द्वारा अपने अस्तित्व के प्रथम वर्षों में ही निर्धारित की गयी नीति—को व्यावहारिक रूप प्रदान कर रहे हैं।

1. ऐतिहासिक अनुभव के आधार पर

गांति—सभी युगों में कितना शुभ शब्द रहा है। लेकिन इतिहास में व्यावहारिक रूप से ऐसी कोई भी अवधि ज्ञात नहीं जबकि बन्दूकें धामोदा पड़ी हों और

विश्व के किंगो-न-किमी कोने में निर्दोष लोगों का रक्त न बहाया गया हो।

7 नवम्बर, 1922 को, अक्टूबर शांति की 5वीं जयन्ती के अवसर पर, जो सोवियत जनतंत्र का पहला शान्तिपूर्ण वर्ष था, समाचारपत्र इस्तेस्तिषा ने उन समय एक किंगो और बाद में अत्यन्त प्रमुख सोवियत व्यंग्य-चित्रकार बोस्मि पेक्रिमोव का रेमाचित्र प्रकाशित किया। यह एक राजगीर का नये समाज की आधारशिला की ईंटों की परत बिछाते हुए, पूरे आकार का चित्र था, जिसकी पताका पर निम्न शब्द अंकित थे "शांति एवं समान राष्ट्रों का बहुत्व"। पहली ईंट 1918 का, दूसरी 1919 का, तीसरी 1920 का, चौथी 1921 का तथा पाचवां (जो अभी मज़दूर के हाथ में ही थी) 1922 का प्रतिनिधित्व कर रही थी।

हाथ में करनी নিয়ে राजगीर—शान्तिपूर्ण निर्माण का सार-स्वरूप—1922 के उस मरद की अत्यधिक उत्तेजनशील विशिष्टता का प्रतीक था, जब राष्ट्रों के बीच शांति और बहुत्व की अपनी नीति के अपरिवर्तनीय आधार के रूप में घोषणा करने वाले मज़दूर-किमान राज्य, सोवियत संघ, का लेनिन के नेतृत्व में निर्माण ही हो रहा था। और यह ऐसे देश में ही रहा था जिसके बारे में उस समय प्रावदा ने लिखा था: "निर्धन, जीर्ण-शीर्ण तथा भूया मज़दूरों का यह जनतंत्र अपने जन्म का महान दिवस मना रहा है। पार वर्षों तक यह रक्त-स्नान रहा, युद्ध-क्षेत्रों में इसके श्रेष्ठतम संपूर्ण की अस्थियाँ बिगरी पड़ी थीं तथा विश्व को सुनिश्चित यनान के लिए रांटी के अन्तिम टुकड़ों तक का भी बलिदान कर दिया गया। इसकी लाशों-करांडों जनता भयावह भुगमरी के चंगुल में फंसी है। इसके सैकड़ों कार-गारों की चिमनियाँ धुआँ नहीं उगल रही है। कारखानों की मोटियाँ ग्रामोण है...लेकिन लाख जनतंत्र नवज्वालों के अस्तित्व करने के बाद अपनी मुक्त भूमि पर; अपनी ही धरती पर खड़ापूर्वक खड़ा है।"

ये चन्द वर्ष सोवियत जनता के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण वर्ष थे।

विश्व के प्रथम समाजवादी मज़दूर-किमान राज्य के विकास तथा इसके अस्तित्व में बने रहने के ही लिए बाह्य कारक के महत्व पर इसके संस्थापक लेनिन द्वारा बल दिया गया था। लेनिन ने कहा: "अक्टूबर शांति के प्रारम्भ में ही विदेश-नीति तथा अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का प्रश्न हमारे समक्ष प्रमुख प्रश्न रहा है।" यह बात किमी में छिपी नहीं है कि सोवियत संघ की मरुतताएँ इन प्रश्नों के अन्तर्राष्ट्रीय कारकों में जैसे शान्तिपूर्ण तथा अन्तर्राष्ट्रीयतावादी वैदेशिक नीति विश्व की प्रगतिशील शक्तियों के बीच इसके द्वारा अति उत्तम के रूप में जनवाद, राष्ट्रीय स्वतंत्रता व समाजवाद के लिए सामूहिक लड़ने के लक्ष्य हैं जबकि आक्रमण, हस्तक्षेप की कारवाइयाँ, समाजवादी आन्दोलन के विनाश करने

तथा शत्रुतापूर्ण पूंजीवादी घेराबन्दी इसके विरुद्ध कार्यरत रहे।

महान् अग्रदूत मन्नाजवादी भ्रान्ति ने मन्नाजवाद व शांति के बीच अटूट सम्बन्ध प्रदर्शित किया। लेनिन ने कहा : "युद्धों का अन्त, राष्ट्रों के बीच शांति, स्वतन्त्रता और हिंसा की समाप्ति—यही हमारा आदर्श है।" सोवियत रूस 1914-1918 के विश्व युद्ध में अलग होने वाला प्रथम देश था। कम्युनिस्ट पार्टी तथा सोवियत राज्य के महान् सम्भावक लेनिन द्वारा निर्णीत गयी अपनी पहली ही आकांक्ष में, सोवियत रूस ने सभी देशों व जनगण के समक्ष शांति का प्रस्ताव रखा। इसने दूसरे देशों के क्षेत्रों के विभाजन सम्बन्धी मित्र-शक्तियों द्वारा सम्पन्न सभी गुप्त संधियों को काट डाला और इन्हें प्रकाशित कर दिया।

लेनिन ने कहा कि भ्रान्ति के शानिपूर्ण अवस्थान के निर्माण की दिशा में तथा इतिहास में प्रथम मन्नाजवादी समाज के निर्माण की दिशा में अग्रदूत होने के लिए शांति सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात है।

लेकिन सोवियत रूस द्वारा 1917-18 में अर्जित शांति देने का तत्पर अव्यक्त संधिप्त साबित हुआ।

14 साम्राज्यवादी देशों ने रूस में प्रतिक्रांतिकारियों ने मिलकर, जैसा कि विन्स्टन चर्चिल ने कहा, सोवियत सत्ता का 'इसके पतने में' गला ही घोंटने का अभियान शुरू किया।

यहाँ वह समय था जब सोवियत जनता ने पहली बार, लेकिन आखिरी बार नहीं, यह समझा था कि शांति की केवल कामना, भले ही यह कितनी हार्दिकता-पूर्ण और शक्तिशाली क्यों न हो, पर्याप्त नहीं है। उन्होंने सीखा कि शांति की प्रतिरक्षा करनी होती है, इसके लिए संपर्क करना होता है, और इसको हानित करने के लिए निदान्त की लचीली नीति की सक्रिय व उद्देश्यपूर्ण समन्वय की, विश्वस्तरीय पिछड़ी पातों की तथा भरोसेमंद सहयोगियों की आवश्यकता होती है।

साम्राज्यवादी शक्तियों के हस्तक्षेप से महान् जन-हानि हुई, विनाश हुआ और कष्ट उठाने पड़े। सोवियत सरकार ने युद्ध समाप्त करने तथा समान इच्छा प्रदर्शित करने वाली किसी भी शक्ति के साथ शान्ति स्थापित करने का प्रयास किया। पूंजीवादी राज्यों के विरुद्ध "मृतत युद्ध" के लिए प्रास्कीवादियों तथा "वामपंथी" कम्युनिस्टों के आह्वानों को अस्वीकार करते हुए लेनिन ने शत्रुतापूर्वक घोषित किया कि वास्तविक कम्युनिस्टों के लिए यह नीति अवांछनीय है। पहली बात तो यह कि इसके अपनाने का अर्थ था कि समस्त देशों के जनगण के बलिदान व हानि में भारी वृद्धि होगी, सम्पूर्ण राज्य नष्ट हो सकते हैं और यहाँ तक कि सोवियत सत्ता भी समाप्त हो जायेगी। शांति का, इसके साथ-साथ प्रतिक्रांति का,

निर्यात नहीं किया जा सकता। प्रत्येक राज्य को अपने भविष्य का तथा अपनी पद्धति और जीवन की प्रणाली का निर्णय अपने ही देश के विकास और परिस्थिति पर मुख्य रूप से निर्भर करने हुए स्वयं करना चाहिए। समाजवादी और पूँजीवादी प्रणाली के बीच "मत्तन् युद्ध" के पैरोकारों का विरोध करने हुए लेनिन ने दूमरे विफल—दो प्रणालियों के नातिपूर्ण मह अस्तित्व तथा अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति के वातावरण में उनके बीच विवाद और प्रतियोगिता—के मुख्य पहलुओं का निरूपण किया और व्याख्या की। अन्ततः, सम्पूर्ण कम्युनिस्ट पार्टी तथा सोवियत जनता ने इस विफल को स्वीकृति प्रदान की और इसका समर्थन किया। इस प्रकार नातिपूर्ण मह अस्तित्व का सिद्धान्त समाजवादी विदेशनीति व राजनय का मुख्य आधार बन गया।

जनसाधारण की भाँगे तथा मानवतावादी भावनाओं के अनाया विश्व सम्बन्धों के क्षेत्र में इस सिद्धान्त की अधिकाधिक व्यापक मान्यता शस्त्रों की अधिकाधिक पाठक और विनाशकारी क्रिस्मों के विकास में तथा आर्थिक आवश्यकताओं व हितों से, जैसी कि लेनिन ने सटीक भविष्यवाणी की, अभिव्रेरित थी। लेनिन ने कहा, "किसी भी विरोधी सरकार या वर्ग की इच्छा, सकल्प तथा इष्ट निश्चय की अपेक्षा कहीं महान्तर शक्ति भी है—यह शक्ति आर्थिक सम्बन्धों की शक्ति ही है, जो उन्हें हमारे साथ सम्बन्ध स्थापित करने को बाध्य करती है।"

निष्ठावान मानववादो-लेनिनवादी के रूप में केवल गतिशील विदेशनीति के लिए, घटनाओं के सघर्ष वास्तविकताओं के प्रगतिशील मार्ग के अनुकूल हमके पुनियादी सिद्धान्तों के और अधिक विकास के लिए तथा लेनिन के आदेशों को कार्यान्वित करने के लिए निरंतर कार्य कर रहे हैं। उन्होंने बल देकर कहा है, "सोवियत जन न्यायपूर्ण शान्ति के बारे में अपनी समस्त तथा शान्ति की नीति के अपने विचार को हमारे नेता व शिक्षक, हमारी पार्टी व राज्य के सम्बोधक भ्वादीमिर इल्यीच लेनिन के नाम के साथ जोड़ते हैं। लेनिन ने ही, विश्व इतिहास में पहली बार, वैज्ञानिक कम्युनिज्म के सिद्धान्त को राज्य की विदेशनीति के व्यावहारिक आचार के साथ जोड़ा। लेनिन के विचारों व उनके कार्यों के इसी मगन ने अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में समाजवादी नीति के सिद्धान्तों व पद्धति को जन्म दिया जिनसे हम, उनके निष्प व उत्तराधिकारी, मार्गदर्शन ग्रहण करते हैं और हमेशा प्रहण करते रहेंगे।"

केवल बलपूर्वक कहते हैं कि सोवियत संघ की विदेशनीति, शान्ति, सुरक्षा व अन्तर्राष्ट्रीय मित्रता की सुसंगत नीति है। समाजवाद का जनता की सेवा करने के अलावा अन्य कोई सध्य नहीं है। सर्वोपरि इस सध्य का अर्थ है युद्ध का विरोध

करना, जिसे नेनिन ने मेहनतकश जन के लिए महानतम प्रविद्या की संज्ञा दी।

कम्युनिस्ट सिद्धान्तों के प्रति, जिसमें कार्य एवं शान्ति अग्रणी है, ब्रेजनेव की असीम निष्ठा ने व्यापक, प्रायः कठिन, गणसंगील अनुभव के साथ, उन्हें नेनिन की शान्तिपूर्ण गृह-अस्तित्व की नीति का सक्रिय समर्थक और प्रतिपादक बना दिया है।

2 शान्ति की नीति का उन्नयन

मुद्दोत्तर वर्षों में सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के सदस्य के रूप में और इसके बाद सचिव के रूप में तथा इसके बाद केन्द्रीय समिति के अध्यक्षमण्डल के प्रत्यागी और इसके बाद पूर्ण सदस्य के रूप में ब्रेजनेव ने सोवियत विदेशनीति व राजनय की प्रमुख समस्याओं पर उच्च स्तर पर होने वाले विचार-विमर्शों में अत्यन्त सक्रिय रूप में भाग लिया। इन कारणों से मुद्दोत्तर अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों की सभी प्रमुख समस्याओं में परिरक्षित हो गये और उन्हें विदेशनीति के जटिल मुद्दों को हल करने में सफल अनुभव प्राप्त हुआ। उन्होंने दूसरे देशों में राज्य-कार्यों का तथा विषय सम्पन्न पर उनकी स्थिति की, शुरू से आखिर तक प्रथम और सर्वोपरि सोवियत संघ के साथ सम्बन्धों के संदर्भ में गहन जानकारी अर्जित की। सक्रिय अवधि में ही ब्रेजनेव प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय हस्तों तथा सोवियत विदेशनीति व राजनय के एक मुख्य शिल्पी बन गये।

1960 में सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमण्डल का अध्यक्ष चुने जाने के बाद उन्होंने महान और उत्तरदायित्वपूर्ण कर्तव्य निभाये।

उनकी कार्यवाधि में विदेश नीति के क्षेत्र में घरेलू काम हुआ।

सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमण्डल के अध्यक्ष के रूप में ब्रेजनेव का पहला विदेशी मिशन था सितम्बर 1960 में जर्मन जनवादी गणराज्य की यात्रा। दूसरे समाजवादी देशों में भी जनता सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमण्डल के अध्यक्ष ब्रेजनेव से परिचित हुई। उन्होंने हंगरी, चेकोस्लोवाकिया, बुल्गारिया और यूगोस्लाविया की यात्रा की। समाजवादी देशों के नेताओं व जनता के साथ उनकी प्रत्येक भेंट से भारी राजनीतिक व आर्थिक लाभ हुए तथा ये मित्रता का प्रभावी प्रदर्शन बनीं।

विकासशील देशों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों की स्थापना, पुराने व नये उप-निवेशवाद के विरुद्ध तथा पूर्ण राजनीतिक व आर्थिक स्वतंत्रता के लिए इनके जनगण के संघर्ष का समर्थन तथा प्रगति व शान्ति के लिए उनके प्रयासों में सहायता करना सोवियत विदेशनीति का मुख्य क्षेत्र थे। सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्ष-

मन्त्र के अध्यक्ष के रूप में ब्रेजनेव ने इस बात को सुनिश्चित करने के प्रति अत्यधिक ध्यान दिया कि विकसित देशों के साथ सोवियत सम्बन्ध परस्पर, पारस्परिक लाभप्रद तथा चहुँमुखी सहयोग व मित्रता की नीति पर मात्र प्रगति करें। उन वर्षों में उन्होंने यिनी, धाना, मोरबसों तथा अकोरा में गृहान की यात्रा की। दक्षिण एशिया के महान देश भारत की मंत्रीपूर्ण और गति यात्रा की तथा अफगानिस्तान व ईरान में उनका सम्मानपूर्वक स्वागत किया गया। इन यात्राओं ने सोवियत सभ तथा अकोरा व एशिया के विकसित देशों के बीच मंत्रीपूर्ण सम्बन्धों को गुरु बनाने में सहायता की। इस प्रसंग में ब्रेजनेव की गतिविधियों उपनिवेशवादियों की योजनाओं के प्रतिकूल रही। मोंगकों की उनही राजनीय यात्रा के दौरान उन्हें मारने का अनुचित प्रयास किया गया। तटस्थ जन क्षेत्र के ऊपर से उड़ान भरते समय सोवियत सभ की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमण्डल के अध्यक्ष के विमान पर गोशिया चलाई गयी।

लेनिन के आदेशों के प्रति निष्ठावान रहने हुए सोवियत सभ ने बिना किसी अपवाद के बड़े और छोटे सभी पृथ्वीवादी देशों के साथ गतिपूर्ण सहप्रतिस्पर्ध के सम्बन्धों की स्थापना का प्रयास किया।

सितम्बर 1961 के अन्त में ब्रेजनेव ने क्रिस्तल की राजकीय यात्रा की। इस यात्रा के तथ्य मात्र से ही यह प्रकट होता था कि सोवियत सभ उस देश के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाये रखने को इतिना महत्व प्रदान करता है। इस यात्रा का सोवियत सभ और क्रिस्तल के बीच अच्छे पड़ोसी प्रेम सम्बन्धों के ओर अधिक विकास पर लाभदायक प्रभाव पड़ा, जिसने यूरोपीय महाद्वीप के उत्तरी भाग में गति के सुदृढ़ीकरण में उत्तेजनीय रूप से सहायता मिली। ब्रेजनेव तथा क्रिस्तल के राष्ट्रपति उहाँ केवकोरेन के बीच 1961 से चला आ रहा व्यक्तिगत परिचय और निरन्तर सम्पर्क दोनों देशों के अच्छे पड़ोसियों प्रेम सम्बन्धों का महत्वपूर्ण तत्व बन गया।

ब्रेजनेव ने विदेशनीति विषयक अनेक महत्वपूर्ण दस्तावेजों के प्राकट्य कराने में सक्रिय भाग लिया। सोवियत सभ की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमण्डल ने उन्हीं की अध्यक्षता में वायुमण्डल में, बाह्य अंतरिक्ष में तथा अन्तर्द्वीपीय नाभिकीय शस्त्र परीक्षणों पर प्रतिबन्ध लगाने वाली 1963 की मास्को संधि की अभिपुष्टि की, जो अमरीका व सोवियत सभ के बीच दीर्घकाल से चले आ रहे तनावपूर्ण सम्बन्धों में परिवर्तन के प्रथम सकारात्मक परिवर्तनों में से एक की ओर जो अत्यधिक हानिकारक और विषाक्त गीत गुड के अन्तराष्ट्रीय साजगरण का भौतिक एवं नैतिक दृष्टि से क्षीण बनाने वाली ऐसी संधि है जिसका 1974 के

लियोनिद इ० ब्रेज्नेव : जीवन के कुछ पृष्ठ

में मास्को में हुई सोवियत-अमरीकी वार्ता के दौरान विस्तार किया गया।

शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के सतत् समर्थक

विदेश नीति विषयक उन समस्याओं का क्षेत्र काफ़ी अधिक व्यापकतर हो

या जिनमें सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति द्वारा अक्टूबर

1964 में प्रथम सचिव चुने जाने के बाद ब्रेज्नेव व्यस्त हुए। सोवियत संघ की

सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमण्डल के सदस्य के रूप में इस क्षेत्र में कई कर्तव्य

भी उन्होंने अपने अधिकार में रखे।

ब्रेज्नेव उस समय केन्द्रीय समिति के महासचिव बने जब अन्तर्राष्ट्रीय

स्थिति काफ़ी जटिल हो गयी थी। विश्व के मामलों में दो विपरीत—शांतिपूर्ण व

आक्रामक—प्रवृत्तियों का संघर्ष कहीं अधिक जटिल हो गया था। विश्व प्रति-

क्रियावाद ने समाजवादी समुदाय के बीच फूट डालने के प्रयासस्वरूप, सोवियत

संघ व इसके सहयोगी और मित्रों के बीच दरार डालने के लिए तथा विश्व दृश्य-

पटल पर इसे अकेला कर देने के प्रयत्नस्वरूप समाजवादी देशों व प्रगतिशील

सरकारों के विरुद्ध अपनी अन्तर्ध्वंसात्मक गतिविधियाँ दोगुनी कर दी थीं।

अन्तर्राष्ट्रीय तनाव में वृद्धि हुई थी।

उस समय वियतनाम में युद्ध द्वारा तथा डोमिनिकन गणतंत्र और कांगों के

मामले में अमरीकी हस्तक्षेप द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों पर हानिकर प्रभाव

पड़ा था।

संघ जर्मनी गणराज्य में प्रतिशोध लेने के लिए प्रयत्नशील प्रतिक्रियावादी

तत्वों ने द्वितीय विश्व युद्ध के परिणामों—युद्धोत्तर यूरोपीय सीमाओं तथा जर्म

समाजवादी राज्य, जर्मन जनवादी गणतंत्र के अस्तित्व—को मान्यता देने

इन्कार करना ही नहीं जारी रखा बल्कि जैसा कि ब्रेज्नेव ने इंगित किया—

पक्षीय नाभिकीय शक्ति का सृजन करने की नाटो की योजनाओं का इस्ते-

करते हुए भिन्न साधनों द्वारा नाभिकीय शस्त्रों को प्राप्त करने की कोशिश

मध्यपूर्व में इसराइल ने 5 जून 1967 को अरब राज्यों के विरुद्ध

दिया जो छह दिवसीय युद्ध के नाम से सुजात है। आक्रामक ने मिस्र, सी-

जोर्डन के कुछ क्षेत्रों पर कब्ज़ा कर लिया लेकिन यह अपने मुख्य लक्ष्य

जनगण को शांति के लिए अपनी शर्तों के मनवाने में समर्थ बनाने वाली

विजय—अर्जित कर पाने में असफल रहा। ब्रेज्नेव ने बताया, "मध्यपूर्व

अभी भी तनावपूर्ण बनी है और युद्ध की ज्वाला को पुनः भड़कने से रोक

सब कुछ करना चाहिए।" इन परिस्थितियों में मानवजाति यह

थी कि क्या विश्व युद्ध की दिशा में प्रवाह जारी रहेगा या विश्व-समिति बेहतर हो और मुड़ेगी।

गणतान्त्रिक हरादों का मुकाबला करने के लिए रक्षा और मस्तिष्क की एका-ग्रता की आवश्यकता थी। उदित अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं का शांतिपूर्ण समाधान हासिल करने के लिए मनुष्य पहल और मशीनेशन की आवश्यकता भी थी।

मोवियन मप की कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति का दृष्टिकोण ठीक सही था। ऐसा करने में पार्टी, केंद्रीय समिति के राजनीतिक व्यूरो तथा व्यक्तिगत रूप से ब्रेजनेव ने अपना प्रमुख ध्यान विश्व के मामलों के बुनियादी उद्देश्य तथा कम्युनिस्ट कारकों व प्रवृत्तियों के सर्वांगीण अध्ययन एवं मूल्यांकन पर केंद्रित किया।

दिसम्बर 1966 तथा जुलाई 1967 में केंद्रीय समिति के पूर्वाधिकारियों में इन महत्वपूर्ण व उदित अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर विचार-विमर्श किया गया। इन्हें प्रस्तुत करने में ब्रेजनेव ने व्यक्तिगत रूप से पहल की। वे इस बात का ध्यान रखते थे कि पार्टी मदैव ही विश्व की घटनाओं में परिचित रहे और मोवियन विदेशनीति का निर्माण सामूहिक मन, अनुभव तथा अनुमोदन के आधार पर किया जाना चाहिए। पार्टी की मदैव ही मोवियन मप के जनन, विश्व शांति व शान्ति के हित में काम करना चाहिए।

ब्रेजनेव ने कहा, "मोवियन मप की कम्युनिस्ट पार्टी की अन्तर्राष्ट्रीय गति-विधि सम्पूर्ण जनता का ध्येय है। यह देश की आधिक तथा प्रतिरक्षा क्षमता पर देश की शैक्षिक सामर्थ्य तथा मोवियन जनता द्वारा सृजित प्रत्येक कम्युनिस्ट पर अवलम्बित रहती है। इसकी गहराई पार्टी व राज्य के अनेक प्रतिनिधियों—राजनीतिक व्यूरो के सदस्यों व प्रवासी सदस्यों, केंद्रीय समिति के सदस्यों, केंद्रीय समिति के सदस्यों, बड़ी संख्या में केंद्रीय समिति के स्टाफ, विदेश मन्त्रालय, विदेश-सम्पार मन्त्रालय, आदिक सम्बन्धों के लिए राज्य-समिति तथा दूसरे मन्त्रालयों के स्टाफ सदस्य, जनता की केंद्रीय समितियों, प्रादेशिक एवं क्षेत्रीय समितियों के उच्च पदाधिकारियों व स्टाफ के सदस्यों, नगर व ग्राम समितियों के तथा क्रमों व गांवों के प्राथमिक पार्टी संगठनों के गावियों—के अनुभव और ज्ञान का, नैतिक शक्तियों व कठोर परिश्रम का प्रतिरूप है... इस मर्म में मोवियन समग्र के सदस्यों, मोवियनों, ट्रेड यूनियनों तथा दूसरे सार्वजनिक संगठनों के केंद्रीय व स्थायी संगठनों द्वारा, विज्ञान व महकृति के क्षेत्र में कार्यरत मोवियों द्वारा तथा निरसदेह प्रेस, रेडियो व टेलिविजन द्वारा महत्वपूर्ण कार्य किया जा रहा है। हजारों मोवियन जन विदेशों में—दूतावासों तथा दूसरे निवासों में तथा भूविज्ञानियों व निर्माताओं के रूप में, चिकित्सकों व अध्यापकों के रूप में, प्राध्या-

लियोनिद इ० ब्रेज़नेव : जीवन के कुछ पृष्ठ
यों व रसायन-विज्ञानियों, परिवहन व दूसरे विशेषज्ञों के रूप में—कार्यरत
सोवियत विदेशनीति को निर्धारित करते समय अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के
हन वज्ञानिक विश्लेषण तथा अलग-अलग देशों में स्थिति को विशेष महत्व दिया
या।

सोवियत विदेशनीति ने इस तथ्य पर भी ध्यान दिया कि कुछ देशों में सत्ता-
धारी क्षेत्र निपट शत्रुतापूर्ण भावना से सोवियत संघ और उसके मित्रों के विरुद्ध
कट्टरतापूर्वक विरोधी नीति अपना रहे हैं, जैसा कि वे अब भी कर रहे हैं जब
कि विश्व शक्तियों के और सच्चे राष्ट्रीय हितों की एकता को किसी न किसी
मात्रा में परिलक्षित करते हुए दूसरे देशों में कहीं अधिक यथार्थवादी दृष्टिकोण
का आविर्भाव हो रहा है।

इन परिस्थितियों में ब्रेज़नेव ने अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को शांतिपूर्ण सह-
अस्तित्व के सिद्धांतों की ओर लक्षित करने की तात्कालिकता और अच्छी संभा-
वनाओं के प्रति ध्यान आकृष्ट कराया और इन सिद्धांतों के प्रति सोवियत संघ
की निष्ठा की घोषणा की। ब्रेज़नेव ने कहा, "सोवियत संघ ने भिन्न सामाजिक
प्रणालियों वाले राज्यों की शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की लेनिन की नीति का पालन
किया है और ऐसा करना जारी रखेगा। यह नाभिकीय विश्व युद्ध रोकने, राज्यों
के बीच विवादों का निपटारा बातचीत से करने, प्रत्येक जनगण के अपनी सामा-
जिक व राज्य-व्यवस्था को चुनने तथा अपने आंतरिक विकास के प्रश्नों का स्वयं
निपटारा करने के अधिकार का सम्मान करने की दिशा में लक्षित है...हमारा
देश अनसुलझी समस्याओं को शनैः शनैः निपटाने और शांति को सुदृढ़ बनाने का
पक्षधर है।"

ब्रेज़नेव ने बलपूर्वक कहा कि शांतिपूर्ण सहअस्तित्व का अर्थ यह नहीं
सैनिक कार्रवाइयां न हो रही हों अथवा युद्ध का खतरा कम हो गया हो।
परस्पर विरोधी सामाजिक प्रणालियों वाले राज्यों के बीच शांतिपूर्ण सह-अ-
स्तित्व को स्थायी बनाना है तो इसे सहयोग पर तथा परस्पर समझ, विश्वास और
पर भी आधारित होना चाहिए। ब्रेज़नेव ने कहा, "हमारी नीति समस्त
के साथ अच्छे सम्बन्ध की तथा पारस्परिक लाभप्रद सहयोग की नीति
इसमें दिलचस्पी रखने वाले देशों के साथ हमारे सम्बन्ध प्रति वर्ष सुधर
हैं। हम मुख्य पूंजीवादी शक्तियों के साथ व्यापारिक सम्पर्कों तथा स-
विकास को बहुत महत्व देते हैं।"

पूँजीवादी राज्यों द्वारा समाजवादी देशों के साथ व्यापारिक, वि-

निक व नकनीकी सम्बन्धों व विनिमय की स्थापित और विस्तृत करने की नीति अपनाना केवल राजनीतिक ही नहीं बल्कि आर्थिक अनिवार्यता के कारण है।

विदेशनीति पर आर्थिक कारणों के प्रभाव की प्रभावना दम्पुज रंगने हुए ब्रेडनेव ने इस ढंग से कार्यरत महत्त्वपूर्ण कारणों के समूह की ओर ध्यान दिनाया। उन्होंने कहा, "अन्तरीय व्यापार और आर्थिक मन्द के भेदभाव बिना प्रत्येक देश के विकास के लिए भ्रम के अन्तराष्ट्रीय विभाजन का अधिसाधिक प्रयोग हमारे युग की विविष्ट विवेक शक्तों में से है।"

ब्रेडनेव ने कहा कि समस्त मानवजाति के द्विती में सम्बन्धित समस्याओं का अन्तराष्ट्रीय सम्बन्धों की समूह प्रकाश पर पहले से नहीं अधिक प्रभाव दिनाया है। उन्होंने कहा, "आज कच्चे माल या ऊर्जा की, अथवा सामान्य तथा व्यापक रूप में पानी जैसे वीमारियों का सामना करने की पर्याप्तता मरणा, बाल्य प्रवर्धन में अनुपधान तथा स्थिर सामर्थ्य समस्याओं के प्रयोग में स्थिर-ध्वनी समस्याएँ महत्त्वपूर्ण और सामयिक बन गयी है।"

इस मध्य के प्रति परिचयी रूप से ब्रुनी ने इस समझ में कि नीति और महयोग में पूँजीवादी देशों की भी समाजवादी देशों के बराबर ही प्रतिष्ठा दीव पर लगी है प्रतिप्रियावादी अथवा न नीति के प्रतिपक्षों की स्थिति की पर्याप्त कमजोर बनाने में तथा नीतिपूर्ण मह-अभिव्यक्ति के समर्थन की मरणा में पुष्टि करने में पर्याप्त गहराता की है।

23वाँ पार्टी कांग्रेस में मुख्य अन्तराष्ट्रीय समस्याओं पर सम्पुनिक पार्टी के दृष्टिकोण की ब्रेडनेव द्वारा की गयी विस्तारपूर्वक स्पष्ट व्याख्या सोवियत विदेश नीति के निष्ठाओं के ओर अधिक विचार का प्रतिनिधित्व करती है।

ब्रेडनेव ने कहा, "कावेम में हम विचाराधीन अवधि के दौरान अपनी नीति नीति की महान सफलताओं को सर्वोपरि नोट कर सकते हैं। विश्व के अधिकांश देशों के साथ सोवियत मध्य के अन्ध सम्बन्ध है। उन्होंने नोट किया कि सोवियत मध्य 'तनाव में कमो नाने के लिए, मुझकर नीति के लिए, भिन्न सामाजिक प्रणालियों वाले राज्य के बीच नीतिपूर्ण मह-अभिव्यक्ति के लिए, ऐसी अन्तराष्ट्रीय परिस्थितियों के लिए, त्रिभेद प्रत्येक देश राष्ट्रीय व सामाजिक प्रगति के मार्ग पर मुक्त रूप में अग्रसर हो सकता है, सधर्म के अन्तर्गत अपनी नीति की कार्यान्वित कर रहा है।...सोवियत मध्य सभी राज्यों के आन्तरिक मामलों में अहस्ताक्षर है, उनके सम्प्रभु अधिकारों तथा उनके क्षेत्रों की अतपनीयता के प्रति सम्मान है बट्टर सम्बंध है...यहाँ तक सोवियत मध्य तथा पूँजीवादी देशों के सम्बन्धों का प्रश्न है, हम उन्हें केवल नीतिपूर्ण ही नहीं बनाना

लियोनिद इ० ब्रेज़नेव : जीवन के कुछ पृष्ठ
 एक, वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्रों में यथासंभव व्यापकतम पारस्परिक
 प्रद सन्बन्धों को भी इनमें शामिल करना चाहते हैं।”
 23वीं कांग्रेस में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए ब्रेज़नेव ने सोवियत नीति के
 परिवर्तनीय अन्तर्राष्ट्रीयतावादी सार, इसकी निरन्तरता तथा इसके बुनियादी
 सिद्धान्तों की दृढ़ता को तथा इसके साथ ही बदलती हुई परिस्थितियों तथा युगों
 की महत्वपूर्ण आवश्यकताओं के अनुरूप इसके सृजनात्मक, नवीनीकरण करनेवाले
 तथा यथार्थवादी स्वरूप को प्रकट किया। वर्तमान विश्व स्थिति विषयक उनका
 विश्लेषण विश्व घटनाओं के सारतत्व के प्रति गहन अंतर्दृष्टि पर तथा मानव-
 जाति के प्रगतिशील विकास को नियंत्रित करने वाले वस्तुनिष्ठ नियमों के ज्ञान
 पर आधारित था।

ब्रेज़नेव के नेतृत्व में विदेशनीति के क्षेत्र में कम्युनिस्ट पार्टी के सक्रिय व
 सतत कार्य से शीत युद्ध को अन्तर्राष्ट्रीय सन्बन्धों का अविच्छिन्न अंग बनाने के
 साम्राज्यवादी प्रयासों को विफल करने में सहायता मिली है। इस सतत गतिविधि
 ने अन्तर्राष्ट्रीय सन्बन्धों में और अधिक अच्छे परिवर्तनों के लिए वस्तुनिष्ठ परि-
 स्थितियों के सृजन में सहायता की है। फलस्वरूप, इसने विदेशनीति तथा राजनय
 सन्बन्धी समस्याओं के समाधान तथा शांति व सामाजिक प्रगति के लिए संघर्ष में
 सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी तथा इस व्यक्तिगत रूप से इसके महासचिव की
 प्रमुख पहल के आधार वाक्य का काम किया।
 इस पहल को सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की 24वीं कांग्रेस द्वारा
 स्वीकृत शांति कार्यक्रम में तथा बाद में 25वीं कांग्रेस द्वारा घोषित शांति
 अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के लिए तथा जनगण की स्वतंत्रता व आजादी के लिए और
 अधिक संघर्ष के कार्यक्रम में अभिव्यक्ति मिली।

4. तनाव-शैथिल्य के लिए संघर्ष

ब्रेज़नेव द्वारा निरूपित सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की 24वीं
 में प्रस्तुत तथा इसके द्वारा स्वीकृत शांति कार्यक्रम जैसे बुनियादी अन्त-
 र्राष्ट्रीय सन्बन्धों से सन्बन्धित ठोस प्रस्ताव हाल के दशकों में किसी भी दूसरे
 प्रस्तुत नहीं किये हैं। यह सोवियत राजनय की अभिनव भावना, दृढ़-
 त्मकता तथा दूरदर्शिता का ज्वलंत प्रमाण था तथा इस तथ्य का प्रभा-
 व था कि सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी विश्व दृश्यपटल पर अपनी
 में सोवियत जनता के तथा विश्व के दूसरे देशों के हितों से निदेशित
 यह उनकी आकांक्षाओं के अनुकूल है और उनके समर्थन पर निर्भर

शांति कार्यक्रम के प्रथम खंड का लक्ष्य उस समय लड़े जा रहे आक्रामक युद्धों की समाप्ति तथा युद्ध के खतरों के मौजूदा ज्वलनशील स्थानों का उन्मूलन और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में शक्ति के स्थान पर शांतिपूर्ण ढंग से निपटारा करने के सिद्धान्त की शिक्षा देना था। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी ने शांति के लिए संघर्ष में निम्न की उद्देश्यों का प्रथम समूह माना :

—दक्षिणपूर्व एशिया तथा मध्यपूर्व में युद्धों के केन्द्रों को समाप्त करना तथा उन क्षेत्रों में आक्रमण से पीड़ित राज्यों व जनगण के वैधानिक अधिकारों के प्रति सम्मान के आधार पर राजनीतिक निपटान का समर्थन करना।

—आक्रमण तथा अन्तर्राष्ट्रीय हिंसा की सभी कार्रवाइयों का तुरन्त और दृढ़तापूर्वक प्रतिक्षेप करना। इस उद्देश्य के लिए संयुक्त राष्ट्रसंघ के मताधनों का भी पूर्णतम स्तर तक इस्तेमाल करना चाहिए।

—विवादों के समाधान में बल-प्रयोग या ऐसा करने की धमकी का परित्याग की अन्तर्राष्ट्रीय जीवन का कानून बना देना। अपनी ओर से, सोवियत संघ ने यह प्रस्ताव रखा कि समान दृष्टिकोण वाले देश उपयुक्त द्विपक्षीय और क्षेत्रीय संधियाँ सम्पन्न करें।

घटनाचक्र ने इस दृष्टिकोण के यथार्थवाद की पुष्टि की। वियतनाम तथा शेष इंडोचीन में अमरीकी आक्रमण अपनी चरम सीमा पर पहुँच चुका था। विश्व जनमत ने वियतनामी जनता तथा इस क्षेत्र के दूसरे जनगण के अधिकारों पर अन्यायपूर्ण तथा बर्बर आक्रमण समाप्त किये जाने की माँग की। राजनीतिक समाधान में और अधिक विलम्ब का अर्थ होगा अतिरिक्त जन-हानि और विश्व दृश्यपटल पर और अमरीका में नयी जटिलताओं की उत्पत्ति।

विश्व के लिए युद्ध के खतरे के दूसरे स्थान मध्यपूर्व के मामले में आक्रमण के फलस्वरूप अधिकृत अरब प्रदेशों पर अपना अधिकार सुद्ध बनाने के इसराइली शासकों के प्रयासों की असारता स्पष्ट हो चुकी थी। ब्रेज्नेव द्वारा बो गयी चेतावनियाँ इससे अधिक और हो भी स्या सकती थीं : "मध्यपूर्व समस्या के राजनीतिक समाधान में जितना ही अधिक विलम्ब किया जायेगा विश्व, जनमत का कोप उतना ही अधिक होगा। आक्रमणकारी और उसके हिमायतियों के विरुद्ध अरब जनगण की घृणा उतनी ही अधिक होगी तथा इसराइल के शासक स्वयं अपने देश की जनता व देश की उतना ही अधिक नुकसान पहुँचायेंगे।"

ब्रेज्नेव ने द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद से बच रहे अन्तर्राष्ट्रीय तनाव के स्रोतों की पुनः पुष्टि की। उन्होंने सुझाव दिया :

—द्वितीय विश्व युद्ध के परिणामस्वरूप यूरोप में हुए क्षेत्रीय परिवर्तनों से

अंतिम रूप में मान्यता देना और इस महाद्वीप में तनाव-शैथिल्य व शांति की दिशा में मौलिक मोड़ को क्रियान्वित करना तथा यूरोपीय सम्मेलन के समायोजन और मफनना को सुनिश्चित करना ।

—यूरोप की सामूहिक सुरक्षा को हर तरह से सुनिश्चित बनाना ।

ब्रेजनेव ने प्रतिरक्षात्मक वारसा संधि पर हस्ताक्षर करनेवाले सदस्यों द्वारा इस संधि को उत्तर अटलांटिक संधि के निराकरण के साथ-साथ विलोपन अथवा प्रथम क्रदम के रूप में इनके सैनिक संगठनों का विघटन करने के लिए संयुक्त रूप से व्यक्त तत्परता की पुनः पुष्टि करने का आह्वान किया ।

शांति कार्यक्रम में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में बलप्रयोग के परित्याग की आवश्यकता पर दृढ़तापूर्वक बल दिया गया । इसका लक्ष्य आक्रमण, हिंसा तथा युद्ध की नीति के भौतिक आधारों को सीमित करना तथा बाद में उनका उन्मूलन करना था । इसने निरस्त्रीकरण सम्बन्धी, और सर्वोपरि मानवजाति को भारी क्षति पहुँचाने वाले सामूहिक विनाश के नाभिकीय तथा दूसरे प्रकार के हथियारों के सम्बन्ध में सर्वांगमूलक उपाय रखे । इस कार्यक्रम में नाभिकीय, रासायनिक तथा जीवाणु हथियारों पर रोक लगाने, भूमिगत परीक्षणों सहित सर्वत्र सभी देशों द्वारा नाभिकीय हथियारों के परीक्षणों पर रोक लगाने तथा विश्व के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में नाभिकीय मुक्त क्षेत्रों की स्थापना करने की अभिकल्पना की गयी । ब्रेजनेव ने कहा, “हम नाभिकीय शस्त्र रखने वाले सभी राज्यों द्वारा नाभिकीय निरस्त्रीकरण के पक्ष में हैं, तथा इस उद्देश्य के लिए पाँच नाभिकीय शक्तियों—सोवियत संघ, अमरीका, चीन लोक गणराज्य, फ्रांस तथा ब्रिटेन—के सम्मेलन का आयोजन किये जाने के पक्ष में हैं ।”

नाभिकीय निरस्त्रीकरण सम्बन्धी प्रस्ताव परम्परागत सैनिक शक्तियों को सीमित करने तथा सामान्य व पूर्ण निरस्त्रीकरण की व्यवस्थाओं के साथ धनिष्ठ रूप से जुड़े हुए थे । इस कार्यक्रम में शस्त्रों की होड़ रोकने तथा निरस्त्रीकरण के समस्त पहलुओं की जाँच करने के लिए विश्व सम्मेलन का आयोजन करने के प्रयासों को तीव्र करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया था । सोवियत संघ ने विदेशी सैनिक अड्डों को परिसमाप्त किये जाने, उन क्षेत्रों में जहाँ सैनिक टकराव विशेष रूप से खतरनाक है, उल्लेखनीय रूप से मध्य यूरोप में, सशस्त्र सेनाओं व शस्त्रास्त्रों में कटौती किये जाने तथा सैनिक व्यय में कमी किये जाने का आह्वान किया ।

इन क्रदमों से अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण में व्याप्त भय और संदेह में काफ़ी बड़ी कमी होगी और राज्य सैनिक बजटों से बचे हुए व्यापक संसाधनों को शांतिपूर्ण

उद्देश्यों के लिए प्रयुक्त करने में समर्थ हो सकेंगे।

मानवजाति के महत्वपूर्ण हितों की चिन्ता से प्रेरित शांति कार्यक्रम में राष्ट्रीय असमानता; भेदभाव और उत्पीड़न के सभी स्वरूपों का मुकाबला करने के बारे में विशेष मुद्दा शामिल किया गया था : "शेष रह गये उपनिवेशी शासनों का उन्मूलन करने के बारे में संयुक्त राष्ट्र के निर्णयों को पूरी तरह से कार्यान्वित करना चाहिए। नस्लवाद और जातीय पृथक्वासन की सार्वजनिक निंदा और बहिष्कार करना चाहिए।"

इस कार्यक्रम में महत्वपूर्ण विशिष्ट क्षेत्रों में दूसरे देशों के साथ शांतिपूर्ण सह-योग की व्यवस्था भी थी।

इसमें कहा गया था, "सोवियत संघ उन सभी देशों के साथ समस्त क्षेत्रों में पारस्परिक लाभप्रद सहयोग के सम्बन्धों को गहन बनाने के लिए तत्पर है, जो इस बात के इच्छुक हैं। हमारा देश पर्यावरण सुरक्षा, ऊर्जा तथा दूसरे प्राकृतिक संसाधनों के विकास, परिवहन व संचार व्यवस्था के विस्तार, अधिक खतरनाक और व्यापक रूप से फैली बीमारियों की रोकथाम और उनके उन्मूलन तथा बाह्य अंतरिक्ष एवं विश्व सागर के अन्वेषण एवं विकास जैसी समस्याओं को हल करने में दिलचस्पी रखने वाले अन्य राष्ट्रों के साथ संयुक्त रूप से सहभागिता करने के लिए तत्पर है।"

शांति कार्यक्रम की शक्ति और प्रभावकता कुछ अन्तर्सम्बन्धित कारकों से उत्पन्न हुई थी। इसमें वे वास्तविक इच्छाएँ व्यक्त थी जो वर्तमान युग अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों की स्थिति से उत्पन्न होती है। ये आवश्यकताएँ व्यावहारिक नीति के ठोस तथा यथार्थवादी उद्देश्यों के रूप में सम्मिलित थी और सोवियत संघ ने भ्रातृत्वपूर्ण समाजवादी देशों के साथ घनिष्ठ सहयोग से इस विदेशनीति कार्यक्रम को अमल में लाने के लिए सुसंगत और उद्देश्यपूर्ण कार्रवाइयाँ कीं।

चन्द वर्षों बाद मई 1973 में, ग्यूयार्क टाइम्स ने शांति कार्यक्रम के निरूपण और इसका विकास करने के लिए ब्रेज्नेव द्वारा की गयी असाधारण सेवाओं को स्वीकार किया और उनका उल्लेख "तनाव में कमी लाने वाली नवीनतम नीति के सृजनकर्ता" के रूप में किया।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की 24वीं कांग्रेस ने सोवियत संघ तथा अमरीका के बीच सम्बन्धों के प्रति पर्याप्त ध्यान दिया। ब्रेज्नेव ने बल देकर कहा कि पार्टी के मत में अमरीका के साथ सम्बन्धों में सुधार हो सकता है। अमरीका महित पूंजीवादी देशों के सम्बन्ध में सोवियत नीति "शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धान्तों के व्यवहार रूप में सुसंगत और पूर्ण कार्यान्वयन, पारस्परिक लाभप्रद

सम्बन्धों के विकास, तथा शांति को गहन बनाने में सहयोग पर, उन देशों के साथ जो इसके लिए तैयार हैं, और उनके साथ सम्बन्धों को यथासंभव स्थायी बनाने पर केन्द्रित है।" ब्रेज़नेव ने प्रत्येक मामले में इस बात को निर्धारित करने की आवश्यकता पर बल दिया कि सोवियत संघ उन व्यक्तियों से बातचीत कर रहा है जो समस्याओं को वास्तव में बैठकर सुलझाना चाहते हैं या उसका सम्बन्ध उन व्यक्तियों से है जो "शक्ति की स्थिति से" नीति पर अमल करने का प्रयास कर रहे हैं।

24वीं कांग्रेस के कार्यक्रम को 25वीं कांग्रेस में एक कदम और आगे बढ़ाया गया, जिसमें शांति तथा अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के लिए तथा जनगण की स्वतंत्रता व स्वाधीनता के लिए और अधिक संघर्ष के कार्यक्रम स्वीकृत किया गया।

शांति कार्यक्रम के लक्ष्य में से अनेक की सफलतापूर्वक उपलब्धि के बाद ब्रेज़नेव ने पिछली कांग्रेस में निरूपित व्यवस्थाओं का विकास और विस्तार किया तथा उन्होंने विश्व मामलों में नयी महत्वपूर्ण पहलकदमियाँ प्रस्तुत कीं। सोवियत संघ की तनाव-शैथिल्य की अविचल नीति तथा इसकी तामील और शस्त्रों की होड़ के विरुद्ध इसके संघर्ष का निर्धारण करते हुए मानो दोनों कार्यक्रम एक ही विदेशी-नीति समुच्चय में घुलमिल गए।

जैसा कि ब्रेज़नेव द्वारा नोट किया गया शांति, अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा तथा मानवजाति की प्रगति के हितों में मौजूदा परिस्थितियों में अपेक्षित मुख्य उद्देश्य निम्न हैं :

—शांति के सुदृढ़ीकरण के लिए समाजवादी राज्यों के सक्रिय संयुक्त अंशदान में वृद्धि करना तथा उनकी एकता को शर्तः शर्तः सुदृढ़ बनाना तथा नये समाज के निर्माण में उनके चहुँमुखी सहयोग का विकास करना।

—शांति को खतरे में डालने वाली बढ़ती हुई शस्त्रों की होड़ को समाप्त करने के लिए तथा शस्त्रास्त्रों के संचित भंडारों में कटौती और निरस्त्रीकरण के लिए कार्य करना। इस उद्देश्य से :

*सामरिक शस्त्रास्त्रों के परिसीमन और उनमें कटौती से सम्बन्धित नये सोवियत-अमरीकी समझौते की तैयारी को पूरा करने के लिए तथा नाभिकीय शस्त्र-परीक्षणों पर सार्वत्रिक व पूर्ण प्रतिबन्ध विषयक अन्तर्राष्ट्रीय संधि करने, रासायनिक हथियारों पर प्रतिबन्ध लगाने और इन्हें नष्ट करने, सामूहिक नर-संहार के हथियारों की नयी किस्मों व विधियों के विकास पर रोक लगाने और साथ-ही-साथ सैनिक या दूसरे विरोधपूर्ण उद्देश्यों के लिए प्राकृतिक पर्यावरण में परिवर्तन पर रोक लगाने के लिए सब कुछ करना।

*मध्य यूरोप में सशस्त्र सेनाओं और शस्त्रास्त्रों में कटौती विषयक वार्तालाप को सक्रिय बनाने के लिए नये सिरे से प्रयास करना। इस दिशा में प्रथम ठोस कदमों से सम्बन्धित समझौते का पालन करना, आगामी वर्षों में इस क्षेत्र में सैन्य तनाव-शैथिल्य के उन्नयन को जारी रखना।

*अनेक राज्यों के सैनिक बजटों में वर्तमान सतत् वृद्धि को रोककर उनमें क्रमिक रूप से कटौती करने की दिशा में कार्य करना।

*विश्व निरस्त्रीकरण सम्मेलन के यथाशीघ्र आयोजन को सुनिश्चित बनाने के लिए सभी उपाय करना।

—युद्ध के अवशिष्ट स्थलों के उन्मूलन के लिए और सर्वोपरि मध्यपूर्व में न्यायोचित व स्थायी समझौते पर कार्यान्वयन के लिए शांतिप्रेमी राज्यों के प्रयासों को सकेन्द्रित करना और ऐसे समझौते के बारे में सम्बन्धित राज्यों को मध्यपूर्व में शस्त्रों की होड़ रोकने में सहायता करने के प्रश्न की जाच करनी चाहिए।

—अन्तर्राष्ट्रीय तनाव-शैथिल्य को गहन बनाने के लिए तथा राज्यों के बीच पारस्परिक लाभप्रद सहयोग के ठोम स्वरूपों में इसे सम्मिलित करने के लिए सब कुछ करना। हेल्सिंकी में आयोजित यूरोपीय सम्मेलन के अन्तिम दस्तावेज के पूर्ण कार्यान्वयन के लिए तथा यूरोप में और अधिक शांतिपूर्ण सहयोग के लिए उत्साहपूर्वक काम करना। शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धान्तों के अनुरूप राज-नीतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक व सांस्कृतिक भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में—अमरीका, फ्रांस, सघ जर्मनी गणराज्य, ब्रिटेन, इटली, कनाडा, जापान तथा दूसरे समाजवादी देशों के साथ दीर्घकालिक पारस्परिक लाभप्रद सहयोग के सम्बन्धों का सतत् रूप से उन्नयन करना जारी रखना।

—एशिया में इन महाद्वीप के राज्यों के सयुक्त प्रयासों के आधार पर सुरक्षा को सुनिश्चित बनाने के लिए कार्य करना।

—अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में बल प्रयोगन करने के बारे में विश्व सधि के लिए कार्य करना।

—उपनिवेशी उत्पीड़न की प्रणाली के सभी अवशेषों के, जनगण की समानता व स्वतंत्रता के उन्नयन तथा उपनिवेशवाद व नस्लवाद के सभी केन्द्रों के पूर्णरूप से उन्मूलन के अन्तर्राष्ट्रीय कार्यों को अत्यन्त महत्वपूर्ण समझना।

—अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में भेदभाव तथा सभी प्रकार के कृत्रिम अवरोधों तथा अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक सम्बन्धों में असमानता, जोर-जबर्दस्ती, तथा शोषण की सभी अभिव्यक्तियों के उन्मूलन के लिए कार्य करना।

सम्बन्धों के विकास, तथा शांति को गहन बनाने में सहयोग पर, उन देशों के साथ जो इसके लिए तैयार हैं, और उनके साथ सम्बन्धों को यथासंभव स्थायी बनाने पर केन्द्रित है।" ब्रेज्नेव ने प्रत्येक मामले में इस बात को निर्धारित करने की आवश्यकता पर बल दिया कि सोवियत संघ उन व्यक्तियों से बातचीत कर रहा है जो समस्याओं को वास्तव में बैठकर सुलझाना चाहते हैं या उसका सम्बन्ध उन व्यक्तियों से है जो "शक्ति की स्थिति से" नीति पर अमल करने का प्रयास कर रहे हैं।

24वीं कांग्रेस के कार्यक्रम को 25वीं कांग्रेस में एक कदम और आगे बढ़ाया गया, जिसमें शांति तथा अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के लिए तथा जनगण की स्वतंत्रता व स्वाधीनता के लिए और अधिक संघर्ष के कार्यक्रम स्वीकृत किया गया।

शांति कार्यक्रम के लक्ष्य में से अनेक की सफलतापूर्वक उपलब्धि के बाद ब्रेज्नेव ने पिछली कांग्रेस में निरूपित व्यवस्थाओं का विकास और विस्तार किया तथा उन्होंने विश्व मामलों में नयी महत्वपूर्ण पहलकदमियाँ प्रस्तुत कीं। सोवियत संघ की तनाव-शैथिल्य की अविचल नीति तथा इसकी तामील और शस्त्रों की होड़ के विरुद्ध इसके संघर्ष का निर्धारण करते हुए मानो दोनों कार्यक्रम एक ही विदेशी-नीति समुच्चय में घुलमिल गए।

जैसा कि ब्रेज्नेव द्वारा नोट किया गया शांति, अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा तथा मानवजाति की प्रगति के हितों में मौजूदा परिस्थितियों में अपेक्षित मुख्य उद्देश्य निम्न हैं :

—शांति के सुदृढ़ीकरण के लिए समाजवादी राज्यों के सक्रिय संयुक्त अंशदान में वृद्धि करना तथा उनकी एकता को शनैः शनैः सुदृढ़ बनाना तथा नये समाज के निर्माण में उनके चहुँमुखी सहयोग का विकास करना।

—शांति को खतरे में डालने वाली बढ़ती हुई शस्त्रों की होड़ को समाप्त करने के लिए तथा शस्त्रास्त्रों के संचित भंडारों में कटौती और निरस्त्रीकरण के लिए कार्य करना। इस उद्देश्य से :

*सामरिक शस्त्रास्त्रों के परिसीमन और उनमें कटौती से सम्बन्धित नये सोवियत-अमरीकी समझौते की तैयारी को पूरा करने के लिए तथा नाभिकीय शस्त्र-परीक्षणों पर सार्वत्रिक व पूर्ण प्रतिबन्ध विषयक अन्तर्राष्ट्रीय संधि करने, रासायनिक हथियारों पर प्रतिबन्ध लगाने और इन्हें नष्ट करने, सामूहिक नर-संहार के हथियारों की नयी किस्मों व विधियों के विकास पर रोक लगाने और साथ-ही-साथ सैनिक या दूसरे विरोधपूर्ण उद्देश्यों के लिए प्राकृतिक पर्यावरण में परिवर्तन पर रोक लगाने के लिए सब कुछ करना।

*मध्य यूरोप में सशस्त्र सेनाओं और सस्त्रास्त्रों में कटौती विषयक वार्तालाप को सक्रिय बनाने के लिए नये सिरे से प्रयास करना। इस दिशा में प्रथम ठोस कदमों से सम्बन्धित समझौतों का पालन करना, आगामी वर्षों में इस क्षेत्र में सैन्य तनाव-शैथिल्य के उन्नयन को जारी रखना।

*अनेक राज्यों के सैनिक बजटों में वर्तमान सतत् वृद्धि को रोककर उनमें क्रमिक रूप से कटौती करने की दिशा में कार्य करना।

*विश्व निरस्त्रीकरण सम्मेलन के यथाशीघ्र आयोजन को सुनिश्चित बनाने के लिए सभी उपाय करना।

—युद्ध के अवशिष्ट स्थलों के उन्मूलन के लिए और सर्वोपरि मध्यपूर्व में न्यायोचित व स्थायी समझौते पर कार्यान्वयन के लिए शांतिप्रेमी राज्यों के प्रयासों को सकेन्द्रित करना और ऐसे समझौते के बारे में सम्बन्धित राज्यों को मध्यपूर्व में शस्त्रों की होड़ रोकने में सहायता करने के प्रश्न की जांच करनी चाहिए।

—अन्तर्राष्ट्रीय तनाव-शैथिल्य को गहन बनाने के लिए तथा राज्यों के बीच पारस्परिक लाभप्रद सहयोग के ठोस स्वरूपों में इसे सम्मिलित करने के लिए सब कुछ करना। हेल्सिंकी में आयोजित यूरोपीय सम्मेलन के अंतिम बस्तायेज के पूर्ण कार्यान्वयन के लिए तथा यूरोप में और अधिक शांतिपूर्ण सहयोग के लिए उत्साहपूर्वक काम करना। शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धान्तों के अनुरूप राजनीतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक व सांस्कृतिक भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में—अमरीका, फ्रांस, सघ जर्मनी गणराज्य, ब्रिटेन, इटली, कनाडा, जापान तथा दूसरे समाजवादी देशों के साथ दीर्घकालिक पारस्परिक लाभप्रद सहयोग के सम्बन्धों का सतत् रूप से उन्नयन करना जारी रखना।

—एशिया में इस महाद्वीप के राज्यों के सयुक्त प्रयासों के आधार पर सुरक्षा को सुनिश्चित बनाने के लिए कार्य करना।

—अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में बल प्रयोग न करने के बारे में विश्व संधि के लिए कार्य करना।

—उपनिवेशी उत्पीड़न की प्रणाली के सभी अवशेषों के, जनगण की समानता व स्वतंत्रता के उल्लंघन तथा उपनिवेशवाद व नस्लवाद के सभी केन्द्रों के पूर्णरूप से उन्मूलन के अन्तर्राष्ट्रीय कार्यों को अत्यन्त महत्वपूर्ण समझना।

—अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में भेदभाव तथा सभी प्रकार के द्विपक्षीय अवरोधों तथा अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक सम्बन्धों में अमानता, जोर-जबरदस्ती, तथा शोष की सभी अभिव्यक्तियों के उन्मूलन के लिए कार्य करना।

आर्थिक सम्बन्धों को खोजने में, विदेशी मामलों में सामूहिक रूप से समान नीति निर्धारित करने में तथा सैद्धांतिक व सांस्कृतिक क्षेत्रों में कार्य के वास्तविक विचार-विनिमय करने में सक्षम बनाता है।

ब्रेज़नेव के लिए राष्ट्रीय विकास व सामाजिक प्रगति में किसी देश की सफलताओं पर हर्षित होना स्वाभाविक है। उन्हें इस बात का विश्वास है कि सभी भ्रातृत्वपूर्ण समाजवादी देशों को मिलकर कार्य करना चाहिए और सभी कठिनाइयों का सामना करने में तथा हमेशा नयी विजय अर्जित करने में परस्पर समर्थन पर निर्भर करना चाहिए।

ब्रेज़नेव ने कहा, "हम प्रत्येक भ्रातृत्वपूर्ण देश को ऐसे फलते-फूलते राज्य के रूप में देखना चाहते हैं, जिसमें तीव्र आर्थिक, वैज्ञानिक और तकनीकी वृद्धि सामंजस्यपूर्ण ढंग से समाजवादी संस्कृति के फलने-फूलने और उसकी जनता के कल्याण में निरन्तर वृद्धि के साथ मिश्रित हो। हम विश्व समाजवादी व्यवस्था को नये समाज का संयुक्त रूप से निर्माण और उसकी प्रतिरक्षा करने वाले तथा एक-दूसरे को अनुभव और ज्ञान से सम्पन्न बनाने वाले जनगण के मैत्रीपूर्ण परिवार के रूप में देखना चाहते हैं। हम इसे घनिष्ठ रूप से जुड़े और मजबूत परिवार के रूप में चाहते हैं, जिसमें सम्पूर्ण विश्व की जनता मुक्त जनगण के भावी विश्वव्यापी समुदाय के आदर्श का दर्शन कर सके।"

विदेशी मामलों में भ्रातृत्वपूर्ण समाजवादी पार्टियों व राज्यों की गतिविधियों को समन्वित करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। संघ जर्मनी गणराज्य के पुनः सैन्यीकरण विषयक पेरिस और लन्दन समझौतों तथा नाटो गुट में इसके प्रवेश प्राप्त कर लेने के प्रत्युत्तर में वारसा संधि तथा इसके आधार पर गठित संगठन शक्ति के सुदृढीकरण तथा तनाव-शैथिल्य अर्जित करने में समाजवादी देशों के प्रयासों के और अधिक समन्वयन के लिए विश्वसनीय आधारशिला है। इस संगठन की राजनीतिक सलाहकार समिति के अधिवेशन, जिसमें ब्रेज़नेव सोवियत प्रतिनिधिमण्डल के नेता के रूप में भाग लेते हैं, समान दृष्टिकोणों पर विचार-विमर्श करने के लिए तथा पहलकदमियाँ करने के लिए नियमित अवधियों पर आयोजित किये जाते हैं। राजनीतिक सलाहकार समिति की 1966 की बुखारेस्ट घोषणा, 1969 की बुदापेस्त अपील, 1970 के बर्लिन वक्तव्य, 1972 की प्राग घोषणा तथा 1974 की वारसा विज्ञप्ति में अन्तर्राष्ट्रीय शांति व सुरक्षा को सुदृढ़ बनाने के लिए महत्वपूर्ण पहलकदमियाँ शामिल हैं। नवम्बर 1976 में बुखारेस्ट में अपने अधिवेशन में वारसा संधि देशों की राजनीतिक सलाहकार समिति द्वारा निर्धारित प्रस्तावों का तनाव-शैथिल्य के गहनीकरण तथा शस्त्रों की होड़ का सामना करने

में सहयोग की दृष्टि से अत्यधिक महत्व है।

वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में हथियारों की होड़ समाप्त करने में निर्णयात्मक प्रगति को प्रमुखतम समस्या मानते हुए 1978 में मास्को में हुए राजनीतिक सलाहकार समिति के अधिवेशन ने इसके प्रभावक समाधान के लिए एकमुश्त प्रस्ताव प्रस्तुत किया। इस अधिवेशन ने अपनी घोषणा में भ्रातृत्वपूर्ण समाजवादी देशों के इस सकल्प पर बल दिया कि वे अपना सर्वतोमुखी सहयोग सुदृढ़ करेंगे और आज की सभी प्रगतिशील लोकतांत्रिक शक्तियों के साथ अन्तर-क्रिया को व्यापक बनाने की नीति का सतत रूप से पालन करेंगे।

आर्थिक सहयोग, विस्तृत होते और विविधमुखी आर्थिक सम्बन्धों का समाजवादी देशों के बीच सम्बन्धों में महत्वपूर्ण स्थान है। इन देशों के वैज्ञानिक, तकनीकी व सांस्कृतिक सम्पर्कों में निरन्तर विकास हो रहा है और पारस्परिक आर्थिक सहायता परिपद अपने स्थायी सदस्यों तथा अपने कार्य के कुछ क्षेत्रों में नियमित रूप से भाग लेने वाले देशों के आर्थिक विकास में विशालतर भूमिका निभा रही है। पारस्परिक आर्थिक सहायता परिपद कभी भी सीमित सगठन नहीं रहा है और यह अपनी गतिविधियों में भाग लेने की इच्छा रखने वाले तथा विश्व के सभी-दूसरे देशों के साथ अपने सम्बन्धों व समझौतों का विस्तार करने वाले सभी देशों को पर्याप्त अवसर प्रदान करती है।

पारस्परिक सहायता के भिन्न और साधारण तत्वों से लेकर समाजवादी देशों के आर्थिक सहयोग ने अधिकाधिक जटिल और विस्तृत स्वरूपों तक प्रगति की है।

ब्रेज्नेव ने उत्पादन के विशेषीकरण और सहयोग के सम्बन्ध में, व्यापार, वित्त तथा वैज्ञानिक-तकनीकी अनुसन्धान कार्य में प्रमुख प्रगति का उन्मूलन के करने के लिए काफी-कुछ किया है। इनकी आर्थिक योजनाओं को समन्वित करने लिए, इनके सहयोग को दीर्घकालिक आधार प्रदान करने के लिए तथा नित नये आर्थिक क्षेत्रों में इनका विस्तार करने के लिए काफी-कुछ किया है। पारस्परिक आर्थिक सहायता परिपद के सदस्य देशों के बीच सहयोग के और अधिक गहनीकरण व सुधार के लिए तथा समाजवादी आर्थिक एकीकरण के विकास के लिए विस्तृत कार्यक्रम, जिसे 1971 में हुए इसके अधिवेशन में स्वीकृत किया गया, ब्रेज्नेव की प्रत्यक्ष सहभागिता से तैयार किया गया था। प्रत्येक देश तथा सम्पूर्ण समुदाय के आर्थिक विकास के लक्ष्य से किये गये उपायों के परिणाम-स्वरूप पारस्परिक आर्थिक सहायता परिपद के देश अब गतिशील आर्थिक विश्व शक्ति के रूप में विकसित हो चुके हैं और विश्व के औद्योगिक उत्पादन में उनका

अंशदान अब एक-तिहाई के लगभग है।

समाजवादी एकीकरण को अलग-अलग प्रत्येक देश तथा समुदाय दोनों के ही हितों में पूर्ण समानता व पारस्परिक हित और लाभ के आधार पर व्यवहार में लाया जाता है। इसका लक्ष्य सम्पूर्ण समाजवादी समुदाय तथा प्रत्येक सहभागी देश के चहुँमुखी विकास में सहायता करना, शांतिपूर्ण व समृद्ध अर्थतंत्र के निर्माण में उनके राष्ट्रीय प्रयास की पूर्ति करना है।

समाजवादी देशों की अनेक विशालस्तरीय संयुक्त परियोजनाएँ सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध हैं, जैसे : सोवियत संघ से पूर्वी यूरोप तक गैस पाइपलाइन, द्रुतवा तेल पाइपलाइन, जो प्रतिवर्ष करोड़ों टन तेल की ढुलाई करती है, मीर विद्युत व्यवस्था तथा विभिन्न खनिजों की खुदाई और उनका परिष्करण करने के लिए उद्यमों का संयुक्त निर्माण, इलेक्ट्रॉनिकी कम्प्यूटर बनाने वाले उद्यम, पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद, पूंजी-निवेश बैंक, इत्यादि।

आज पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद के सदस्यों में यूरोप, एशिया और अमरीका महाद्वीप के दस समाजवादी देश सम्मिलित हैं, जिनकी कुल जनसंख्या 43 करोड़ से भी ऊपर है। ये देश हैं : बुल्गारिया, क्यूबा, चेकोस्लोवाकिया, जर्मन जनवादी गणतंत्र, हंगेरी, मंगोलिया, पोलैण्ड, रूमानिया, सोवियत संघ और वियतनाम।

गत तीस वर्षों में पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद के सदस्य राज्यों ने अपने आर्थिक सामर्थ्य में कई गुना बढ़ोत्तरी की है। 1978 में इनकी राष्ट्रीय आय 1948 की तुलना में दस गुनी अधिक और औद्योगिक उत्पादन 17 गुना अधिक था। विश्व के क्षेत्रफल के उन्नीस प्रतिशत भाग पर फैले और विश्व की दस प्रतिशत जनसंख्या वाले, परस्पर आर्थिक सहायता परिषद के सदस्य राज्य अब विश्व अर्थव्यवस्था में अग्रणी स्थान ग्रहण कर चुके हैं। ये देश विश्व के कुल औद्योगिक उत्पादन का लगभग एक-तिहाई उत्पादित करते हैं और विश्व औद्योगिक उत्पादन में होने वाली वार्षिक बढ़ोत्तरी की आधे से अधिक बढ़ोत्तरी इन्हीं देशों में होती है। उनका सम्मिलित औद्योगिक सामर्थ्य अमरीका से अथवा सभी पश्चिमी यूरोपीय राज्यों के मिले-जुले औद्योगिक सामर्थ्य से अधिक है।

ब्रेज्नेव ने बल देकर कहा, "पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद के सदस्य देश भिन्न सामाजिक प्रणालियों से सम्बन्धित देशों के बीच समान व पारस्परिक लाभप्रद आर्थिक सहयोग के सक्रिय समर्थक हैं। यह बुनियादी दृष्टिकोण शांति के प्रति उनके समर्पण का परिणाम है और यह अन्तर्राष्ट्रीय तनाव कम करने की नीति का अविच्छिन्न अंग है।"

ब्रेज्नेव पूर्वी व मध्य यूरोप के समाजवादी देशों में हमेशा ही अभिनन्दित अतिथि रहे हैं। इन देशों की जनता शांति, समाजवादी समुदाय के सुदृढ़ीकरण तथा जनसाधारण के जीवन में सुधार करने के लिए उनके अनथक कार्य से परिचित हैं और उनकी सराहना करती हैं।

ध्रातृत्वपूर्ण देशों की अपनी यात्राओं के दौरान ब्रेज्नेव इन देशों के नेताओं से ही नहीं बल्कि आम जनता—मजदूर व किसान, विज्ञान व कला के क्षेत्र में कार्यरत व्यक्तियों, इंजीनियरों व डॉक्टरों—से भी मुलाकातें और बातचीत करते हैं। उन सभी के मन में इन मुलाकातों की मधुर स्मृतियाँ सुरक्षित हैं और कुछ तो सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के नेता और पुराने मित्र के रूप में किसी-न-किसी घटना या प्रश्न के सम्बन्ध में बाद में उनसे व्यक्तिगत रूप से मिलते हैं।

हगेरियाई लोक जनतंत्र की अपनी एक यात्रा के दौरान ब्रेज्नेव ने प्रतिभाशाली लोककथा लेखिका मार्तोन पाल्ने से, जो किसान महिला तथा लोककथाओं की लेखिका हैं, बुदापेस्त में हगेरियाई-सोवियत मित्रता सोसायटी की एक बैठक में बातचीत की। चन्द वर्षों बाद उन्होंने मास्को में ब्रेज्नेव को एक पत्र भेजा जिसमें उन्होंने लिखा था कि मेरे अपने गाँव में मेरी ही पहल पर लोक-कला व इतिहास के संग्रहालय की स्थापना की गयी है। इस संग्रहालय के अनेक प्रदर्शों—घरेलू पात्र, वस्त्र, कलात्मक वस्तुएँ, प्राचीन उपकरण, ऐतिहासिक दस्तावेज व चित्रों—में से अनेक मे हंगरी में पुराने समय के ग्रामीण जीवन की कठिनाइयों तथा इस देश में फ़ासिस्ट शासन के त्रासदीपूर्ण दिनों की चित्रित किया गया है।

60 वर्षीय मार्तोन पाल्ने ने ब्रेज्नेव को लिखा, "30 वर्ष पूर्व लाल सेना के साहसी सैनिकों ने हमें स्वतंत्रता और खुशहाली दिलायी। मैं ऐसे देश के प्रतिनिधि के रूप में आपको सम्बोधित करती हूँ, जिसके प्रति हम अपने सुखी जीवन के लिए ऋणी हैं।"

बुजुर्ग हगेरियाई किसान महिला के सीधे-सादे और हार्दिकतापूर्ण शब्दों से अत्यधिक प्रभावित होकर ब्रेज्नेव ने उनके उस पत्र के लिए उन्हें हार्दिकतापूर्वक धन्यवाद दिया, जिससे बुदापेस्त में हुई भेंट की स्मृति ताज़ा हो आई थी। ब्रेज्नेव ने मार्तोन पाल्ने की लिखा : "मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आपने अपने गाँव में संग्रहालय खोला है। समाजवाद राष्ट्रीय और विश्व सस्कृति के लम्बे इतिहास में निर्मित सभी सर्वोत्तम तत्वों का उत्तराधिकारी है और वह अपनी इस सम्पदा की जनता के उपभोग के लिए प्रस्तुत करता है। सांस्कृतिक विरासत पर दक्षता प्राप्त करना अत्यन्त महत्वपूर्ण, आवश्यक एवं उपयोगी बात है।" ब्रेज्नेव ने मार्तोन पाल्ने और उनके ग्राम के अन्य निवासियों को इस संग्रहालय को

खोलने के लिए बधाई दी और समृद्ध समाजवादी हंगेरी के निर्माण में नये सफलताओं और स्वास्थ्य एवं सुख की शुभकामनाएँ प्रकट कीं।

प्रातृत्वपूर्ण समाजवादी देशों के मेहनतकश लोगों के साथ मुलाकात करते समय, सभाओं में उन्हें सम्बोधित करते समय ब्रेज़नेव सदैव ही ऐसे हार्दिक शब्दों का प्रयोग करते हैं, जिनसे श्रोताओं के मन में अनुकूल भावनाएँ उत्पन्न होती हैं। वे उनके समक्ष उन्हीं के समकालीन के रूप में, ऐसे व्यक्ति के रूप में उपस्थित होते हैं, जिसका जीवन उनके जीवन से, उनके अतीत और वर्तमान से जुड़ा हुआ है।

ब्रेज़नेव समाजवादी समुदाय के सभी देशों की यात्रा कर चुके हैं। कुछ देशों में तो वे कई बार जा चुके हैं।

इन यात्राओं तथा इन देशों के नेताओं की सोवियत संघ यात्रा के दौरान महत्वपूर्ण प्रश्नों पर विचार-विमर्श हुए हैं और कई दूरगामी राजनीतिक निर्णय लिए गये हैं।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की 25वीं कांग्रेस में ब्रेज़नेव ने कहा, "मैं अत्यन्त संतोषप्रद भाव से कांग्रेस को सूचित करना चाहता हूँ कि समाजवादी समुदाय की कम्युनिस्ट पार्टियों के नेता एक-दूसरे के साथ निरन्तर सम्पर्क बनाये रहते हैं। नियमित रूप से होनेवाली बहुपक्षीय और द्विपक्षीय बैठकें हमें सभी प्रमुख समस्याओं पर सलाह करने में समर्थ करती हैं तथा जैसा मुहावरा है एक-दूसरे के सुख और दुख में हाथ बँटाने का और भावी प्रगति के सम्बन्ध में संयुक्त रूप से योजना बनाने का अवसर प्रदान करती है।

तनाव-शैथिल्य की अपनी नीति में सोवियत संघ समाजवाद की दो चौकियों—दक्षिण पूर्व एशिया में समाजवादी वियतनाम जनतंत्र और क्यूबा के हितों का ध्यान रखता है, तथा इनसे परामर्श करता है और अपनी गतिविधि का इनके साथ तालमेल रखता है।

सोवियत संघ और प्रातृत्वपूर्ण समाजवादी देशों के जनगण ने आक्रामक के विरुद्ध वियतनामी लोगों के युद्ध-प्रयत्न में सहायता पहुँचायी और इसके साथ ही साथ जनवादी वियतनाम जनतंत्र और दक्षिण वियतनाम के राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चा के शांति प्रयत्नों को समर्थन भी प्रदान किया।

अमरीकी राजनेताओं के साथ बातचीत और सम्पर्कों में सोवियत सरकार ने अविचल रूप से हथियारों के बल पर वियतनामी जनता पर बाहरी इच्छा को थोपने की निरर्थकता पर बल दिया है।

इस संदर्भ में सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महा-सचिव ने व्यक्तिगत रूप से प्रमुख भूमिका का निर्वाह किया। वे बिलकुल कतराये

नहीं और उन्होंने लगभग सभी बँठकों और बातचीत में भाग लिया तथा इसके अच्छे परिणाम निकले। इंडोचीन के जनगण के मामलों में विदेशी समस्त्र हस्तक्षेप की समाप्ति ऐसा ऐतिहासिक मौल चिह्न था, जिसने आठवें दशक के प्रथमाद्वं में, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में सकारात्मक परिवर्तन की दिशा में प्रवाह को कई प्रकार से सुविधा प्रदान की।

1978 में सोवियत संघ और समाजवादी वियतनाम जनतन्त्र ने मित्रता एवं सहयोग की संधि पर हस्ताक्षर किये। इस अवसर पर बोलते हुए लियोनिद ब्रेज्नेव ने बल देते हुए कहा कि समाजवादी समुदाय के राज्यों के बीच मित्रता और एकजुटता के सम्बन्ध में आज की जटिल परिस्थिति में, जब कि चीनी नेताओं को नीति वियतनाम में समाजवादी निर्माण के लिए नयी गभीर कठिनाइयाँ उत्पन्न कर रही है, अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं।

ब्रेज्नेव ने कहा, "सोवियत-वियतनामी संधि दोनों देशों की विदेश नीति की प्रमुख दिशा की पुनर्पुष्ट करती है। हम एशिया और रोप विश्व में शान्ति के सुदृढ़ीकरण का, न्यायोचित एवं समान अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का समर्थन करते हैं।"

लियोनिद ब्रेज्नेव और फ़िदल कास्त्रो तथा समाजवादी क्यूबा के अन्य नेताओं के बीच मित्रता के सम्बन्ध विद्यमान हैं। जनवरी-फ़रवरी 1974 में महासचिव लियोनिद ब्रेज्नेव की क्यूबा द्वीप की यात्रा का न केवल बिस्व के दृश्य-पटल पर समाजवादी देशों की एक ही जैसी नीतियों के सुदृढ़ीकरण के लिए ही बल्कि शान्ति के लिए होनेवाले संपर्क में भारी प्रगति के लिए भी प्रचुर महत्व था।

उनकी इस यात्रा के प्रति उत्तरी अमरीका और लैटिन अमरीका के समाचार-पत्रों, रेडियो और टेलिविजन ने रुचि प्रकट की। इससे क्यूबा की आर्थिक नाके-बंदी के बावत अमरीकी राज्यों के संगठन के निर्णयों को रद्द किए जाने वाले आंदोलन को नवीन स्फूर्ति प्राप्त हुई।

अमरीका के अधिकाधिक सार्वजनिक नेता, सेनेटर और कांग्रेस-सदस्य, राज-नीतिक पर्यवेक्षक और साधारण जन क्यूबा को "अलग-थलग करने के" बेहूदे प्रयत्नों को जारी रखे जाने के विरोध में बोलने लगे और फ़िदल कास्त्रो की क्रान्तिकारी सरकार के साथ सामान्य सम्बन्ध स्थापित किए जाने की माँग करने लगे।

सोवियत संघ और तृतीय विश्व

एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमरीका के देशों के साथ सोवियत संघ के सम्बन्धों की अच्छी प्रगति अन्तर्राष्ट्रीय तनाव-शैथिल्य और इसकी अधिप्राप्ति में महत्वपूर्ण अंशदान करनेवाली कारक है।

विकासशील देशों के साथ सोवियत संघ के सम्बन्ध सतत् रूप से विस्तृत हो रहे हैं। 25वीं पार्टी कांग्रेस में लियोनिद ब्रेज्नेव ने कहा, "उन देशों के साथ, जिन्होंने औपनिवेशिक अधीनता का उन्मूलन कर दिया है अथवा जिन्हें विकासशील देश भी कहा जाता है, उनके साथ सोवियत संघ के सम्बन्ध विस्तृत एवं सुदृढ़तर हुए हैं।" समाजवादी विश्व उन्हें नैतिक, राजनीतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक, तकनीकी और जब आवश्यक हो तब अन्य प्रकार की सहायता प्रदान करता है। ये सम्बन्ध अच्छी प्रगति कर रहे हैं क्योंकि अन्य बातों के अलावा अनेकानेक वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के विषय में समाजवादी और विकासशील देशों के हित विलकुल ही एक जैसे हैं अथवा लगभग एक जैसे हैं।

शस्त्रों की होड़ को रोकने के लिए और निरस्त्रीकरण के उन्नयन के लिए, परमाणु-युक्त क्षेत्रों की स्थापना विस्तृत रूप से किये जाने तथा सैनिक गुटों और विदेशी अड्डों को समाप्त किये जाने के लिए, सैनिक-व्यय में कमी करने और इस प्रकार से उपलब्ध संसाधनों के कुछ अंश को शान्तिपूर्ण आर्थिक आवश्यकताओं के लिए हस्तांतरित किये जाने के लिए किये जाने वाले प्रयत्नों में समाजवादी देश और अनेक विकासशील देश एक होकर कार्य करते हैं। वे दूसरे देशों के आन्तरिक मामलों में विदेशी हस्तक्षेप की, उपनिवेशिक और नव उपनिवेशिक नीतियों, नस्लवाद और जातीय पृथक्वासन की भर्त्सना करते हैं। विश्व के जनगण स्थानीय और उसके साथ ही साथ विश्वव्यापी स्वरूप वाले युद्ध के खतरे के स्थलों को फैलाये जाने के विरुद्ध तथा जनगण की सुरक्षा एवं शान्ति के लिए किये जाने वाले उनके प्रयत्नों की कृतज्ञतापूर्वक सराहना करते हैं। उनकी वाणी संयुक्त राष्ट्रसंघ एवं अन्य अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर सुनाई पड़ती है। सोवियत संघ, भ्रातृत्वपूर्ण समाजवादी देश और अधिकांश विकासशील देश अधिकाधिक रूप से बहुधा उपनिवेशवाद के अवशेषों के उन्मूलन के लिए, आर्थिक शोषण एवं शस्त्रों की होड़ को समाप्त किये जाने के लिए और स्वाधीनता तथा प्रगति एवं सभी राष्ट्रों के बीच शान्तिपूर्ण और समान सहयोग के संबर्द्धन के लिए संयुक्त कार्रवाई करते हैं। 1976 के अक्टूबर में हुए कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के पूर्णाधिवेशन में ब्रेज्नेव ने कहा कि सोवियत संघ "विकासशील एशियाई, अफ्रीकी और लैटिन

अमरीकी देशों की" इन उचित माँगों का ठोस समर्थन करता है कि "अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सम्बन्धों का पुनर्निर्माण समानता के आधार पर, तृतीय विश्व में अपने निबल भागीदारों के पूँजीवादी देशों द्वारा शोषण के सभी स्वरूपों की समाप्ति के आधार पर किया जाना चाहिए। अन्य अनेक क्षेत्रों की ही तरह इस क्षेत्र में भी समाजवादी और विकासशील देशों के हित बिल्कुल एक जैसे हैं। जून, 1977 में जापान के समाचार पत्र असाही के प्रधान सम्पादक को दिये गए साक्षात्कार में ब्रेज्नेव ने कहा था, "इस बाबत हमारा दृष्टिकोण स्पष्ट है। सोवियत संघ विकासशील देशों की इन माँगों का समर्थन करता है कि अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक सम्बन्धों का पुनर्निर्माण न्यायोचित एवं लोकतांत्रिक दृष्टि से किया जाये। इसका सर्वोपरि अर्थ यह है कि उपनिवेशवाद के उन्मूलन की प्रक्रिया की आर्थिक क्षेत्र में विस्तृत किया जाये, बहुराष्ट्रीय साम्राज्यवादी इजारेदारियों का उत्पीड़न और विकासशील देशों के प्राकृतिक ससाधनों और जन-शक्ति का विकसित पूँजीवादी देशों द्वारा शोषण बिल्कुल समाप्त किया जाये।"

अफ्रीकी, एशियाई और लैटिन अमरीकी देशों के प्रसंग में सोवियत विदेश नीति की चर्चा करते हुए ब्रेज्नेव ने बहुधा बल देकर कहा है कि सोवियत संघ अन्य देशों और जनगण के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करता, किसी भी प्रकार के एकपक्षीय लाभ का प्रयास नहीं करता, किसी प्रकार की रियायत नहीं माँगता और किसी भी प्रकार का राजनीतिक प्रभुत्व अथवा सैनिक अड्डे की अपेक्षा नहीं करता। ब्रेज्नेव ने कहा, "प्रत्येक जनगण अथवा देश के इस पुनीत अधिकार के प्रति सम्मान कि वे अपने विकास का मार्ग स्वतः चुनेंगे, लेनिनवादी विदेशनीति का अटल सिद्धान्त है। लेकिन हम अपने दृष्टिकोण को छिपाते बिल्कुल नहीं। अन्य स्थानों की ही तरह विकासशील देशों में भी हम प्रगति, जनवाद और राष्ट्रीय स्वतन्त्रता की शक्तियों के पक्षधर हैं। हम उन्हें अपना मित्र और सुख-दुख के साथी मानते हैं।

इस सहयोग के विकास में ब्रेज्नेव प्रमुख व्यक्तिगत अशदान कर रहे हैं।

शान्तिप्रिय एशियाई देशों के अनुभव और दीर्घ संघर्ष से लाभ उठाते हुए सोवियत संघ ने, जिसका अपना प्रदेश यूरोप और एशिया दोनों में ही फैला हुआ है, एशियाई सामूहिक सुरक्षा की सकल्पना को सर्वांगी रूप से प्रमाणित कर दिया है। इसका प्रस्ताव तो 1969 में ही रखा गया था। ब्रेज्नेव ने कहा था, सामूहिक सुरक्षा का आधार इस प्रकार के सिद्धान्त होने चाहिए, यथा, "राज्यों के बीच सम्बन्धों में बल-प्रयोग का परित्याग, सप्रभुता और सीमाओं की अतंघनीयता के प्रति सम्मान, आन्तरिक मामलों में अ-हस्तक्षेप और पूर्ण समानता तथा पार-

स्परिक लाभ के आधार पर व्यापक आर्थिक एवं अन्य प्रकार का सहयोग। हम एशिया में इस प्रकार की सामूहिक सुरक्षा का समर्थन करते हैं और समर्थन करते रहेंगे तथा इसका संवर्द्धन करने के लिए सभी अन्य राज्यों के साथ सहयोग करने के लिए तत्पर हैं।”

ब्रेज़नेव के कथन से यह स्पष्ट है कि एशियाई सामूहिक सुरक्षा प्रणाली के लिए सोवियत प्रस्ताव उन सभी के हित में है, जो शान्ति, स्वतंत्रता और समान सुरक्षा की इच्छा करते हैं तथा युद्ध, हस्तक्षेप एवं प्रादेशिक विस्तारण का विरोध करते हैं।

एशिया और मध्यपूर्व में सुरक्षा को सुनिश्चित करने का विचार भारत और ईराक के साथ सोवियत संघ द्वारा की गयी मैत्री संधियों में, तुर्की के साथ सम्बन्धों के सिद्धान्तों की घोषणा में तथा अन्य एशियाई देशों के साथ हस्ताक्षरित अनेक महत्वपूर्ण दस्तावेजों में सम्मिलित है।

इनमें से अनेक दस्तावेज एशिया में और शेष विश्व में शान्ति बनाये रखने के लिए काम करने के संकल्प को, तनाव-शैथिल्य और निरस्त्रीकरण के संवर्द्धन, स्थायी एवं न्यायोचित शांति को बढ़ाने, दल-प्रयोग अथवा धमकी को रोकने, और अपनी धरती को अन्य देशों के विरुद्ध आक्रामक एवं अंतर्ध्वसात्मक कार्रवाइयों के लिए उपयोग न करने देने तथा ऐसी ही अन्य बातों के लिए काम करने के संकल्प को औपचारिक रूप प्रदान करते हैं।

जून 1977 में असाही के प्रधान सम्पादक के साथ अपनी भेंट-वार्ता में ब्रेज़नेव ने वर्तमान चरण में एशिया में सोवियत नीति का विस्तारपूर्वक निरूपण किया। उन्होंने कहा, “हमारा देश ऐतिहासिक, आर्थिक एवं भौगोलिक दृष्टि से एशिया महाद्वीप से अविच्छिन्न रूप से सम्बद्ध था और आज भी है। इसलिए यह स्वाभाविक ही है कि हम विश्व के इस क्षेत्र में शान्ति के सुदृढ़ीकरण के प्रति गम्भीर-रूप से रुचि लें। हम यह मानते हैं कि तनाव-शैथिल्य, जो विश्व के मामलों में प्रमुखतम प्रवृत्ति बन चुका है, एशियाई महाद्वीप से जिनमें मानवजाति का आधे से अधिक अंश निवास करता है, कतरा के न निकल जाये।

वियतनाम की जनता की ऐतिहासिक विजय और विशाल शान्तिप्रिय राज्य समाजवादी वियतनाम जनतंत्र की स्थापना के बाद, दक्षिण पूर्व एशिया में संघर्ष के निपटारे और सम्पूर्ण इंडोचीन से अमरीकी सैनिकों की वापसी के बाद, जैसा कि हम देख ही रहे हैं, इस महाद्वीप के सभी राज्यों के संयुक्त प्रयत्नों के द्वारा एशिया में स्थायी शान्ति एवं सुरक्षा को सुनिश्चित बनाने के लिए अधिक अनुकूल परिस्थितियाँ उत्पन्न हो गयी हैं। सोवियत संघ एशिया में इसी घटना-प्रवाह का

समर्थन करता है।

इस नीति की पुनर्पुष्टि दिसम्बर 1978 में अफ़ग़ानिस्तान के साथ मैत्री, अच्छे पड़ोसी सम्बन्ध एवं सहयोग संधि पर हुस्ताक्षर के सिलसिले में हुई। सोवियत संघ यह चाहता है कि तनाद-शैथिल्य गहनतर और व्यापकतर हो तथा एशिया में विस्तृत हो, जो विश्व का सर्वाधिक आबादी वाला महाद्वीप है।

लियोनिद ब्रेज़नेव अफ़्रीका महाद्वीप की समस्याओं में भी गहरी रूचि लेते हैं।

ब्रेज़नेव का कहना है कि आज अफ़्रीकी देशों ने अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में अपनी भूमिका बहुत अधिक बढ़ा ली है और साम्राज्यवादी अब उनके मत की अवहेलना नहीं कर सकते। ऐसी स्थिति में ग्यायपूर्ण विश्व के लिए और साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद एवं नस्लवाद के विरुद्ध लड़ रहे अफ़्रीकी देशों के लिए अपनी एकता और समुक्त कार्रवाई को मजबूत बनाना विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

लियोनिद ब्रेज़नेव इस ओर ध्यान दिताते हैं कि उपनिवेशवादी अपने पीछे अफ़्रीकी राज्यों में अनेक अनुसुलसी समस्याओं का भण्डार छोड़ गये, जो आज भी परेशान कर रही हैं। साम्राज्यवादियों का न्यस्त हित इसी में है कि वे सघर्ष जी आज अफ़्रीका में भड़क उठते हैं, भड़कते ही रहें यथा, भू-प्रदेश पर अधिकार विषयक झगड़े। साम्राज्यवादी अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए इन झगड़ों का लाभ उठाने की कोशिश अफ़्रीकी देशों के बीच बैमनस्य भड़काकर और एक की दूसरे से भिड़ाकर कर रहे हैं।

लियोनिद ब्रेज़नेव का कथन है, "यदि अफ़्रीकी राजनेता अपने झगड़ों का निपटान हथियारों के बल पर न करके आमने-सामने बैठकर स्वाधीनता, प्रादेशिक अखण्डता, विद्यमान राष्ट्रीय सीमाओं की अखण्डता के प्रति आपसी सम्मान के सिद्धान्तों के आधार पर कर लें, तो यह उनके अपने जनगण के हित में, सम्पूर्ण अफ़्रीकी प्रगति तथा विश्व शान्ति के हित में होगा।

"जहाँ तक सोवियत संघ का प्रश्न है, यह प्रत्येक जनगण द्वारा विकास के अपने मार्ग को स्वाधीनतापूर्वक चुनने के अधिकार का सम्मान करता है। सोवियत संघ अफ़्रीकी राज्यों के आन्तरिक मामलों में विदेशी हस्तक्षेप का, उनकी संप्रभुता और प्रादेशिक अखण्डता के किसी भी प्रकार के अतिलंघन का घोर विरोध करता है।"

(प्राग्भा, 18 नवम्बर, 1978)

सोवियत संघ और अफ़्रीकी राज्यों के बीच मित्रतापूर्ण सम्बन्ध हाल के वर्षों में काफ़ी बढ़े हैं।

पुलंगाती उपनिवेशवाद पर जनगण की विजय के फलस्वरूप अपनी स्वतंत्रता अर्जित करने वाले देशों के साथ सम्बन्ध सच्ची दोस्ती और आपसी सह

भावना से बनाये जा रहे हैं।

सोवियत जन और अफ्रीका के लोगों के बीच सम्बन्धों का स्पष्ट प्रमाण वे अनेक उच्चस्तरीय शिष्टमण्डल हैं, जिनका स्वागत सोवियत संघ में 1976 और 1977 में किया गया।

अक्तूबर, 1976 में सोवियत संघ और अंगोला के बीच हुई मित्रता एवं सहयोग की संधि को ब्रेज्नेव ने समाजवादी विश्व और नव मुक्त राज्यों के बीच महान मित्रता के सुदृढ़ीकरण की प्रगति की दिशा में नया कदम बढ़ा, और विश्वास-दायक कदम बताया। अंगोला के राष्ट्रपति अगस्तीन्हो नेतों द्वारा सोवियत संघ की यात्रा ने दोनों देशों के बीच सम्बन्धों के और विकास तथा गहनीकरण की टिकाऊ नींव रखी। राष्ट्रपति समोरा माशेल द्वारा सोवियत संघ की यात्रा नवोदित गणराज्य मोजाम्बीक और सोवियत संघ के बीच बढ़ रहे सम्बन्धों का प्रमाण बनी। और मई, 1977 में समाजवादी इथियोपिया का राजकीय शिष्टमण्डल अस्थायी सैन्य प्रशासनिक परिषद के अध्यक्ष लेफ्टिनेंट कर्नल मेंगिस्तू हाइले मरियम के नेतृत्व में सोवियत संघ की सरकारी यात्रा पर आया। नवम्बर, 1978 में लियोनिद ब्रेज्नेव और मेंगिस्तू हाइले मरियम ने सोवियत-इथियोपियाई मैत्री एवं सहयोग संधि पर हस्ताक्षर किये।

उपनिवेशक और नस्ली उत्पीड़न की व्यवस्था के अवशेषों से लड़ रहे दक्षिण अफ्रीका के जनगण के प्रति सोवियत संघ की सच्ची सहानुभूति है।

अफ्रीका देशों के सम्बन्ध में सोवियत संघ की नीति को स्पष्ट करते हुए ब्रेज्नेव ने कहा है, “दक्षिण अथवा उत्तर अफ्रीका अथवा अफ्रीका के किसी भी भाग में हमारे न तो कोई “विशेष हित” हैं और न ही हो सकते हैं। हम वहाँ पर अपने लिए किन्हीं लाभ की तलाश भी नहीं करते। हम केवल यही चाहते हैं कि प्रत्येक राष्ट्र के अपने भविष्य के निर्धारण और अपना मार्ग आप चुनने के पुनीत अधिकार को मान्यता प्रदान की जाये।...हम यह मानते हैं कि स्वतंत्र जनगण तो इसके सिवा और क्या चाहेंगे कि अन्य जनगण भी स्वतंत्र हों और उन सबका समर्थन करें, जो अपनी स्वतंत्रता के लिए लड़ रहे हैं। और हमें विश्वास है कि यदि अफ्रीका के सभी जनगण, बिना किसी अपवाद के सभी उत्पीड़ित जनगण स्वतंत्रता और स्वाधीनता प्राप्त कर लेते हैं तो विश्व शान्ति और अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा को इससे लाभ ही होगा।”

इस विचार की पुनर्पुष्टि ब्रेज्नेव द्वारा दिये गये उन उत्तरों से होती है, जो उन्होंने जून, 1977 में ल मई द्वारा पूछे गए प्रश्नों के लिए दिये थे। उन्होंने कहा था, “अफ्रीकी देशों के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप का सोवियत संघ दृढ़तापूर्वक

विरोध करता है। हम अपने लिए अफ्रीका में किसी प्रकार के लाभ अथवा विशेष सुविधाओं के आकांक्षी नहीं। उस महाद्वीप के सिलसिले में भी हमारी नीति का लक्ष्य सभी जनगण के साथ शान्तिपूर्ण और मित्रतापूर्ण सम्बन्ध बनाना तथा स्वाधीनता और प्रगति के अपने निर्वाचित पथ पर सफलतापूर्वक बढ़ने में उनकी मदद करना है।”

ब्रेज्नेव ने इस पर बल दिया है कि हमारा देश स्वतंत्रता और स्वाधीनता के लिए, अपना मार्ग आप निर्वाचित करने के लिए और नस्लवाद तथा जातीय पृथग्वासन के कलक के विरुद्ध अफ्रीकी महाद्वीप के जनगण के सघर्ष को न्यायोचित मानता है और पहले की ही तरह उसका समर्थन करता रहेगा।

सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के लिए मार्च, 1979 में होने वाले चुनाव के सिलसिले में निर्वाचकों को सम्बोधित करते हुए ब्रेज्नेव ने विकासशील देशों का विस्तारपूर्वक उल्लेख किया।

उन्होंने कहा, “राष्ट्रीय मुक्ति और सामाजिक प्रगति के लिए जनगण के सघर्ष का समर्थन करना हमारी विदेश नीति का सिद्धान्त है, जो सोवियत संघ के सविधान में अंकित है। हम इसका सुसंगत रूप से परिपालन करते हैं और हमें उस निस्स्वार्थ सहायता पर गर्व है, जो सोवियत संघ तथा समाजवादी समुदाय के अन्य देशों ने उदाहरणार्थ, अंगोला और इथियोपिया के लोगों को आक्रमण के विरुद्ध और अपने भविष्य का निर्णय आप लेने के अधिकार के लिए उनके सघर्ष में दी। कान्तिकारी अफ़ग़ानिस्तान में हुए प्रगतिशील परिवर्तन सोवियत जनता में एकजुटता और हार्दिक स्नेह की भावना उत्पन्न करते हैं।”

अंगोला, इथियोपिया, मोज़ाम्बीक और अफ़ग़ानिस्तान के साथ मित्रता एवं सहयोग को सधियों को ब्रेज्नेव ने इस युग का महत्वपूर्ण प्रतीक बतलाया। उन्होंने कहा : “वे सैन्य-सशस्त्र नहीं है और न ही किसी के विरुद्ध लक्षित गठबन्धन हैं। वे तो उनके साथ मित्रता और सहयोग के दस्तोंवेज हैं, जो उत्प्रेड़न और शोषण से मुक्त समाज के निर्माण का समारम्भ कर चुके हैं।”

ब्रेज्नेव ने आगे कहा . “विश्व राजनीति का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं, जिसमें हमारी पार्टी और हमारा देश न्याय, प्रगति और शान्ति के लिए कार्य करने से कतरायेगा। सुदूर निकारागुआ और पड़ोसी ईरान में स्वतंत्रता और लोकतंत्र के लिए सघर्ष के प्रति, जिम्बाब्वे और नामीबिया के जनगण द्वारा नस्लवादी उत्पीड़न के विरुद्ध स्वातंत्र्य सघर्ष के प्रति और दक्षिण अफ्रीका गणराज्य में जातीय पृथग्वासन की समाप्ति के प्रति हमारी यही नीति है। मध्यपूर्व समस्या के निपटारे के सिलसिले में भी हमारी नीति यही है। विश्व के अन्य अनेक क्षेत्रों की तरह

यहाँ भी हम किसी प्रकार के स्वार्थपूर्ण लाभ में आकांक्षी नहीं और दूसरे देशों की प्राकृतिक सम्पदा पर हम किसी भी प्रकार का दावा नहीं करते। हम तो टिकाऊ शान्ति के समर्थक हैं और अरब जनगण के वैध अधिकारों का, इसरायली आक्रमण के परिणामों के विरुद्ध, साम्राज्यवादी धोस के विरुद्ध और आत्मसमर्पणवादी समझौतों तथा अरबों के मूलभूत हितों की किसी भी प्रकार की बिक्री के विरुद्ध संघर्ष का दृढ़तापूर्वक समर्थन करते हैं।”

अपने भाषण में ब्रेज्नेव ने ईरान में राष्ट्रीय मुक्ति की लोकप्रिय, साम्राज्यवादविरोधी क्रांति की विस्तारपूर्वक चर्चा किया। उन्होंने कहा, “शान्ति, प्रगति और राष्ट्रों का स्वाधीनता के सभी सच्चे समर्थकों की तरह हम इस क्रांति की विजय का स्वागत करते हैं, जिसने उस निरंकुश एवं उत्पीड़क शासन तंत्र को समाप्त कर दिया, जिसने देश को शोषण का पात्र और विदेशी साम्राज्यवाद के लिए एक टिकाऊ आधार बना दिया था। हम नये, क्रांतिकारी ईरान के प्रति सफलता और समृद्धि की शुभकामनाएँ प्रकट करते हैं और आशा करते हैं कि नयी परिस्थितियों में सोवियत संघ और ईरान के जनगण के बीच अच्छे पड़ोसियों जैसे सम्बन्ध पारस्परिक सम्मान, सद्भावना और एक-दूसरे के आन्तरिक मामलों में अ-हस्तक्षेप के विश्वासप्रद आधार पर फूले-फलेंगे।”

ब्रेज्नेव ने कहा, सोवियत संघ नव-स्वतंत्र देशों के साथ, गुट-निरपेक्ष आंदोलन के देशों के साथ और अपनी स्वतंत्रता एवं स्वाधीनता के लिए लड़नेवाले जनगण के साथ घनिष्ठतर मित्रता व सहयोग के लिए कार्य करता रहेगा।

यूरोप शान्ति क्षेत्र बने

ब्रेज्नेव अत्यन्त जटिल अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान के लिए अपने स्वाभाविक ओज और अभ्यवसाय से काम करते हैं। यह बात अन्य बातों के साथ ही साथ यूरोपीय सुरक्षा की समस्या पर भी लागू होती है।

विभिन्न अवसरों पर—द्वितीय विश्वयुद्ध के पहले और बाद—सोवियत संघ द्वारा यूरोपीय सुरक्षा के लिए संघर्ष बदलते हुए अवसरों के अनुकूल बदलता रहा। लेकिन महाद्वीप में शान्ति के सुदृढ़ीकरण के लिए और अन्य प्रणाली वाले यूरोपीय राज्यों के साथ व्यापारिक सम्बन्धों को विस्तृत करने के लिए सतत प्रयास निरन्तर रहे हैं।

ब्रेज्नेव का कथन है, “हमारी पार्टी ने सदैव ही यूरोपीय सुरक्षा को सुनिश्चित बनाने के लिए प्रमुख ध्यान दिया है। और यदि आप विश्व के मामलों में यूरोप के महत्व को ध्यान में रखें तो इसके कारण पूर्णरूप से बोधगम्य हैं।”

यह कौन भूल सकता है कि दोनों विश्वयुद्धों का उद्गम स्थल यूरोप ही था, जिन्होंने भयावह विध्वंस किया। द्वितीय विश्व युद्ध में, जो सभी पिछले युद्धों से सर्वाधिक विध्वंसकारी युद्ध था, 2 करोड़ से अधिक सोवियत जन मृत्यु की गोद में चले गये और जिसमें देश की राष्ट्रीय सम्पदा का लगभग एक-तिहाई नष्ट हो गया। अन्य यूरोपीय राष्ट्रों ने भी प्रचुर हानि उठाई। और यूरोप में ही दो विभिन्न समूहों की प्रबलतम शक्तियाँ—नाटो और वारसा संधि—आज एक-दूसरे के सामने हैं। प्रचुर मात्रा में प्रक्षेपास्त्र और नाभिकीय तथा पारम्परिक अस्त्रों का सकेन्द्रण भी यही है।

यूरोप अत्यन्त घना बसा हुआ महाद्वीप है। लगभग 60 करोड़ लोग यहाँ पर अपेक्षाकृत छोटे भू-क्षेत्र में रहते हैं। इनमें आधे से अधिक लोग मेहनतकश वर्ग के हैं, जो समाज की प्रमुख उत्पादक शक्ति और वर्तमान युग का अग्रणी वर्ग है।

यूरोप अपरिमित भौतिक एवं सांस्कृतिक सम्पदा का कोषागार है—ज्ञानदार शहर, अत्याधुनिक औद्योगिक उपक्रम, वैज्ञानिक एवं तकनीकी विचार के केन्द्र, बिरल और मूल्यवान् कलाकृतियाँ तथा सस्कृति एवं पुरातत्त्व के स्मारक यहाँ हैं।

सीमित क्षेत्र से इस प्रकार का सकेन्द्रण यूरोप के लिए और सर्वोपरि इसके मध्य तथा पश्चिमी भाग के लिए नाभिकीय युद्ध छिड़ जाने पर विशेष रूप से भारी हानि का बोध ही है। संक्षेप में यूरोप को सच्चे तनाव-शैथिल्य और परस्पर विश्वास के आधार पर बने सम्बन्धों की आवश्यकता है।

यूरोपीय सुरक्षा और सहयोग की प्रभावक प्रणाली की स्थापना से सम्बद्ध सभी गतिविधियाँ इन दिनों प्रत्यक्ष रूप से ब्रेज्नेव के नाम के साथ जुड़ी हुई हैं।

उन्हीं की सक्रिय सलग्नता से ही शान्ति के यूरोपीय आदर्श स्वरूप की रूप-रेखा वारसा संधि देशों के बुलारेस्ट में जुलाई 1966 में हुए सम्मेलन तथा अप्रैल, 1967 में कार्लोवी वारी में यूरोपीय कम्युनिस्ट एवं मेहनतकश पार्टियों के सम्मेलन में तैयार की गयी थी। इन सम्मेलनों से भाग लेने वालों द्वारा परिकल्पित यूरोपीय शांति के स्वरूप में निम्न शर्तें शामिल थी : यूरोपीय सीमाओं की अलंघनीयता, बलप्रयोग अथवा शक्तिप्रयोग का परित्याग और अंतर्राष्ट्रीय विवादों का मात्र शांतिपूर्ण उपायो द्वारा समाधान, विभिन्न सामाजिक प्रणालियों वाले राज्यों के बीच शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धान्तों पर आपसी लाभदायक पड़ोसी जैसे सम्बन्धों का विकास, यूरोप में शांतिपूर्ण सहयोग और सुरक्षा के विचार-विमर्श के लिए यूरोपीय सम्मेलन का समायोजन तथा सैनिक गठबन्धनों के सग किये जाने

मनेन नैनिक ननाव नै कमी लाता ।

ब्रेजनेव ने कानॉवी वारी नै कहा, "यूरोपीय सुरक्षा का प्रमुख प्रश्न है उन यूरोपीय नीतियों की अलंघनीयता जो द्वितीय विश्वयुद्ध के परिणामस्वरूप और उसके बाद बनी ।"

इस समय ब्रेजनेव द्वारा निरूपित इन प्रस्तावों को संघ जर्मनी गणराज्य के साथ सोवियत संघ तथा अन्य समाजवादी देशों द्वारा सम्मेलन संधियों नै और यूरोप नै सुरक्षा एवं सहयोग विषयक सम्मेलन के वृत्तमार् (अंतिम दस्तावेज) नै कानूनी रूप प्रदान किया जा चुका है ।

सोवियत राजनय ने यूरोपीय सम्मेलन के समायोजन को बहुत महत्व दिया । समाजवादी देशों ने सम्मेलन के विचार को साकार रूप देने के लिए अत्यंत ढंग नै काम किया और शेष यूरोप की शान्ति शक्तियों के समर्थन पर भरोसा किया । इन प्रयत्नों को सफलता मिली । यूरोप नै सुरक्षा और सहयोग विषयक सम्मेलन की कई वर्षों तक की गयी तैयारियों का समापन 1975 के ग्रीष्म नै हुआ । 35 यूरोपीय देशों के तथा अमरीका और कनाडा के नेता सम्मेलन के परिणामों का लेखा-जोखा लेने और अंतिम दस्तावेज पर अपने दस्तखत करने के लिए हेलसिंकी नै एकत्र हुए ।

यूरोपीय शान्ति के लिए इतने अधिक प्रतिनिधिमूलक कोई भी सम्मेलन तब तक इतिहास नै नहीं हुआ था और इतने मनी स्वीकार करते हैं कि ब्रेजनेव ने इसकी सफलता नै, विचार प्रस्तुत करने नै लेकर शिखरस्तर तक इसके समापन नै प्रचुर अंशदान किया । सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महा-सचिव ने हेलसिंकी नै दिये गये अपने भाषण नै कहा : "युद्धोत्तर अवधि नै मित्र राष्ट्रों के सुविख्यात निर्णयों नै जो अनुमनीय आशा और संभावनाएँ अपनी सामूहिक कार्रवाई नै उत्पन्न की थी वही इस सम्मेलन के परिणाम के साथ जुड़ी हुई हैं ।

"इस सम्मेलन का ऐतिहासिक महत्व उन लोगों को विशेष रूप नै स्पष्ट है, जो द्वितीय विश्व युद्ध की विभीषिका का अनुभव रखने वाली पीढ़ी नै सम्बन्ध रखते हैं । इसके लक्ष्य यूरोपीय जनता की उन पीढ़ी के दिलोदिमाग को ग्रिय हैं, जो शान्ति की परिस्थितियों नै पने-पुने और जीवित है तथा जो उचित ही यह विश्वास करते हैं कि ऐसा ही होना चाहिए ।

ब्रेजनेव ने कहा, इन संभावनाओं और आशाओं की विकलता को रोकने के लिए मनी कुछ किया जाना चाहिए । उन्होंने यूरोप को ऐसे महाद्वीप नै बदले जाने को सुनिश्चित बनाने के मयुक्त प्रयत्नों का आवाहन किया, "जिसमें फिर

कभी सैनिक उथल-पुथल नहीं होगी।”

ब्रेज्नेव ने बताया कि “सम्मेलन के परिणाम सभी भाग लेने वाले देशों के हितों का सावधानीपूर्वक सुविचारित संतुलन हैं। यदि कुछ समझौते भी हैं, तो वह भी न्यायोचित है, और इस प्रकार के हैं जो विचारधारा और सामाजिक प्रणाली के भेद को मिटाये बिना शान्ति के लिए लाभप्रद रहेंगे।”

अंतिम बस्ताबेज और सम्मेलन के परिणामों की सराहना करते समय ब्रेज्नेव के नेत्र भविष्य पर टिके थे और वे अनुरोध कर रहे थे कि इसके प्रावधानों को रद्दी के कागज में नहीं बदल दिया जाना चाहिए बल्कि उन्हें क्रियान्वित किया जाना चाहिए। उन्होंने बत देते हुए कहा कि तनाव-शैथिल्य को अधिकाधिक भौतिक तत्व से भरा जाना चाहिए। उन्होंने कहा, “तनाव-शैथिल्य को मूर्तरूप प्रदान करना ही समस्या का सार है...राज्यों के बीच सम्बन्धों के शुद्ध एवं न्यायोचित सिद्धान्तों की घोषणा करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। और वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में इनके सिद्धान्तों को मुद्दब बनाना, उन्हें व्यवहार में लाना और उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय जीवन के ऐसे कानून का रूप देना भी कुछ कम महत्वपूर्ण नहीं, जिनके उल्लंघन की अनुमति किसी को भी न हो।”

हेलसिंकी सम्मेलन ने यूरोप और विश्व के अन्य अनेक क्षेत्रों के घटनाक्रम के सम्पूर्ण मार्ग पर प्रभाव डाला। अतीत का लेखा-जोखा करने और विद्यमान वर्तमान परिस्थितियों के संदर्भ में इसका लक्ष्य भविष्य ही था। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की 25वीं कांग्रेस में ब्रेज्नेव ने कहा, “उपलब्ध परिणाम किये गये प्रयत्नों के अनुकूल हैं। सम्मेलन में भाग लेने वालों ने विद्यमान सीमाओं की अलघनीयता को सामूहिक रूप से पुष्टि की। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का पथ-प्रदर्शन करने के लिए सिद्धान्त सहिता का निरूपण किया गया है। ये सिद्धान्त शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व की आवश्यकताओं के साथ शब्द और भावना में भी पूर्ण रूप से संगत हैं। शान्तिपूर्ण सहयोग के संदर्भ की रूपरेखा अनेक क्षेत्रों—अर्थव्यवस्था, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, संस्कृति एवं सूचना और जनता के बीच सम्पर्क के लिए प्रस्तुत की गयी है। राज्यों के बीच, सैनिक क्षेत्र समेत अन्य क्षेत्रों में विश्वास के निर्माण को भी परिभाषित किया गया है।”

यूरोप में सुरक्षा एवं सहयोग विषयक सम्मेलन के समायोजन के लिए सघर्ष करने में प्रकट अनयक ऊर्जा, सातत्य और पहल को ही कायम रखते हुए ब्रेज्नेव अब अन्तिम बस्ताबेज के पूर्ण एवं सर्वतोमुखी क्रियान्वयन के लिए कार्य कर रहे हैं। वे इस क्षेत्र में प्रयत्न तेज किये जाने का अनुरोध करते हैं, तनाव-शैथिल्य के शत्रुओं की भर्त्सना करते हैं। उन्होंने वहाँ ठोस पहलकदमियाँ भी की हैं।

ब्रेज्नेव यूरोपीय सुरक्षा और सहयोग के प्रश्नों की ओर विश्व-जनमत का ध्यान आकृष्ट करने के लिए अपने प्रत्येक सार्वजनिक उपस्थिति का लाभ उठाते हैं।

दिसम्बर 1975 में वारसा में हुई पोलिश युनाइटेड वर्कर्स पार्टी की 7वीं कांग्रेस में बोलते हुए उन्होंने कहा : 'हम अन्तिम दस्तावेज के विशिष्ट प्रावधानों की सतत् पूर्ति का समर्थन करते हैं। और यह कहते समय हम इस पर बल देना चाहेंगे कि इस पूरे दस्तावेज के तथा इसके सभी हिस्सों के महत्व को देखना और समझना बहुत महत्वपूर्ण है। और क्योंकि कोई इसके कुछ हिस्सों को रणनीतिक दृष्टि से अधिक लाभदायक समझता है इसलिए उन्हें संदर्भ से काटकर और अलग-अलग लेने के लालच के आगे झुकना नहीं होगा।'

हेलसिंकी में हुए समझौतों के प्रति रचनात्मक रुख का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए ब्रेज्नेव ने इस प्रकार के क्षेत्रों में सहयोग के बारे में यूरोपीय कांग्रेसों और अन्तर-सरकारी सम्मेलनों के समायोजन का प्रस्ताव रखा है; यथा, पर्यावरण संरक्षा, और परिवहन एवं ऊर्जा का विकास, जिनमें अन्य बातों के अलावा उरास्त से लेकर पायरेनीज तक फैली संयुक्त पारोपण एवं विद्युत व्यवस्था के विचार पर चर्चा हो सके।

यूरोप की 21 कम्युनिस्ट एवं मेहनतकश पार्टियों के सम्मेलन में बोलते हुए, ब्रेज्नेव ने हेलसिंकी समझौतों के शब्द और भावना दोनों की ही दृष्टि से क्रियान्वयन का सोवियत संघ का विस्तृत कार्यक्रम प्रस्तुत किया। पश्चिम जगत के नेताओं के साथ सरकारी स्तर पर बातचीत करते समय प्रकट आस्था और शब्दों में ही उन्होंने इस यूरोपीय कम्युनिस्ट सम्मेलन में यूरोप में स्थायी शांति को निरापद बनाने और "शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के भौतिक स्वरूप" के निर्माण के महत्व का उल्लेख किया।

ब्रेज्नेव ने यूरोपीय महाद्वीप में तनाव-शैथिल्य की प्रगति का स्वागत किया लेकिन हेलसिंकी के दस्तावेज को सोवियत संघ के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करने के लिए प्रयुक्त करने के प्रयत्नों और रुकावटों की ओर ध्यान दिलाया। उन्होंने कहा, "समाजवादी देश 'बन्द समाज' नहीं है। हम उन सब के लिए खुले हैं जो सच्चा और ईमानदार है तथा सम्पर्कों को बहुत-बहुत बढ़ाने के लिए तैयार है तथा तनाव-शैथिल्य द्वारा निर्मित अनुकूल परिस्थितियों को पूर्णतम लाभ उठाने के लिए तैयार है। लेकिन हमारे दरवाजे युद्ध, हिंसा, नस्लवाद और घृणा का प्रचार करने वाले सभी प्रकाशनों के लिए सदा बन्द रहेंगे और विदेशी गुप्तचर सेवाओं तथा उनके द्वारा गठित सोवियत-विरोधी आप्रवासी संगठनों के दूतों के

लिए तो और भी अधिक... मैं सोचता हूँ कि सी० आर्दे० ए० की गतिविधियों के बारे में तज्ज्ञाजनक रहस्योद्घाटनों के बाद तो हर कोई इससे सहमत होगा कि हमारे इस रुख के लिए उचित कारण हैं। और हमारा यह कथन मात्र मृदु ही है।

“हमारा यह मत है कि सांस्कृतिक विनिमय एवं जन-संचार माध्यमों को राष्ट्रों के बीच मित्रता एवं शांति तथा मानवीय आदर्शों की सेवा करना चाहिए। लेकिन वे अन्तर्ध्वंसात्मक रेडियो स्टेशन जिन्होंने “लिवर्टी” (स्वाधीनता) और “फ्री यूरोप” (स्वतंत्र यूरोप) जैसे नामों को हड़प लिया है कुछ यूरोपीय देशों की घरती पर कार्यरत हैं। उनका अस्तित्व हो हेल्सिंकी सम्मेलनों की भावना और शब्दों के लिए खुली चुनौती है।”

ब्रेज्नेव इस बात का ध्यान रख रहे हैं कि सोवियत संघ को हेल्सिंकी सम्मेलन के सभी सम्मेलनों और सिद्धान्तों का तथा इसकी सभी अन्य अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं को ईमानदारीपूर्वक पूरा करना चाहिए। और वे यह चाहते हैं कि सम्मेलन में भाग लेने वाले अन्य सभी देश भी अन्तिम बस्तावेज के शब्दों और भावना का पालन करें और इसके प्रावधानों का अपनी नीतियों में तथा अन्य देशों के साथ द्विपक्षीय एवं बहुपक्षीय सम्बन्धों में क्रियान्वयन करें।

कुछ पश्चिमी देशों की तरह सोवियत संघ ने लगभग 2 करोड़ प्रतिपक्षियों में— “प्राव्दा” और “इजवेस्तिया” के साथ-साथ संयं जनतंत्रों की भाषाओं में अन्तिम बस्तावेज का पूरा पाठ छपा। हेल्सिंकी सम्मेलनों के प्रावधानों पर आचरण करते हुए सोवियत रक्षा मंत्रालय ने सोवियत संघ में सैन्य-युद्धाभ्यासों में पड़ोसी देशों से पर्यवेक्षकों को और इनमें ‘नाटो’ के सदस्य भी हैं निमंत्रित करने पर अमल करना शुरू कर दिया। अन्य समाजवादी देशों के साथ मिलकर सोवियत संघ ने नये रचनात्मक प्रस्ताव रखे हैं, जिनमें मध्य यूरोप में सशस्त्र सेनाओं और सस्त्रास्त्रों में कमी करने की बातचीत के बारे में पश्चिमी शक्तियों की स्थिति का, यथेष्ट रूप में ध्यान रखा गया है। उसने पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद और यूरोपीय आर्थिक समुदाय के बीच सम्बन्धों के सिद्धान्तों के सम्बन्ध में तथा जर्मनी में यूरोपीय सहयोग के संघटन में (युनेस्को में) सांस्कृतिक विनिमय को और तेज करने तथा इसी प्रकार की अन्य बातों के सम्बन्ध में सम्मेलन के मसविदे भी प्रस्तुत किये हैं। सोवियत संघ ने पारस्परिक आधार पर स्थायी रूप से मान्यता प्राप्त पत्रकारों को बहुप्रयोजन बहिर्गमन बीजा प्रदान करना प्रारम्भ कर दिया है और देश में उनकी आवाजाही की परास को बढ़ा दिया है।

युनेस्को द्वारा प्रसारित विवरण से सांस्कृतिक सहयोग की ओर सोवियत संघ के व्यापक रवैये का पर्माप्त अनुमान हो जायेगा : सोवियत संघ अमरीका

द्वारा प्रकाशित अनूदित साहित्य से चौगुना अनूदित साहित्य प्रकाशित करता है। 300 से अधिक अमरीकी, 150 ब्रिटिश और इतने ही फ्रांसीसी लेखकों और अन्य विदेशी लेखकों की सैकड़ों रचनाएँ सोवियत जनगण की भाषाओं में प्रति वर्ष लाखों प्रतियों में प्रकाशित की जाती हैं।

(फ़िनलैंड में स्थापित) अन्तर्राष्ट्रीय पत्रकारिता संस्थान का अनुमान है कि समाजवादी देशों के टेलिविज़न पर दिखाये जाने वाले प्रत्येक तीन पश्चिमी कार्यक्रमों के लिए पश्चिमी टेलिविज़न समाजवादी देशों का केवल एक कार्यक्रम दिखाते हैं। सोवियत थिएटरों में 130 के आस-पास आधुनिक विदेशी नाटक प्रस्तुत किये जा रहे हैं जबकि पश्चिमी जगत के रंगमंच पर आधुनिक सोवियत नाटक कभी-कदा ही प्रस्तुत किये जाते हैं। सोवियत माध्यमिक एवं उच्चतर विद्यालयों में 1 करोड़ 20 लाख लोग अंग्रेज़ी, 1 करोड़ 10 लाख लोग जर्मन और 25 लाख लोग फ्रांसीसी भाषा सीख रहे हैं, जबकि पश्चिमी जगत में रूसी भाषा सीखने वालों की संख्या बहुत ही कम है।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के अक्तूबर, 1976 में हुए पूर्णाधिवेशन में ब्रेज्नेव ने कहा, "कुल मिलाकर हेलसिंकी समझौतों की तामील का काम अब दसियों ब्या सैकड़ों व्यावहारिक उपायों में एकत्र कर दिया गया है। वे भले ही हमेशा दिखायी न पड़ते हों लेकिन वे पार्टी व सरकार के अत्यन्त महत्वपूर्ण कामों के अन्तर्गत आते हैं। और हम सोवियत उन उन लोगों के प्रयत्नों की सराहना करते हैं, जो उसी दिशा में काम कर रहे हैं।"

'ल माँद' द्वारा पूछे गये प्रश्नों का उत्तर देते हुए जून, 1977 में ब्रेज्नेव ने कहा, "मैं समझता हूँ आज कोई भी इस तथ्य का खंडन नहीं करेगा कि हेलसिंकी समझौतों में राज्यों के बीच सम्बन्धों पर तथा यूरोप और इसकी सीमाओं से परे की स्थिति पर नकारात्मक प्रभाव डालने की महान क्षमता निहित है। इसके सिवा हेलसिंकी में हस्ताक्षरित अन्तिम दस्तावेज़ अन्तर्राष्ट्रीय जीवन की भारी राजनीतिक वास्तविकता बन गया है और इस पर बड़ी सक्रियता से अमल किया जा रहा है। बहुत कुछ तो किया भी जा चुका है, यद्यपि विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति का अंश स्वाभाविक रूप से भिन्न है। अन्ततः, यूरोपीय सम्मेलन में भाग लेने वाले इन मुद्दे पर तो सहमत हुए कि अन्तिम दस्तावेज़ यूरोपीय शांति को सुदृढ़ करने के लिए राज्यों द्वारा कार्रवाई का व्यापक एवं दीर्घकालिक कार्यक्रम है। मैं इस बात पर बल देना चाहूँगा कि इस कार्यक्रम को भविष्य में और भी अधिक नफ़लापूर्वक क्रियान्वित किया जा सकता है यदि राज्यों के बीच सम्बन्धों के वातावरण को विपाकित करने के प्रयत्न कम हो जायें।"

ब्रेज्नेव का विचार है कि अन्तिम दस्तावेज शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की नीति की अत्यन्त महत्वपूर्ण उपलब्धियों में से है और वे इसके सुसंगत एवं सर्वतोमुखी क्रियान्वयन के उन्नयन के लिए और यूरोप में न्यायपूर्ण लोकतांत्रिक शांति को सुनिश्चित बनाने के लिए कोई भी कसर नहीं रखते।

नवम्बर, 1978 में वारसा संधि सदस्य राज्यों की राजनीतिक परामर्श समिति का सम्मेलन यूरोपीय सुरक्षा व सहयोग में महत्वपूर्ण अंशदान था। लियोनिद ब्रेज्नेव के नेतृत्व में गये सोवियत शिष्टमंडल ने सम्मेलन की घोषणा का मसविदा तैयार करने में अत्यन्त सक्रिय भाग लिया, जिसमें वारसा संधि में शामिल देशों के इस सफल पर बल दिया गया था कि वे यूरोप में सुरक्षा एवं सहयोग विषयक सम्मेलन के अन्तिम दस्तावेज के उस प्रावधान के क्रियान्वयन का उत्कट अनुरोध करेंगे जिसका सम्बन्ध सैन्य-टकराव को कम करने और निरस्त्रीकरण को सरल बनाने के कारण उपायों से है।

यूरोप में तनाव-शान्ति के लिए सोवियत संधि का सपर्यन्त अन्य यूरोपीय देशों के साथ इसके सम्बन्धों के विकास से धनिय रूप से जुड़ा हुआ है।

सोवियत-फ्रांसीसी सम्बन्ध यूरोपीय सामूहिक सुरक्षा प्रणाली के निर्माण का महत्वपूर्ण तत्व है। सातवें दशक के उत्तरार्ध में सोवियत-फ्रांसीसी बैठकों, 1970 के पतझड़ में मास्को में बैठक, अक्टूबर 1971 में, जून 1973 और दिसम्बर 1974 में सोवियत संधि की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महासचिव द्वारा फ्रांस की यात्राओं, स्वर्गीय राष्ट्रपति जार्ज पाम्पिडू के साथ 1973 में मिन्स्क के निकट ज़ास्ताब्ल में, 1973 में और 1974 में श्याम सागर के तट पर स्थित पित्सुन्दा में लियोनिद ब्रेज्नेव की बैठकों और मास्को में, अक्टूबर 1975 में और पेरिस में जून 1977 में उनकी राष्ट्रपति जिस्कार दे'स्तॉ के साथ बैठकों ने इसमें ध्येष्ट अंशदान प्रदान किया है।

जून 1977 में ब्रेज्नेव की फ्रांस-यात्रा का महत्व सोवियत-फ्रांसीसी सम्बन्धों की संरचना से कही परे है। विद्यमान अन्तराष्ट्रीय मामलों के प्रमुखतम प्रश्नों की बातचीत के दौरान उठाया गया—शान्ति और तनाव-शान्ति का सुदृढीकरण, युद्ध के खतरे को उत्पन्न करनेवाले ठिकानों का उन्मूलन, हथियारों की होड़ को समाप्ति, और नाभिकीय युद्ध के खतरे को खत्म करना। अन्तराष्ट्रीय तनाव-शान्ति के वास्तविक जारी समुक्त वक्तव्य में हेल्सिंकी सम्मेलन में निर्धारित पथ का अनुसरण करने और शांति, सुरक्षा तथा ममान सहयोग के लिए कार्य करने का संकल्प व्यक्त किया गया। नाभिकीय शक्तों के प्रसार-निरोध विषयक सोवियत-फ्रांसीसी घोषणा को अत्यधिक महत्व प्रदान किया जाता है। अन्य महत्व

दस्तावेजों पर भी दस्तखत हुए, जिनमें सोवियत-फ्रांसीसी राजनीतिक, वाणिज्यिक, औद्योगिक, वैज्ञानिक एवं तकनीकी सहयोग को बढ़ाने और गहराने सम्बन्धी अनेक समझौते शामिल हैं।

सोवियत-पश्चिम जर्मन सम्बन्धी यूरोपीय सुरक्षा और शांति को दृढ़ करने वाले अन्य महत्वपूर्ण कारक हैं। इसकी पुष्टि सोवियत संघ और संघ जर्मनी गणराज्य के बीच हुई संधि के अमल में आ जाने से होती है। पोलिश-जन जनतंत्र और संघ जर्मनी गणराज्य के बीच, चेकोस्लोवाकिया और संघ जर्मनी गणराज्य के बीच संधियाँ भी सम्पन्न की जा चुकी हैं। पश्चिम बर्लिन के सम्बन्ध में चतुर्पक्षीय समझौता है और जर्मन जनवादी गणतंत्र तथा संघ जर्मनी गणराज्य के बीच सम्बन्धों के सिद्धान्तों के वास्तव संधि भी है।

सोवियत-पश्चिम जर्मन संधि ने पश्चिम जर्मनी के शासकों द्वारा धरती जाने वाली प्रतिशोध की नीति से उत्पन्न दोनों देशों के बीच तनाव की दीर्घावधि को समाप्त कर दिया।

इस संधि ने सोवियत संघ और संघ जर्मनी गणराज्य के बीच दोनों देशों के जनगण और यूरोप में शांति के हित में शांतिपूर्ण एवं पारस्परिक लाभदायक सहयोग के लिए आवश्यक राजनीतिक एवं कानूनी आधार-भूमि निर्मित की।

शिखर स्तर पर योजनाबद्ध बैठकें सोवियत-पश्चिम जर्मन सहयोग का महत्वपूर्ण स्वरूप बन गयी हैं।

1970 में मास्को में और 1971 में ओरियेन्दा में फ़ेडरल चांसलर विली-ब्रांट का स्वागत करने के बाद ब्रेज्नेव ने मई, 1973 में संघ जर्मनी गणराज्य की यात्रा की। और अक्टूबर 1974 में नये फ़ेडरल चांसलर हेल्मुट श्मिट और नवम्बर 1975 में पश्चिम जर्मन राष्ट्रपति वाल्टर शील का सोवियत संघ में स्वागत किया गया।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की 25वीं कांग्रेस में बोलते हुए ब्रेज्नेव ने बल देकर कहा कि सोवियत संघ और संघ जर्मनी गणराज्य के बीच सम्बन्धों का सामान्यीकरण "यूरोप की विद्यमान सीमाओं को तोड़ने-मरोड़ने के दावों के परित्याग के एकमात्र संभव आधार पर" अवलम्बित है। इसके साथ-ही-साथ ब्रेज्नेव ने यह भी कहा कि संघ जर्मनी गणराज्य में समाजवादी देशों के साथ सम्बन्धों को सामान्य बनाने की नीति पर दक्षिणपंथी शक्तियाँ प्रहार कर रही हैं, जो वास्तव में प्रतिशोधवादी मार्ग का अनुसरण कर रही हैं। उनका दवाव वीन सरकार की नीति के कुछ पहलुओं को स्पष्ट ही प्रभावित कर रहा है। महासचिव ने विशेष रूप से यह बताया कि पश्चिम बर्लिन पर हुए समझौते के कठोरतापूर्वक परिपालन

के लिए और इसे विवादों के स्रोत से शांति एवं तनाव-शैथिल्य के रचनात्मक तत्व में बदलने के लिए पर्याप्त क्रम नहीं उठाये जा रहे हैं।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के अक्तूबर, 1976 में हुए पूर्णाधिवेशन में सोवियत-पश्चिम जर्मन सम्बन्धों की चर्चा करते हुए एल० आई० ब्रेज्नेव ने कहा कि सोवियत संघ के मतानुसार पश्चिम जर्मन जनसंख्या का अधिसंख्य शांति व तनाव-शैथिल्य तथा समाजवादी देशों के साथ सम्बन्धों में और सुधार के पक्ष में है। इससे सोवियत संघ और संघ जर्मनी गणराज्य के बीच संबंधोंमुखो, पारस्परिक लाभदायक, दीर्घावधि और बड़े पैमाने पर सहयोग का सामान्य विकास सुविधापूर्ण हो जाना चाहिए। महासचिव ने बल देकर कहा, जहाँ तक सोवियत संघ का सवाल है "हमारी स्थिति स्पष्ट है : हम इसका समर्थन करते हैं।"

मई, 1978 में लियोनिद ब्रेज्नेव को फ़ेडरल जर्मनी-यात्रा विश्वव्यापी महत्व की घटना थी। यह राजनीतिक तनाव-शैथिल्य के विकास में और इसके संन्य-क्षेत्र में विस्तार के लिए परिस्थितियों के निर्माण में सीमा चिह्न थी।

ब्रेज्नेव ने अन्य यूरोपीय देशों के साथ सकारात्मक सम्बन्धों के विकास के लिए कठिन परिश्रम किया है। इस सदर्भ में फरवरी, 1975 में मास्को में हुई सोवियत-ब्रिटिश शिखर-वार्ता का विशेष उल्लेख किया जा सकता है। एल०आई० ब्रेज्नेव के नेतृत्व में सोवियत शिष्टमंडल तथा हेरल्ड विल्सन और जेम्स कैंलेहन के बीच हुई बातचीत के फलस्वरूप सोवियत-ब्रिटिश सम्बन्धों के लिए विश्वसनीय एवं रचनात्मक आधार का निर्माण किया गया। सोवियत संघ और ग्रेट ब्रिटेन के बीच पारस्परिक लाभदायक सहयोग के लिए व्यापक अवसरों का निर्माण किया गया, जो कन्वेंटिव सरकार के ग़र-रचनात्मक रुढ़ के कारण पिछले कुछ वर्षों के दौरान मन्द पड़ गये थे। सोवियत संघ और ग्रेट ब्रिटेन की युद्धकालीन मित्रता का और उनकी सामाजिक प्रणालियों में भेद के बावजूद सफलतापूर्ण सहयोग का स्मरण दिलाते हुए ब्रेज्नेव ने बल देकर कहा कि ब्रिटेन शांति के ओर शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के सुदृढ़ीकरण के अभियान में अच्छा भागीदार बन सकता है।

बातचीत के दौरान ब्रेज्नेव ने सोवियत-ब्रिटिश आर्थिक सम्बन्धों पर बहुत ध्यान दिया। उन्होंने कहा, मुझे इस पर सन्तोष है कि सोवियत-ब्रिटिश आर्थिक सहयोग के ओर विस्तार से ब्रिटेन के साथी मेहनतकशों के लिए नये रोजगार उत्पन्न होंगे और उसकी आर्थिक प्रगति को नवीन उद्देग प्राप्त होगा।

सोवियत-ब्रिटिश शिखर बैठक का मूल्यांकन सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के राजनीतिक ब्यूरो, सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत

के अध्यक्षमंडल और सोवियत संघ की मंत्रिपरिषद ने शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के मिद्धान्तों पर सोवियत संघ और ग्रेट ब्रिटेन के बीच स्थायी सम्बन्धों के उन्नयन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बैठक के रूप में किया। उन्होंने इस ओर ध्यान दिलाया कि इसके अलावा इस बैठक के परिणाम अन्तर्राष्ट्रीय विशेषकर यूरोप में शांति एवं सुरक्षा के सुदृढ़ीकरण के लिए सकारात्मक अंशदान हैं।

अपेक्षाकृत कम समय में अधिक निर्भर योग्य शांति की दिशा में विशाल प्रगति कर लेने के बाद यूरोप विश्व के मामलों में शुभ प्रभाव डालने वाले प्रमुख कारकों में से एक बनता जा रहा है। यूरोप में सुरक्षा एवं सहयोग के क्षितिज से परे विश्व के अन्य क्षेत्रों के शांति एवं सुरक्षा के व्यापकतर संदर्भ अपरिहार्य रूप से उन्मुक्त होंगे।

तनाव-शैथिल्य को सम्पूर्ण विश्व में विस्तृत किये जाने की आवश्यकता की चर्चा करते हुए ब्रेज्नेव की गहन आस्था है कि शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व की जड़ें गहरी जम जायेंगी और इसे उत्तरोत्तर सफलता प्राप्त होती रहेगी। उन्होंने कहा है, "निस्सन्देह अभी यह कहना जल्दबाजी होगी कि विश्व में तो क्या यूरोप में ही शान्ति की स्थायी नींव स्थापित की जा चुकी है। ऐसा कहना तो स्थायी निर्णय होगा। लेकिन जो कुछ अब तक किया जा चुका है और इस दिशा में जो कुछ किया जा रहा है उनमें आशापूर्ण संभावनाएँ उन्मुक्त हो रही हैं।" इसके साथ ही उन्होंने कहा, "और अगर इन सम्भावनाओं को वास्तविकता बनाना है तो अनेक नयी कठिन समस्याओं का समाधान अभी किया जाये।"

सोवियत संघ—संयुक्त राज्य अमरीका : सहयोग एवं प्रतियोगिता

सोवियत संघ का विश्वास है कि संयुक्त राज्य (अमरीका) के साथ सामान्य संबंध बनाये रखना तथा सहयोग और आपसी लाभदायक सम्बन्धों को बढ़ाना संभव और अभीष्ट है। निस्सन्देह, इसमें किसी भी सैद्धांतिक स्थिति का परित्याग, भिन्नताओं और संगो-साधियों अथवा किसी अन्य देश या जनगण के हितों की हानि नहीं होनी चाहिए।

लियोनिद ब्रेज्नेव ने सदा यही मत प्रतिपादित किया है। वे सोवियत अमरीकी सम्बन्धों की अवस्था एवं उनके विकास में गहरी रुचि लेते हैं और उन्हें सुधारने के लिए आवश्यक किसी भी प्रकार की कार्रवाई करने की अपनी इच्छा अपरिवर्तनीय रूप से व्यक्त करते हैं। और इस कार्रवाई में अमरीकी सरकार के नेताओं के साथ पत्राचार, बैठकें और बातचीत शामिल हैं।

लियोनिद ब्रेज्नेव ने बल देकर कहा, "हमारे देश आर्थिक अथवा सैनिक-

शक्ति अथवा अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा किसी भी कारण से विशेष अधिकारों के अधिकारी नहीं। बल्कि इनसे हम पर सार्वत्रिक शांति और युद्ध की रोकथाम के भवितव्य के लिए विशेष उत्तरदायित्व अवश्य आरोपित हो जाता है। अमरीका के साथ अपने सम्बन्धों एवं सपकों के सदर्थ में सोवियत सभ अपने उत्तरदायित्व के प्रति पूर्ण रूप से जागरूक है।"

सोवियत-अमरीकी सुधार में पहले चिह्न आठवें दशक के प्रारम्भ में दृष्टि-गोचर हुए। सोवियत सभ की कम्युनिस्ट पार्टी की 24वीं कांग्रेस द्वारा निरूपित शांति कार्यक्रम में आज की प्रमुखतम समस्याओं के समाधान की व्यवस्था थी और इन समस्याओं में सोवियत-अमरीकी सम्बन्धों में सुधार सम्मिलित थे।

मई, 1972 में मास्को में सोवियत-अमरीकी शिखर बैठक हुई, जिसमें अनेक महत्वपूर्ण दस्तावेज स्वीकार किये गये। इनमें सोवियत संघ और संयुक्त राज्य अमरीका के बीच पारस्परिक सम्बन्धों के दृष्टिगत सिद्धान्त दस्तावेज भी था। दोनों पक्षों ने यह घोषित किया कि नाभिकीय युग में सोवियत-अमरीकी सम्बन्धों के आधार के रूप में शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिवा दूसरा कोई विकल्प नहीं।

मास्को शिखर बैठक ने इस तथ्य के निर्णायक महत्व को स्पष्ट रूप से प्रकट कर दिया कि दो महाशक्तियों की सामाजिक प्रणालियों और विचारधाराओं के बीच व्यापक मतभेद होने के बावजूद सोवियत और अमरीका के बीच सम्बन्धों में सुधार संभव एवं आवश्यक है, जो उनके अपने हितों को और सार्वत्रिक शान्ति के हितों की पूर्ति करेगा।

शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धान्तों की सधि-प्रारम्भ करने के लिए आधार के रूप में परिपुष्टि पहली बार सोवियत-अमरीकी सम्बन्धों के इतिहास में की गयी। दोनों पक्षों ने शान्तिपूर्ण साधनों द्वारा, बातचीत द्वारा झगड़ों को हल करने की तथा बल के प्रयोग अथवा धमकी से बाज आने की प्रतिज्ञा की।

1973 में लियोनिद ब्रेज्नेव की अमरीका यात्रा शान्ति के ध्येय में महान अग्रदान थी, जिसमें सोवियत-अमरीकी सम्बन्धों के शीतयुद्ध से सामान्यीकरण और आगे विकास में सतरण की स्थिति सहज हुई।

अपनी बैठकों के दौरान सोवियत और अमरीकी नेताओं ने सोवियत-अमरीकी सम्बन्धों और विश्व राजनीति की अनेक महत्वपूर्ण समस्याओं पर विचार-विमर्श किया। कृषि, परिवहन, विश्व महासागर के अन्वेषण, परमाणु ऊर्जा के शान्तिपूर्ण उपयोग, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, शिक्षा, संस्कृति आदि के क्षेत्रों में सम्बन्धों और विनिमय को व्यापक बनाने में सम्बद्ध विविध क्षेत्रों में सहयोग के नौ नये समझौते सम्पन्न किये गये।

सामरिक आक्रामक शस्त्रों के और अधिक परिसीमन के लिए वातचीत के बुनियादी सिद्धान्त विषयक दस्तावेज़ बहुत ही महत्वपूर्ण थे, जिनमें कहा गया था कि यह परिसीमन शस्त्रों के परिणाम और उनमें सुधार दोनों पर ही लागू होगा।

22 जून, 1973 को केवल सोवियत और अमरीकी जनगण के लिए ही ऐतिहासिक दिवस के रूप में नहीं बताया जा सकता। उस दिन तो सम्पूर्ण मानव-जाति के लिए जीवन महत्व का कार्य सम्पन्न हुआ। अनेक नये सोवियत-अमरीकी दस्तावेज़ों के साथ-साथ नाभिकीय युद्ध की रोकथाम के वास्तविक समझौते पर इसी दिन हस्ताक्षर हुए। सोवियत संघ और अमरीका विश्व शान्ति एवं अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा के सुदृढ़ीकरण के लक्ष्य से अनुप्राणित और इस तथ्य को स्वीकार करते हुए कि नाभिकीय युद्ध के मानवजाति के लिए विनाशकारी परिणाम होंगे, इस पर सहमत हुए कि वे इस प्रकार से कार्रवाई करेंगे, जिससे उनके बीच और उनमें से किसी एक देश और अन्य देशों के साथ नाभिकीय युद्ध के छिड़ने की कोई आशंका ही न रहे।

दोनों शक्तियाँ एक-दूसरे के विरुद्ध अथवा एक-दूसरे के मित्रों के विरुद्ध अथवा अन्य देशों के विरुद्ध ऐसी परिस्थितियों में बलप्रयोग की धमकी अथवा बल प्रयोग की कार्रवाई से वाज आयेंगे, जिससे अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा के लिए ख़तरा उत्पन्न न हो जाये।

इस सिलसिले में न्यूयार्क टाइम्स ने निम्न टिप्पणी की : “सोवियत और अमरीकी नेतागण जिस बात पर सहमत हुए हैं वह उन सरकारों के लिए आचार संहिता है, जिनके पास एक-दूसरे को नष्ट करने तथा शेष भूमण्डल को भी नष्ट करने की असीमित शक्ति है। इस कारनामे को तो कम करके बताया ही नहीं जा सकता।” विश्व जनमत ने इस तथ्य का स्वागत किया कि सोवियत-अमरीकी तथा अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में सैनिक तनाव-शैथिल्य राजनीतिक तनाव-शैथिल्य के पूरक के रूप में प्रारम्भ हो चुका है।

सोवियत संघ अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति में, विशेषकर अमरीका के साथ अपने सम्बन्धों में सम्भवतम व्यापक, स्थिर एवं अपरिवर्त्य सुधार करने का तथा अधिकाधिक राज्यों को इस प्रक्रिया में संलग्न करने का इच्छुक है। लियोनिद ब्रेज़नेव ने बल देकर कहा है, “हम सोवियत-अमरीकी सम्बन्धों में सुधार को अलग-थलग संक्रिया के रूप में नहीं बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण के मूलभूत सुधार की व्यापक प्रक्रिया के अभिन्न अंग और अत्यन्त महत्वपूर्ण अंग के रूप में देखते हैं।...और हमें सन्तोष होगा यदि सोवियत-अमरीकी सम्बन्धों में सुधार के लिए हमारे प्रयत्न यूरोप अथवा एशिया, अफ्रीका अथवा लैटिन अमरीका, मध्यपूर्व अथवा दूर पूर्व

कही के भी देश हों, उनको तनाव-सौमित्र्य की प्रक्रिया में अधिकाधिक अंकुष्ट करने में सहायक हो।"

सोवियत संघ और अमरीका जिन अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर मिल-जुलकर काम करने के लिए सहमत हुए उनकी सूचीमान से ही यह प्रकट होता है कि सम्पूर्ण मानवजाति को इन दोनों शक्तियों के बीच सहयोग से लाभ होगा, जिन पर विश्व-शान्ति का प्रमुख उत्तरदायित्व है।

अपनी संयुक्त विज्ञप्ति में सोवियत संघ और अमरीका ने "शान्ति के सुदृढीकरण तथा युद्ध के ओर विशेषकर नाभिकीय युद्ध के खतरे को हमेशा के लिए दूर करने के लिए अपनी तत्परता" तथा "सामरिक शस्त्रास्त्रों के ओर आगे परिसीमन के बाबत समझौते के लिए संयुक्त रूप से आगे बढ़ने की अपनी तत्परता" व्यक्त की।

उन्होंने उद्घोषणा की कि हम "शान्ति के सुदृढीकरण, हथियारों के बोझ को कम करने और शस्त्र परिसीमन तथा निरस्त्रीकरण उपायों के बाबत समझौते पर पहुँचने के ध्येय के लिए सभी राज्यों के साथ हाथ मिलाने को बहुत महत्व प्रदान करते हैं। उन्होंने यह पुनर्कथन स्वतापूर्वक किया कि "अन्तिम तथ्य कठोर अन्तर्राष्ट्रीय नियंत्रण के अन्तर्गत सामान्य एवं पूर्ण निरस्त्रीकरण है, जिसमें नाभिकीय निरस्त्रीकरण शामिल है।"

सोवियत संघ और संयुक्त राज्य अमरीका ने "विद्यमान में युद्ध संपाप्त किए जाने और शान्ति के पुनर्स्थापन के बाबत समझौते की सम्पन्नता पर अपना गहरा सन्तोष व्यक्त किया।"

सोवियत और अमरीकी नेताओं ने कहा कि यह अच्छी बात होगी "यदि मध्य यूरोप में राजनीतिक तनाव में कमी के साथ ही साथ सैनिक तनाव में भी कमी की जाये। उन्होंने मध्य यूरोप में सैनिकों और हथियारों की आपसी कमी तथा अन्य सम्बद्ध उपायों के बारे में बातचीत के महान महत्व पर बत रिया।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महासचिव लियोनिद ब्रेज्नेव की संयुक्त राज्य अमरीका की यात्रा तथा इस यात्रा के दौरान हुई बातचीत का सार संयुक्त विज्ञप्ति में, सोवियत-अमरीकी सम्बन्धों में सुदृढ सुधार की दिशा में प्रवाह जारी रखने के उनके पारस्परिक वक्तव्यों के रूप में अंकित हुआ।

विज्ञप्ति पर हस्ताक्षर के समय महासचिव और राष्ट्रपति दोनों ने ही बयान किये, जिन्हें टेलिविजन पर दिखाया-सुनाया गया था। सम्पूर्ण अमरीकी राष्ट्र के दस्तावेज पर हस्ताक्षर करते देखा और शायद कहे जा सकें।

अमरीका जनता के प्रति लियोनिद ब्रेज़नेव के सम्बोधन को अमरीका के दो विशालतम टी०वी० पुंजों से—नेशनल ब्राडकास्टिंग कार्पोरेशन और कोलम्बिया ब्राडकास्टिंग से प्रसारित किया गया था।

लियोनिद ब्रेज़नेव ने अमरीकी जनता के प्रति करोड़ों सोवियत जन की ओर से हार्दिक वधाई और मित्रतापूर्ण भावनाएँ प्रकट कीं, जिन्होंने यह आशा व्यक्त की थी कि यह शिखर बैठक दोनों देशों के बीच सम्बन्धों को सुधारने और सार्वत्रिक शान्ति को सुदृढ़ करने में फलप्रद सिद्ध होगी।

ब्रेज़नेव ने अमरीका के लोगों के सम्मुख सोवियत जनता के जीवन, कार्य, उनकी योजनाओं और आशा का विशद चित्र प्रस्तुत किया तथा अमरीकी जनसमेत सभी जनगण के साथ सद्भावनापूर्ण एवं मित्रतापूर्ण सम्बन्धों तथा शान्ति के लिए उनकी उत्कट कामना का उल्लेख किया।

ब्रेज़नेव ने कहा, “सोवियत जन, किसी अन्य जनगण की तुलना में यह बेहतर जानते हैं कि युद्ध क्या होता है। द्वितीय विश्व युद्ध में हमने विश्वव्यापी ऐतिहासिक महत्व की जीत हासिल की। लेकिन इस युद्ध में 2 करोड़ से अधिक सोवियत जन वीरगति को प्राप्त हुए। हमारे 70 हजार क़स्बे और गाँव विल्कुल नष्ट हो गये। हमारी राष्ट्रीय सम्पदा का एक तिहाई अंश ध्वस्त हो गया।”

उन्होंने आगे बताया, “हमने जो ऐतिहासिक मार्ग तय किया है वह सरल नहीं रहा है। हमारे देशवासी इस तथ्य पर गर्व करते हैं कि समाजवादी क्रांति के बाद अल्प ऐतिहासिक अवधि में ही पिछड़ा हुआ रूस ऐसी प्रमुख औद्योगिक शक्ति के रूप में बदल दिया गया, जिसने वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में महान सफलताएँ अर्जित कर ली हैं।”

“भविष्य के लिए हमारी महान योजनाएँ हैं। हम सोवियत जनता के रहन-सहन के स्तर को अत्यधिक ऊँचा उठाना चाहते हैं। हम शिक्षा और चिकित्सा के क्षेत्र में और अधिक सफलता हासिल करना चाहते हैं। हम अपने क़स्बों और गाँवों को रहने के लिए और अधिक सुविधाजनक तथा और अधिक सुन्दर बनाना चाहते हैं। और प्रत्येक सोवियत व्यक्ति यह भलीभाँति जानता है कि इन योजनाओं को साकार करने के लिए सर्वोपरि आवश्यकता शान्ति ही है।”

ब्रेज़नेव की अमरीका-यात्रा के दौरान सोवियत-अमरीका शिखर-वार्ता को नियमित रूप प्रदान करने के वावत लिये गये निर्णय ने दोनों देशों के बीच संवाद को स्थायित्व एवं सातत्य प्रदान किया और इस प्रकार की अगली बैठक का मार्ग प्रशस्त किया, जो 1974 के ग्रीष्म में मास्को और कीमिया में हुई।

1974 में मास्को में हुई बैठक में सभी प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर

विवाद रूप से विचार-विमर्श हुआ। संयुक्त विज्ञप्ति में अंकित विषयों से यह सकेत मिलता है कि यहाँ पर भी मयेष्ट प्रगति हासिल करना संभव सिद्ध हुआ। यद्यपि अनेक विषयों पर सोवियत संघ और अमरीका के दृष्टिकोण में पर्याप्त मतभेद बने रहे।

2 जुलाई, 1974 को अमरीकी दूतावास में आयोजित रात्रि-भोज के अवसर पर अपने भाषण में तियोनिद ब्रेज्नेव ने यह बताया कि यह कहने के हमारे लिए पर्याप्त कारण हैं कि मास्को-बैठक के परिणामों को "रचनात्मक एवं महत्वपूर्ण बताया जा सके।"

उन्होंने समझाया कि सबसे पहले तो वह उत्प्रेषण कर रहे हैं "एक ऐसे क्षेत्र में उठाये गये नये कदमों का जिसे सोवियत-अमरीकी संबंधों का केंद्रीय क्षेत्र कहना उचित ही होगा—युद्ध के खतरे को कम करने और हथियारों की होड़ को रोक-थाम का क्षेत्र।"

सोवियत-अमरीकी सहयोग को सुदृढ़ करने की दूरगामी प्रक्रियाओं ने, इस सहयोग के विकास में दोनों देशों की जनता की वास्तविक रुचि ने पहले ही के इस बात का निर्धारण कर दिया था कि 1974 में सत्तारूढ़ होनेवाला नया बननेवाला प्रशासन इस क्षेत्र में पहले से चली आ रही नीति को ही जारी रखेगा।

नये अमरीकी राष्ट्रपति जेराल्ड फोर्ड ने विदेश-नीति के नवीकरण करने के पहले ही वक्तव्य में कहा कि सोवियत संघ के प्रति अब से रहने के बनें के नीति बरती जा रही है उसके प्रति वह सत्यनिष्ठ रहेंगे।

निरंतर संपर्कों की उपयोगिता को देखते हुए और वैश्विक शांति के लिए तियोनिद ब्रेज्नेव और जेराल्ड फोर्ड 1974 के अक्टूबर में सोवियत भूमि पर व्लादिवोस्तोक के क्षेत्र में एक और संयुक्त-अमेरिकी-सोवियत के लिए सहमत हुए।

व्लादिवोस्तोक की इस मुलाकात पर तियोनिद ब्रेज्नेव ने कहा कि इस मुलाकात से मुझे ब्रेज्नेव का एक बड़ा संकल्प मिला कि वह अमेरिकी नेता "एक ऐसे व्यक्ति हैं जो बर्फीले हिमालय के दर्रे में अचूकी बातें कर रहे हैं, बर्फीले दर्रे के दर्रे में अचूकी बातें कर रहे हैं और बेहब दृढ़ हो जायेंगे।... मैं उन्हें बहुत सम्मान दूँगा। यह मैंने हमेशा किया है।... वह जो कुछ चाहते हैं उन्हें देने में मैं तैयार हूँ।" को समझ सकते हैं।"

अपनी संयुक्त विज्ञप्ति में उन्होंने कहा कि 1974 के अक्टूबर में

पिछले कुछ वर्षों के दौरान दोनों राज्यों के बीच किये गये बुनियादी संयुक्त निर्णयों और आधारभूत संधियों तथा समझौतों में निर्धारित दिशा में चलकर अपने संबंधों को और अधिक विकसित करने के दृढ़ संकल्प की पुष्टि की।"

सोवियत-अमरीकी संबंधों के एक बुनियादी सवाल की ओर विशेष ध्यान दिया गया : युद्ध के खतरे को खत्म करने और हथियारों की होड़ को खत्म करने के उपायों की ओर।

व्लादिवोस्तोक में महासचिव ब्रेज्नेव और राष्ट्रपति फ़ोर्ड के बीच सामरिक आक्रामक शस्त्रों को सीमित करने के बारे में परम महत्व की एक नयी सहमति पैदा हुई। अपने संयुक्त वक्तव्य में उन्होंने निम्नलिखित प्रावधानों के आधार पर इस क्षेत्र में आगे भी अपनी बातचीत चलाते रहने और एक नया समझौता करने के अपने इरादे की एक बार पुष्टि की :

"1. नये समझौते में अक्तूबर 1977 तक लागू रहने वाले 26 मई, 1972 के अंतरिम समझौते के उपयुक्त प्रावधानों को शामिल किया जायेगा।

"2. नया समझौता अक्तूबर 1977 से 31 दिसंबर, 1985 तक की अवधि के लिए होगा।

"3. समानता तथा समान सुरक्षा के सिद्धांत पर आधारित नये समझौते में निम्नलिखित परिसीमाएँ शामिल होंगी :

(क) दोनों पक्षों को परस्पर सहमति के आधार पर निर्धारित संख्या में सामरिक शस्त्रों को एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाने वाले वाहन रखने का अधिकार होगा।

(ख) दोनों पक्षों को परस्पर सहमति के आधार पर निर्धारित संख्या में स्वतंत्र रूप से अलग-अलग निशानों पर मार करने वाले अनेक विस्फोटक अस्त्रों से लैस अंतर-महाद्वीपीय प्रक्षेपास्त्र और पनडुब्बियों से छोड़े जानेवाले प्रक्षेपास्त्र रखने का अधिकार होगा।

"4. नये समझौते में इस बात का प्रावधान भी शामिल होगा कि 1985 के बाद की अवधि में सामरिक शस्त्रों को और सीमित करने और संभव हो तो उन्हें कम करने के सवाल पर हृद से हृद 1980-1981 तक आगे की बातचीत शुरू की जायेगी।"

व्लादिवोस्तोक में 24 नवंबर को भाषण देते हुए लियोनिद ब्रेज्नेव ने कहा कि दोनों पक्षों ने अपना ध्यान सबसे पहले जिस बात पर केंद्रित किया वह थी "हथियारों को, खासतौर पर उन्हें जिनको अब आमतौर पर सामरिक शस्त्र कहा जाता है, और भी सीमित करने और फिर उन्हें कम करने जैसी बुनियादी महत्व

की समस्या।”

ब्रेज्नेव ने कहा कि अगर हम सचमुच नाभिकीय प्रक्षेपास्त्रों का युद्ध छिड़ जाने के खतरे को, उसके समस्त दुष्परिणामों सहित, दूर करना चाहते हैं तो यह मितात आवश्यक है। इसके बाद ब्रेज्नेव ने यह बात भी कही : “अगर अंतर्राष्ट्रीय तनाव-शैथिल्य को सचमुच स्थायी होना है तो उसे सैनिक क्षेत्र में तनाव-शैथिल्य का सहारा देना होगा। इस मामले में और अधिक प्रगति का विश्वशांति के लिए बहुत महत्व होगा। मुझे ऐसा लगता है कि हमने इस सिलसिले में ब्लादिवोस्तोक में उपयोगों काय किया है।

और अधिक बातचीत के दौरान सोवियत सभ और अमरीका अक्सर शांति तथा तनाव-शैथिल्य के ध्येय के लिए बुनियादी महत्व रखने वाली समस्याओं के बारे में किसी समझौते पर पहुँचने में सफल हुए। उदाहरण के लिए, 28 मई, 1976 को मास्को और वाशिंगटन में एक साथ शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए जमीन के नीचे नाभिकीय विस्फोटों की सधि पर हस्ताक्षर हुए। ब्रेज्नेव ने कहा, “इससे पहले किये गये समझौतों के साथ जोड़कर देखा जाये तो यह सधि हथियारों के भंडारों को सीमित रखने और नाभिकीय अस्त्रों पर विश्वव्यापी प्रतिबन्ध लगाने के लिए किये गये उपायों की श्रृंखला की एक और कड़ी है।”

1977 में अमरीका और सोवियत सभ के सामरिक आक्रामक शस्त्रों पर सीमा लगाने के पंचवर्षीय समझौते को समाप्ति ने ब्लादिवोस्तोक के समझौतों के आधार पर एक नयी अवधि के लिए दोनों ताकतों के बीच एक नये समझौते की बातचीत को अंतिम रूप देने को विशेष तात्कालिकता प्रदान कर दी। यह समझौता हो जाने पर नाभिकीय प्रक्षेपास्त्रों की निरर्थक होड़ में और वृद्धि को रोकने और तथा युद्ध के खतरे को कम करने में सहायता मिलती।

अमरीकी राजनीतिक टीकाकार जे० किंग्सबरी-स्मिथ के प्रश्नों के उत्तरों में लियोनिद ब्रेज्नेव ने इस सवाल के बारे में सोवियत सभ के स्पष्ट तथा सुनिश्चित रवैये की व्याख्या की।

उन्होंने विशेष रूप से कहा : “हम इस बात के पक्ष में हैं कि 1904 में ब्लादिवोस्तोक में जो सहमति प्राप्त हुई है उसके आधार पर सामरिक शस्त्रों को सीमित करने के सोवियत-अमरीकी समझौते का काम यथाशीघ्र पूरा कर लिया जाये। इस मामले के बारे में, जो सारी मानवता की चिंता का विषय है, न तो कोई बाधाएँ थी, न हैं और न होगी। इस समय सोवियत-अमरीकी समझौता निःसंदेह हथियारों की होड़ को सफलतापूर्वक रोक देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा। इस काम को पूरा करने का अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध इनारे हुए

के मुख्य लक्ष्य के साथ—नाभिकीय युद्ध को रोकने के उद्देश्य के साथ है। इसके विपरीत, ऐसे समय पर जब अधिकाधिक भयानक प्रकारों तथा प्रणालियों के हथियार विकसित किये जा रहे हैं, इस समझौते को सम्पन्न करने में किसी भी विलंब में शांति, अन्तर्राष्ट्रीय स्थायित्व तथा सुरक्षा के लिए नये खतरे निहित है।... राजनीतिक तनाव में कमी करके हमने हथियारों को सीमित करने तथा निरस्त्रीकरण के बुनियादी सवालों पर सच्ची लगन के साथ विचार करने का मार्ग भी खोल दिया है। एक बार फिर मैं विलकुल निश्चित रूप से यह बात कहना चाहता हूँ कि सोवियत संघ न किसी को धमकी देता है और न किसी पर हमला करने का इरादा रखता है। कल्पित खतरों से अपने आपको भयभीत करने के बजाय हमें व्यावहारिक तथा रचनात्मक ढंग से इस क्षेत्र में मौजूद समस्याओं तथा सम्भावनाओं पर विचार करने की जरूरत है। हथियारों की निरन्तर होड़ को इन आरोपों के आधार पर भी उचित नहीं ठहराया जा सकता कि हथियारों को सीमित करने में राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा निहित है। आज राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए इसमें कहीं अधिक खतरा निष्क्रियता में, हथियारों की होड़ को वेरोक-टोक जारी रहने देने में निहित है।”

अमरीका में 1976 के चुनाव-अभियान के समय और उसके बाद के कुछ महीनों के दौरान सोवियत-अमरीकी सम्बन्धों में कुछ कठिनाइयाँ पैदा हो गयीं और राजनीतिक वातावरण में सुधार की रफ्तार धीमी पड़ गयी। सामरिक शस्त्रों को सीमित करने से सवाल पर अमरीकी प्रशासन ने जो रवैया अपनाया वह उन प्रतिवद्धताओं को ठुकरा देने के समान था जो उसने ब्लादिवोस्तोक में और उसके बाद की कूटनीतिक वार्ताओं के दौरान स्वीकार की थीं। सामरिक शस्त्रों को और अधिक सीमित करने के समझौते सम्पन्न करने के काम को काफ़ी पेचीदा बना देने के बाद नये प्रशासन ने हथियारों की होड़ को और तेज़ी से बढ़ाना शुरू कर दिया था।

इस सम्बन्ध में सोवियत संघ ने जो रवैया अपनाया वह विलकुल स्पष्ट और सुनिश्चित था। पहले की ही तरह उसके पीछे इसी इच्छा की प्रेरणा काम कर रही थी कि सामरिक शस्त्रों को सीमित करने तथा निरस्त्रीकरण की समस्याओं को हल करने के रास्ते में जो बाधाएँ खड़ी कर दी गयी हैं उन्हें नयी पहल-कदमियों की मदद से पार किया जाये। और पहले की तरह ही इस रविये के प्रतिपादन में ब्रेज्नेव ने प्रमुख भूमिका निभायी। वह बार-बार इस बात पर जोर देते रहे कि सोवियत संघ कार्टर प्रशासन के सहयोग से हथियारों की होड़ को समाप्त करने और नाभिकीय युद्ध के खतरे को कम करने की दिशा में और आगे

बढ़ने को तैयार है अगर कार्टर प्रशासन भी इसी भावना के अनुसार काम करने के इरादे का परिचय दे।

तूला में अपने भाषण के दौरान, जिसने अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं से सम्बन्धित विचारों से परिपूर्ण होने के कारण सारी दुनिया का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया, ब्रेज्नेव ने एक बार फिर इस बात का पर्दाफाश किया कि ये आरोप कितने बेतुके और निराधार हैं कि सोवियत सघ "पहला धार" करने के लिए हथियारों के मामले में श्रेष्ठता प्राप्त करना चाहता है। लियोनिद ब्रेज्नेव ने जोर देकर कहा कि सोवियत सघ हमेशा इस प्रकार की किसी भी धारणा का दृढ़ विरोधी रहा है और अब भी है। सोवियत सघ के समस्त प्रयास पहले या दूसरे किसी भी धार को रोकने की, आमतौर पर नाभिकीय युद्ध को रोकने की दिशा में ही लक्षित हैं।

सोवियत ट्रेड यूनियनों की 16वीं कांग्रेस में भाषण देते हुए ब्रेज्नेव ने सामरिक शस्त्रों को सीमित करने और निरस्त्रीकरण की समस्याओं का विस्तार-पूर्वक विश्लेषण किया। ब्रेज्नेव ने जो ठोस और यथार्थनिष्ठ काम गिनवाये उनमें बुनियादी तौर पर 1974 में तैयार किये गये सामरिक आक्रामक शस्त्रों को सीमित करने के नये समझौते को तैयार करने का काम पूरा करने और उस पर हस्ताक्षर करने और इस आधार पर बराबरी और समान सुरक्षा के सिद्धान्त का सख्ती से पालन करते हुए हथियारों में पारस्परिक कमी की दिशा में और आगे बढ़ने के काम शामिल थे।

शांति तथा प्रगति की सोवियत सघ की इच्छा पर जोर देने के लिए लियोनिद ब्रेज्नेव ने बार-बार इस विषय का उल्लेख किया। अमरीकी मीनेट की ओर से नवम्बर, 1978 में आये हुए एक प्रतिनिधिमंडल को सम्बोधित करते हुए ब्रेज्नेव ने बताया कि सामरिक आक्रामक शस्त्रों को सीमित करने के लिए सोवियत-अमरीकी बार्ता को जल्द पूरा कर लेना और उसके बारे में एक नये समझौते पर हस्ताक्षर कर लेना हथियारों की होड़ पर अकुश लगाने और अतृप्त-गत्वा उसे खत्म कर देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा और वह नोबिन्ड सघ तथा अमरीका दोनों ही की, और अन्य देशों तथा उनकी जनता की, सुनिश्चित सुरक्षा की दिशा में आगे बढ़ने का मार्ग सफलतापूर्वक प्रस्तुत कर देगा। इससे सम्पूर्ण सोवियत-अमरीकी सम्बन्धों के सामान्य वातावरण में सुधार होगा।

टाइम पत्रिका के साथ अपने इंटरव्यू में ब्रेज्नेव ने 1979 के अन्त्य में इन बार्ताओं की स्थिति का विशद मूल्यांकन किया। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा

“आक्रामक सामरिक हथियारों को सीमित करने के नये समझौते का काम पूरा होने के निकट आ रहा है, हालाँकि स्थितियों पर अन्तिम सहमति में स्पष्टतः अभी कुछ और समय लगेगा। हमें विश्वास है कि बराबरी और समान सुरक्षा का सिद्धान्त, जिसे सोवियत संघ और अमरीका आरम्भ-बिन्दु मानते हैं, सही फ़ैसलों की प्रेरणा देंगे और यह कि राष्ट्रपति कार्टर और मैं निकट भविष्य में इस समझौते पर अपने हस्ताक्षर कर सकेंगे। जीवन ने जो लक्ष्य निर्धारित किया है—हथियारों की अबाध होड़ को समाप्त करना, अपने राष्ट्रों की सुरक्षा का आश्वासन करना और फ़ौजी मुठभेड़ के निम्न स्तर पर अन्तर्राष्ट्रीय शांति को सुदृढ़ करना—उसे प्राप्त करने का प्रयत्न सर्वथा उचित है।”

समस्या को इस रूप में प्रस्तुत करने में ब्रेज्नेव का यह सुविदित मत का प्रतिबिम्बित होता है कि तनाव-शैथिल्य को साकार करने में हमें “हथियारों की होड़ को समाप्त करने और निरस्त्रीकरण की दिशा में व्यावहारिक प्रगति प्राप्त करने के काम पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।”

शांति तथा यथार्थनिष्ठता के प्रति अपने लाक्षणिक लगाव के कारण ब्रेज्नेव इस बात पर आग्रहपूर्वक जोर देते कभी नहीं थकते कि जब तक हथियारों की होड़ पर अंकुश लगाने में दुनियादी सफलता प्राप्त नहीं की जायेगी तब तक तनाव-शैथिल्य की प्रक्रिया स्थायी तथा ऐसी नहीं हो सकती कि उसे उल्टी दिशा में न मोड़ा जा सके। तनाव-शैथिल्य को साकार करने तथा विश्व-व्यापी शांति को सुदृढ़ करने में निरस्त्रीकरण प्रमुखतम काम है। ब्रेज्नेव ने अनेक बार कहा है कि दो परस्पर विरोधी प्रक्रियाएँ—राजनीतिक तनाव-शैथिल्य और हथियारों की होड़—अन्तहीन रूप से साथ-साथ विकसित नहीं हो सकती। कभी-न-कभी उन दोनों का टकराव होगा, और उनमें से एक निश्चित रूप से दूसरी को रोक देगी और पीछे ढकेल देगी।

ब्रेज्नेव का कहना है, “सोवियत संघ तथा अन्य समाजवादी देशों के निरन्तर प्रयासों के विपरीत, जो बहुत समय से फ़ौजी खर्च और तैयारियों में कमी की बात कहते रहे हैं, दुनिया में अभूतपूर्व व्यापक पैमाने पर हथियारों की होड़ जारी है। इसके साथ ही हथियारों के भंडार जमा करने का यह सिलसिला, जिनमें जन-व्यापी विनाश के हथियार भी शामिल हैं, अधिकाधिक निरर्थक होता जा रहा है। अगर नाभिकीय प्रक्षेपास्त्रों का युद्ध कभी छेड़ा गया तो अनिवार्य रूप से उसका अंत आक्रमणकारी के विनाश में होगा, और उसके अलावा कई अन्य देशों की जनता के बहुत-से लोग हताहत होंगे, उन देशों में भी जो बाक्रायदा इस युद्ध में शामिल नहीं भी होंगे। यह बात भी स्पष्ट है कि बहुत समय तक तनाव-शैथिल्य

के विकास की और फ़ौजी खर्च में निरन्तर वृद्धि और हथियारों में सुधार तथा उनके भंडार जमा करने को एक साथ चलाते रहना असम्भव है। इसलिए निरस्त्रीकरण की बातें करना ही काफ़ी नहीं है, समय आ गया है कि राज्यों की फ़ौजी तैयारियों को कम करने के बारे में ठोस समझौते किये जायें। सोवियत संघ ठीक यही करने को कह रहा है।”

ब्रेज़नेव की पहलकदमी पर सोवियत संघ ने हथियारों की होड़ पर अंकुश लगाने और निरस्त्रीकरण लागू करने के बारे में अनेक महत्वपूर्ण सुझाव रखे हैं। ये सुझाव सभी देशों के सामने रखे गये हैं, खासतौर पर अमरीका के सामने जो पूँजीवादी जगत की सबसे प्रमुख सैनिक-शक्ति है। सोवियत राजनय समझौता करने वाले हर पक्ष की बराबरी तथा समान सुरक्षा के सिद्धान्तों के आधार पर निरस्त्रीकरण के किसी भी कदम पर विचार-विमर्श करने तथा उसे लागू करने के लिए सभी सम्भव उपायों तथा तरीकों का लाभ उठाता है। सोवियत संघ जेनेवा में सामरिक आक्रामक शस्त्रों को सीमित करने के बारे में अमरीका के साथ द्विपक्षीय बातचीत की बहुत महत्व देता है। वियना में वह अमरीका तथा कई दूसरे राज्यों के साथ मध्य यूरोप में फ़ौजी और हथियारों को कम करने के सवाल पर बातचीत करने में सक्रिय रूप से भाग ले रहा है; इसके अलावा वह संयुक्त राष्ट्रसंघ में निरस्त्रीकरण समिति में रासायनिक तथा अन्य घातक हथियारों पर पाबन्दी लगाने के बारे में भी बातचीत कर रहा है, इत्यादि।

ब्रेज़नेव ने जोर देकर कहा है, “सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति और सोवियत सरकार की विदेश-नीति से संबंधित गतिविधियों की एक मुख्य दिशा हमेशा से यही रही है—जैसा कि शांति कार्यक्रम में तकाजा किया गया है—कि हथियारों की होड़ को रोकने और निरस्त्रीकरण को बढ़ावा देने के लिए सघर्ष किया जाये। आज यह काम पहले कभी की अपेक्षा अधिक तात्कालिक हो गया है। मानव-जाति हथियारों के डेरो पर रहते-रहते तग आ गयी है, परंतु साम्राज्यवाद की आक्रमणकारी शक्तियों ने हथियारों की जो होड़ चला रखी है वह अधिकाधिक उग्र रूप धारण करती जा रही है।...”

ब्रेज़नेव आगे चलकर कहते हैं, “सोवियत कम्युनिस्टों को इस बात पर गर्व है कि उन्होंने विभिन्न देशों की जनता को हथियारों की होड़ को जारी रखने से पैदा होने वाले ख़तरों से बचाने की मुहिम की सबसे अग्रणी पांता में रहने के कठिन पर उदात्त लक्ष्य को पूरा करने का बीड़ा उठाया। हमारी पार्टी सभी देशों से, उनकी जनता से अनुरोध करती है कि वे इस घातक सिलसिले को ख़त्म करने की मिल-जुलकर कोशिश करें। इस क्षेत्र में सामान्य तथा पूर्ण निरस्त्रीकरण हमेशा

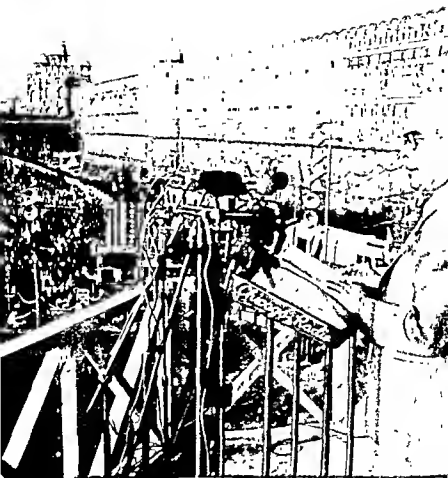
हमारा अंतिम लक्ष्य रहा है। इसके साथ ही सोवियत संघ उन क्षेत्रों में भी प्रगति करने के लिए सब कुछ कर रहा है जो इस लक्ष्य तक पहुँचाने में सहायक हो सकते हैं।...

सोवियत संघ तथा अन्य समाजवादी देशों की ओर से पेश किये गये मसविदे के आधार पर जीवाणु अस्त्रों पर पाबंदी लगाने तथा उन्हें नष्ट कर देने का एक अभिसमय तैयार किया गया है, उस पर हस्ताक्षर हो गये हैं और वह लागू कर दिया गया है। अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के इतिहास में वास्तविक निरस्त्रीकरण का यह वस्तुतः पहला कदम है, जिसमें जनव्यापी विनाश के अत्यंत खतरनाक हथियारों की एक पूरी कोटि को राष्ट्रीय अस्त्रागारों से खत्म कर देने का प्रावधान है।

नाभिकीय अस्त्रों को बढ़ने न देने की संधि के कार्य-क्षेत्र को और विस्तृत किया गया है। कई बड़े-बड़े देशों ने इसके साथ अपना संबंध जोड़ा है।

ब्रेज़नेव कहते हैं, "पिछले कुछ वर्षों के दौरान संयुक्त राष्ट्रसंघ की महासभा ने हमारे देश की पहलकदमी पर हथियारों की होड़ पर अंकुश लगाने और जन-व्यापी विनाश के नये प्रकार के हथियारों और इस प्रकार के हथियारों की नयी प्रणालियों के विकास तथा उत्पादन पर पाबंदी लगाने के लिए अनेक महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किये हैं। अब काम यह देखना है कि इन प्रस्तावों का पालन किया जाये।...इस प्रसंग में विश्व निरस्त्रीकरण सम्मेलन, जिसे संयुक्त राष्ट्रसंघ के सदस्यों के विशाल बहुमत का समर्थन प्राप्त है, विशेष महत्व धारण कर लेता है।"

अक्तूबर क्रांति की 60वीं वर्षगांठ पर लियोनिद ब्रेज़नेव की रिपोर्ट में हथियारों की होड़ के विरुद्ध मुहिम चलाने के बारे में कुछ महत्वपूर्ण विचार शामिल थे। उन्होंने कहा है, "सोवियत संघ कारगर ढंग से अपनी प्रतिरक्षा क्षमता का ध्यान रख रहा है, लेकिन वह दूसरे पक्ष पर सैनिक श्रेष्ठता प्राप्त करने की कोशिश न करता है, न करेगा। हम, उदाहरण के लिए, मध्य यूरोप में पूरब और पश्चिम के बीच या सोवियत संघ और अमरीका के बीच सैनिक शक्ति के मोटे-मोटे संतुलन को विचलित नहीं करना चाहते। लेकिन इसके बदले में हमारा यह आग्रह है कि कोई दूसरा भी इसे अपने पक्ष में विचलित करने की कोशिश न करे। यह कहने की जरूरत नहीं कि वर्तमान संतुलन को बनाये रखना अपने आप में कोई लक्ष्य नहीं है। हम हथियारों की होड़ को नीचे की ओर मोड़ना शुरू करने और फ़ौजी मुठभेड़ के स्तर को धीरे-धीरे घटाने के पक्ष में हैं। हम नाभिकीय युद्ध के खतरे को, जो मानव-जाति के लिए सबसे बड़ा खतरा है, काफ़ी कम करना और फिर बिलकुल खत्म कर देना चाहते हैं। सोवियत संघ तथा अन्य समाजवादी



27 नवम्बर, 1973

सास किला, दिल्ली में आयोजित नागरिक स्वागत समारोह में भाषण
करते हुए एल० आई० ब्रेजनेव

लियोनिद इ० ब्रेज्नेव : जीवन के कुछ पृष्ठ

लियोनिद ब्रेज्नेव ने कहा, "यह नयी संधि यथार्थनिष्ठ और ठोस है। उसके अन्तर्गत संघ का संबंध हथियारों को परिमाण की दृष्टि से सीमित करने से है तथा के गुणात्मक सुधार पर रोक लगायी गयी है। यह संधि बराबरी और समान रक्षा के सिद्धांत पर आधारित है और कई वर्षों की कठिन मेहनत का फल है, जो हत्यों के न्यायोचित संतुलन का प्रतिनिधित्व करती है।"

ब्रेज्नेव ने आगे चलकर कहा, "इस संधि पर हस्ताक्षर करके हम हर मनुष्य के सबसे पुनीत अधिकार की—जीवन के अधिकार की—रक्षा करने में सहायता दे रहे हैं। सोवियत संघ के उसके मार्ग का ही तर्कसंगत क्रम है, उस मार्ग का जिस पर पूर्ण विदेश-नीति के लिए हम कृतसंकल्प हैं।"

वियना में संपन्न हुई सामरिक शस्त्रों को सीमित करने की दूसरी संधि चलते रहने के लिए हम कृतसंकल्प हैं।"

इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि उससे सैनिक क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा को सीमित करने के अन्य पहलुओं के बारे में बातचीत की और अधिक तेजी से प्रगति को प्रोत्साहन मिलेगा।

उदाहरण के लिए, वियना में ब्रेज्नेव और कार्टर इस बात पर सहमत हुए कि उनके प्रतिनिधि हिंद महासागर के क्षेत्र में सैनिक गतिविधियों को सीमित करने के बारे में बातचीत फिर से शुरू करने पर विचार-विमर्श के लिए फ़ोरन मिलें।

सोवियत तथा अमरीकी नेताओं ने एक बार फिर इस बात पर जोर दिया कि वे नाभिकीय अस्त्रों को और अधिक न बढ़ने देने के सवाल को कितना महत्व देते हैं और एक बार फिर अपने इस दृढ़ संकल्प की घोषणा की कि नाभिकीय अस्त्रों को और न बढ़ने देने की संधि के अंतर्गत उन पर जो जिम्मेदारियाँ अर्पित हैं उनका वे सख्ती के साथ पालन करेंगे।

वियना शिखर-वार्ता और उसके परिणामों का सारी दुनिया में व्यापक सकारात्मक रूप से स्वागत किया गया, और उन्हें विभिन्न देशों की जनता यथार्थनिष्ठ विचार रखने वाले राजनेताओं का समर्थन प्राप्त हुआ। साम आक्रामक शस्त्रों को सीमित करने की संधि उन सभी राष्ट्रों के हित में विभिन्न राज्यों के बीच तनाव-शैथिल्य तथा बेहतर संबंध, विश्वस्त शांति युद्ध के खतरे का अंत चाहते हैं।

लियोनिद ब्रेज्नेव ने बार-बार इस बात का उल्लेख किया है कि निरस्त्रता का मार्ग सुगम होने की संभावना नहीं है। दुनिया में ऐसी प्रभावशाली शक्तों में अमरीका भी शामिल है, जिन्हें हथियारों की होड़ को तेज करने

में नयी वृद्धियाँ, और अंतर्राष्ट्रीय तनाव को उग्र बनाने में दिलचस्पी है। सोवियत तथा अमरीकी जनता के बीच बढ़ता हुआ सहयोग तथा पारस्परिक सद्भावना और अधिक तेजी से प्रगति कर सकता है अगर ये शक्तियाँ बनावटी कठिनाइयाँ, पेचीदगियाँ और बाधाएँ न उत्पन्न करें।

हालाँकि सुधरे हुए सोवियत-अमरीकी संबंधों और आमतौर पर तनाव-शैपिल्य के सबसे कट्टर विरोधी अमरीका में बहुत ही थोड़ी संख्या में हैं, फिर भी उनका प्रभाव उनकी संख्या को देखते हुए कहीं अधिक है। बढ़ता उनके पास काफ़ी ताकत और दौलत होने के कारण और उनके सुसंगठित तथा सक्रिय होने के कारण वे अपने देश के राजनीतिक जीवन पर काफ़ी दबाव डालते हैं और जन-संचार के माध्यमों तक उनकी व्यापक पहुँच है। कभी-कभी वे अमरीकी सार्वजनिक जीवन में ऐसे व्यक्तियों तथा समूहों का समर्थन प्राप्त करने में सफल हो जाते हैं जो बुनियादी तौर पर तो सोवियत-अमरीकी सहयोग के पक्ष में होते हैं, विशेष रूप से शांति तथा निरस्त्रीकरण की बुनियादी समस्याओं के बारे में, पर इसके साथ ही उन्हें सोवियत संघ की गृह-नीति अथवा विदेश-नीति के किसी-न-किसी पहलू से मतभेद होता है। इसका या किसी दूसरी बात का सहारा लेकर वे सोवियत-अमरीकी संबंधों को सामान्य बनाने के विरोधियों पर अपना जाल डाल सकते हैं, बढ़ा-चढ़ाकर पेश की गयी या मामूली-सी किसी समस्या के बारे में खूब शोर मचाकर भुल्लुभुल्ला कर सकते हैं और उसे तनाव-शैपिल्य की पूरी नीति के साथ जोड़ सकते हैं ताकि उसकी रफ़्तार को धीमा किया जा सके, उस पर अंकुश लगाया जा सके, या उसे बिल्कुल ही ध्वस्त किया जा सके।

जो अमरीकी राजनीतिज्ञ तनाव-शैपिल्य की प्रक्रिया को और सोवियत-अमरीकी संबंधों में सुधार को रोकना चाहते हैं, और जो उनको बढ़ावा देते हैं या विभिन्न अवसरवादी कारणों से उनके दबाव के आगे झुक जाते हैं वे अपने ऊपर बहुत गंभीर जिम्मेदारी से लेते हैं। स्पष्टतः, वे इस बात को भूल जाते हैं कि शीत-युद्ध के दौर में अमरीकी शासक वर्गों ने शक्ति की स्थिति वाली जो नीति अपनायी थी, उससे उन्हें न केवल वांछित फल ही प्राप्त हुए बल्कि इसके विपरीत उन्हें अनेक गंभीर पराजयों और स्वयं अमरीकी समाज में सकटों का सामना करना पड़ा। स्वयं अपने संकुचित तथा अस्थायी आंतरिक, राजनीतिक अथवा अन्यस्वार्थों को अमरीका के सच्चे राष्ट्रीय हितों से, सुरक्षा, शांति तथा सहयोग के सामान्य मानव-हितों से ऊपर रखने के कारण, और प्रकटतः, हमेशा अपनी सोवियत-विरोधी तथा संयन्त्रवादी गतिविधियों के वास्तविक अथवा संभावित ख़तरनाक परिणामों तथा दुष्परिणामों की ध्यान में न रखने के कारण वे — निरूपण सह-

३० ब्रेज़नेव : जीवन के कुछ पृष्ठ
 ब्रेज़नेव ने कहा, "यह नयी संधि यथार्थनिष्ठ और ठोस है। उसके
 संबंध हथियारों को परिमाण की दृष्टि से सीमित करने से है तथा
 क सुधार पर रोक लगायी गयी है। यह संधि बराबरी और समान
 अंश पर आधारित है और कई वर्षों की कठिन मेहनत का फल है, जो
 यथोचित संतुलन का प्रतिनिधित्व करती है।"
 ब्रेज़नेव ने आगे चलकर कहा, "इस संधि पर हस्ताक्षर करके हम हर मनुष्य
 स पुनीत अधिकार की—जीवन के अधिकार की—रक्षा करने में सहायता
 हैं। सोवियत संघ के लिए यह हमारी पार्टी की कांग्रेसों में निर्धारित शांति-
 विदेश-नीति के उसके मार्ग का ही तर्कसंगत क्रम है, उस मार्ग का जिस पर
 चले रहने के लिए हम कृतसंकल्प हैं।"
 वियना में संपन्न हुई सामरिक शस्त्रों को सीमित करने की दूसरी सं-
 इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि उससे सैनिक क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा को सीमित करने के
 अन्य पहलुओं के बारे में बातचीत की और अधिक तेजी से प्रगति को प्रोत्साहन
 मिलेगा।
 उदाहरण के लिए, वियना में ब्रेज़नेव और कार्टर इस बात पर सहमत हुए
 कि उनके प्रतिनिधि हिंद महासागर के क्षेत्र में सैनिक गतिविधियों को सीमित
 करने के बारे में बातचीत फिर से शुरू करने पर विचार-विमर्श के लिए फ़ौरन
 मिलें।
 सोवियत तथा अमरीकी नेताओं ने एक बार फिर इस बात पर जोर दिया
 कि वे नाभिकीय अस्त्रों को और अधिक न बढ़ने देने के सवाल को कितना महत्व
 देते हैं और एक बार फिर अपने इस दृढ़ संकल्प की घोषणा की कि नाभिकीय
 अस्त्रों को और न बढ़ने देने की संधि के अंतर्गत उन पर जो जिम्मेदारियाँ आती
 हैं उनका वे सक्ती के साथ पालन करेंगे।
 वियना शिखर-वार्ता और उसके परिणामों का सारी दुनिया में व्यापक त-
 सकारात्मक रूप से स्वागत किया गया, और उन्हें विभिन्न देशों की जनता
 यथार्थनिष्ठ विचार रखने वाले राजनेताओं का समर्थन प्राप्त हुआ। साम-
 आक्रामक शस्त्रों को सीमित करने की संधि उन सभी राष्ट्रों के हित में
 विभिन्न राज्यों के बीच तनाव-शैथिल्य तथा बेहतर संबंध, विश्वस्त शां-
 युद्ध के खतरे का अंत चाहते हैं।
 लियोनिड ब्रेज़नेव ने बार-बार इस बात का उल्लेख किया है कि नि-
 का मार्ग सुगम होने की संभावना नहीं है। दुनिया में ऐसी प्रभावशाली
 जिनमें अमरीका भी शामिल है, जिन्हें हथियारों की होड़ को तेज क-

में नयी वृद्धियों, और अंतर्राष्ट्रीय तनाव को उग्र बनाने में दिलचस्पी हैं। सोवियत तथा अमरीकी जनता के बीच बढ़ता हुआ सहयोग तथा पारस्परिक सद्भावना और अधिक तेजी से प्रगति कर सकता है अगर ये शक्तियाँ बनावटी कठिनाइयाँ, पेचीदगियाँ और बाधाएँ न उत्पन्न करें।

हालाँकि सुघरे हुए सोवियत-अमरीकी संबंधों और आमतौर पर तनाव-शैथिल्य के सबसे कट्टर विरोधी अमरीका में बहुत ही थोड़ी संख्या में हैं, फिर भी उनका प्रभाव उनकी संख्या को देखते हुए कहीं अधिक है। बहुधा उनके पास काफी ताकत और दौलत होने के कारण और उनके सुसंगठित तथा सक्रिय होने के कारण वे अपने देश के राजनीतिक जीवन पर काफ़ी दबाव डालते हैं और जन-संचार के माध्यमों तक उनकी व्यापक पहुँच है। कभी-कभी वे अमरीकी सार्वजनिक जीवन में ऐसे व्यक्तियों तथा समूहों का समर्थन प्राप्त करने में सफल हो जाते हैं जो बुनियादी तौर पर तो सोवियत-अमरीकी सहयोग के पक्ष में होते हैं, विशेष रूप से शांति तथा निरस्त्रीकरण की बुनियादी समस्याओं के बारे में, पर इसके साथ ही उन्हें सोवियत संघ की गृह-नीति अथवा विदेश-नीति के किसी-न-किसी पहलू से मतभेद होता है। इसका या किसी दूसरी बात का सहारा लेकर वे सोवियत-अमरीकी संबंधों को सामान्य बनाने के विरोधियों पर अपना जाल डाल सकते हैं, बढ़ा-चढ़ाकर पेश की गयी या मामूली-सी किसी समस्या के बारे में खूब शोर मचाकर मुहिम चला सकते हैं और उसे तनाव-शैथिल्य की पूरी नीति के साथ जोड़ सकते हैं ताकि उसकी रफ़्तार को धीमा किया जा सके, उस पर अकुश लगाया जा सके, या उसे बिल्कुल ही ध्वस्त किया जा सके।

जो अमरीकी राजनीतिज्ञ तनाव-शैथिल्य की प्रक्रिया को और सोवियत-अमरीकी संबंधों में सुधार को रोकना चाहते हैं, और जो उनको बढ़ावा देते हैं या विभिन्न अवसरवादी कारणों से उनके दबाव के आगे झुक जाते हैं वे अपने ऊपर बहुत गंभीर जिम्मेदारी ले लेते हैं। स्पष्टतः, वे इस बात को भूल जाते हैं कि शीत-युद्ध के दौर में अमरीकी शासक क्षेत्रों ने शक्ति की स्थिति वाली जो नीति अपनायी थी, उससे उन्हें न केवल वांछित फल ही प्राप्त हुए बल्कि इसके विपरीत उन्हें अनेक गंभीर पराजयों और स्वयं अमरीकी समाज में संकटों का सामना करना पड़ा। स्वयं अपने सकुचित तथा अस्थायी आंतरिक, राजनीतिक अथवा अन्य स्वार्थों को अमरीका के सच्चे राष्ट्रीय हितों से, सुरक्षा, शांति तथा सहयोग के सामान्य मानव-हितों से ऊपर रखने के कारण, और प्रकटतः, हमेशा अपनी सोवियत-विरोधी तथा सैन्यवादी गतिविधियों के वास्तविक अथवा सभाविक्त कारणों पर परिणामों तथा दुष्परिणामों को ध्यान में न रखने के कारण वे शांतिपूर्ण

अस्तित्व की नीति का कोई यथार्थमूलक विकल्प प्रस्तुत करने में असमर्थ रहते हैं क्योंकि इस प्रकार का कोई विकल्प है ही नहीं।

सोवियत संघ और चीन

17 फ़रवरी, 1977 को क्रुद्ध एवं रुष्ट विश्व ने समाजवादी वियतनाम जनतंत्र के विरुद्ध चीन के सशस्त्र आक्रमण के बारे में जाना। कई आर्मी कोर जिनमें लगभग 6 लाख सैनिक, सैकड़ों टैंक और हज़ारों तोपें थीं वियतनाम में ज़बरदस्ती घुस गयीं।

जैसाकि लियोनिद ब्रेज़नेव ने कहा, वियतनाम पर अपना दस्युतापूर्ण आक्रमण करके चीन के वर्तमान शासकों ने अपने को हमेशा के लिए बेतक्लाब कर दिया है।

पीकिंग के नेता अतीत के सर्वाधिक भ्रष्ट उदाहरणों की नक़ल कर रहे हैं। समाजवादी वियतनाम जनतंत्र की सरकार द्वारा प्रसारित वक्तव्य में कहा गया, "यह विलकुल स्पष्ट है कि वियतनाम के विरुद्ध अपनी शत्रुतापूर्ण नीति की पराजय से चीन के शासक तत्व चीनी सामंत स्वामियों, साम्राज्यवादियों और उपनिवेशवादियों के पुराने मार्ग पर चल पड़े और स्वतंत्र तथा संप्रभु देश वियतनाम के विरुद्ध आक्रमण छेड़ दिया।"

वियतनाम पर आक्रमण चीनी नेताओं की उन बड़े पैमाने पर प्रभुत्ववादी योजनाओं का अंग था जिसे वे काफ़ी अरसे से पोसते आ रहे थे। लेकिन यह वियतनामी जनता के शौर्यपूर्ण रुढ़ के कारण, सोवियत संघ तथा अन्य समाजवादी देशों के समर्थन, अन्य शांति प्रेमी राज्यों द्वारा की गयी कार्रवाइयों और विश्व-व्यापी जन-रोष के कारण असफल रहें।

चीन की स्वदेश एवं विदेश-नीति में परिवर्तन सातवें दशक के प्रारंभ में तेज़ी से होने लगा था।

1964 में जापान के समाजवादियों को सम्बोधित करते हुए माओ ज़े-दुंग ने सोवियत दूरपूर्व पर चीन के दावों का उल्लेख किया। चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के पोलिटब्यूरो की अगस्त 1965 में हुई बैठक में उन्होंने यह कहा : "हमें हर सूरत में दक्षिणपूर्व एशिया को अपने हाथों में रखना चाहिए, जिसमें दक्षिण वियतनाम के साथ-ही-साथ थाईलैंड, बर्मा, मलयेसिया और सिंगापुर शामिल हैं। यह क्षेत्र खनिज संसाधनों की दृष्टि से समृद्ध है। इसलिए प्रयत्न करना उपयोगी है।"

कयनो के बाद करनी शुरू हुई। स्कूली किताबों और दूसरे प्रकाशनों को आक्रामक भावना से संशोधित किया गया और ऐसे मानचित्र प्रकाशित किये गये,

जिनमें सोवियत संघ के बड़े प्रभावों को चीन का अंग बताया गया था। कुछ मानचित्रों में सीमा इस प्रकार खींची गयी थी कि उन प्रदेशों को जिनमें अब एशिया के लगभग सभी जनगण और कुछ यूरोपीय जनगण भी रहते हैं चीन के "अधिकार" में दिखा दिया गया था। चीन में इन प्रदेशों को "अस्थायी तौर पर खोया" अथवा "ऐतिहासिक प्रदेश" कहा जाता है।

एशिया में सोवियत भू-प्रदेश के अलावा इसमें भारत के साथ-ही-साथ नेपाल, भूटान, बर्मा, मलयेसिया, थाईलैंड, लाओस, कम्बुजिया, वियतनाम, तथा कुछ अन्य देशों के हिस्से तथा प्रदेश शामिल हैं। चीनी नेताओं ने अपनी पार्श्विक भूख को तुष्ट करने और विदेशी भू-प्रदेश में घुस जाने का प्रयास किया। भारत देश पर आक्रमण करने का वास्तव में यही प्रयोजन था।

अनेक एशियाई देशों यथा बर्मा, थाईलैंड, मलयेसिया और अन्य में पीकिंग ने अपने एजेंटों के जाल का उपयोग "छोटी सड़ाइयों" को शुरू करने और उन्हें कई वर्षों तक चलाये रखने के लिए किया ताकि स्थिति को अस्थिर किया जा सके। चीनी जाति के लोगों (वासियाओ) को चीन की प्रभुत्ववादी योजनाओं को आगे बढ़ाने के काम पर लगाया गया। दक्षिण पूर्व एशिया में इन लोगों की संख्या दो करोड़ है। उस समय चीन के राजनीतिक रवये का वर्णन करते हुए लियोनिद ब्रेज्नेव ने कहा कि चीनी नेता "अपनी पार्टी और राज्य की नीति को सकीर्ण राष्ट्रवादी उद्देश्यों के अधिकाधिक अधीन करते जा रहे हैं।" और चीन लोक गणराज्य की अन्य राज्यों और राष्ट्रों के प्रति नीति अतिराष्ट्रवाद पर आधारित है। ब्रेज्नेव ने अप्रैल, 1967 में कहा कि "अब सम्पूर्ण विश्व" माओ जे-दुंग के मुठ के "महाशक्ति अतिराष्ट्रवादी मार्ग के सच्चे उद्देश्यों को जानता है।"

1969 में मास्को में आयोजित कम्युनिस्ट एंव मेहनतकश पार्टियों की अंतर्राष्ट्रीय बैठक में ब्रेज्नेव ने "वर्तमान पीकिंग नेतृत्व की महाशक्तिवादी शक्तियों" की तीखी आलोचना की "जो दूसरे देशों के भू-क्षेत्रों पर अत्याचार जतलाता है।" उन्होंने यह भी कहा "चीनी नेहनतकशों और किसानों के बीच में यह विचार बार-बार भ्रष्ट जाग है कि चीन को मत्सोहाई भूमिका देनी चाहिए।" ब्रेज्नेव ने इस तथ्य की ओर ध्यान दिलाया कि "चीनी प्रकार के 'भूमंडल पर माओ जे-दुंग के विचारों की प्रकाश को उजड़ने के प्रयास को पोषित करता है।"

अपनी प्रभुत्ववादी नृत्तकवादीयों के मार्ग में सोवियत संघ के समक्ष हुए पीकिंग के नेतृत्व ने अपनी नीति का अक्षर में ही बना लिया। ब्रेज्नेव ने कहा, चीनी नेतृत्व

“प्रत्यक्ष रूप से हमारी पार्टी, हमारे जनगण, हमारे सोवियत राज्य के विरुद्ध लक्षित है। पीकिंग के वर्तमान नेताओं ने समाजवाद और कम्युनिज्म के उन्मुक्त शत्रु, साम्राज्यवादियों द्वारा बेलगाम और निरर्थक सोवियत विरोधी प्रचार में स्थापित सभी कीर्तिमानों को पीछे छोड़ दिया है।” पीकिंग के नेतृत्वमंडल के सोवियतवाद-विरोध की कलई खोलते हुए ब्रेज्नेव ने 1969 में कहा : “सोवियत संघ तथा अन्य समाजवादी देशों के विरुद्ध ही पीकिंग अब अपनी गतिविधि अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर तेज कर रहा है। अधिकांश समाजवादी देशों के साथ अपने आर्थिक सम्बन्धों को कम-से-कम करते हुए, उनके साथ राजनीतिक सहयोग का परित्याग करते हुए चीनी नेता सोवियत सीमा पर सशस्त्र उत्तेजनात्मक कार्रवाइयों तक बढ़ गए।”

सद्भावना प्रकट करते हुए और शांति के हित में काम करते हुए सोवियत संघ ने बार-बार चीन लोक गणराज्य के साथ सम्बन्ध सुधारने की चेष्टा की। लेकिन प्रत्येक अवसर पर उसे चीनी नेताओं की ओर से विरोध का ही सामना करना पड़ा है।

ऐसा 1964 में हुआ। तब चीनी पार्टी और सरकार का प्रतिनिधिमंडल महान अक्तूबर समाजवादी क्रांति की 47वीं जयन्ती के समारोह में भाग लेने मास्को आया था। चीनी पक्ष ने सोवियत-चीनी सम्बन्धों के महत्वपूर्ण मुद्दों पर रचनात्मक विचार-विमर्श से टालमटोल की और पहले से भी अधिक तनाव उत्पन्न करने का रास्ता अपनाया।

सीमा-विषयक प्रश्नों के वास्तव वातचीत के सिलसिले में चीनी नेताओं ने हर प्रकार की रुकावटें उत्पन्न कीं। ब्रेज्नेव ने अप्रैल 1970 में कहा, “हम इस तथ्य से अनभिज्ञ नहीं हैं कि चालू वातचीत में चीन कृत्रिम रूप से जो स्थिति उत्पन्न कर रहा है, उससे वातचीत में किसी भी तरह सफलता नहीं मिल सकती। निस्सन्देह, दावे के साथ कौन कह सकता है कि सोवियत विरोधी युद्धोन्माद का उत्तेजन और चीन की जनता का “युद्ध एवं भूख” के लिए तैयारी करने के लिए प्रबोधन वातचीत की सफलता की ओर बढ़ रहे हैं।”

चीनी नेतृत्व ने शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व, समान अधिकार, संप्रभुता एवं प्रादेशिक अखंडता के पारस्परिक सम्मान और एक-दूसरे के आन्तरिक मामलों में अहस्तक्षेप के आधार पर सोवियत संघ और चीन लोक गणराज्य के बीच सम्बन्धों के सिद्धान्तों के विषय में संयुक्त वक्तव्य तैयार करने के लिए उच्च-स्तरीय वार्ता के प्रस्ताव को ठुकरा दिया। यह प्रस्ताव सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमंडल ने फरवरी, 1978 में चीन की राष्ट्रीय जन महासभा की

स्थापी समिति के प्रति अपने सम्बोधन में किया था।

सोवियत संघ और दूसरे समाजवादी देशों के साथ चीन के सम्बन्ध जैसे-जैसे बिगड़ते गये वह साम्राज्यवादी शक्तियों की ओर अधिकाधिक झुकता गया और उनकी विदेशनीति के साथ-साथ ही में ही मिलाने लगा।

वियतनाम की वीर जनता के विरुद्ध अमरीकी आक्रमण के समय यह रवैया दिखाई पड़ा। उस समय लियोनिद ब्रेज्नेव ने कहा कि "चीन लोक गणराज्य के नेताओं द्वारा वियतनाम की प्रतिरक्षा में संयुक्त एवं सक्रिय रुख अपनाने के बावत दूसरे समाजवादी देशों के साथ किसी प्रकार की सहमति पर पहुँचने का तिरस्कार गहरा खेद एवं कठोर भत्सना उत्पन्न कर रहा है।... दुर्भाग्यवश, वियतनाम के सभी मित्रों के साथ मिलकर प्रयत्न करने के स्थान पर चीनी नेता उन लोगों पर कटुतम प्रहार करने में व्यस्त रहना बेहतर समझते हैं, जो वियतनाम को विस्तृत एवं प्रभावक सहायता दे रहे हैं।"

मार्च, 1967 में ब्रेज्नेव ने कहा था : "अब अमरीका में यह सार्वजनिक रूप से स्वीकार किया जाता है कि वियतनाम के प्रश्न पर चीन लोक गणराज्य के वर्तमान नेताओं का कुछ वियतनाम की जनता के विरुद्ध अमरीकी युद्ध के प्रवाह को मदद पहुँचा रहा है। "भाओ जे-दुंग और उनके पिछलग्गुओं के घोर सोवियत विरोधी रवैये और आक्रमण का विरोध करने वाली शक्तियों में फूट डालने की तथा वास्तव में युद्ध-रत वियतनाम की सहायता को कम करने की उनकी नीति की" लियोनिद ब्रेज्नेव ने "अमरीकी साम्राज्यवादियों के लिए वास्तविक खोज बताया।"

1972 में अमरीका के राष्ट्रपति निसन को चीन-यात्रा का उल्लेख करते हुए ब्रेज्नेव ने कहा कि "दोनों देशों के बीच सम्पर्कों का पुनरारम्भ और उनके सम्बन्धों का सामान्यीकरण अपने आप में ही सामान्य बात है। "उन्होंने इसके साथ यह भी कहा : "लेकिन पीकिंग-वार्ता में भाग लेने वालों की कुछ उद्घोषणाओं पर ध्यान देना आवश्यक है, जो यह सोचने का आधार प्रदान करती है कि सवाद चीन-अमरीकी द्विपक्षीय सम्बन्धों की परिधि के बाहर के विषयों पर भी हुआ। उदाहरण के लिए, यथाई में आयोजित राज-भोज पर दिये गए वक्तव्य, यथा, 'आज हमारे दोनों राष्ट्र (अर्थात् अमरीकी और चीनी) सम्पूर्ण विश्व के भविष्य को अपने हाथों में धामे हुए हैं' का क्या अर्थ लगाया जाता है?"

पीकिंग के साम्राज्यवादी मित्रों का चक्र उत्तरोत्तर बढ़ता गया। जैसा कि लियोनिद ब्रेज्नेव ने इंगित किया, सोवियत विरोधी आधार पर किसी के साथ, अत्यन्त प्रतिक्रियावादी ताकतों के साथ भी सिद्धान्तहीन रूप से हाथ मिला दिया

गये। चाहे वे ब्रिटिश टोरियो में से अत्यन्त कट्टर सोवियत विरोध करने वाले लोग हों, फ्रेडरल जर्मनी के प्रतिशोधवादी तत्व हों, पुर्तगाली उपनिवेशवादी हों अथवा दक्षिण अफ्रीका के नस्लवादी हों। "इस गुट में चरम प्रतिक्रियावाद के प्रतिपादक—चिली का फौजी गिरोह और ब्रिटेन, फ्रेडरल जर्मनी, अमरीका तथा अन्य देशों के साम्राज्यवादी पूंजीवाद के दक्षिण पंथ के नेता" शामिल थे।

साम्राज्यवाद के साथ अपने सम्बन्धों को सुदृढ़ बनाने के अतिरिक्त चीनी नेताओं की प्रभुत्ववादी योजनाओं का एक अंग यह भी था कि युद्ध की तैयारी करो और तनाव-शैथिल्य का अन्तर्ध्वंस करो। ब्रेज्नेव ने एक बार माओ जे-दुंग की उस उद्घोषणा का स्मरण दिलाया जो 1957 में की गयी थी: "उन्होंने अत्यन्त हल्के-फुल्के और व्यंगमय तरीके से परमाणु युद्ध हो जाने के दौरान आधी मानवजाति की संभावित मृत्यु का जिक्र किया था। तब यह प्रकट करते हैं कि माओवाद युद्ध के विरुद्ध संघर्ष का आह्वान नहीं करता बल्कि इसके विपरीत युद्ध का आह्वान करता है, जिसे वह सकारात्मक ऐतिहासिक तथ्य के रूप में देखता है।"

पीकिंग के नेता घोषणा करते हैं कि विश्वव्यापी युद्ध अवश्यम्भावी है। युद्ध की तैयारी के लिए सैनिक नारा जारी करते हैं और अन्तर्राष्ट्रीय तनावों में कभी लाये जाने की नीति पर कटुतापूर्ण प्रहार करते हैं। जैसा कि ब्रेज्नेव ने कहा है, "तनाव-शैथिल्य का अन्तर्ध्वंस करने, निरस्त्रीकरण रोकने, देशों के बीच सन्देश और शत्रुता के बीज बोने के लिए पीकिंग के हताशा भरे प्रयत्न और विश्वयुद्ध को भड़काने तथा इससे लाभ उठाने की इसकी कोशिश सभी शांति-प्रेमी राष्ट्रों के लिए बहुत बड़ा खतरा है।"

जब से चीन लोक गणराज्य ने संयुक्त राष्ट्र के काम में भाग लेना शुरू किया है तभी से इसके प्रवक्ताओं ने तनाव-शैथिल्य और निरस्त्रीकरण से सम्बन्धित सभी प्रस्तावों को अपने समर्थन से बंचित रखा है। जैसा कि ब्रेज्नेव ने कहा है, चीन ने "अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में बल का प्रयोग न करने और व्यापक नर-संहार के हथियारों की नई किस्मों और प्रणालियों के विकास पर (जिनमें से कुछ तो नाभिकीय शस्त्रों से भी अधिक भयावह हो सकती हैं) सार्वत्रिक प्रतिबन्ध लगाये जाने सम्बन्धी विश्व संधि सम्पन्न किये जाने से सोवियत संघ द्वारा रखे गये महत्वपूर्ण प्रस्तावों का विरोध किया है।"

1978 में संयुक्त राष्ट्र महासभा के विशेष अधिवेशन में चीन लोक गणराज्य के विदेश मंत्री हुआंग हुआ ने सैन्य सामर्थ्य को बढ़ाने की दिशा में नये शिखरों का आह्वान किया। निरस्त्रीकरण के बारे में पीकिंग से नेतृत्वमंडल के रुख की चर्चा

करते हुए ब्रेज्नेव ने कहा : "ऐसा सगता है मानो उनके प्रवक्ता ने मची का गडमड कर दिया है। उनका युद्ध-जैसा भाषण संयुक्त राष्ट्र के सम्मुख नहीं बल्कि नाटो गुट के किसी अधिवेशन में होना चाहिए था।"

जनवरी, 1979 में अमरीकी पत्रिका टाइम ने तिमोनिद ब्रेज्नेव से कई प्रश्न पूछे। उनमें यह भी शामिल था : वाशिंगटन और पीकिंग के बीच सम्बन्धों के सामान्यीकरण की घोषणा के बाद अमरीकी में 'चीनी पत्ता खेलने' के बारे में बड़ी चर्चा हुई है और अनुमानतया कुछ चीनी अमरीका पत्ता खेलने की आशा करते हैं। आपका इस प्रकार की सकल्पनाओं के बारे में क्या विचार है और चीन के साथ सोवियत सम्बन्धों का अनुमानित भविष्य क्या है?"

ब्रेज्नेव ने इस प्रश्न का उत्तर निम्न दिया था :

"अमरीका और कुछ पश्चिमी देशों में ऐसे लोग हैं, जो चीन के वर्तमान नेतृत्वमंडल द्वारा सोवियत संध के प्रति अपनाये गये शत्रुतापूर्ण रविये को इतना पसंद करते हैं कि वे समाजवाद के विश्व पर दबाव के अस्त्र के रूप में पीकिंग को बदलने के लिए लालायित हैं। मुझे इस प्रकार की नीति दुस्साहसपूर्ण और सार्थक शांति के ध्येय के लिए बहुत खतरनाक लगती है।

"राजनयिक सम्बन्धों की स्थापना मात्र का ही सवाल नहीं है। सवाल यह है कि हर प्रकार से प्रोत्साहन के प्रयत्न किये जा रहे हैं और उन्हें अधिक लालच से उद्देश्य प्रदान किया जा रहा है और अब क्रमशः आधुनिक हथियारों, लड़ाई के साज-सामान और सैनिक-प्रौद्योगिकी की डिलीवरियाँ उनकी की जा रही हैं, जो सप्ताह के सबसे बड़े देशों में से एक देश के नेता होते हुए भी खुले तौर पर तनाव-शैथिल्य, निरस्त्रीकरण और विश्व में स्थिरता के ध्येय के प्रति अपनी शत्रुता घोषित करते हैं, जो अनेक देशों के भू-प्रदेश पर अपने दावे जतलाते हैं और उनके खिलाफ उत्तेजनात्मक कार्रवाइयाँ करते हैं और जिन्होंने यह उद्घोषित कर दिया है कि युद्ध अवश्यम्भावी है तथा युद्ध के लिए ठोस तैयारियाँ तेज कर दी हैं।

"क्या सचमुच यह समझना कठिन है कि इस सबका मतलब आग से खेलना ही है ?

"जहाँ तक पीकिंग के शासन की, जिसने शक्ति ग्रहण कर ली है, 'नाटो' की नीति के अस्त्र की तरह इस्तेमाल करने और इसकी युगुत्सापूर्ण लालसाओं को ऐसी दिशा में प्रवाहित करने की योजनाओं का सवाल है, जो पश्चिम को अपने अनुकूल लगती हैं—मुझे क्षमा करें, वे केवल अस्खड़ भोलेपन के सिवा और कुछ भी नहीं है। यह स्मरण कर लेना ही पर्याप्त होगा कि म्युनिख़ नीति के कारण

पश्चिमी शक्तियों पर क्या-कुछ गुजरा। क्या इतिहास द्वारा सिखाये गये सबक को इतनी आसानी से भूला जा सकता है ?

“जहाँ तक सोवियत संघ और चीन लोक गणराज्य के बीच संबंधों का सवाल है, हमारे उस देश पर न तो कोई प्रादेशिक दावे हैं और न किसी दूसरी तरह के दावे। और हमको न केवल अच्छे बल्कि दोस्ताना संबंधों को फिर से स्थापित करने के मार्ग में भी कोई वस्तुनिष्ठ रुकावट नहीं दिखाई देती। अलबत्ता यह स्वाभाविक अपेक्षा है कि चीन लोक गणराज्य की नीति और अधिक विवेकपूर्ण तथा शांतिपूर्ण हो जाये।”

अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति चीनी नेताओं की सैनिकवादी नीति के ख़तरे के बारे में ब्रेजनेव की चेतावनी का गहन मर्म और यथार्थवाद समाजवादी वियतनाम जनतंत्र पर चीन के आक्रमण से सिद्ध हो जाता है।

और इस सिलसिले में यह स्मरण करना भी आवश्यक है कि यह चीनी आक्रमण वास्तव में, अमरीका के प्रोत्साहन पर किया गया था, जहाँ दंग जिओ-पिंग ने आक्रमण से कुछ ही दिन पहले बड़ी निर्ममता से यह घोषणा की थी कि वियतनाम को “सच्चा दी जानी चाहिए।”

वियतनाम के विरुद्ध चीन का आक्रमण चीनी सत्ताधारियों की ब्लैकमेल और दबाव की नीति को प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति थी, जो वे गत कई वर्षों से दक्षिण-पूर्व एशिया में सामान्य रूप से और वियतनाम के विरुद्ध विशेष रूप से अमल में ला रहे हैं क्योंकि यह देश पोकिंग की प्रभुत्ववादी योजनाओं की तामील में गंभीर बाधा बन गया है।

वियतनाम पर चीन के आक्रमण ने एक बार फिर यह दिखा दिया कि पोकिंग शांति के भविष्य के साथ कितने ग़ौर जिम्मेदाराना ढंग से बर्ताव करता है और कितनी मुजरिमाना सहजता के साथ हथियारों से लड़ाई पर उतर आता है।

जैसा कि ब्रेजनेव ने कहा, “चीन के वर्तमान नेतागण द्वारा छोटे-से पड़ोसी देश, समाजवादी वियतनाम पर अभूतपूर्व रूप से निर्लज्ज एवं दस्युतापूर्ण आक्रमण ने विश्व के सम्मुख एक बार फिर उनकी महाशक्तिवादी प्रभुत्व सत्ता नीति का समूचा विश्वासघाती एवं आक्रामक सार स्पष्ट रूप से प्रकट कर दिया है। आज सभी इसे भलीभाँति जान गये हैं कि इस समय यही नीति विश्वशांति के लिए गंभीरतम खतरा है। इस नीति के साथ किसी भी प्रकार की अनदेखी के व्यवहार का महान खतरा पहले से कहीं अधिक स्पष्ट दिखलायी पड़ने लगा है।”

चीन के आक्रमण ने सम्पूर्ण विश्व में रोप उत्पन्न किया। वियतनाम के लोगों के साथ एकजुटता और इसके समर्थन में आंदोलन विश्व के कोने-कोने में फैल

गया है।

सभी शांतिप्रेमी राष्ट्रों के साथ मिलकर सोवियत जनता ने मांग की है कि वियतनाम के विरुद्ध चीनी आक्रमण तत्काल बंद किया जाये और वियतनाम से हस्तक्षेपकारियों की सेना के एक-एक आदमी को वापस बुलाया जाना चाहिए।

मोवियन मध की सर्वोच्च सोवियत के निर्वाचकों की एक सभा में 2 मार्च, 1979 को भाषण करते हुए लियोनिद ब्रेज्नेव ने कहा, "भ्रातृत्वपूर्ण वियतनाम के साथ हमारी मित्रता की परीक्षा गत कई वर्षों के दौरान व्यावहारिक रूप में हो चुकी है। और आज, वियतनामी जनता की इस कठिन घड़ी में हमारी एक-जुटता इसके साथ हार्दिक एवं सम्पूर्ण रूप से है। और किसी को भी इसमें सदेह नहीं रहना चाहिए कि सोवियत मध हमारे दोनों देशों को बांधने वाली मंत्री एवं सहयोग संधि के प्रति सच्चा है। समाजवादी वियतनाम जनतंत्र न्यायोचित एवं पुनीत सघर्ष में जुझ रहा है। सम्पूर्ण विश्व के भस्ते और शांतिप्रेमी लोग इसके पक्ष में हैं। इसीलिए वियतनाम का ध्येय अजेय है और आक्रामक की योजनाओं की असफलता अवश्यम्भावी है।"

ब्रेज्नेव का कहना है कि दक्षिण पूर्व एशिया में स्थिति अभी भी तनावपूर्ण और अशांत है। शांति अभी भी ठोस रूप ग्रहण नहीं कर पायी और एशिया पर तो यह बात विशेष रूप से लागू होती है। यह परमावश्यक है कि किसी भी देश के खिलाफ हमले की सभी के लिए खतरे के रूप में देखा जाना चाहिए और इसको सामूहिक रूप में विफल किया जाना चाहिए।

ब्रेज्नेव का कहना है, हमारा मार्ग स्पष्ट है। हम वियतनाम के न्यायोचित ध्येय की सहायता के लिए और साबंत्रिक शांति को खतरे में डालने वाली किसी भी नयी उत्तेजनात्मक कार्रवाई को विफल करने के लिए आवश्यक सभी कुछ करेंगे।

सोवियत-भारत सम्बन्ध

अपने वैदेशिक सम्बन्धों में सोवियत संघ निरन्तर शान्ति, मैत्री एवं सहयोग की नीति का पालन करता रहा है। यह भारत के साथ मित्रता को मजबूत करने और सर्वतोमुखी सम्बन्ध विस्तृत करने की विशेष महत्व देता है। लियोनिद ब्रेज्नेव का कहना है, “इस क्षेत्र में हमारे देशों के बीच शांतिपूर्ण और अच्छे पड़ोसी सम्बन्धों की दीर्घकालिक ऐतिहासिक परम्परा बड़ी भूमिका अदा करती है। इन सम्बन्धों पर कभी भी युद्ध अथवा संघर्ष की काली छाया नहीं पड़ी। सोवियत-भारत सम्बन्धों के समूचे इतिहास में आपसी सम्मान और स्नेह की भावनायें हमारे जनगण के बीच बढ़ती ही रही हैं।”

इससे भी पहले इस शती के प्रारम्भ में वी० आर्दे० लेनिन ने उपनिवेशवाद के विरुद्ध भारतीय लोगों के संघर्ष के प्रति समर्थन व्यक्त किया था। उन्होंने उपनिवेशवादियों की बदकारियों की रोषपूर्वक तीव्र निन्दा की और भारत की जनता में गहरा विश्वास प्रकट किया। 1920 में, भारतीय क्रांतिकारी एसोसिएशन को भेजे गये संदेश में उन्होंने लिखा : “रूस की मेहनतकश जनता भारतीय मेहनतकशों और किसानों की जाग्रति में अखण्ड ध्यान से रूचि ले रहा है।”

लेनिन को विश्वास था कि एक दिन भारत के औपनिवेशिक शासन का पतन हो जायेगा। भारत के लिए उसके राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन की तथा एशिया और शेष विश्व के लिए इसके महत्व की ओर ध्यान दिलाते हुए उन्होंने भारत

और भारत के लोगों के बारे में सोवियत रूस में व्यापकतम संभव ज्ञान के उन्मयन का आवाहन किया।

और भारत की जनता ने, उसके दूरदर्शी नेताओं ने अक्तूबर क्रांति में तथा सोवियत जनतंत्र में नये समाजवादी समाज के निर्माण में गहरी रुचि प्रकट की। भारत के राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन के उद्भूत नेता महात्मा गांधी ने 1928 में लिखा था कि "इसमें कोई सन्देह नहीं कि बोल्शेविकवाद के आदर्श के पीछे असंख्य महिलाओं और पुरुषों का पावन आत्म-त्याग है, जिन्होंने इसके लिए अपना सर्वस्व अर्पित कर दिया।"

जवाहरलाल नेहरू भी अक्तूबर क्रांति के महत्व का उच्च मूल्यांकन करते थे। 1919 में ही उन्होंने लिखा था कि 70 वर्ष पहले मार्क्स और एंगेल्स ने यूरोप के ऊपर मंडराने वाली जिस "कम्युनिज्म की छाया" के बारे में कहा था वह रूस में सजीव हो उठी है और "अधिकाधिक लोग रूस में नयी व्यवस्था के प्रारम्भ का स्वागत एवं सराहना कर रहे हैं।" उचित ही उन्होंने अक्तूबर क्रांति के आदर्शों के पक्षपातहीन अध्ययन की आवश्यकता का उल्लेख किया क्योंकि इससे भारत के हित से सम्बद्ध समस्याओं के समाधान में भारत के लोगों को सहायता मिल सकती है।

अक्तूबर समाजवादी क्रांति ने राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन को अभूतपूर्व मित्र प्रदान कर दिया। विश्व का प्रथम मजदूर-किसान राज्य पूर्ण रूप से उत्प्रेरित एवं पददलित लोगों का पक्षधर था। जैसा कि त्रेजनेव ने कहा है, "अक्तूबर क्रांति की विजय ने ही वास्तव में औपनिवेशिक जनता की राजनीतिक चेतना को जाग्रत किया और उन्हें साम्राज्यवाद के उत्पीड़न से मुक्ति के सपने में ऐसी महान सफलता अर्जित करने में सहायता दी।

अक्तूबर क्रांति के विचारों ने अनेक भारतीय देशभक्तों को अपने देश की मुक्ति के लिए निस्वार्थ भाव से लड़ने के लिए प्रेरित किया। 21, जनवरी 1930 को, लेनिन की मृत्यु की छठवीं बरसी के दिन, भारतीय मुक्ति आंदोलन के एक सूरमा सरदार भगतसिंह तथा समाजवादी रिपब्लिकन एसोसियेशन के अन्य सदस्य, जिन पर जीवन-मरण का मुकदमा चल रहा था और जिनमें से तीन को औपनिवेशिकों ने मृत्युदण्ड सुना भी दिया था, निम्न तार अदालत के कमरे से मास्को भेजा : "इस लेनिन दिवस पर हम उन सभी को हार्दिक बधाई प्रेषित करते हैं, जो महान लेनिन के विचारों को आगे ले जाने के लिए कुछ-कुछ कर रहे हैं। हम रूस द्वारा किये जाने वाले महान प्रयोग की सफलता की कामना करते हैं। हम अन्तर्राष्ट्रीय मेहनतकश वर्ग आंदोलन के स्वर में अपना स्वर

मिलाते हैं। सर्वहारा वर्ग जीतेगा, पूँजीवाद हारेगा। साम्राज्यवाद मुर्दावाद !”

सोवियत संघ में समाजवादी समाज के निर्माण और भारत में मुक्ति आंदोलन की प्रगति के दौरान सोवियत और भारतीय जनगण के बीच मित्रता और एक-जुटता के सम्बन्ध साम्राज्यवादियों द्वारा डाली जानेवाली रूकावटों के बावजूद दिन-पर-दिन मजबूत होते चले गये।

समाजवाद का निर्माण करने वाले प्रथम राज्य की उपलब्धियों ने भारत के देशभक्तों के अपने देश के पुनरुत्थान में विश्वास को और भी दृढ़ बनाया और उपनिवेशवाद से मुक्ति के लिए संघर्ष को तीव्र करने में मदद पहुँचायी। 1936 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में भाषण करते हुए नेहरू ने कहा : “यदि भविष्य आशापूर्ण है तो इसका बहुत बड़ा श्रेय सोवियत रूस को है और मुझे विश्वास है कि अगर किसी विश्वव्यापी विपत्ति ने बाधा नहीं डाली तो यह नयी सभ्यता अन्य देशों में भी दृढ़तापूर्वक स्थापित हो जायेगी और युद्धों एवं संघर्षों की इतिश्री कर देगी, जिन्हें पूँजीवाद जन्म देता है।”

हिटलर फासिज्म ने युद्ध शुरू किया और इतिहास के चक्र को विलोम गति से घुमाने की तथा विश्व के प्रथम समाजवादी राज्य को नष्ट करने की चाह की। उसके बाद जर्मन फासिज्म और जापानी सैन्यवाद ने एशिया और अफ्रीका के लोगों को गुलाम बनाने की योजना बनायी। इसका अर्थ होता मुक्ति आंदोलन का नृशंस दमन और औपनिवेशिक दासता कायम रहना—यदि हम नाज़ियों द्वारा अफ्रीका और एशिया के जनगण के प्रति घृणा तथा तिरस्कार का पुनः स्मरण करें तो ये दोनों ही बातें और भी अत्यधिक घृणित एवं अमानवीय स्वरूपों में कायम रहतीं।

भारत की जनता और भारतीय राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन के अनेक नेता फासिज्म के खूनी खतरे को समझते थे और उसका प्रतिकार करने में सोवियत संघ की भूमिका की सराहना करते थे। उन्होंने फासिज्म के विरुद्ध सोवियत जन के संघर्ष के प्रति गहरी सहानुभूति प्रकट की। अगस्त, 1941 में रोगशैया पर घातक रूप से बीमार रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने कहा : “वे (सोवियत जन) सफल होंगे। केवल वे ही पशु का दमन कर सकेंगे।” और 1942 के ग्रीष्म में जब किसी ने महात्मा गांधी से जो उस समय नजरबंद थे कहा, कि हिटलर जीत सकता है तो उन्होंने उत्तर दिया था : “नहीं, रूस लड़ाई हार नहीं सकता। अगर रूस लड़ाई हार गया तो संसार के गरीबों के हित की देखभाल कौन करेगा ? रूस को लड़ाई में हारना नहीं चाहिए।”

सोवियत संघ पर अपने विश्वासघातपूर्ण आक्रमण की प्रारम्भिक सफलताओं

से मदागस्कर 1941 के प्रीम्स में नाज़ी नेताओं ने भारत पर आक्रमण की योजना बनानी शुरू कर दी। यह हिटलर की योजनाओं के अनुरूप था। उसका विचार था कि "पूर्वी अभियान पूर्ण करने के बाद" अर्थात् सोवियत संघ के विरुद्ध युद्ध पूरा कर लेने के बाद जर्मनी अफ़ग़ानिस्तान पर अधिकार कर लेगा और भारत पर आक्रमण कर देगा। थैरमाष्ट की तयकथित पूर्वी योजना में भारत पर आधिपत्य जमाने का प्रावधान था। यह योजना 1941 के शरद के अन्त और 1941-42 के शीत में शुरू की जाने वाली थी। 1941 के प्रीम्स में नाज़ी कमान ने पूर्वी अभियान को समाप्त करने के बाद जर्मन घल सेना के पुनर्गठन की तयकथित योजना का अनुमोदन कर दिया। इस योजना में मध्य पूर्व में 31 नाज़ी डिवीज़नों को प्रयुक्त करने का प्रावधान था। 14 डिवीज़नों के ज़िम्मे ईरान, तुर्की और अरब देशों को फ़तह करना था और शेष 17 डिवीज़नों को भारत में घुस जाना था।

अनेक भारतीयों ने नाज़ी हमलावरों के खिलाफ़ सोवियत जनता के सोम-हर्षक युद्ध से सजग किन्तु चिन्तापूर्ण दिलचस्पी रखी। उन्होंने सोवियत जनता के साहमपूर्ण युद्ध-प्रयत्नों के साथ पूर्ण एकजुटता प्रकट की और पश्चिमी शाक्तों से दूसरा मोर्चा खोलने का अनुरोध किया। 25 अक्टूबर, 1942 को बम्बई से प्रकाशित पत्र "लोकयुद्ध" ने लिखा कि स्तालिनप्राद में और काकेशस की देहलीज़ पर लाल सेना ने हिटलर द्वारा सोवियत फौज को ध्वस्त करने और उन्हें वोल्गा के पार फेंक देने के अन्तिम निराशोन्मत्त प्रयत्न को दृढ़ता एवं अभूतपूर्व शौर्य के साथ विफल कर दिया। पक्ष ने आगे लिखा, अकेले लड़ते हुए और अतीव बलिदान करते हुए सोवियत सशस्त्र सेना विश्व के प्रभुत्व के लिए हिटलर के अभियान के मार्ग में अड़ गयी है और इस प्रकार वह विश्व के राष्ट्रों की रक्षा कर रही है।

भारतीय देशभक्तों ने सोवियत सैनिकों के शौर्य एवं सकल्य की सराहना की। समाचारपत्र विविध वृत्त ने लिखा, यह निश्चित है कि रूस शत्रु को स्तालिनप्राद और काकेशस में परास्त कर देगा। समाचारपत्र नवा काल ने तुआप्से पर सोवियत आक्रमण और उस क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थानों पर आधिपत्य की सराहना की, जिसके फलस्वरूप जर्मन सेना के पृष्ठ भाग के लिए ख़तरा उत्पन्न हो गया। जनवरी, 1943 में दक्षिण भारत के समाचारपत्रों ने लिखा कि स्तालिनप्राद और मुद् के अन्य मोर्चों पर विशेषतया काकेशस में लाल सेना की विजय का उत्साहपूर्ण स्वागत किया गया है।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान सोवियत और भारतीय जनगण की मित्रता को बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाये गये। फ्रेन्स आंक सोवियत मूनिपन

नाम से एक संगठन उस समय स्थापित किया गया। अनेक नगरों में, कलकत्ता, बम्बई, इलाहाबाद और लखनऊ में उल्लेखनीय रूप से, इसकी शाखाएँ सक्रिय रूप से कार्यरत थीं। नवम्बर, 1941 में इस संगठन ने अखिल भारतीय सम्मेलन का आयोजन किया। इसमें संगठन का मुख्य कार्य भारत के जनगण और सोवियत संघ के जनगण के बीच मित्रता और समझ को विकसित एवं सुदृढ़ करना घोषित किया गया। नेहरू ने इस संगठन के लक्ष्यों एवं उद्देश्यों से पूर्ण सहमति व्यक्त की और इसके कार्य में भाग लिया।

फासिज्म की करारी हार ने औपनिवेशिक जनगण के मुक्ति आन्दोलन को शक्तिशाली उद्देग प्रदान किया और सम्पूर्ण विश्व में साम्राज्यवाद को शक्तिहीन बनाया। दो अरब से अधिक लोगों ने उपनिवेशवाद की जंजीरें उतार फेंकी।

भारत एशिया के उन पहले औपनिवेशिक देशों में था, जिन्होंने स्वतंत्रता अर्जित की।

1. स्वतंत्रता के सुदृढ़ीकरण का स्वागत

द्वितीय विश्व युद्ध तथा स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष के विषम वर्षों में सोवियत और भारतीय जनता के बीच बने मित्रता एवं आपसी समझ के सम्बन्धों ने ही आगामी वर्षों में सोवियत-भारत सहयोग की प्रकृति का अधिकांशतया पूर्व-निर्धारण किया। यह सहयोग साम्राज्यवाद के विरुद्ध, उपनिवेशवाद, नव-उपनिवेशवाद और नस्लवाद के पूर्ण एवं अन्तिम रूप से उन्मूलन के लिए और शांति तथा सुरक्षा के दृढ़ीकरण के लिए उनके समान संघर्ष पर आधारित था। हित और उद्देश्यों की इसी समानता के प्रतीक के रूप में दोनों देशों के बीच 13 अप्रैल, 1947 को अर्थात् भारत की स्वतंत्रता की आधिकारिक उद्घोषणा से चार महीने पहले ही राजनयिक सम्बन्ध स्थापित किए गए। भारत के साथ राजनयिक सम्बन्ध स्थापित करके सोवियत संघ ने वास्तव में आधिकारिक रूप से भारतीय राज्य की स्वतंत्रता को मान्यता प्रदान कर दी और उसे अपनी स्वतंत्रता हासिल करने में मदद देने का संकल्प प्रदर्शित किया।

स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद भारत ने घोषणा की कि वह स्वतंत्र विदेश नीति का पालन करेगा। इसने सोवियत-भारत सहयोग के विकास के लिए व्यापक अवसर प्रस्तुत हो गये। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर, सोवियत संघ और भारत का उपनिवेशवाद और नस्लवाद के विरुद्ध और शांति की सुदृढ़ता के लिए संघर्ष से सम्बद्ध अनेकानेक मामलों पर समान दृष्टिकोण था।

जून, 1955 में जवाहरलाल नेहरू की सोवियत संघ यात्रा के बाद सोवियत-

रातीय सहयोग तेजी से बढ़ा। इस यात्रा के शीघ्र बाद ही सोवियत संघ और भारत ने महत्वपूर्ण समझौते किए जिन्होंने दोनों देशों के बीच व्यापक, आर्थिक और व्यापारिक सहयोग का सूत्रपात किया।

दिसम्बर, 1961 में सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षनइल के अध्यक्ष लियोनिद ब्रेज्नेव की भारत यात्रा ने सोवियत-भारतीय मित्रता और सहयोग को नया दृढ़ उद्देश्य प्रदान किया। यह उनकी प्रथम भारत यात्रा थी जिसके लिए उनके मन में हमेशा स्नेह और सहानुभूति की गहरी भावनाएँ थी। अपनी यात्रा के दौरान ब्रेज्नेव ने भारत और उसकी जनता से घनिष्ठतर परिचय प्राप्त करने का प्रयास किया और वे सोवियत जनता के जीवन और कार्य के बारे में भारतीयों को बताने के लिए उत्सुक रहे। उनकी यात्रा का प्रमुख प्रयोजन सोवियत-भारतीय मित्रता को सुदृढ़ बनाना तथा भारतीय नेताओं के साथ सहयोग के नये क्षेत्रों के बाबत विचार-विमर्श करना एवं उनका निर्धारण करना था।

15 दिसम्बर, 1961 को, भारत में अपने प्रवास के प्रथम दिवस ब्रेज्नेव ने नई दिल्ली के वातम हवाई अड्डे पर कहा कि, "सोवियत संघ और भारत की मित्रता सर्वोपरि दो शांतिप्रेमी राज्यों की मित्रता है जिनके करोड़ों नागरिक शांति, स्वतंत्रता तथा सभी राष्ट्रों की स्वाधीनता का समर्थन करते हैं। यह हमारे अच्छे सम्बन्धों के लिए अत्यन्त निर्भर योग्य आधार है, जिसका प्रचुर महत्व न केवल हमारे ही दोनों देशों के लिए बल्कि सम्पूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति के लिए है।" उन्होंने बल देकर कहा कि हादिक और मित्रतापूर्ण सोवियत-भारतीय सम्बन्ध न केवल मित्रता को उन ऐतिहासिक परम्पराओं पर हों, जो सदियों पुरानी हैं, बल्कि इस तथ्य पर भी अवलम्बित हैं कि दोनों राष्ट्र विन्व-शांति के लिए कार्य कर रहे हैं।

इण्डो-सोवियत कल्चरल सोसायटी की एक सभा में ब्रेज्नेव ने दोनों देशों की मित्रता के उन्नयन में भारतीय और सोवियत जनता के सहभाग पर प्रचुर महत्व पर बल दिया।

लियोनिद ब्रेज्नेव ने कहा, "सोवियत जनता डॉ॰ बानिगा, श्रीमती रामेश्वरी नेहरू, श्री साहिब सिंह सोस्ती, श्रीमती अदना बानिक अनी तथा अनेक-नेक अन्य व्यक्तियों के नाम को जानती है, जो दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक सम्बन्धों को बढ़ाने के लिए सक्रिय रहे हैं। सोवियत संघ में यही काम सोवियत-भारतीय मंत्री सोसायटी करती है। यह जानकर अच्छा लगता है कि दोनों ही सोसायटियों की गतिविधि दोनों देशों की शांतिप्रिय नीति के ठोस आधार पर

हमारे जनगण के आपसी स्नेह पर एक-दूसरे के वारे में अधिक जानने की उनकी इच्छा और शांति की परिस्थितियों में तथा शांति के कल्याण के लिए मिलकर काम करने की उनकी कामना पर अवलम्बित है।

“सोवियत जन भारतीय संस्कृति की उच्च सराहना करते हैं और भारत के लोगों द्वारा निर्मित प्राचीन स्थापत्य-कला के स्मारकों की प्रशंसा करते हैं। सच्चे मित्रों के समान वे स्वतंत्रता के वाद भारत की उपलब्धियों पर हर्ष प्रकट करते हैं और उपनिवेशवाद के अवशेषों को निर्मूल करने, अपनी स्वतंत्र अर्थव्यवस्था के निर्माण, देश के संसाधनों की सम्पदा को विकसित करने तथा सार्वजनिक शिक्षा और स्वास्थ्य सुधार में भारतीय जनता द्वारा अर्जित आशातीत सफलताओं पर सन्तोष प्रकट करते हैं।”

भारत के लोग अपने देश की खनिज सम्पदा की कुंजी खोज पाने में पहले असमर्थ रहे। लियोनिद ब्रेज्नेव की यात्रा के दौरान यह ज्ञात हुआ कि पश्चिमी तेल इजारेदारियों के विशेषज्ञों ने दावा किया कि भारत में तेल के भंडार हैं ही नहीं, लेकिन तथ्यों ने उन दावों को निर्मूल कर दिया है, जो भारत को अपने तेल के लिए लाभदायक मंडी और ऊँचे मुनाफ़ों के स्रोत के रूप में बनाये रखने की पश्चिमी तेल इजारेदारियों की इच्छा के फलस्वरूप किये गये थे।

ब्रेज्नेव ने कहा, “हमें बहुत प्रसन्नता है कि भारतीय और सोवियत विशेषज्ञों ने मित्रतापूर्वक सहयोग करके न केवल यह सिद्ध कर दिया कि भारत तेल की दृष्टि से समृद्ध देश है बल्कि उन्होंने यहाँ अंकलेश्वर में और भारत के अन्य स्थानों पर तेल भंडारों के प्रवाहक विकास का श्रीगणेश किया।” उन्होंने बल देकर कहा कि सोवियत जन इस बात से अत्यन्त सन्तुष्ट हैं कि भारत के लोग दोनों देशों के आर्थिक और तकनीकी सहयोग का तथा अपने राष्ट्रीय-उद्योग के निर्माण में सोवियत सहायता का उच्च मूल्यांकन करते हैं।

सभी नागरिकों की सच्ची समानता के आधार पर शोषण-मुक्त नये समाज के निर्माण में सोवियत जनता की उपलब्धियों और की चर्चा करते हुए ब्रेज्नेव ने महान भारतीय कवि, लेखक मानववादी रवीन्द्रनाथ ठाकुर की भूरि-भूरि प्रशंसा की जो 1930 में सोवियत संघ की यात्रा पर आये थे। रवि ठाकुर ने तब लिखा था कि मैं सोवियत प्रगति की द्रुतगति से आश्चर्यचकित हूँ। उन्होंने अपने इस विचार को काव्यात्मक रूप में व्यक्त किया : “उन्होंने (सोवियत जनता ने) देखते-देखते ही यात्री के डंडे को मारुत रथ के रूप में बदल लिया।” ब्रेज्नेव ने कहा, “तब से सोवियत जनता अपनी आर्थिक वैज्ञानिक, और सांस्कृतिक प्रगति की और राष्ट्र की खुशहाली की दृष्टि से बहुत आगे बढ़ चुकी है। उन्होंने

कहा यदि आज रवीन्द्रनाथ ठाकुर जिन्दा होते तो वे यह कहते कि सोवियत जनता ने 'मास्त रय' को 'अन्तरिक्षीय रय' में बदल दिया है।"

जब भारत के लोगों ने अपनी धरती पर उपनिवेशवाद के अन्तिम ठिकाने गोवा, दमण और दीव के प्रदेशों को मुक्त किया ब्रेज्नेव भारत में ही थे।

अपने सावजनिक भाषणों में ब्रेज्नेव ने इन प्रदेशों के लिए भारत के साथ पुनरेकीकरण के लिए समर्थन व्यक्त किया। भारतीय समाचारपत्रों ने लिखा कि सोवियत सरकार और सोवियत सभ की जनता की ओर से ब्रेज्नेव द्वारा दिये गये वक्तव्य अत्यधिक सामयिक थे और उनसे भारत को सख्त और विश्वास मिले। विशेष रूप से इस कारण कि पुर्तगाल के भूतपूर्व तानाशाह सत्ताधार और उनके अमरीकी सरसक भारत को इस दलील के आधार पर आश्रयक प्रेषित करने की कोशिश कर रहे थे कि गोवा, दमण और दीव पुर्तगाल के "रक्षाक्षेत्र" के "बाह्यक्षेत्र" हैं।

बृहत्तर बम्बई के नगर निगम द्वारा अन्तर्देशीय स्वतन्त्र सत्तारोह के भाषण करते हुए ब्रेज्नेव ने बल देकर कहा कि सोवियत इस विदेशी उत्पीड़न को समाप्त करना राष्ट्रीय को असहनीय अधिकार बरतता है और यह उनके न्यायपूर्ण सपने का समर्थन करेगा।

गोवा, दमण और दीव की पुर्तगाली सत्तारोह के मुक्ति पर व्यक्त दलम्बता और प्रचुर राष्ट्रीय सहृदय की दृष्टि के रखे हुए उन्होंने प्रधान मंत्री नेहरू का समर्थन किया जिन्होंने कहा कि भारत को कारेवाई अपेक्षाओं और ऐतिहासिक दृष्टि से उचित थी। हेरचेव ने कहा, "भारत के लोगों ने उचित कार्य किया है और न्याय की पुनर्स्थापना कर दी है। उन्होंने जो हासिल करना चाहते थे वह हासिल कर लिया है और जब सत्तार के सभी शान्तिप्रेमी लोग उनको सराहना कर रहे हैं।"

1962 के अन्त में जब चीन ने भारत को सोमा का उत्तपन्न किया तो सोवियत सरकार ने इसके कमन्दरुप उत्पन्न सत्ताधर चिन्ता प्रकट की क्योंकि चीनी पक्ष की सत्ता के चीन पर सत्ताधर सत्ताधर हुई थी।

1965 में जब भारत और पाकिस्तान के बीच सशस्त्र सपथें भड़क उठा तो सोवियत सरकार ने दोनों देशों के बीच सत्ताधर को बँटकर बातचीत करने के जरिये हन करवाने की सत्ताधर कोशिश की। सोवियत सभ ने यह घोषणा करने में अधिक देर नहीं मनाया कि यह भारत और पाकिस्तान के बीच सशस्त्र सपथें को शान्तिपूर्ण सत्ताधर सत्ताधर में खत्म किये जाने और खून-खराबे को बन्द किये जाने के निश्चय में सत्ताधर सत्ताधर कारेवाई करते हुए मदद करने के लिए

तैयार हैं। दोनों ही पक्षों ने शान्तिपूर्ण, अच्छे पड़ोसी सम्बन्धों को हासिल करने के लिए कुछ महत्वपूर्ण उपायों पर अमल करना स्वीकार किया। ताशकन्द समझौते ने उन लोगों की इच्छाओं पर पानी फेर दिया, जो दक्षिण एशिया में और अधिक अस्थिरीकरण तथा और अधिक तनाव चाहते थे तथा उस क्षेत्र के देशों के बीच सम्बन्धों को जटिल बनाना चाहते थे।

जनवरी, 1978 में ब्रेज्नेव ने कहा, "हम ताशकन्द घोषणा को महत्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय संक्रिया एवं एशिया तथा शेष विश्व में शान्ति के सुदृढ़ीकरण में अच्छा योगदान मानते हैं। यह हमारे देश की शान्तिपूर्ण विदेश नीति की भी प्रमुख सफलता है, जिसने ताशकन्द में हुई बातचीत के अच्छे परिणामों में सक्रिय योगदान किया है।"

सोवियत संघ ने पाकिस्तानी और भारतीय नेताओं की बैठक का आयोजन अपने यहाँ करने के लिए अपने सद्भाव प्रस्तुत किये क्योंकि उसे विश्वास था कि शान्तिपूर्ण एवं अच्छे पड़ोसी सम्बन्ध दोनों देशों के जनगण के परमावश्यक राष्ट्रीय हित के और एशिया तथा शेष विश्व में शान्ति के हित के अनुकूल हैं।

ताशकन्द घोषणा, जो परस्पर स्वीकार्य समाधान के लिए धैर्यपूर्ण प्रयास का परिणाम थी, भारत-पाकिस्तान सम्बन्धों में नये अध्याय का सूत्रपात प्रकट करने वाला प्रचुर महत्व का दस्तावेज है। यह भारत, पाकिस्तान और सोवियत संघ के शान्तिप्रेमी जनगण की जो मानवजाति के लगभग चतुर्थांश का प्रतिनिधित्व करते हैं सफलता थी और शान्तिपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के सभी पैरोकारों की सफलता थी। विलोमतः, यह उन आक्रामक शक्तियों के लिए पराजय थी, जो भारत-पाकिस्तानी संघर्ष को जारी रखे जाने और उसे जटिल बनाने से लाभ की आशा लगाये बैठे थे।

ताशकन्द घोषणा का समाजवादी देशों, नवस्वाधीन देशों और सद्भावना वाले सभी जनगण ने न केवल एशिया में ही बल्कि शेष विश्व में भी राष्ट्रों की मित्रता, सुरक्षा व शान्ति के सुदृढ़ीकरण में महत्वपूर्ण योगदान के रूप में सराहना की। विश्व जनमत ने शान्ति एवं अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा के चैंम्पियन, सोवियत संघ द्वारा अदा की गई रचनात्मक भूमिका की सराहना की।

ताशकन्द घोषणा पर हस्ताक्षर होने के कुछ ही समय बाद हुई सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की 23वीं कांग्रेस में प्रस्तुत अपनी रिपोर्ट में लियोनिद ब्रेज्नेव ने कहा, "समीक्षाधीन अवधि में भारत के साथ और उसकी महान जनता के साथ हमारी समय-परीक्षित मित्रता और सुदृढ़ हुई है।"

मार्च, 1971 में सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की 24वीं कांग्रेस में विश्व

के मामलों में भारत की भूमिका के उच्च मूल्यांकन की पुनर्पुष्टि की शक्तियों की ओर भी ध्यान आकृष्ट किया गया जो भारत पर दबाव डाले और उसकी नीति बदलवाने का प्रयास कर रही थी। इन परिस्थितियों में भारत के महान जनगण के साथ मित्रता की अपनी नीति के प्रति निष्ठावान सोवियत संघ ने अविचल रूप से भारत का पक्ष लिया।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की 24वीं कांग्रेस के सम्मुख प्रस्तुत अपनी रिपोर्ट में ब्रेज्नेव ने बल देकर कहा कि भारत के साथ अच्छे सम्बन्धों ने अच्छी प्रगति की है। उन्होंने कहा, "अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में भागीदार सरकार द्वारा शान्तिप्रिय स्वतंत्र नीति के परिपालन तथा दोनों देशों के जनगण को जोड़ने वाली मित्रता की परम्परागत भावनाओं ने सोवियत-भारत सहयोग को मुदद बनाने में बहुत मदद की है।"

परवर्ती अवधि के घटनाक्रम ने यह पुष्ट कर दिया कि सोवियत-भारत मित्रता इतनी मुदद है कि वह भारत की प्रादेशिक अखण्डता और स्वतंत्रता पर होने वाले सभी अतिलपनों को विफल कर पके।

सोवियत संघ भारत की मित्र जनता को साम्राज्यवाद और नव उपनिवेशवाद की शक्तियों के साथ टकराव की कठिन स्थितियों में सहायता देने के लिए सदा तत्पर रहा। इसके कई उदाहरण हैं। अविस्मरणीय 1971 का वर्ष, जब दक्षिण एशिया में बाहरी हस्तक्षेप के खतरे के साथ भयप्रद और अस्थिर स्थिति उत्पन्न हो गयी थी। साम्राज्यवादी देशों ने भारत की सरकार को अपने राष्ट्रीय हितों का परिस्थान करने के लिए दबाव डालने की कोशिश की। हिमालय के पार भी पीकिंग की ओर से निरन्तर धमकियाँ दी जा रही थी। पश्चिमी जगत का प्रचारतंत्र आगे बढ़-बढ़कर ऐसा चित्र उपस्थित कर रहा था कि भारत अकेला रह गया है, उसके "मित्रों ने साथ छोड़ दिया है" आदि। लेकिन तभी सोवियत संघ और भारत ने शांति, मैत्री एवं सहयोग की संधि सम्पन्न की। इस संधि ने दोनों देशों के सम्बन्धों को नये, उच्चतर स्तर पर प्रतिष्ठित कर दिया। सितम्बर, 1971 में जारी सोवियत-भारत संयुक्त वक्तव्य में कहा गया "इस संधि की सम्पन्नता दोनों ही देशों के लिए अपूर्व ऐतिहासिक घटना है। यह सोवियत संघ और भारत के बीच सच्ची दोस्ती, सम्मान, परस्पर विश्वास और अच्छे पड़ोसी जैसे सहयोग के सम्बन्धों की ओर अधिक टिकाऊ बनाती है। यह इस तथ्य की पुनर्पुष्टि करती है कि सोवियत-भारत मैत्री किन्हीं अस्थायी कारणों पर नहीं, बल्कि सोवियत और भारतीय जनगण के दीर्घावधि जीवन्त हितों पर और आर्थिक व सामाजिक प्रगति तथा अपनी देशों की सुरक्षा एवं शान्ति के मुददी-

करण के लिए सर्वतोमुखी सहयोग के विस्तरण में अपने सामान्य दायित्व पर अवलम्बित है।”

सोवियत-भारतीय संधि ने स्थिति में सकारात्मक तत्व प्रविष्ट किये। इससे यह प्रकट हुआ कि वास्तव में भारत का सच्चा दोस्त कौन है। विभिन्न विचार-धारा वाले भारतीय समाचारपत्रों ने, अपने राजनीतिक एवं सार्वजनिक नेताओं की ही तरह संधि की सम्पन्नता पर अनुमोदनपूर्ण टिप्पणियाँ कीं। समाचारपत्रों में और रेडियो पर तथा सार्वजनिक सभाओं में इस पर विशेष बल दिया गया कि आवश्यकता की घड़ी में भारत की सहायता के लिए सोवियत संघ ही आगे आया। सोवियत-भारत मित्रता एवं सहयोग को और सुदृढ़ बनाने में ब्रेज्नेव द्वारा अदा की गयी उल्लेखनीय भूमिका का उल्लेख किया गया।

शांति, मैत्री एवं सहयोग संधि ने शांति तथा राष्ट्रों की सुरक्षा को बढ़ाने के लक्ष्य से परिपालित की जाने वाली सोवियत और भारतीय विदेश नीति के समान उद्देश्यों को दृढ़तापूर्वक पुनर्पुष्ट किया। संधि पर हस्ताक्षर किये जाने वाला दिन दोनों देशों के सम्बन्धों के इतिहास में महत्वपूर्ण सीमा-चिह्न है। वाद में संधि पर टिप्पणी करते हुए ब्रेज्नेव ने कहा, “हम इस महान देश के साथ मित्रता को विशेष महत्व प्रदान करते हैं। गत पाँच वर्षों में सोवियत-भारत सम्बन्ध नया स्तर ग्रहण कर चुके हैं। हमारे दोनों देशों ने शान्ति, मैत्री एवं सहयोग की संधि पर हस्ताक्षर किये हैं। और इस अल्प अवधि में ही इसने हमारे द्विपक्षीय सम्बन्धों के लिए तथा दक्षिण एशिया और सम्पूर्ण महाद्वीप में स्थिरीकरण कारक के रूप में अपनी भूमिका के प्रचुर महत्व को प्रकट भी कर दिया है।” सोवियत भारत संधि की भारत के अग्रणी राजनेताओं और राजनीतिक नेताओं ने उच्च प्रशंसा की।

सोवियत-भारत संधि के शान्तिपूर्ण उद्देश्य एवं सकारात्मक अभिप्राय साम्राज्यवादी प्रतिक्रियावादी क्षेत्रों की प्रकृति के प्रतिकूल हैं, जो भारत और सोवियत संघ के बीच दोस्ती और सहयोग को मुख्य रूप से नुकसान पहुँचाने के लिए विभिन्न वहानों के आधार पर संधि पर प्रहार करने की कोशिश करते हैं और सर्वदा करते भी रहे। दी एवं विस्तारवादी लक्ष्यों का अनुसरण करते हुए और साम्राज्यवादी साथ अधिकाधिक स्पष्ट रूप से मौन सहमति इस संधि पर अपने प्रहार में विशेष रूप से बंगलादेश में बँगलादेश

। में बँगलादेश

खड़े हु

द्विपक्षीय

की नीति को ही अनुपगो थी। और सोवियत सहायता ने पूर्वी बंगाल अपनी राज्य-स्वतंत्रता अर्जित करने में सहायता दी।

जब लगभग 1 करोड़ शरणार्थियों को विवश होकर पूर्वी बंगाल से अपने घर-बार छोड़ भागकर भारत आना पड़ा, तो सोवियत सघ ने भारत सरकार के अनुरोध के प्रत्युत्तर में इन असहाय लोगों के दुर्भाग्य-निवारण के लिए अपनी ओर से सभी कुछ किया। खाद्य-सामग्री, दवाइयाँ, कपड़े, तम्बू और दूसरी बहुत जरूरी चीजें सोवियत सघ से भारत को इन शरणार्थियों के लिए जल्द ही भेजी गयी।

जब दिसम्बर, 1971 में भारत और पाकिस्तान के बीच लड़ाई छिड़ गयी तो सोवियत सघ ने अन्य देशों की यह चेतावनी दी कि वे दक्षिण एशियाई राज्यों के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप न करें। इसने उद्घोषित किया कि "सभी देशों की सरकारों की ऐसे कदम उठाने से बाज आना चाहिए, जिनसे वे किसी भी तरह इस लड़ाई में फँस जायें और फलस्वरूप दक्षिण एशियाई उप-महाद्वीप से स्थिति और उलझ जाये।"

याह्या खाँ की सैनिक सरकार द्वारा दिसम्बर 1971 से भारत के विरुद्ध सशस्त्र कार्रवाई प्रारम्भ करने का निर्णय स्पष्ट ही अमरीका की विदेश नीति निर्माताओं और चीनी नेताओं के प्रोत्साहन पर लिया गया था, जिन्होंने बारम्बार यह घोषित किया था कि "वे पूरी तरह पाकिस्तान के पक्ष से हैं", "वे उसे मुभीबत में छोड़कर अलग नहीं होंगे", "उसे निर्णयात्मक मदद देंगे" आदि।

गनवोट (घोस) के राजनय का मार्ग अपनाते हुए अमरीका ने पूर्व बंगाल और भारत के लोगों को डराने के प्रयत्न में बंगाल की खाड़ी से अपने सातवें बेड़े के जहाज फैला दिये। पीकिंग के नेतृत्वमंडल ने इस कार्रवाई के लिए वाशिंगटन को प्रशंसा की। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में अमरीकी और चीनी प्रतिनिधियों ने दक्षिण एशिया में सघर्ष को समाप्त किये जाने के लिए तथा राजनीतिक समझौते की सुनिश्चित बनाने के लिए, उपायों की पहल करने के लिए सोवियत सघ व अन्य शान्तिप्रेमी देशों के प्रयत्नों को रोक दिया।

याह्या खाँ की सैनिक सरकार की समर्थन का वादा करके और उसे भारी मात्रा में सैनिक सहायता देकर पीकिंग ने खुले तौर पर उसे भारत के विरुद्ध भीषण सशस्त्र सघर्ष प्रारम्भ करने के लिए प्रोत्साहित किया। भारतीय सीमा के पास चीनी सैनिकों द्वारा उत्तेजनात्मक गतिविधियाँ की गई। पूर्व बंगाल से पटित घटनाओं के लिए भारत को दोषी ठहराते हुए और उसे "आक्रामक" बताते हुए पीकिंग ने शोर-गुल भरा भारत-विरोधी प्रचार-अभियान छेड़ दिया। 8 दिसम्बर, 1971 को जेनसिन जिहवाओ, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के मुख्य



प्रपौत्री गालिया को लिए हुए

ने धमकी भरे शब्दों में लिखा कि भारत को "इसका भुगतान अपने रक्तमांस से करना पड़ेगा"। स्वतंत्र बंगलादेश की स्थापना को इसने "विडम्बना" और "मांचुको का दूसरा संस्करण" बताया तथा पूर्व बंगाल के देशभक्तों को "पूर्व पाकिस्तानी विद्रोही" बताया।

2. भारत की दूसरी यात्रा

नवम्बर, 1973 में लियोनिद ब्रेज्नेव की भारत-यात्रा के सोवियत-भारत मित्रता के और विकास तथा सुदृढ़ीकरण के अत्यन्त प्रचुर महत्व हैं।

भारत ने ब्रेज्नेव का पुराने और सच्चे दोस्त के रूप में स्वागत किया। भारतीय राजधानी की सड़कें और चौराहे खूब सजाये गये थे। हिंदी और रूसी भाषा में हार्दिक स्वागत के शब्दों से अंकित पताकाएँ और पोस्टर हर कहीं दृष्टि-गोचर हो रहे थे। भारत ने ब्रेज्नेव की यात्रा को ऐसे प्रचुर महत्व की घटना के रूप में ग्रहण किया, जो दोनों देशों की दोस्ती और सहयोग के लिए नये आयाम उन्मुक्त करेगी।

इस अवसर पर नयी दिल्ली में नागरिक स्वागत समिति का गठन किया गया था, जिसके अध्यक्ष भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के तत्कालीन सभापति डॉ० शंकरदयाल शर्मा थे। इस स्वागत समिति में पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, जम्मू व कश्मीर के मुख्यमंत्री तथा अन्य गण्यमान नागरिक शामिल थे।

26 नवम्बर, 1973 को, सोवियत विमान के आगमन से काफ़ी पहले "ब्रेज्नेव-द्रुज्वा" के नारे जोर-शोर से पालम हवाई अड्डे पर गूँजने लगे थे। वरिष्ठ सोवियत अतिथि का वास्तव में अत्यन्त तुमुल स्वागत किया गया था।

आगमन के एक ही घंटे के भीतर ब्रेज्नेव ने इस महान एशियाई देश की अपनी यात्रा का प्रयोजन स्पष्ट कर दिया। उन्होंने कहा, "संसार के जनगण राजनेताओं और राजनीतिक नेताओं से यह आशा करते हैं कि वे देशों के शांतिपूर्ण सहयोग को बढ़ाने की दिशा में ठोस कार्रवाई करें। मेरा विचार है यह सोचना असंदिग्ध है कि हमारी वातचीत ठीक इसी दिशा में प्रवाहित होगी। इन दिनों सोवियत संघ और भारत के महान जनगण की मित्रता एशिया और शेष विश्व में शान्ति एवं सुरक्षा के लिए कुछ कम महत्वपूर्ण नहीं है। इस मित्रता का और सुदृढ़ीकरण और दोनों देशों के बीच सहयोग का विस्तारण हमारी इस यात्रा का प्रमुख प्रयोजन है।"

भारतीय समाचारपत्रों ने ब्रेज्नेव का स्वागत महान राजनेता, शांति-योद्धा और सम्पूर्ण विश्व में तनाव-शैथिल्य के लिए होने वाले संघर्ष की पहल करने वाले



प्रपोत्री गालिया को लिए हुए

ने धमकी भरे शब्दों में लिखा कि भारत को "इसका भुगतान अपने रक्तमांस से करना पड़ेगा"। स्वतंत्र बंगलादेश की स्थापना को इसने "विडम्बना" और "मांचुको का दूसरा संस्करण" बताया तथा पूर्व बंगाल के देशभक्तों को "पूर्व पाकिस्तानी विद्रोही" बताया।

2. भारत की दूसरी यात्रा

नवम्बर, 1973 में लियोनिद ब्रेज्नेव की भारत-यात्रा के सोवियत-भारत मित्रता के और विकास तथा सुदृढ़ीकरण के अत्यन्त प्रचुर महत्व हैं।

भारत ने ब्रेज्नेव का पुराने और सच्चे दोस्त के रूप में स्वागत किया। भारतीय राजधानी की सड़कें और चौराहे खूब सजाये गये थे। हिंदी और रूसी भाषा में हार्दिक स्वागत के शब्दों से अंकित पताकाएँ और पोस्टर हर कहीं दृष्टि-गोचर हो रहे थे। भारत ने ब्रेज्नेव की यात्रा को ऐसे प्रचुर महत्व की घटना के रूप में ग्रहण किया, जो दोनों देशों की दोस्ती और सहयोग के लिए नये आयाम उन्मुक्त करेगी।

इस अवसर पर नयी दिल्ली में नागरिक स्वागत समिति का गठन किया गया था, जिसके अध्यक्ष भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के तत्कालीन सभापति डॉ० शंकरदयाल शर्मा थे। इस स्वागत समिति में पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, जम्मू व कश्मीर के मुख्यमंत्री तथा अन्य गण्यमान नागरिक शामिल थे।

26 नवम्बर, 1973 को, सोवियत विमान के आगमन से काफ़ी पहले "ब्रेज्नेव-द्रुषवा" के नारे जोर-शोर से पालम हवाई अड्डे पर गूँजने लगे थे। चरिष्ठ सोवियत अतिथि का वास्तव में अत्यन्त तुमुल स्वागत किया गया था।

आगमन के एक ही घंटे के भीतर ब्रेज्नेव ने इस महान एशियाई देश की अपनी यात्रा का प्रयोजन स्पष्ट कर दिया। उन्होंने कहा, "संसार के जनगण राजनेताओं और राजनीतिक नेताओं से यह आशा करते हैं कि वे देशों के शांति-पूर्ण सहयोग को बढ़ाने की दिशा में ठोस कार्रवाई करें। मेरा विचार है यह सोचना असंदिग्ध है कि हमारी बातचीत ठीक इसी दिशा में प्रवाहित होगी। इन दिनों सोवियत संघ और भारत के महान जनगण की मित्रता एशिया और शेष विश्व में शान्ति एवं सुरक्षा के लिए कुछ कम महत्वपूर्ण नहीं है। इस मित्रता का और सुदृढ़ीकरण और दोनों देशों के बीच सहयोग का विस्तार हमारी इस यात्रा का प्रमुख प्रयोजन है।"

भारतीय समाचारपत्रों ने ब्रेज्नेव का स्वागत महान राजनेता, शांति-योद्धा और सम्पूर्ण विश्व में तनाव-भयित्य के लिए होने वाले संघर्ष की पहल करने वाले



प्रपोत्री गालिया को लिए हुए



सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की 25वीं कांग्रेस में भाषण करते हुए

के रूप में किया। हिबुस्तान टाइम्स ने उनकी भारत-यात्रा को पुनीत अवसर बताने के साथ ही यह भी कहा कि सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महासचिव अत्यन्त अभिनन्दनीय अतिथि हैं। टाइम्स ऑफ इंडिया ने अपने सम्पादकीय का शीर्षक ही 'स्वागतम्' दिया।

भारतीय समाचारपत्रों ने कहा कि ब्रेज्नेव की भारत-यात्रा भारत-सोवियत सहयोग के सफलतापूर्ण दीर्घविधि विकास में उनकी निष्ठा तथा भारत की ओर प्रगति एवं स्थायित्व में उनके विश्वास को प्रकट करती है।

भारत की सरकार और जनता की ओर से उच्च सोवियत अतिथि का स्वागत करते हुए भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी ने कहा : "12 वर्ष पहले की आपकी भारत-यात्रा के बाद से भारत और संसार में बहुत कुछ परिवर्तन हो गये हैं। लेकिन एक चीज बहुत दृढ़ रही है और फूली-फनी है और वह है हमारी मित्रता...हमारे दोनों जनगण की मित्रता न्याय एवं समानता के लिए गहरी चाह से उत्पन्न होती है।"

अपनी ओर से ब्रेज्नेव ने भारत पहुँचने पर कहा कि सोवियत लोग भारत और सोवियत संघ द्वारा अपनाये गये दोस्ती और सर्वतोमुखी सहयोग के मार्ग का, "ऐसे मार्ग का, जो शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धान्तों की जीवन्तता विशिष्ट रूप से प्रकट करता है, उच्च मूल्यांकन करते हैं।"

ब्रेज्नेव ने भारत के जनगण का और विश्व सस्कृति के कोप में युगो-युगों में किये जा रहे उनके योगदान का प्रशंसात्मक शब्दों में उल्लेख किया। उन्होंने स्वाधीन भारत की आशातीत, आर्थिक एवं सामाजिक उपलब्धियों का चिह्न किया और विश्व के मामलों में उसकी भूमिका की सराहना की। उन्होंने कहा, "सोवियत जन संप्रभु सत्ता और शांति-प्रेमी, गुटनिरपेक्ष देशों के साम्राज्यवाद-विरोधी आन्दोलन में जनगण की स्वतंत्रता एवं स्वाधीनता की प्रतिरक्षा में तथा विश्व भर में राज्यों के बीच शांतिपूर्ण, सच्चे सम्य-सम्बन्धों की स्थापना के लिए भारत के विपुल योगदान को मूल्यवान मानते हैं।"

भारतीय संसद की राज्यसभा के उपसभापति गोड़े मुराहरि ने ब्रेज्नेव का उल्लेख "भारत के प्रिय अतिथि और सर्वश्रेष्ठ मित्रों में एक" के रूप में किया।

प्रख्यात भारतीय राजनीतिक एवं सार्वजनिक नेता तथा लेनिन शांति पुरस्कार विजेता श्रीमती अरुणा आसफ अली ने कहा कि "एत० आई० ब्रेज्नेव की भारत-यात्रा यह प्रकट कर देगी कि विभिन्न सामाजिक प्रणालियों वाले राज्यों के बीच सम्बन्धों में शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व का सिद्धान्त किस प्रकार सफलतापूर्वक व्यवहार में लाया जा सकता है।"

लालक़िला की प्राचीन प्राचीर, जहाँ पर 1947 में तिरंगे ध्वज ने एशिया में एक नये स्वतंत्र राज्य के जन्म की सूचना दी थी, के सामने विस्तृत मैदान में आयोजित जन-सभा सोवियत संघ के प्रति भारतीय जनता की मित्रतापूर्ण भावनाओं का उत्साहपूर्ण प्रदर्शन थी। लगभग दस लाख लोग इस सभा में एकत्र हुए थे। वे भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों का प्रतिनिधित्व करते थे। उन्होंने सोवियत संघ के साथ भारत की दोस्ती और सहयोग को सुदृढ़ बनाते रहने का संकल्प व्यक्त किया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सभापति डॉ० शंकरदयाल शर्मा ने कहा था, "यह केवल दिल्ली के ही लोगों की सभा नहीं है। इसमें पूरे भारत से आये हुए लोग जमा हैं। वे लालक़िले के मैदान में सोवियत नेताओं और सोवियत संघ की जनता के प्रति अपने सम्मान और मित्रता की भावनाएँ प्रकट करने के लिए आये हैं।"

इस सभा में भाषण करते हुए लियोनिद ब्रेज़नेव ने कहा कि मैं शांति और सद्भावना का दूत बनकर भारत आया हूँ। मुझे प्रसन्नता है कि मैं मित्र भारतीय जनता को सोवियत जनता की हार्दिक वधाई और शुभकामनाएँ प्रेषित कर रहा हूँ। ब्रेज़नेव ने कहा, मेरी यात्रा का प्रमुख प्रयोजन दोनों राष्ट्रों के बीच दोस्ती के बंधन को मज़बूत करना और उनकी दोस्ती तथा सर्वतोमुखी सहयोग के और आगे विकास में सर्वोत्तम सम्भव योगदान करना है।

ब्रेज़नेव ने कहा, दोनों देशों के जनगण को जोड़ने वाली दोस्ती, उनका आपसी सम्मान, स्नेह और आपसी आकर्षण की शक्ति की परीक्षा विभिन्न परिस्थितियों में—अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के महासागर को उद्वेलित करने वाले भीषण तूफ़ानों और प्रशान्त मौसम में हो चुकी है। उन्होंने आगे कहा, और आज मेरा विश्वास है कि यह हम निश्चिन्त होकर कह सकते हैं कि हमारी मित्रता इस परीक्षा में बड़ी शान से खरी उतरी है। इसने हमारे दोनों राष्ट्रों के लिए, हमारे सामान्य हितों के प्रवर्द्धन के लिए, और हम यह भी कह सकते हैं कि हमारे दोनों देशों की सुरक्षा के लिए अपना मूल्य विश्वासदायी रूप में प्रकट कर दिया है। इसने विश्व-शांति के लिए भी अपना मूल्य पुष्ट कर दिया है।"

1961 में अपनी पहली भारत-यात्रा के बाद घटित तूफ़ानी विश्व घटना-चक्र का उल्लेख करते हुए ब्रेज़नेव ने कहा कि सोवियत-भारत मित्रता एवं सहयोग की व्यवहार में भी कड़ी परीक्षा हो चुकी है। उन्होंने कहा, "और भारत तथा सोवियत संघ के नेतागण ने ऐसे विवेकपूर्ण निष्कर्ष निकाले हैं, जिनको जनता का हार्दिक अनुमोदन प्राप्त है। उन्होंने शांति, मैत्री एवं सहयोग संधि सम्पन्न करके ऐसे सम्बन्ध निरापद बनाये, जो उच्च कोटि की परिपक्वता अर्जित कर चके थे। इस

सधि की तुलना उस कुतुबनुमा में की जा सकती है, जो भविष्य के मार्ग की ओर इशारा करता रहता है। यह हमारे देशों के जनगण के परमावश्यक हितों के अनुरूप है।”

ब्रेज्नेव की इस यात्रा के दौरान सोवियत-भारत सम्बन्धों के सभी पहलुओं का प्रभावित करने वाले प्रश्नों की जाँच की गयी। दोनों देशों के बीच आर्थिक सहयोग पर काफी अधिक ध्यान दिया गया। यह नोट किया गया कि जब नवोदित गणराज्य भारत के सम्मुख आधुनिक अर्थव्यवस्था के निर्माण का, देश के औद्योगीकरण का कार्य उपस्थित है तो सोवियत संघ ने सच्चे दोस्त की उत्प्रेरता की तरह भारत के अनुरोध का प्रत्युत्तर दिया और अपनी ज्वलन्-भर सभी प्रकार की सहायता और समर्थन प्रदान किया—मात्र-मात्रान उधार दिया, अपने विज्ञापन भेजे और राष्ट्रीय कामियों के प्रशिक्षण में मदद दी।

ब्रेज्नेव ने कहा कि इस मदद में “सोवियत जनता यह जानकर खुश है कि हमारा अनुभव और हमारा कार्य देश के औद्योगीकरण में सम्बद्ध बड़ी समस्याओं के समाधान में आपकी सहायता कर रहा है।”

ब्रेज्नेव ने कहा कि “अन्य किसी क्षेत्र में कहीं अधिक” भारत के आर्थिक पिछड़ेपन को दूर करने और इसके औपनिवेशिक अतीत के दुःखदायी अवशेषों का मिटाने, भारतीय जनता के जीवन में सुधार करने के क्षेत्र में “सोवियत और भारतीय लोगों की वास्तविक मित्रता, मेहनतकश लोगों की मित्रता स्थापित की जा रही है। और इस मित्रता के अधिक निर्भर योग्य और नि स्वार्थ चीज और कोई नहीं है।

सोवियत संघ और भारत के बीच मित्रता एवं सहयोग समाजवादी विश्व और राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन द्वारा निर्मित विश्व के महान मशय के अत्यन्त विश्वासदायक प्रतीकों में से है।

जन-मभा में दिये गये अपने भाषण में ब्रेज्नेव ने सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत राज्य की नीति के मूलभूत सिद्धान्त निर्दिष्ट किये। उन्होंने कहा, सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत राज्य “राष्ट्रीय स्वतंत्रता और स्वाधीनता के लिए लड़ने वालों के पक्ष में और सबंधी ही रहेंगे। हमारी यह राजनीतिक नीति हमारे विश्व दृष्टिकोण में उत्पन्न हुई है, जो एक राष्ट्र द्वारा दूसरे राष्ट्र के उत्पीड़न और साम-ही-साथ मानव द्वारा मानव के शोषण का निरस्कार करता है। ब्रेज्नेव ने कहा कि इस राजनीतिक दृष्टि की जड़ समाजवादी समाज की प्रकृति में ही जमी है और सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यक्रम में अंकित है। कार्यक्रम में कहा गया है: “सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी उन जनगण के साथ भ्रातृत्वपूर्ण मशय को, जिन्होंने औपनिवेशिक और अर्द्ध-औपनिवेशिक

जूआ उत्तर फेंका है, अपनी अन्तर्राष्ट्रीय नीति के प्रमुख आधार में से मानती है।”

ब्रेज्नेव ने बल देकर कहा, “सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत सरकार की हमेशा यही मान्यता रही है कि सामाजिक विकास के मार्ग का चयन प्रत्येक राष्ट्र का अपना आन्तरिक मामला है, जिसका निर्धारण उसके अपने उद्देश्यों, आवश्यकताओं, सामाजिक-राजनीतिक व्यवहार तथा वर्ग-शक्तियों के संतुलन पर निर्भर करेगा।” उन्होंने कहा, “और यदि आज के भारत में समाजवाद की दिशा में विकास की चर्चा है, तो हमारी दृष्टि से इसकी जड़ें अन्य बातों के अलावा आपके देश के ऐतिहासिक अनुभवों में ही निहित हैं। विश्व पूंजीवाद ने भारत को उपनिवेशिक उत्पीड़न की जंजीरें दीं। और इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं कि अब यह राष्ट्र अपने भविष्य की आशा उस प्रकार की सामाजिक प्रणाली के साथ नहीं बाँधना चाहता। इस सिलसिले में हमारा दृष्टिकोण तो सुविदित ही है। जैसा कि मैं पहले ही कह चुका हूँ, हम अपने अनुभव से जानते हैं कि समाजवाद आम जनता में विपुल सृजनात्मक शक्ति उत्पन्न करता है।”

ब्रेज्नेव ने कहा, “सोवियत-जन भारत के मित्र जनगण के जीवन और समर्पित धर्म पर भलीभाँति ध्यान देते हैं, भारत द्वारा अर्जित सफलताओं की सराहना करते हैं और उसके सम्मुख प्रस्तुत कार्यों की जटिलता को भलीभाँति समझते हैं। हमारे देशवासियों को महान भारतीय जनता की सृजनात्मक शक्ति में विश्वास है और वे हार्दिक रूप से यह आशा करते हैं कि सोवियत-भारत सहयोग भारत को अपनी सामाजिक-आर्थिक समस्याओं के समाधान में मदद पहुँचायेगा।

भारत की भूमि पर जहाँ भी ब्रेज्नेव ने भाषण किया उन्होंने मुख्य रूप से इसी पर बल दिया—कि भारत के साथ मित्रता और सहयोग सोवियत विदेश-नीति का अविच्छिन्न तत्व है। “जब भारत औपनिवेशिक दासता के नीचे था तब भी हम आपके साथ थे। जब भारतीय राज्य स्वरूप ग्रहण ही कर रहा था तब भी हम आप साथ थे। भारत के लिए कठिन एवं विषम समय में भी हम आपके साथ थे। हम आपके साथ तब भी थे, जब भारत अपने जीवन्त हितों की रक्षा कर रहा था, विभिन्न बाहरी शक्तियों द्वारा जब उस पर दबाव डाला जा रहा था। और हम आपके साथ सदा रहेंगे, सुख में भी, और दुःख में भी।”

सोवियत और भारतीय जनगण की मित्रता कोई अशरीरी भावना नहीं है। दोनों ही देशों में इसे जीवधारी लोग बना-बढ़ा रहे हैं, जो अपनी मेधा, अपनी ऊर्जा और अपने हृदय इस पुनीत ध्येय के प्रति समर्पित किये हुए हैं। इस सिलसिले में ब्रेज्नेव ने भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों का—मेहनतकशों, अध्यापकों,

चिकित्सको, इंजीनियरो, वैज्ञानिकों और सांस्कृतिक क्षेत्र के कार्यकर्ताओं का प्रतिनिधित्व करने वाले सभी भारतीय नागरिकों के प्रति सोवियत-भारतीय मित्रता एवं सहयोग के विकास एवं दृढ़ीकरण के विकसित में अंशदान के लिए गहरी कृतज्ञता प्रकट की। उन्होंने कहा, सोवियत संघ के लोगों का भारतीय जनता के महान सपनों, दोनों देशों के बीच दोस्ती के उन उत्कट समर्थकों के बारे में जानकारी है और वे उन्हें याद करते हैं जिन्होंने भारतीय और सोवियत जन के बीच सम्बन्धों के दृढ़ीकरण के लिए बहुत कुछ किया। उन्होंने इंडो-सोवियत कल्चरल मामायाटी के अध्यक्ष के० पी० एम० मेनन का उल्लेख विशेष प्रशंसा के साथ किया, जिन्होंने गत कई वर्षों के दौरान भारत-सोवियत दोस्ती के लिए सतत कार्य किया है।

सोवियत संघ से आये अतिथि का स्वागत सदन भवन में करते हुए सांक्रसभा के अध्यक्ष जी० एस० दिल्ली ने कहा, 'ब्रेजनेव केवल उस देश के प्रख्यात नेता के ही रूप में नहीं आये हैं, जिसके साथ भारत के विशेषतया घनिष्ठ सम्बन्ध हैं, बल्कि वे ऐसे सच्चे दोस्त के रूप में, ऐसे व्यक्ति के रूप में आये हैं, जो भारत का शुभचिन्तक हैं और जो घनिष्ठ सहयोग और मित्रता की नीति के निरूपण एवं विकास को अत्यन्त प्रिय मानता है जिसका दोनों राष्ट्र उच्च मूल्यांकन करते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि हाल के वर्षों में घटित घटनाओं ने यह स्पष्ट रूप से प्रकट कर दिया है कि आपसी लाभ और मुनाफे और आपसी समृद्धि के अलावा सहयोग शांति और स्थिरता की अभिवृद्धि के लिए भी बहुत कुछ कर सकता है।'

भारतीय नेनाओं ने विश्व शांति के दृढ़ीकरण और अन्तर्राष्ट्रीय तनाव में कमी लाने में लियोनिड ब्रेजनेव के विपुल व्यक्तिगत अंशदान पर बल दिया।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के तत्कालीन अध्यक्ष डॉ० एस० डी० शर्मा ने कहा कि ब्रेजनेव "शांति और अन्तर्राष्ट्रीय तनाव-शान्ति की अपनी खोज में, निस्सन्देह, विभिन्न राजनीतिक एवं सामाजिक प्रणालियों वाले राज्यों के बीच शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की लेनिनवादी नीति से पथ-प्रदर्शन ग्रहण करने के साथ ही इस प्रकार के विश्व के निर्माण के कर्तव्य के प्रति अपनी उत्कट प्रतिबद्धता की इस भावना से भी प्रेरित होते हैं कि जिससे युद्ध और युद्ध की घमकियों का अन्तिम रूप में उन्मूलन किया जा चुका हो। सोवियत संघ द्वारा उस अवधि के दौरान जब वे सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महामन्त्रि रहे हैं, उठायी गयी पहलकदमियों के फलस्वरूप अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण में परिवर्तन हुआ है और अन्तर्राष्ट्रीय तनावों में उन्मुखनीय तनाव आया है।"

अपनी भारत-यात्रा के दौरान ब्रेजनेव भारत की कम्युनिस्ट पार्टी के नेनाओं

एस० ए० डांगे, राजेश्वर राव और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की राष्ट्रीय परिषद के केन्द्रीय सचिवालय के सदस्यों से मिले। उन्होंने इनसे सोवियत संघ में कम्युनिस्ट-निर्माण, औद्योगिक एवं कृषि क्षेत्र के विकास में सोवियत जनता द्वारा अर्जित सफलता और सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के राजनीतिक-सैद्धान्तिक एवं संगठनात्मक कार्य के बारे में चर्चा की। भारतीय कम्युनिस्टों के साथ अपनी मित्रतापूर्ण बातचीत में उन्होंने सोवियत संघ की नीति के बारे में विस्तार-पूर्वक मूचित किया, जिसका लक्ष्य अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धान्तों का सतत् समर्थन और राष्ट्रों की स्वतंत्रता एवं स्वाधीनता को प्रोत्साहित करना है।

डांगे, राव तथा भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के अन्य नेताओं ने ब्रेज्नेव की यात्रा का स्वागत किया, जिसने भारतीय जनता के व्यापक वर्गों में उत्साह उत्पन्न किया तथा जिसे वे भारत और सोवियत संघ के बीच मित्रता के बढ़ते हुए बन्धनों का नया प्रतीक मानते हैं। डांगे और राव ने सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्वमंडल और व्यक्तिगत रूप से लियोनिद ब्रेज्नेव द्वारा विश्व-शांति के लिए संघर्ष में प्रकट पहलकदमी और उत्साह की उच्च सराहना की।

ब्रेज्नेव की भारत-यात्रा ने सोवियत-भारत मित्रता तथा सर्वतोमुखी सहयोग के विकास एवं दृढ़ीकरण को नया और शक्तिशाली उद्देश्य प्रदान किया। इस यात्रा के दौरान इस प्रकार के महत्वपूर्ण दस्तावेजों पर दस्तखत किये गये—सोवियत-भारत संयुक्त घोषणा, सोवियत संघ और भारत गणराज्य के बीच आर्थिक सहयोग एवं व्यापार के और विकास के वास्तविक समझौता तथा अन्य दस्तावेज। सोवियत-भारत संयुक्त घोषणा का विशेष महत्व है, क्योंकि इसने सोवियत संघ और भारत के बीच सम्बन्धों के बुनियादी सिद्धान्तों को नया उच्च स्तर प्रदान किया तथा सहयोग के प्रमुख क्षेत्रों को परिभाषित किया। इस घोषणा का सोवियत संघ और भारत में हार्दिक अनुसमर्थन किया गया क्योंकि यह दोनों राष्ट्रों के जीवन्त हितों के अनुरूप है और एशिया तथा शेष विश्व में शांति एवं सुरक्षा को सुदृढ़ बनाने वाली महत्वपूर्ण कारक का कार्य करती है।

3. मित्रता और सहयोग के मार्ग पर नये चरण

फरवरी-मार्च, 1976 में होने वाली सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की 25वीं कांग्रेस ने नव-स्वाधीन राष्ट्रों और विशेष रूप से भारत के साथ सोवियत संघ के सम्बन्धों पर यथेष्ट ध्यान दिया।

कांग्रेस के सम्मुख प्रस्तुत केन्द्रीय समिति की रिपोर्ट में ब्रेज्नेव ने कहा,

सार्वत्रिक माध्यमिक शिक्षा में सक्रमण प्रत्यक्ष रूप से स्कूल की भूमिका में सघटन के साथ जुड़ा है। ब्रेजनेव माध्यमिक शिक्षा के तत्व को विज्ञान, प्रविधि व संस्कृति की वर्तमान आवश्यकताओं के अधिकाधिक अनुरूप बनाने की आवश्यकता के प्रति विशेष ध्यान देते हैं।

युवाजन इन समस्याओं का उत्साहपूर्वक समाधान कर रहे हैं क्योंकि भविष्य उनके हाथों में है। भौतिकशास्त्र, रसायनशास्त्र तथा गणित में राष्ट्रीय प्रतियोगिताएँ, जिनमें लाखों स्कूली बच्चे अत्यधिक रुचि के साथ भाग लेते हैं, परंपरा बन गयी हैं। सम्पूर्ण देश में वरिष्ठ कक्षाओं के छात्रों की सोसाइटियाँ तथा युवा तकनीशियनों व प्रकृति प्रेमियों के केन्द्र विद्यमान हैं।

समस्त शिक्षा नि:मुक्त है, इसलिए यह सभी व्यक्तियों की पहुँच के भीतर है। ब्रेजनेव के अनुसार ऐसे सोवियत बुद्धिजीवियों का निर्माण हो रहा है, जो अपनी मृजनात्मक शक्ति जनता के ध्येय तथा कम्युनिस्ट निर्माण के ध्येय को समर्पित करने के लिए कृतसंकल्प हैं।

विज्ञान की विकासशील भूमिका

स्वयं एक इंजीनियर और अनुभवी राजनेता व पार्टी नेता होने के नाते ब्रेजनेव ने विज्ञान व प्रौद्योगिकी के विकास के उन्नयन के प्रति मंदब ही काफी ध्यान दिया है। उनका नाम इस क्षेत्र की अनेक उपलब्धियों के साथ जुड़ा है। उन्होंने अनुसंधान के विकास के लिए समस्त आवश्यक परिस्थितियों का मृजन करने का सदा ही प्रयत्न किया है। "तकनीकी, आर्थिक व सामाजिक प्रगति का जीवनदायक स्रोत, जनता की आत्मिक संस्कृति में वृद्धि और उसका कल्याण—विज्ञान का आज हमारे लिए यही अर्थ है।" महासचिव सोवियत समाज के लिए विज्ञान के महत्व का मूल्यांकन इसी प्रकार करते हैं।

सोवियत जन की वास्तव में सोवियत विज्ञान अकादमी पर गर्व है। इस वैज्ञानिक केन्द्र के महत्व की चर्चा करने हुए ब्रेजनेव ने 25वीं कांग्रेस को बनाया "विज्ञान के उन्नयन तथा इसके मुख्यानय विज्ञान अकादमी के प्रति, जिसकी 250वीं जयन्ती पिछली मर्दियों में व्यापक रूप से मनायी गयी, अनवरक ध्यान प्रदर्शित करते रहना पार्टी की नीति है। इसमें हमारे विज्ञान का पराग मकेद्रित है—मेधावी विद्वान, वैज्ञानिक स्कूलों व प्रवृत्तियों के संस्थापक तथा अत्यधिक प्रतिभाशाली युवा वैज्ञानिक ज्ञान के शिखर की दिशा में नये मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। पार्टी अकादमी के कार्य का उच्च मूल्यांकन करती है और यह वैज्ञानिक अनुसंधान तथा देश में समस्त वैज्ञानिक कार्य के समायोजक के रूप में इसकी भूमिका का

पश्चिम जगत में कुछ लोगों ने कहा कि सोवियत-भारतीय सम्बन्ध उदासीन रूप ग्रहण कर लेंगे। लेकिन अक्तूबर, 1977 में भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई की सोवियत संघ-यात्रा से प्रकट हो गया कि दोनों महान राष्ट्रों के बीच दोस्ती और सहयोग के सम्बन्ध बढ़ते ही जा रहे हैं। क्रेमलिन में आयोजित स्वागत-समारोह में देसाई ने बल देकर कहा : “आज अपने आपसी सम्बन्धों को मजबूत बनाने की, अपनी आपसी इच्छा को पुनर्पुष्ट करते हुए हम यह कह सकते हैं कि ये सम्बन्ध व्यक्तियों अथवा विचारधाराओं पर नहीं बल्कि समानता, राष्ट्रीय हित और प्रबुद्ध समान प्रयोजनों पर आधारित हैं। हमारे दोनों ही राष्ट्रों ने यह मान लिया है कि विश्व में शांति हो इसमें हमारी दृढ़ रुचि है और हम अन्तर्राष्ट्रीय स्थिरता और सहयोग के लिए कार्य करना चाहते हैं।”

मोरारजी देसाई सोवियत संघ में ऐसे शुभ वर्ष में आये जब उनकी यात्रा से कुछ ही पहले और व्यापक देश-व्यापी विचार-विमर्श के बाद सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत—हमारे देश की उच्चतम विधायिका ने नया संविधान स्वीकार किया, जिसमें सोवियत विदेश-नीति के मूलभूत सिद्धान्त निर्धारित किये गये हैं—संप्रभु समानता के प्रति सम्मान, बल प्रयोग अथवा बल की धमकी का परित्याग, सीमाओं की अलंघनीयता, राज्यों की प्रादेशिक अखंडता, झगड़ों का शांतिपूर्ण निपटान, आन्तरिक मामलों में अहस्तक्षेप आदि-आदि। सोवियत-भारत सम्बन्धों में इन सिद्धान्तों का पूर्ण रूप से पालन किया जाता है।

देसाई के लिए आयोजित स्वागत-समारोह में ब्रेज्नेव ने कहा : “सोवियत-भारत सहयोग दोनों पक्षों द्वारा संप्रभुता, समानता और एक-दूसरे के घरेलू मामलों में अहस्तक्षेप के सिद्धान्तों के कठोर परिपालन के साथ प्रशान्त और स्थिर वातावरण में विकसित हो रहा है।”

भारतीय प्रधानमंत्री की सोवियत संघ-यात्रा ने यह प्रकट कर दिया कि सोवियत-भारतीय मैत्री सम्बन्धों का महत्व मात्र द्विपक्षीय सम्बन्धों की संरचना से कुछ अधिक ही है। ब्रेज्नेव ने बल देकर कहा, “हमने सदैव ही यह माना है कि शांति अविभाज्य है...विश्व के एक भाग में शांति तथा अच्छे पड़ोसी-भाव के सुदृढ़ीकरण में वास्तविक प्रगति सम्पूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण में सुधार के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो सकती है।” और इसी सन्दर्भ में, कि शांति अविभाज्य है, सोवियत-भारत मित्रतापूर्ण सहयोग के महत्व को देखा जाना चाहिए। बढ़ते हुए और घनिष्ठतर सहयोग की प्रतिक्रिया से न केवल दोनों महान राष्ट्रों की मित्रता की ही बल्कि सम्पूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण को भी लाभ पहुँच रहा है। अच्छे पड़ोसी भाव और आपसी विश्वास के सिद्धान्त अधिकाधिक प्रभावक हो रहे

अप्रैल, 1975 में सोवियत रॉकेट ने भारत का प्रथम कृत्रिम भू-उपग्रह आर्यभट्ट प्रक्षेपित किया। इसका नाम प्राचीन भारत के खगोलविद् एवं गणितज्ञ के नाम पर रखा गया था।

26 अक्टूबर, 1977 को हस्ताक्षरित सोवियत-भारत संयुक्त घोषणा में कहा गया, "आर्थिक विकास और वैज्ञानिक तकनीकी प्रगति के अनुरूप दोनों देशों द्वारा सहयोग के नये और अधिक प्रभावक रूपों को तैयार किया जा रहा है। उनके द्वारा किये गये उपायों के परिणामस्वरूप सोवियत-भारत व्यापार के विस्तरण में यथेष्ट प्रगति की जा चुकी है। गत दस वर्षों के दौरान व्यापार का परिमाण चौगुना हो गया है।"

सोवियत-भारत संयुक्त घोषणा में यह महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकाला गया है कि सोवियत-भारत मित्रता समय की कसौटी पर खरी उतरी है। यह किन्हीं अस्थायी कारणों से विचलित नहीं हो सकती और यह एशिया तथा शेष विश्व में शांति एवं स्थायित्व के लिए महत्वपूर्ण कारक है।

सोवियत-भारत सहयोग प्रतिवर्ष उत्तरोत्तर विस्तृत होता जा रहा है और नया एवं समृद्धतर गुण-तत्त्व ग्रहण करता जा रहा है। मार्च, 1979 में, सोवियत संघ की मंत्रिपरिषद के अध्यक्ष अलेक्सेई कोसिगिन की भारत-यात्रा के दौरान 26 अक्टूबर, 1977 को हस्ताक्षरित सोवियत-भारत संयुक्त घोषणा में अंकित प्रावधान के अनुरूप 10-15 वर्ष की अवधि के लिए आर्थिक, व्यापारिक और वैज्ञानिक तकनीकी सहयोग के दीर्घावधि कार्यक्रम पर हस्ताक्षर किये गये। इस कार्यक्रम में सोवियत संघ और भारत के बीच फलप्रद और लाभदायक सहयोग के और विस्तार की अच्छी सम्भावनाएँ विद्यमान हैं।

मैत्री एवं सहयोग के सोवियत-भारत सम्बन्धों को जून, 1979 में भारत के प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई की सोवियत संघ की मित्रतापूर्ण एवं सोवियत सरकारी परिणामस्वरूप नया उद्वेग प्राप्त हुआ। लियोनिद ब्रेज़नेव तथा अन्य नेताओं के साथ हुई बातचीत का विषय विभिन्न क्षेत्रों में सोवियत-भारत सम्बन्धों का और विस्तार एवं विकास था। अनेक महत्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर भी विचार-विमर्श किया गया।

इस यात्रा के दौरान ब्रेज़नेव ने बल देकर कहा कि "1971 की संधि पर ही उचित रूप से आधारित, सोवियत संघ और भारत के बीच सहयोग, प्रतिवर्ष उत्तरोत्तर घनिष्ठ एवं अत्यधिक विविधमुखी होते जा रहे हैं। यह दोनों देशों के जनगण के परमावश्यक हितों के अनुकूल है।" भारतीय प्रधानमंत्री ने इसके प्रत्युत्तर में कहा कि "भारत सोवियत संघ का विश्वसनीय मित्र है, जिसकी नीति

का अवलम्ब समय तापेक्ष हितों अथवा बस्यापीताओं पर अवलम्बित राष्ट्र, ई-ए
हार्दिक भावनाओं, सदेच्छा और पारस्परिक हितों के विषयमयी आधार पर
अवलम्बित है।”

जून, 1979 में दोनों देशों ने सोवियत समाजवादी जनतंत्र संघ और भारत
गणराज्य के वक्तव्य पर—प्रचुर अन्तर्राष्ट्रीय प्रासंगिकता के दस्तावेज पर हस्ता-
क्षर किये गये। वक्तव्य में यह सोवियत एवं भारतीय सकल पुनर्पुष्ट किया गया
कि वे शान्ति एवं अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा का दृढ़ीकरण करेंगे और शान्तिपूर्ण सह-
अस्तित्व के मित्रताओं के आधार पर सहयोग बढ़ायेंगे। इसमें इस तथ्य को विशेष
रूप से नोट किया कि “सोवियत संघ और भारत द्वारा हस्ताक्षरित शान्ति, मैत्री
एवं सहयोग संधि तथा अन्य सोवियत-भारत मनसोते अपनी परम्परागत
मित्रता और शान्तिपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के लिए संधि में अपने स्पष्ट अग्र-
दान में दोनों देशों द्वारा अग्रिम उच्च स्तर को प्रतिबिम्बित करते हैं। इसमें इन
पर भी बतलाना कि सोवियत-भारत सम्बन्ध इसका उदाहरण है कि किस
प्रकार दो सन्नत राष्ट्र, अपने राजनीतिक एवं सामाजिक-आर्थिक प्रणालियों में
भेद के बावजूद अपने द्विपक्षीय सम्बन्धों का निर्माण कर सकते हैं।”

वक्तव्य में कहा गया, सोवियत संघ और भारत दोनों राष्ट्रों के हित में तथा
शान्ति एवं अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के सुदृढ़ीकरण के लिए अपना अनिष्ट सहयोग
जारी रखने के लिए कृत-संकल्प है।

सहयोग को बढ़ाने का यह सकल आर्थिक, व्यापारिक और वैज्ञानिक तक-
नीकी सहयोग के दीर्घावधि सनसोते, परमाणु ऊर्जा के शान्तिपूर्ण उपयोग विषयक
समझौते और आर्थिक एवं वैज्ञानिक सहयोग के अन्तर-सरकारी सोवियत-भारत
आयोग की पांचवी बैठक के परिणामों द्वारा स्पष्ट रूप से प्रकट हो जाता है।
आयोग की बैठक मास्को में जून, 1979 में हुई थी। इस आयोग ने यह निर्णय
लिया कि लौह एवं अलौह धातु कर्म, कोयला व तेल उद्योग, इञ्जीनियरी, मिर्चाई,
फार्मिंग, भौतिकी, लुगदी और कागज तथा औषधि उद्योग में, इमारती सामग्री
तैयार करने तथा वाणिज्य में सहयोग और विस्तृत किया जाये। सोवियत और
भारतीय पक्ष द्वारा दोनों देशों के विविधमूर्ती सहयोग को बढ़ाने और उसमें
सुधार करने की इच्छा उस समझौते द्वारा पुष्ट होती है, जो विशाखापत्तनम् में
लौह व इस्पात सयंत्र के निर्माण तथा 7 जून, 1979 को भारत द्वितीय कृत्रिम
भू-उपग्रह भास्कर के सोवियत रॉकेट द्वारा प्रक्षेपण में सहयोग के लिए किया
गया।

वक्तव्य में मभी देशों से, उनकी राजनीतिक, आर्थिक अथवा सामाजिक

प्रणाली, आकार, भौगोलिक अवस्थिति अथवा आर्थिक स्तर चाहे जैसा हो, अपील की गई है कि वे वर्तमान और भावी पीढ़ी के लिए स्थायी शान्ति के भवन-निर्माण के लिए होने वाले प्रयत्नों में शामिल हों।

विकासशील देशों के साथ सोवियत सम्बन्धों की चर्चा करते हुए ब्रेज़नेव ने इस ओर ध्यान दिलाया कि “अन्य स्थानों की तरह विकासशील देशों में भी हम प्रगति, जनवाद और राष्ट्रीय स्वाधीनता की शक्तियों के पक्षधर हैं तथा उन्हें हम अपना मित्र तथा हाथ-से-हाथ मिलाकर चलने वाला साथी मानते हैं।”

पीकिंग के वर्तमान नेतागण की लाइन इस नीति के विलकुल प्रतिकूल है। जैसा कि ब्रेज़नेव ने कहा है, चीन के नेता विश्व-भर में अत्यन्त अतिवादी प्रतिक्रियावाद—पश्चिमी देशों के सैन्यवादियों और तनाव-शैथिल्य के शत्रुओं से लेकर तक्षिण अफ्रीका नस्लवादी और चिली के फ़ासिस्ट शासकों तक—सभी के साथ समान रूप से स्वर मिला रहे हैं। पीकिंग द्वारा तनाव-शैथिल्य का अन्तर्ध्वंस करने, निरस्त्रीकरण को अवरुद्ध करने, राज्यों के बीच सन्देह एवं शत्रुता के बीज बोने के तावड़तोड़ प्रयत्न और विश्वयुद्ध को भड़काने तथा उससे लाभ उठाने की कोशिश सभी शान्तिपूर्ण जनगण के लिए महान ख़तरा है। यह नीति सभी राष्ट्रों के हितों के पूर्ण रूप से प्रतिकूल है। साम्राज्यवादी शक्तियों के साथ सहयोग बढ़ाने के साथ-ही-साथ पीकिंग के नेता विकासशील देशों के जनगण के साथ, जिनमें एशिया के जनगण भी शामिल हैं विश्वासघाती “मुस्कान की नीति” का पालन करते हैं। कुछ विकासशील देशों के साथ नैन लड़ाने की यह नीति चीनी नेतृत्व की प्रभुत्ववादी एवं विस्तारवादी योजनाओं को छिपाने का बाहरी सम्मानजनक आडम्बर है। चीन द्वारा पड़ोसी राज्यों की सीमाओं पर सैनिक उत्तेजनात्मक कारंवाइयाँ और प्रादेशिक दावे शान्ति के लिए वास्तविक ख़तरा है। समाजवादी वियतनाम जनतंत्र पर अपने आक्रामक प्रहार से चीन ने सम्पूर्ण संसार के सम्मुख अपना सच्चा सैन्यवादी चेहरा प्रकट कर दिया है।

सोवियत संघ की जनता के मन में भारत की शांतिप्रिय विदेशनीति के लिए गहरा सम्मान है, जिसने उसके लिए विश्व दृश्य पटल पर प्रचुर प्रतिष्ठा अर्जित कर ली है।

सोवियत-भारत सम्बन्धों को उचित ही शान्ति एवं अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण कारक माना जाता है। इसीलिए ब्रेज़नेव का नाम भारत में इतने सम्मान के साथ लिया जाता है, जहाँ वे सोवियत-भारत मंत्री के उत्कट एवं अनवरत उन्नायक के रूप में तथा सोवियत-भारत सम्बन्धों के व्यावहारिक पहलुओं पर अपना अधिक समय एवं ध्यान लगाने वाले व्यक्ति के रूप में सुविख्यात हैं।

राज्याध्यक्ष के रूप में

पिछले अध्यायों से आपको यह अनुमान हो गया होगा कि ब्रेजनेव ने जो कार्य सम्पन्न किये हैं वे वास्तव में कितने विराट हैं।

यह कहना उचित है कि सोवियत संघ की आर्थिक प्रगति, समाजवादी राज्य तथा जनवाद में और सुधार, संस्कृति की प्रगति, जनता के रहन-सहन के स्तर को ऊँचा उठाने में अर्जित सभी सामयिक उपलब्धियाँ ब्रेजनेव से जुड़ी हुई हैं। इसके पीछे ब्रेजनेव जैसे पद-मर्यादा के नेता के वास्तविक दैनन्दिन प्रयत्न हैं।

ब्रेजनेव अत्यंत प्रख्यात अन्तर्राष्ट्रीय नेताओं में से हैं। अनेक अवसरों पर उन्होंने शांति के सुदृढ़ीकरण तथा जनगण की सुरक्षा को सुनिश्चित बनाने से संबंध मूलभूत प्रश्नों पर शिखर-स्तर की वार्ताओं में सोवियत संघ का प्रतिनिधित्व किया है। वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के कई उच्च कोटि के महत्वपूर्ण वस्तावेजों पर उनके हस्ताक्षर अंकित हैं।

इस तरह गत अनेक वर्षों से ब्रेजनेव वास्तव में कम्युनिस्ट पार्टी एवं सोवियत राज्य के अत्यन्त प्रभावशाली व्यक्तित्व के रूप में सोवियत जनता द्वारा और विश्व द्वारा मान्य हैं। इससे ब्रेजनेव के व्यक्तिगुण, उनकी विस्तृत योग्यता एवं प्रतिष्ठा के साथ ही साथ सोवियत संघ में विकसित समाजवाद के समाज में कम्युनिस्ट पार्टी की अभिवृद्ध भूमिका भी प्रकट होती है।

विकास-क्रम ने आज राज्य के नेतृत्व की संरचना में नयी स्थिति के सामान्यीकरण के प्रश्न को प्रमुखतम बना दिया है।

इसी कारण, 24 मई, 1977 को सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के पूर्णाधिवेशन ने सर्वसम्मति से यह वांछनीय माना कि लियोनिद ब्रेज़नेव, सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महा-सचिव पद के साथ ही साथ सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमंडल के अध्यक्ष का पद भी ग्रहण कर लें।

यह अत्यन्त उत्तरदायित्वपूर्ण पद है, क्योंकि 1936 के मूलभूत कानून और नये संविधान के अंतर्गत सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमंडल को अत्यन्त व्यापक अधिकार प्राप्त हैं।

तीन सप्ताह बाद, सोवियत राज्य के सर्वोच्च प्रतिनिधिमूलक निकाय, सोवियत संघ की सर्वोच्च का अधिवेशन हुआ।

16 जून, 1977 को प्रातः 10 बजे दोनों सदनों के सदस्य विशाल क्रेमलिन प्रासाद में एकत्र हुए। विषय सूची पर पहला आइटम था : "सोवियत समाजवादी जनतंत्रों के संघ की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमंडल के अध्यक्ष के विषय में।"

केन्द्रीय समिति के पोलिटब्यूरो के सदस्य और केन्द्रीय समिति के सदस्य डिपुटी (सभासद) एम० ए० सुस्लोव ने पूर्णरूप से सारगर्भित वक्तव्य दिया, जिसमें उन्होंने पार्टी की, सोवियत जनता की, तनाव-शैथिल्य एवं अंतर्राष्ट्रीय शांति की भलाई के लिए ब्रेज़नेव के कार्य की उच्च सराहना की और सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत की एक आज्ञाप्ति का प्रस्ताव प्रस्तुत किया :

"सोवियत समाजवादी जनतंत्र संघ की सर्वोच्च सोवियत आदेश देती है कि

"कॉमरेड लियोनिद इल्यीच ब्रेज़नेव सोवियत समाजवादी जनतंत्र संघ की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमंडल के अध्यक्ष निर्वाचित किये जायें।"

सभासदों ने सर्वसम्मति से आज्ञाप्ति का अनुमोदन किया।

इसके बाद ब्रेज़नेव मंच पर गये। सभासदों ने उनको दुबारा सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमंडल के अध्यक्ष के पद के लिए निर्वाचित करके उनके प्रति जो विश्वास प्रकट किया था उसके लिए उन्होंने उनको धन्यवाद दिया। अपने संक्षिप्त भाषण के एक भाग में ब्रेज़नेव ने कहा, "मैं अपनी शक्ति भर जो कुछ कर सकूंगा कहूंगा कि हमारा प्रिय देश अधिक शक्तिशाली तथा समृद्ध बने, सोवियत जनता के जीवन में अधिकाधिक सुधार हो, विश्व शांति अधिक सुदृढ़ हो और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग बढ़े।"

राज्यसत्ता के प्रधान के पद के लिए ब्रेज़नेव के निर्वाचन का सारी दुनिया में स्वागत किया गया। इससे सिद्ध हो गया कि अंतर्राष्ट्रीय तनाव-शैथिल्य, स्थायी शांति और सामाजिक प्रगति के लिए ब्रेज़नेव ने अडिग रूप से जो संघर्ष

किया है उसकी वजह से सद्भावना रखनेवाले सभी लोगों के बीच उन्होंने प्रतिष्ठा तथा सम्मान प्राप्त किया है। कई देशों के नेताओं, प्रगतिशील लोगों और अखबारों ने इस बात पर गहरा सतोष प्रकट किया कि कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत राज्यसत्ता का सबसे प्रतिष्ठावान प्रतिनिधि सोवियत सघ के सर्वोच्च पद के लिए चुना गया है। विभिन्न देशों के अखबारों ने इस बात पर जोर दिया कि यह घटना सोवियत जनता के जीवन के लिए और अंतर्राष्ट्रीय दृष्टि से भी महत्व रखती है।

सभी महाद्वीपों से ब्रेज्नेव के नाम बधाई के संदेश आये।

समाजवादी देशों के पार्टी तथा राज्यसत्ता के नेताओं ने अपने संदेशों में ब्रेज्नेव का उल्लेख एक ऐसे व्यक्ति के रूप में किया जिसने समाजवादी देशों के बीच मित्रता तथा सहयोग बढ़ाने में, समाजवादी तथा कम्युनिस्ट निर्माण के लिए उनके सयुक्त संपर्क में, समाजवादी अंतर्राष्ट्रवाद को सुदृढ़ बनाने में, शांति के लिए संघर्ष में असाधारण भूमिका निभायी है।

विकासशील देशों से आनेवाले संदेशों में इस बात पर जोर दिया गया कि वह उपनिवेशवाद, नस्लवाद और रंगभेद को बर्दाश्त नहीं कर सकते और एशिया, अफ्रीका तथा सेंटिन अमरीका के देशों की जनता के प्रति हार्दिकता तथा मित्रता को भावनाएँ रखते हैं।

पश्चिमी देशों से भी बधाई के कई संदेश आये। उनमें इस बात का उल्लेख किया गया कि ब्रेज्नेव को अग्राध सम्मान प्राप्त है और कहा गया कि इस नये पद पर उनके निर्वाचन से उन देशों के साथ सोवियत राज्य के संबंधों को और बढ़ावा मिलेगा।

ब्रेज्नेव को बधाई देनेवालों की राजनीतिक आस्थाएँ तथा उनके सैद्धांतिक विचार कुछ भी रहे हों पर शांति के प्रति उनकी गहरी लगन का सभी ने उल्लेख किया।

क्यूबा की कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति के प्रथम सचिव, राज्य परिषद के तथा क्यूबा गणराज्य की मन्त्रिपरिषद के अध्यक्ष फ्रीडेल कास्ट्रो के तार में लिखा था, "आपका नाम विश्वव्यापी महत्व के सबसे तात्कालिक काम के साथ जुड़ा हुआ है—तीसरे विश्वयुद्ध को रोकना, दुनिया में शांति का निर्माण करना।"

क्रिस्तलेंड के राष्ट्रपति उर्हो केस्कोनेन ने अपने बधाई के संदेश में लिखा, "आपके नेतृत्व में सोवियत सघ ने अंतर्राष्ट्रीय शांति तथा सुरक्षा को सुदृढ़ बनाने में निर्णायक योगदान किया है। हमें विश्वास है कि विश्व शांति के लिए आपका काम आगे चलकर भी आपका मार्गदर्शक बना रहेगा।"

इसी कारण, 24 मई, 1977 को सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के पूर्णाधिवेशन ने सर्वसम्मति से यह वांछनीय माना कि लियोनिद ब्रेज़नेव, सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महा-सचिव पद के साथ ही साथ सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमंडल के अध्यक्ष का पद भी ग्रहण कर लें।

यह अत्यन्त उत्तरदायित्वपूर्ण पद है, क्योंकि 1936 के मूलभूत कानून और नये संविधान के अंतर्गत सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमंडल को अत्यन्त व्यापक अधिकार प्राप्त हैं।

तीन सप्ताह बाद, सोवियत राज्य के सर्वोच्च प्रतिनिधिमूलक निकाय, सोवियत संघ की सर्वोच्च का अधिवेशन हुआ।

16 जून, 1977 को प्रातः 10 बजे दोनों सदनों के सदस्य विशाल क्रैमलिन प्रसाद में एकत्र हुए। विषय सूची पर पहला आइटम था : "सोवियत समाजवादी जनतंत्रों के संघ की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमंडल के अध्यक्ष के विषय में।"

केन्द्रीय समिति के पोलिटब्यूरो के सदस्य और केन्द्रीय समिति के सदस्य डिपुटी (सभासद) एम० ए० सुस्लोव ने पूर्णरूप से सारगर्भित वक्तव्य दिया, जिसमें उन्होंने पार्टी की, सोवियत जनता की, तनाव-शैथिल्य एवं अंतर्राष्ट्रीय शांति की भलाई के लिए ब्रेज़नेव के कार्य की उच्च सराहना की और सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत की एक आज्ञाप्ति का प्रस्ताव प्रस्तुत किया :

"सोवियत समाजवादी जनतंत्र संघ की सर्वोच्च सोवियत आदेश देती है कि

"कॉमरेड लियोनिद इत्योच ब्रेज़नेव सोवियत समाजवादी जनतंत्र संघ की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमंडल के अध्यक्ष निर्वाचित किये जायें।"

सभासदों ने सर्वसम्मति से आज्ञाप्ति का अनुमोदन किया।

इसके बाद ब्रेज़नेव मंच पर गये। सभासदों ने उनको दुबारा सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमंडल के अध्यक्ष के पद के लिए निर्वाचित करके उनके प्रति जो विश्वास प्रकट किया था उसके लिए उन्होंने उनको धन्यवाद दिया। अपने संक्षिप्त भाषण के एक भाग में ब्रेज़नेव ने कहा, "मैं अपनी शक्ति भर जो कुछ कर सकूंगा कहूंगा कि हमारा प्रिय देश अधिक शक्तिशाली तथा समृद्ध बने, सोवियत जनता के जीवन में अधिकाधिक सुधार हो, विश्व शांति अधिक सुदृढ़ हो और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग बढ़े।"

राज्यसत्ता के प्रधान के पद के लिए ब्रेज़नेव के निर्वाचन का सारी दुनिया में स्वागत किया गया। इससे सिद्ध हो गया कि अंतर्राष्ट्रीय तनाव-शैथिल्य, स्थायी शांति और सामाजिक प्रगति के लिए ब्रेज़नेव ने अडिग रूप से जो संघर्ष

किया है उसकी वजह से सद्भावना रखनेवाले सभी लोगों के बीच उन्होंने प्रतिष्ठा तथा सम्मान प्राप्त किया है। कई देशों के नेताओं, प्रगतिशील लोगों और अखबारों ने इस बात पर गहरा संतोष प्रकट किया कि कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत राज्यसत्ता का सबसे प्रतिष्ठावान प्रतिनिधि सोवियत सघ के सर्वोच्च पद के लिए चुना गया है। विभिन्न देशों के अखबारों ने इस बात पर जोर दिया कि यह घटना सोवियत जनता के जीवन के लिए और अंतर्राष्ट्रीय दृष्टि से भी महत्व रखती है।

सभी महाद्वीपों से ब्रेज़नेव के नाम बधाई के संदेश आये।

समाजवादी देशों के पार्टी तथा राज्यसत्ता के नेताओं ने अपने संदेशों में ब्रेज़नेव का उल्लेख एक ऐसे व्यक्ति के रूप में किया जिसने समाजवादी देशों के बीच मित्रता तथा सहयोग बढ़ाने में, समाजवादी तथा कम्युनिस्ट निर्माण के लिए उनके संयुक्त संघर्ष में, समाजवादी अंतर्राष्ट्रवाद को सुदृढ़ बनाने में, शांति के लिए संघर्ष में असाधारण भूमिका निभायी है।

विकासशील देशों से आनेवाले संदेशों में इस बात पर जोर दिया गया कि वह उपनिवेशवाद, नस्लवाद और रंगभेद को बर्दाश्त नहीं कर सकते और एशिया, अफ्रीका तथा लैटिन अमरीका के देशों की जनता के प्रति हार्दिकता तथा मित्रता की भावनाएँ रखते हैं।

पश्चिमी देशों से भी बधाई के कई संदेश आये। उनमें इस बात का उल्लेख किया गया कि ब्रेज़नेव को अगाध सम्मान प्राप्त है और कहा गया कि इस नये पद पर उनके निर्वाचन से उन देशों के साथ सोवियत राज्य के संबंधों को और बढ़ावा मिलेगा।

ब्रेज़नेव को बधाई देनेवालों की राजनीतिक आस्थाएँ तथा उनके सैद्धांतिक विचार कुछ भी रहे हों पर शांति के प्रति उनकी गहरी लगन का सभी ने उल्लेख किया।

क्यूबा की कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति के प्रथम सचिव, राज्य परिषद के तथा क्यूबा गणराज्य की मंत्रिपरिषद के अध्यक्ष फ़ीडेल कास्त्रो के तार में लिखा था, "आपका नाम विश्वव्यापी महत्व के सबसे तात्कालिक काम के लिए जुड़ा हुआ है—तीसरे विश्वयुद्ध को रोकना, दुनिया में शांति का निर्माण करना।"

फ़्रान्स के राष्ट्रपति ज़ॉर्जे केन्कोनेन ने अपने बधाई के तार में लिखा, "आपके नेतृत्व में सोवियत सघ ने अंतर्राष्ट्रीय शांति तथा नृशंका को दुनिया में निर्णायक योगदान किया है। हमें विश्वास है कि विश्व शांति के काम आगे चलकर भी आपका मार्गदर्शक बना रहेगा।"

द्विर्याई लोक गणराज्य के अध्यक्ष तथा क्रांतिकारी परिषद के सभापति ब्रेजनेव ने बताया, "विश्व के नामलात में हमें आपकी जो भूमिका और शांति तथा अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा की निरंतर खोज में आपका जो सक्रिय योगदान रहा है उसे याद करके मुझे अपार हर्ष होता है।"

ब्रेजनेव ने अपनी स्वाभाविक बुद्धि और गतिशीलता के साथ अपने नये पद पर नैजामा। अपने निर्वाचन के पहले दिन उन्होंने सर्वोच्च सोवियत के सदन की एक मीटिंग की अध्यक्षता की जिसमें दोस्त रूप से उन उपायों पर विचार किया गया जो उकाईनी और लियुआनियाई सोवियत समाजवादी गणतंत्रों ने सोवियत संघ के नये संविधान के मतविदे पर सार्वजनिक बहस को आवा देने के लिए किये थे।

अपने कार्यक्रम-संघी भाषण में ब्रेजनेव ने सर्वोच्च सोवियत के काम के सभी पहलुओं को बढ़ाने के कामों की हमारे प्रस्तुत की। योजना तथा बजट के बारे में जानू बनाने तथा उनकी जांच करने की प्रणाली के विकास की ओर अनवरत ध्यान देते हुए उन्होंने इस बात का उल्लेख किया कि सर्वोच्च सोवियत अत्यंत तथा संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों की स्थिति की ओर अधिकाधिक जल्दी-जल्दी ध्यान दे रही है, और इन समस्याओं के बारे में सरकार की रिपोर्टें भुन रही है। सरकार के विभिन्न अंगों पर सर्वोच्च सोवियत का नियंत्रण अधिकाधिक प्रभावशाली तथा मुख्यवस्थित होता जा रहा है। जैसा कि सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की विभिन्न कांग्रेसों में उल्लेख किया गया, इस काम ने बहुत प्रमुख भूमिका उन तीस सभापियों ने निभायी जिनमें सर्वोच्च सोवियत के दो-तिहाई से अधिक सभासद थे।

ब्रेजनेव ने इस बात पर जोर दिया कि नया संविधान स्वीकार कर लिये जाने से सर्वोच्च सोवियत को नये अवसर मिलेंगे क्योंकि "सर्वोच्च सोवियत की व्यापक शक्तियाँ नये संविधान में अधिक स्पष्ट रूप से मूर्त हो जायेंगी। वह सोवियत समाजवादी जनतंत्र संघ के अधिकार-क्षेत्र में आनेवाले किसी भी प्रश्न को जांच के लिए स्वीकार कर सकेंगी और उसके बारे में फैसला कर सकेंगी।"

ब्रेजनेव ने कहा, "नया संविधान जानू बनाने से संबंधित हमारे काम के आधार को और अधिक बढ़ाने का अधिकार होगा।" संविधान में निकट भविष्य में बनाये जानेवाले लगभग दस कानूनों की सूची दी गयी है, जिनमें ऐसे कानून शामिल हैं जैसे सर्वोच्च सोवियत के विनियम, सोवियत संघ की मंत्रि-परिषद से संबंधित कानून, और चुनावों से संबंधित कानून।

नये परिस्थितियों में सर्वोच्च सोवियत और उसके अध्यक्षसमंडल के काम

अनेक पहलुओं पर विस्तारपूर्वक चर्चा करने के बाद ब्रेजनेव ने बताया कि "सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत और उसके अध्यक्षमंडल ने विदेश-नीति को हमेशा बहुत महत्व दिया है।"

ब्रेजनेव ने कहा कि नये संविधान में सोवियत विदेश-नीति के आधारभूत सिद्धांतों का बहुत सही-सही और स्पष्ट ढंग से प्रतिपादन किया गया है। सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत, उसके अध्यक्ष-मंडल, स्थायी आयोगों तथा सभासदों से इन सिद्धांतों के पालन में और अन्य देशों के साथ संबंधों को बढ़ावा देने में समुचित योगदान करने को कहा गया है।

सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमंडल के अध्यक्ष की हैसियत में ब्रेजनेव मास्को में विभिन्न राजनयिक मिशनों के प्रधानों में मिले। इनमें से कुछ को वह बहुत समय से जानते थे; दूसरों से उन्हें अभी परिचित होना था। राजनयिक मिशनों के प्रधानों ने ब्रेजनेव को उनके राज्यमता के प्रधान चुने जाने पर हार्दिक बधाई दी।

इस स्वागत का मिश्रतापूर्ण वातावरण विशिष्ट रूप से सोवियत संघ में कनाडा के राजदूत राबर्ट ए० डी० फोर्ड के भाषण में प्रतिबिंबित होता है, जो वहाँ राजनयिकों में बरिष्ठतम थे। फोर्ड ने कहा, " मैं काफी विस्मयपूर्ण थड़ा के साथ देखता रहा हूँ कि महासचिव की हैसियत से आपने कितनी कुशलता के साथ अपने देश की गृह-नीति के और, जिस चीज में हमको और भी अधिक दिलचस्पी है, उसकी विदेश-नीति के निर्धारण पर अपनी वैयक्तिक छाप डाली है।

"अब हमें यह देखकर बहुत मनोप हो रहा है कि आपके राज्यमता के प्रधान का पद संभाल लेने में यह काम पूरा हो गया है।"

फोर्ड ने बताया कि ब्रेजनेव का नाम तनाव-शैथिल्य का पर्याय बन चुका है और यह आशा तथा विश्वास व्यक्त किया कि सोवियत विदेश-नीति की यह प्रवृत्ति जारी रहेगी।

अपने उत्तर में ब्रेजनेव ने दूतावासों के प्रधानों के प्रति उनकी बधाइयों के लिए हार्दिक आभार प्रकट किया। मित्रता, सहभावना और सोवियत संघ के साथ उनके अपने देशों के संबंधों के बारे में अधिक या कम विश्वास का वातावरण बनाने में राजदूतों की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर देते हुए ब्रेजनेव ने कहा :

"आज का अंतर्राष्ट्रीय जीवन बहुत गतिशील है। शांति को सुदृढ़ करने के अवसर लगातार बढ़ रहे हैं। लेकिन शांति के लिए तत्परे भी बड़ रहे हैं। स्पष्ट दूरदर्शिता की नीति और समझदारी की कूटनीति का एक बुनियादी उद्देश्य यह

है कि अवसरों के क्षेत्र को हर तरह से बढ़ाया जाये और ख़तरों की गंभीरता को कम किया जाये ।...

“इस अवसर का लाभ उठाकर मैं आपसे अनुरोध करना चाहूँगा कि आप अपने राज्यों के प्रधानों तथा अपने देशों के नेताओं तक यह संदेश पहुँचा दें ।

“वास्तव में, दुनिया में कोई भी देश या जनता ऐसी नहीं है जिसके साथ सोवियत संघ अच्छे संबंध रखना न चाहता हो ।

“कोई भी सामयिक अंतर्राष्ट्रीय समस्या ऐसी नहीं है जिसे हल करने में सोवियत संघ अपना योग देने को तैयार न हो ।

“क़ौज़ी ख़तरे का कोई भी केंद्र ऐसा नहीं है जिसे शांतिपूर्ण ढंग से दूर करने में सोवियत संघ को दिलचस्पी न हो ।

“किसी भी प्रकार के हथियार, और सबसे बढ़कर जनव्यापी विनाश के हथियार, ऐसे नहीं हैं जिन्हें सीमित रखने, जिन पर पारस्परिकता के आधार पर दूसरे राज्यों के साथ सहमति स्थापित करके प्रतिबंध लगाने, और फिर उन्हें अस्त्रागारों से विलकुल निकाल देने के लिए सोवियत संघ तैयार न हो ।

“सोवियत संघ हमेशा किसी भी ऐसी समझौते की बातचीत या किसी भी ऐसी अंतर्राष्ट्रीय कार्रवाई में सक्रिय रूप से हमेशा भाग लेगा जिसका उद्देश्य शांतिपूर्ण सहयोग को विकसित करना और विभिन्न देशों की जनता की सुरक्षा को सुदृढ़ करना हो ।

“यह हमारा विश्वास है, अडिग विश्वास है कि राजनीति में यथार्थनिष्ठता और तनाव-शैथिल्य तथा प्रगति के दृढ़ संकल्प की अंत में विजय होगी, और मानवजाति इक्कीसवीं शताब्दी में शांति की ऐसी परिस्थितियों में प्रवेश करेगी जो पहले कभी की अपेक्षा अधिक विश्वसनीय होगी । इस बात को सत्य कर दिखाने के लिए हम यथाशक्ति हर संभव प्रयत्न करेंगे ।”

अक्टूबर की महान समाजवादी क्रांति की 60वीं वर्षगांठ के समारोह से कुछ ही सप्ताह पहले अक्टूबर 1977 में एक नये संविधान का स्वीकार किया जाना, जिसे लियोनिद ब्रेज़नेव के निर्देशन में संविधान आयोग ने तैयार किया था और उसका मसविदा बनाया था, देश के जीवन की एक प्रमुख घटना थी ।

हमारे पास यह कहने के लिए पूरा आधार मौजूद है कि सोवियत संघ का नया आधारभूत क़ानून और समाजवादी जनवाद का और अधिक विकास इतिहास में ऐसी घटनाएँ मानी जायेंगी जो लियोनिद ब्रेज़नेव के नाम के साथ अभिन्न रूप से जुड़ी हुई हैं ।

सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमंडल के अध्यक्ष के पद के लिए

ब्रेजनेव के चुनाव ने हमारे युग के इस प्रमुख राजनीतिक नेता तथा राजनेता की जीवनी में एक नये अध्याय का सूत्रपात किया था।

उनका समस्त जीवन उनके विद्यालय तथा असाधारण रूप से वैविध्यपूर्ण अनुभव का साक्षी है—संसार की एक सबसे महान शक्ति सोवियत संघ की लगभग सभी आर्थिक तथा राजनीतिक क्षेत्रों में वैयक्तिक रूप से भाग लेने तथा नेतृत्व करने का अनुभव।

आज की सभी समस्याओं के प्रति उनका रुख उदात्त संघातिक अंतर्वस्तु और उच्चकोटि की सृजनात्मकता से परिपूर्ण है; राजनीति, अर्थव्यवस्था तथा सामाजिक विकास के बारे में उनकी गहरी जानकारी से सभी परिचित हैं। कार्य-कुशलता तथा सच्ची लगन के साथ ही उनमें अत्यधिक विनम्रता भी है।

ब्रेजनेव अपने को उस देश से अलग करके जिसमें उनका जन्म हुआ, उस पार्टी से अलग करके जिसमें उन्होंने विश्व के स्तर के राजनीतिक नेता के रूप में परिपक्वता प्राप्त की, अपने बारे में सोच भी नहीं सकते।

ब्रेजनेव जनता के विश्वास की बड़ी कद्र करते हैं। वह अकमर मेहनतकश लोगों से मिलते हैं और मजदूरों, सामूहिक किमानों, वैज्ञानिकों सस्कृति के क्षेत्र से काम करनेवालों और युद्ध में लड़े हुए पुराने सैनिकों में व्यापक पत्र-व्यवहार रखते हैं। जो लोग रचनात्मक पहलकदमी का परिचय देते हैं या अपने काम में अच्छे परिणाम प्राप्त करते हैं उन्हें बधाई देकर उनको हमेशा बड़ी खुशी होती है। कई माल से ब्रेजनेव मास्को के वाउमान नामक चुनाव-क्षेत्र की जनता के प्रतिनिधि के रूप से सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के सभासद रहे हैं और वह सभासद की हैसियत से अपने कर्तव्य बड़ी लगन तथा मेहनत से पूरे करते हैं। अपने मतदाताओं को संबोधित करने हुए उन्होंने कहा, "मैं आपके विश्वास को सर्वोच्च सम्मान मानता हूँ और उस पर खरा उतरने के लिए मैं कोई कोशिश उठा नहीं रखूँगा, क्योंकि कम्युनिस्ट जनता के हितों को सर्वोपरि रखते हैं, और उनके लिए जनता के विश्वास से बढ़कर कोई पुरस्कार नहीं होता। अनेक बार वह इस विश्वास की कसौटी पर पूरी तरह खरे उतर चुके हैं।

सोम उन्हें संबोधित करके जो हादिकता-भरी बातें कहते हैं, उनके प्रति विश्वास तथा मान्यता की अभिव्यक्ति के रूप में जो आचरण करते हैं उन सबका श्रेय ब्रेजनेव कम्युनिस्ट पार्टी को देते हैं, जो जनता की सेवा करने का अपना सर्वोपरि उद्देश्य मानती है, और, जैसा कि ब्रेजनेव ने कहा है, "हम सबको इस पुनीत कर्तव्य की निभाना मिलाती है।" ब्रेजनेव जोर देकर कहते हैं, "कमिस्टों का इसके अलावा और कोई विधेयाधिकार नहीं होना कि वे गसान (

की पूर्ति में दूसरों से अधिक योगदान करें और उस ध्येय की सफलता के लिए दूसरों से बेहतर ढंग से लड़ें तथा काम करें। कम्युनिस्टों के इसके अलावा और कोई विशेष अधिकार नहीं होते कि वे हमेशा सबसे अगली पांतों में रहें, वहाँ पर रहें जहाँ सबसे अधिक कठिनाइयों का सामना हो।”

ब्रेज्नेव ने अकसर कहा है कि उन्होंने अपने जीवन में जनता के लिए जो भी उपयोगी काम किया है उसे वह काम और संघर्ष के क्षेत्र के अपने उन साधियों के निरंतर समर्थन के बिना कभी नहीं पूरा कर सकते थे जो, उन्हीं की तरह, अपनी सारी शक्ति समान ध्येय को पूरा करने में लगा देते हैं। ब्रेज्नेव ने कहा है, “अभी जो बहुत बड़े और जटिल काम पूरे करने की बाक़ी हैं उनका सामना करते समय मुझे इस बात को जानने के कारण बड़ी प्रेरणा मिलती है कि पोलिटब्यूरो, सचिव-मंडल, पूरी केंद्रीय समिति और सरकार में हम एक-दूसरे की सहायता पर भरोसा रखकर एक सुगठित मित्रतापूर्ण सामूहिक संस्था की तरह काम करते हैं।”

आज यह कहने का हर आधार मौजूद है कि पार्टी तथा राज्यसत्ता के सर्वोच्च स्तर पर काम करने की शैली आधुनिक है, जो ब्रेज्नेव के काम करने के अपने ढंग और एक व्यक्ति तथा नेता के रूप में उनके निजी गुणों के सीधे प्रभाव के आधीन ढाली गयी है।

केंद्रीय समिति के काम की लाक्षणिकता यह है कि कम्युनिस्ट निर्माण का मार्गदर्शन करने में और सोवियत राज्य की गृह-नीति तथा विदेश-नीति का संचालन करने में वह वैज्ञानिक रवैये, सामूहिकता की भावना तथा कार्य-कुशलता का परिचय देती है।

केंद्रीय समिति का सारा काम वैज्ञानिक सिद्धांत पर—अर्थात् मार्क्सवाद-लेनिनवाद के विश्व दृष्टिकोण और समाजवादी तथा कम्युनिस्ट निर्माण की परिकल्पना पर आधारित है। एंगेल्स ने यह सराहनीय अभिमत व्यक्त किया था : “समाजवाद जैसे ही विज्ञान बन जाता है वैसे ही उसके साथ विज्ञान जैसा व्यवहार भी करना पड़ता है। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति तथा उसके महासचिव द्वारा किया गया सारा काम समाजवाद के निर्माण की समस्याओं के प्रति ठीक इसी रचनात्मक, वैज्ञानिक रवैये के अनुरूप होता है, और वह स्वैच्छिक निर्णयों पर आधारित न होकर जीवन की घटनाओं तथा प्रवृत्तियों की गहरी सैद्धांतिक समझ पर आधारित होता है।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति के पोलिटब्यूरो के सदस्य इस बात का उल्लेख करते हैं कि केंद्रीय समिति तथा पोलिटब्यूरो में काम करने का वातावरण हमेशा कार्य-कुशलता का तथा रचनात्मक रहता है।

सोवियत संघ की मंत्रिपरिषद के अध्यक्ष ए० एन० कोसिगिन ने इस बात पर जोर दिया है कि देश ने जो वल्लेखनीय प्रगति की है "उसका पूर्व-निर्धारण काफ़ी हद तक सैद्धांतिक एकता, सामियों जैसे पारस्परिक विश्वास, उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता, और पार्टी के सिद्धांतों का सज़्दी से पालन करने के उस वातावरण से ही होता रहा है जो सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति के महासचिव कॉमरेड ब्रेज़नेव के नेतृत्व में हमारी पार्टी, उसकी केंद्रीय समिति तथा पोलिटब्यूरो में व्याप्त रहता है।"

केंद्रीय समिति के पोलिटब्यूरो के सदस्य तथा केंद्रीय समिति के महासचिव एम० ए० सुसलोव ने ब्रेज़नेव के निजी गुणों के बारे में कहा है : "कम्युनिस्ट ब्रेज़नेव, जिसके प्रति पार्टी ने अपार विश्वास व्यक्त किया है और जो सचमुच एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी अपने कंधों पर उठाये हुए है, इसके बावजूद एक सीधा-सादा और विनम्र आदमी है।... जनता के हितों के प्रति उसमें असीम लगन है, वह अपने सिद्धांतों के प्रति निष्ठावान और अपने सामियों की राय का ध्यान रखनेवाला व्यक्ति है। वह सच्चे कम्युनिस्टों की तरह भरपूर क्षमता के साथ काम लेने, निश्चितता को सहन न करने और हर नयी तथा प्रगतिशील चीज़ में दिलचस्पी रखने का परिचय देता है।"

सभी पीढ़ियों के सोवियत नागरिकों की ओर से ब्रेज़नेव को भेजे गये अनेक पत्रों में इस बात के लिए आभार प्रकट किया जाता है कि सोवियत देश में अनेक बरों से शांति रही है, लोगों को सड़ार्ई के मोर्चे पर जाते समय की उन विदाइयों का, हृदय-विदारक मृत्यु की सूचनाओं का उन भयानक ब्लैंक आउटों का—युद्ध की तकलीफ़ों और मुसीबतों का—सामना नहीं करना पड़ा है, जो उन्हें अभी तक याद है।

स्वेर्दलोव्स्क प्रदेश में पोलेव्स्कोई नामक स्थान के मेमार ए० अलेखिन ने ब्रेज़नेव के नाम एक पत्र में लिखा, "तीस वर्ष से अधिक से कोई युद्ध नहीं हुआ है। शांति के वातावरण में काम करने और अपने बच्चों की हँसी देखने के इस अवसर के लिए पार्टी को और लियोनिद इत्यीच, आपको बहुत-बहुत धन्यवाद। मनुष्य युद्ध के लिए नहीं बल्कि काम करने के लिए बना है।"

और ये पंक्तियाँ रीगा के एक स्कूली लड़के आद्रेई मैदानोव के पत्र में से हैं : "यह सच है कि मैं कभी किसी लड़ार्ई में नहीं गया, लेकिन मैं जानता हूँ कि शांति का मतलब सुख है और सुख के लिए लड़ा जाना चाहिए। यही कारण है कि, प्रिय लियोनिद ब्रेज़नेव हमारा परिवार हमेशा आपके महान ध्येय में—शांति के लिए संघर्ष में—आपका साथ देगा।"

की पूर्ति में दूसरों से अधिक योगदान करें और उस ध्येय की सफलता के लिए दूसरों से बेहतर ढंग से लड़ें तथा काम करें। कम्युनिस्टों के इसके अलावा और कोई विशेष अधिकार नहीं होते कि वे हमेशा सबसे अगली पांतों में रहें, वहाँ पर रहें जहाँ सबसे अधिक कठिनाइयों का सामना हो।”

ब्रेज्नेव ने अकसर कहा है कि उन्होंने अपने जीवन में जनता के लिए जो भी उपयोगी काम किया है उसे वह काम और संघर्ष के क्षेत्र के अपने उन साथियों के निरंतर समर्थन के बिना कभी नहीं पूरा कर सकते थे जो, उन्हीं की तरह, अपनी सारी शक्ति समान ध्येय को पूरा करने में लगा देते हैं। ब्रेज्नेव ने कहा है, “अभी जो बहुत बड़े और जटिल काम पूरे करने को बाक़ी हैं उनका सामना करते समय मुझे इस बात को जानने के कारण बड़ी प्रेरणा मिलती है कि पोलिटब्यूरो, सचिव-मंडल, पूरी केंद्रीय समिति और सरकार में हम एक-दूसरे की सहायता पर भरोसा रखकर एक सुगठित मित्रतापूर्ण सामूहिक संस्था की तरह काम करते हैं।”

आज यह कहने का हर आधार मौजूद है कि पार्टी तथा राज्यसत्ता के सर्वोच्च स्तर पर काम करने की शैली आधुनिक है, जो ब्रेज्नेव के काम करने के अपने ढंग और एक व्यक्ति तथा नेता के रूप में उनके निजी गुणों के सीधे प्रभाव के आधीन ढाली गयी है।

केंद्रीय समिति के काम की लाक्षणिकता यह है कि कम्युनिस्ट निर्माण का मार्गदर्शन करने में और सोवियत राज्य की गृह-नीति तथा विदेश-नीति का संचालन करने में वह वैज्ञानिक रवैये, सामूहिकता की भावना तथा कार्य-कुशलता का परिचय देती है।

केंद्रीय समिति का सारा काम वैज्ञानिक सिद्धांत पर—अर्थात् मार्क्सवाद-लेनिनवाद के विश्व दृष्टिकोण और समाजवादी तथा कम्युनिस्ट निर्माण की परिकल्पना पर आधारित है। एंगेल्स ने यह सराहनीय अभिमत व्यक्त किया था : “समाजवाद जैसे ही विज्ञान बन जाता है वैसे ही उसके साथ विज्ञान जैसा व्यवहार भी करना पड़ता है। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति तथा उसके महासचिव द्वारा किया गया सारा काम समाजवाद के निर्माण की समस्याओं के प्रति ठीक इसी रचनात्मक, वैज्ञानिक रवैये के अनुरूप होता है, और वह स्वैच्छिक निर्णयों पर आधारित न होकर जीवन की घटनाओं तथा प्रवृत्तियों की गहरी सैद्धांतिक समझ पर आधारित होता है।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति के पोलिटब्यूरो के सदस्य इस बात का उल्लेख करते हैं कि केंद्रीय समिति तथा पोलिटब्यूरो में काम करने का वातावरण हमेशा कार्य-कुशलता का तथा रचनात्मक रहता है।

सोवियत संघ की मन्त्रिपरिषद् के अध्यक्ष ए० एन० कोसिगिन ने इस बात पर जोर दिया है कि देश ने जो उल्लेखनीय प्रगति की है "उसका पूर्व-निर्धारण काफ़ी हद तक सिद्धांतिक एकता, साधियों जैसे पारस्परिक विश्वास, उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता, और पार्टी के सिद्धांतों का सख्ती से पालन करने के उस वातावरण से ही होता रहा है जो सोवियत संघ को कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति के महासचिव कॉमरेड ब्रेज़्नेव के नेतृत्व में हमारी पार्टी, उसकी केंद्रीय समिति तथा पोलिटब्यूरो में व्याप्त रहता है।"

केंद्रीय समिति के पोलिटब्यूरो के सदस्य तथा केंद्रीय समिति के महासचिव एम० ए० सुसलोव ने ब्रेज़्नेव के निजी गुणों के बारे में कहा है: "कम्युनिस्ट ब्रेज़्नेव, जिसके प्रति पार्टी ने अपार विश्वास व्यक्त किया है और जो सचमुच एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी अपने कंधों पर उठाये हुए है, इसके बावजूद एक सीधा-सादा और विनम्र आदमी है।... जनता के हितों के प्रति उसमें असीम लगन है, वह अपने सिद्धांतों के प्रति निष्ठावान और अपने साधियों की राय का ध्यान रखनेवाला व्यक्ति है। वह सच्चे कम्युनिस्टों की तरह भरपूर समता के साथ काम लेने, निश्चितता को सहन न करने और हर नयी तथा प्रगतिशील चीज़ में दिलचस्पी रखने का परिचय देता है।"

सभी पीढ़ियों के सोवियत नागरिकों को ओर से ब्रेज़्नेव को भेजे गये अनेक पत्रों में इस बात के लिए आभार प्रकट किया जाता है कि सोवियत देश में अनेक वर्षों से शांति रही है, लोगों को सड़ाई के मोर्चे पर जाते समय को उन विदाइयों का, हृदय-विदारक मृत्यु की सूचनाओं का उन भयानक ब्लंक आउटों का—युद्ध की तकलीफों और मुसीबतों का—सामना नहीं करना पड़ा है, जो उन्हें अभी तक याद हैं।

स्वेर्दलोव्स्क प्रदेश में पोलेव्स्कोई नामक स्थान के मेमार ए० अलेखिन ने ब्रेज़्नेव के नाम एक पत्र में लिखा, "तीस वर्ष से अधिक से कोई युद्ध नहीं हुआ है। शांति के वातावरण में काम करने और अपने बच्चों की हँसो देखने के इस अवसर के लिए पार्टी को और लियोनिद इल्योच, आपको बहुत-बहुत धन्यवाद। मनुष्य युद्ध के लिए नहीं बल्कि काम करने के लिए बना है।"

और ये पत्रियाँ रीया के एक स्कूली लड़के आद्रेई मैदानोव के पत्र में से हैं: "यह सच है कि मैं कभी किसी लड़ाई में नहीं गया, लेकिन मैं जानता हूँ कि शांति का मतलब सुख है और सुख के लिए लड़ा जाना चाहिए। यही कारण है कि, प्रिय लियोनिद ब्रेज़्नेव हमारा परिवार हमेशा आपके महान ध्येय में—शांति के लिए संघर्ष में—आपका साथ देगा।"

की पूर्ति में दूसरों से अधिक योगदान करें और उस ध्येय की सफलता के लिए दूसरों से बेहतर ढंग से लड़ें तथा काम करें। कम्युनिस्टों के इसके अलावा और कोई विशेष अधिकार नहीं होते कि वे हमेशा सबसे अगली पाँतों में रहें, वहाँ पर रहें जहाँ सबसे अधिक कठिनाइयों का सामना हो।”

ब्रेज्नेव ने अकसर कहा है कि उन्होंने अपने जीवन में जनता के लिए जो भी उपयोगी काम किया है उसे वह काम और संघर्ष के क्षेत्र के अपने उन साथियों के निरंतर समर्थन के बिना कभी नहीं पूरा कर सकते थे जो, उन्हीं की तरह, अपनी सारी शक्ति समान ध्येय को पूरा करने में लगा देते हैं। ब्रेज्नेव ने कहा है, “अभी जो बहुत बड़े और जटिल काम पूरे करने को बाकी हैं उनका सामना करते समय मुझे इस बात को जानने के कारण बड़ी प्रेरणा मिलती है कि पोलिटब्यूरो, सचिव-मंडल, पूरी केंद्रीय समिति और सरकार में हम एक-दूसरे की सहायता पर भरोसा रखकर एक सुगठित मित्रतापूर्ण सामूहिक संस्था की तरह काम करते हैं।”

आज यह कहने का हर आधार मौजूद है कि पार्टी तथा राज्यसत्ता के सर्वोच्च स्तर पर काम करने की शैली आधुनिक है, जो ब्रेज्नेव के काम करने के अपने ढंग और एक व्यक्ति तथा नेता के रूप में उनके निजी गुणों के सीधे प्रभाव के आधीन ढाली गयी है।

केंद्रीय समिति के काम की लाक्षणिकता यह है कि कम्युनिस्ट निर्माण का मार्गदर्शन करने में और सोवियत राज्य की गृह-नीति तथा विदेश-नीति का संचालन करने में वह वैज्ञानिक रवैये, सामूहिकता की भावना तथा कार्य-कुशलता का परिचय देती है।

केंद्रीय समिति का सारा काम वैज्ञानिक सिद्धांत पर—अर्थात् मार्क्सवाद-लेनिनवाद के विश्व दृष्टिकोण और समाजवादी तथा कम्युनिस्ट निर्माण की परिकल्पना पर आधारित है। एंगेल्स ने यह सराहनीय अभिमत व्यक्त किया था : “समाजवाद जैसे ही विज्ञान बन जाता है वैसे ही उसके साथ विज्ञान जैसा व्यवहार भी करना पड़ता है। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति तथा उसके महासचिव द्वारा किया गया सारा काम समाजवाद के निर्माण की समस्याओं के प्रति ठीक इसी रचनात्मक, वैज्ञानिक रवैये के अनुरूप होता है, और वह स्वैच्छिक निर्णयों पर आधारित न होकर जीवन की घटनाओं तथा प्रवृत्तियों की गहरी सैद्धांतिक समझ पर आधारित होता है।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति के पोलिटब्यूरो के सदस्य इस बात का उल्लेख करते हैं कि केंद्रीय समिति तथा पोलिटब्यूरो में काम करने का वातावरण हमेशा कार्य-कुशलता का तथा रचनात्मक रहता है।

परिपक्व हो चुकी हों।

ऐसे हैं सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति के महासचिव और सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमंडल के अध्यक्ष, सोवियत राज्य के राष्ट्रपति।

दिसंबर 1976 में जब उन्हें ऑर्डर ऑफ़ लेनिन और दुबारा सोवियत संघ के वीर का सोने के सितारे का पदक दिया गया, उस समय ब्रेज्नेव ने कहा, "मुझे इस बात पर गर्व है कि मेरे जीवन के किसी भी दिन को हमारी कम्युनिस्ट पार्टी और हमारी सोवियत भूमि के पिछले और वर्तमान ध्येयों से असंग नही किया जा सकता।"

और फिर उसी अवसर पर उन्होंने भविष्य की संबोधित करके ये शब्द कहे थे, जो सुनने में सपथ जैसे लगते हैं :

"मैं हमेशा पार्टी का एक बफ़ादार सिपाही, मेहनतकश जनता के ध्येय के लिए, अपनी मातृभूमि की सुख-समृद्धि के लिए, शांति तथा कम्युनिज्म के लिए लड़ने वाला एक बफ़ादार सैनिक रहा और हमेशा रहूँगा।"

परिपक्व हो चुकी हों।

ऐसे हैं सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति के महासचिव और सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमंडल के अध्यक्ष, सोवियत राज्य के राष्ट्रपति।

दिसंबर 1976 में जब उन्हें ऑर्डर ऑफ़ लेनिन और दुबारा सोवियत संघ के वीर का सोने के सितारे का पदक दिया गया, उस समय ब्रेज्नेव ने कहा, "मुझे इस बात पर गर्व है कि मेरे जीवन के किसी भी दिन को हमारी कम्युनिस्ट पार्टी और हमारी सोवियत भूमि के पिछले और वर्तमान ध्येयों से असंग नहीं किया जा सकता।"

और फिर उसी अवसर पर उन्होंने भविष्य को संबोधित करके ये शब्द कहे थे, जो सुनने में शपथ जैसे लगते हैं :

"मैं हमेशा पार्टी का एक वक्रादार सिपाही, मेहनतकश जनता के ध्येय के लिए, अपनी मातृभूमि की सुख-समृद्धि के लिए, शांति तथा कम्युनिज्म के लिए लड़ने वाला एक वक्रादार सैनिक रहा और हमेशा रहूंगा।"